राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५०

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५०

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

प्रकाशक

राजस्थान-राज्य-संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना; गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर; निवृत्त सम्मान्य नियामक–
(आनरेरि डायरेक्टर)–भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ५०

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

चारण किसनाजी आढ़ा विरचित

रघुवरजसप्रकास

सम्पादक

श्रीसीताराम लाळस

वृहद् राजस्थानी कोशके कर्ता

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८२ | ख्रिस्ताब्द १९६०

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य ८.२५ न.पै.

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ–१. प्रमाणमंजरी–तार्किकचूड़ामणि सर्वदेवाचार्य, मूल्य ६ ००। २. यन्त्रराजरचना–महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १.७५। ३. महर्षिकुलवैभवम्–स्व० श्रीमधुसूदन ओझा, मूल्य १०·७५। ४. तर्कसंग्रह–पं० क्षमाकल्याण, मूल्य ३·००। ५. कारकसम्बन्धोद्योत–पं० रभसनन्दि, मूल्य १·७५। ६. वृत्तिदीपिका–पं० मौनिकृष्ण, मूल्य २.००। ७. शब्दरत्नप्रदीप, मूल्य २.००। ८. कृष्णगीति–कवि सोमनाथ, मूल्य १.७५ ९. शृङ्गारहारावली–हर्षकवि, मूल्य २.७५। १०. चक्रपाणिविजयमहाकाव्य–पं० लक्ष्मीधरभट्ट, मूल्य ३.५०। ११. राजविनोद–कवि उदयराज, मूल्य २.२५। १२. नृत्तसंग्रह, मूल्य १.७५। १३. नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग–महाराणा कुम्भकर्ण, मूल्य ३.७५। १४. उक्तिरत्नाकर–पं० साधुसुन्दरगणि, मूल्य ४.७५। १५. दुर्गापुष्पाञ्जलि–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी, मूल्य ४.२५। १६. कर्णकुतूहल तथा कृष्णलीलामृत–भोलानाथ, मूल्य १.५०। १७. ईश्वरविलास महाकाव्य–श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्यमुक्तावली–कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४ ००। १९. रसदीर्घिका–विद्याराम भट्ट, मूल्य २.००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ–१. कान्हडदे प्रबन्ध–कवि पद्मनाभ, मूल्य १२.२५। २. क्यामखांरासा–कवि जान मूल्य ४.७५। ३. लावारासा–गोपालदान मूल्य ३.७५। ४. वांकीदासरी ख्यात–महाकवि वांकीदास, मूल्य ५.५०। ५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, मूल्य २.२५। ६. जुगल-विलास–कवि पीथल, मूल्य १.७५। ७. कवीन्द्र-कल्पलता–कवीन्द्राचार्य मूल्य २.००। ८. भगतमाळ–चारण ब्रह्मदासजी, मूल्य १.७५। ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १, मूल्य ७.५०। १०. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मूल्य ८.५० न.पै.। ११. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढ़ा, मूल्य ८.२५ न.पै.

प्रेसोंमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ–१. त्रिपुराभारतीलघुस्तव–लघुपंडित। २. शकुनप्रदीप–लावण्यशर्मा। ३. करुणामृतप्रपा–ठक्कुर सोमेश्वर। ४. बालशिक्षा व्याकरण–ठक्कुर संग्रामसिंह ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा–पं० कृष्णमिश्र। ६. काव्यप्रकाशसंकेत–भट्ट सोमेश्वर। ७. वसन्तविलास फागु। ८. नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १०. वस्तुरत्नकोश। ११. चान्द्रव्याकरण। १२. स्वयंभूछंद–स्वयंभू कवि। १३. प्राकृतानंद–कवि रघुनाथ। १४. मुग्धावबोध आदि औक्तिक-संग्रह। १५. कविकौस्तुभ–पं० रघुनाथ मनोहर। १६. दशकण्ठवधम्–पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७. भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य–पृथ्वीधराचार्य, भा. पद्मनाभ। १८. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १९. हम्मीरमहाकाव्यम्–जयचन्द्रसूरि। २०. ठक्कुर फेरू रचित रत्नपरीक्षादि।

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ–१. मुंहता नैणसीरी ख्यात, भाग २–मुंहता नैणसी। २ गोरावादल पदमिणी चऊपई–कवि हेमरतन। ३. चंद्रवंशावली–कवि मोतीराम। ४ सुजान संवत–कवि उदयराम। ५. राजस्थानी दूहा संग्रह। ६. वीरवांण–ढाढी बादर। ७. राठोड़ांरी वंशावली। ८. सचित्र राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रंथ सूची। ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रंथोंकी सूची, भाग २। १०. देवजी बगड़ावत और प्रतापसिंह म्होकमसिंघरी वात। ११. पुरोहित बगसीराम और अन्य वार्ताएँ। १२. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोंकी सूची, भाग १।

इन ग्रंथोंके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और हिन्दी भाषामें रचे गये ग्रंथोंका संशोधन और सम्पादन किया जा रहा है।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थानी भाषामें इतिहास, धर्मशास्त्र, पुराण और कथा आदि अनेक विषयोंके साथ ही काव्यशास्त्रकी विशेष उन्नति हुई है, जिसके परिणाम-स्वरूप विभिन्न काव्य-शैलियोंका अनूठे रूपमें विकास हुआ है। उदाहरणार्थ रास, रूपक, मङ्गल, वचनिका, वेलि, पवाड़ा, विलास, प्रकाश और सतसई आदि सहस्रों राजस्थानी रचनाओंको लिया जा सकता है। अनेक काव्य-ग्रन्थोंमें गीत, दूहा, नीसाणी, झूलणा, चौपाई, झमाळ आदि छन्दोंका प्रयोग भाव, भाषा एवं काव्य-कलाकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण है।

इस प्रकार राजस्थानी काव्योंकी विपुलताके आधार पर राजस्थानी काव्य-शास्त्र-सम्बन्धी ग्रन्थोंका निर्माण भी हुआ जिनमें रस, छन्द, अलङ्कार और नायक-नायिका-भेदादि विषयोंका विस्तृत एवं सम्यक् विवेचन प्राप्त होता है।

चारण कवि किसनाजी आढ़ा रचित 'रघुवरजसप्रकास' राजस्थानी छन्दःशास्त्र-विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। ग्रन्थकर्त्ताने इसमें राजस्थानी काव्योंमें प्रयुक्त विभिन्न छन्दोंके लक्षण प्रस्तुत करते हुए स्वरचित उदाहरणोंके रूपमें भगवान् श्रीरामचन्द्रका सुयश गान भी किया है। राजस्थानी काव्य-शास्त्रके विद्वानों में 'रघुवरजसप्रकास'के प्रकाशनकी बहुत समय से प्रतीक्षा थी।

राजस्थानके सुपरिचित साहित्यसेवी और वृहद् राजस्थानी शब्दकोशके कर्त्ता श्रीसीतारामजी लाळसने कुछ मास पूर्व हमें प्रस्तुत ग्रन्थकी प्रति बताई तो हमने 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला'के लिए उपयोगी समझते हुए इसका प्रकाशन स्वीकार कर लिया। प्रसन्नताका विषय है कि यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर काव्य-प्रेमियोंके हाथोंमें पहुँच रहा है। श्रीसीतारामजी लाळसने सपरिश्रम इसका सम्पादन किया है और भूमिकामें सम्बद्ध विषयोंकी आवश्यक सूचनाएँ दी हैं, तदर्थ वह धन्यवादके पात्र हैं।

इस ग्रन्थके प्रकाशनमें जो व्यय हुआ है उसका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रदान किया है। तदर्थ सरकारको धन्यवाद अर्पित हैं।

महाशिवरात्रि, वि०सं० २०१६
भारतीय विद्या भवन,
बम्बई।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

....

भूमिका

संस्कृत साहित्यमें छंदशास्त्रका विशेष स्थान है। वेदके छ: अंगों (१ छंद, २ कल्प, ३ ज्योतिष, ४ निरुक्त, ५ शिक्षा और ६ व्याकरण) में छंदशास्त्र भी एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका स्थान पाद (चरण) माना गया है। कारण कि इसके बिना गति-क्रिया किसीकी सम्भव नहीं, अतः वेदमें भी छन्दस्तु वेदपादः कहा गया है। यह कहना कोई अत्युक्ति नहीं कि हमारे पूर्वाचार्योंने काव्य-रचनामें छंदशास्त्रकी उतनी ही आवश्यकता मानी है जितनी व्याकरणकी। कालान्तरमें अनेक भाषाओंका प्रादुर्भाव संस्कृत भाषासे हुआ जैसे कि प्राकृत, अपभ्रंश आदि। इन भाषाओंके साहित्यमें भी छंदशास्त्रको उतना ही महत्त्व दिया गया जितना कि संस्कृत साहित्यमें; फल-स्वरूप प्राकृतपैंगलम् आदि रीति-ग्रंथोंकी रचना संस्कृतेत्तर छंदोंके लक्षणोंको बतलाते हुए प्राकृत भाषामें की गई।

भाषाका विकास निरंतर काल-गतिके साथ होता रहा। अपभ्रंश भाषासे अनेक देशी भाषाओं तथा लोक भाषाओंका जन्म हुआ; उनमें मरु-भाषा भी एक है। इसी मरु-भाषाने कालान्तरमें डिंगल या राजस्थानी भाषाके नामसे प्रसिद्धि प्राप्त की। भाषाकी विकासकी गतिके साथ साथ मरु-भाषा डिंगल या राजस्थानीका भी नवीन व मौलिक साहित्य बढ़ता गया। पूर्व पद्धत्यानुसार डिंगल भाषाके मर्मज्ञोंने अपने साहित्यमें छंदशास्त्रको महत्त्व दिया जिसके फलस्वरूप उच्च कोटिके मौलिक छंदग्रंथोंकी रचना की गई जिससे भाषा और साहित्यको पूर्ण बल मिला।

मरु-भाषाके मर्मज्ञ विद्वानोंने हिन्दी भाषाके समान ही कुछ संस्कृत एवं प्राकृत छंदोंको ज्यों का त्यों अपना लिया और उनमें अपनी भाषाकी रचना की। वेदोंके बाद[1] पद्यमय रचनाका सर्वप्रथम ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है। उसमें तेरह प्रकारके छंदोंका प्रयोग मिलता है। फिर महाभारतमें भी यही प्रयोग वृद्धिको प्राप्त हुआ और महाभारतमें १८ प्रकारके छंदोंका प्रयोग हुआ। तत्पश्चात् श्रीमद्भागवतमें छंदोंकी संख्या बढ़ कर २५ तक पहुँची। इसके बादमें ज्यों ज्यों भाषा और साहित्यका विकास हुआ त्यों त्यों छंदोंके रूप भी

---

१ भारतका प्राचीनतम साहित्य वेद प्रायः छंदोबद्ध है। इसके बादके साहित्यकी रचना भी विशेषकर छंदोंमें हुई है। साहित्यकी वृद्धिके साथ-साथ छंदोंकी भी संख्या बढ़ी। वेदोंमें मुख्य सात छंद पाये जाते हैं, यथा—गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती।

निरंतर बढ़ते ही गये, जिसके फलस्वरूप आगेके ग्रंथोंमें अनेक प्रकारके छंद हमें मिलते हैं।

अन्य भाषाओंके समान ही राजस्थानी भाषामें विशिष्ट रीति-ग्रन्थोंकी रचना प्रारम्भ हुई। रीति-ग्रन्थकारोंने अनेक मौलिक छंदोंका भी निर्माण किया।

वर्णवृत्त एवं मात्रिक छंद हिन्दीमें भी बहुत अधिक संख्यामें प्राप्त हैं, परन्तु गीत नामक छंद डिंगलकी अपनी नवीनतम एवं मौलिक रचना है। यद्यपि राजस्थानी साहित्यके निर्माणमें चारण कवियोंकी ही प्रधानता है, फिर भी यहां पर यह कहना होगा कि डिंगल गीत छंदके रचयिता तो चारण कवि ही हैं। छंदशास्त्रका सबसे प्राचीनतम संस्कृतका पिंगल मुनिकृत पिंगल छंद-शास्त्र है। ग्रन्थकारने अपने पिंगल छंद शास्त्रमें पूर्वाचार्योंका उल्लेख किया है परन्तु उन सबके नाम सूत्रोंमें ही रह गये—उनके ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते हैं। पिंगल मुनिके छंदशास्त्रके बाद छंदोंका विशद वर्णन अग्निपुराणमें मिलता है परंतु पिंगल छंदशास्त्र और अग्निपुराणमें वर्णन किये गये छंदशास्त्रका प्रकरण परस्पर मिलता-जुलता ही है। इसके बाद छंद शास्त्र पर अनेक ग्रंथ रचे गये। उनमेंसे 'श्रुत-बोध', 'वाणी-भूषण', 'वृत्त-रत्नाकर', वृत्त-दर्पण', वृत्त-कौमुदी' 'सुवृत्त-तिलक' और 'छंदो-मंजरी' बहुत प्रसिद्ध हैं। केदार भट्ट विरचित 'वृत्त-रत्नाकर' और गंगादास रचित 'छंदो-मंजरी'का तो घर-घर प्रचार है। ये दोनों ग्रंथ इस विषयके पूर्ण मान्य ग्रन्थ हैं।

हिन्दी भाषामें रीतिकालीन कवियोंने अनेक छंदशास्त्रोंकी रचना की। उनमें कई प्राकृतके छंदों और उपर्युक्त संस्कृत रीतिग्रंथोंके छंदोंको ग्रहण किया गया। इस प्रकार पूर्वापर पद्धत्यानुसार हिन्दीमें भी छंदोंके लाक्षणिक ग्रंथ पृथक लिखे गये।

इधर मरु-भाषा डिंगल या राजस्थानीमें भी समय समय पर छंदोंके लाक्षणिक ग्रन्थ रचे गये। सर्वप्रथम पिंगल मुनिके संकेत मात्र लेकर नागराज पिंगळ[1] डिंगल छंदशास्त्र नामक बृहद् ग्रंथ रचा गया, परन्तु मूल ग्रंथके रचयिताके नामका पता न चला और यह ग्रन्थ पूर्णरूपमें प्राप्त भी नहीं है। दो स्थानों पर मैंने इस ग्रन्थकी पांडुलिपियां देखी हैं; छंदोंके साथ-साथ गीतोंके भी लक्षण दिए गए हैं, परन्तु यह ग्रन्थ अभी अप्राप्य सा हो है।

उपर्युक्त ग्रन्थके अतिरिक्त अद्यावधि डिंगलके छंदशास्त्र पर प्राप्त ६ ग्रंथ हैं जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

---

१ नागराज पिंगळ छंदशास्त्रकी एक प्रति सिवाना नगरमें एक जैन यतिके अधिकारमें सुरक्षित है।

१. पिंगळ-सिरोमणि ... रावळ हरराज कृत
२. पिंगळ-प्रकास ... हमीरदांन रतनू कृत
३. लखपत पिंगळ ... ,, ,, ,,
४. हरि-पिंगळ ... जोगीदास चारण कृत
५. कविकुळबोध ... उदयराम बारहठ कृत
६. रघुनाथरूपक ... मंशाराम सेवग कृत
७. रघुवरजसप्रकास ... किसनाजी आढा कृत
८. रण-पिंगळ ... दीवाण रणछोड़जी द्वारा संग्रहीत
९. डिंगल कोश ... कविराजा मुरारिदानजी मीसण कृत

उपर्युक्त छंदोंके लाक्षणिक ग्रंथोंमें लखपत पिंगळको छोड़ कर छंदोंके लक्षणोंके साथ साथ गीतोंके लक्षण व रचना-नियम दिये गये हैं। लखपत पिंगळमें केवल गीतोंके रचनाके नियम न देकर केवल गीत ही दिए गए हैं।

हमने जिन ग्रंथोंके नाम ऊपर दिए हैं उनमें केवल तीन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और चौथा यह रघुवरजसप्रकास है। शेष पाँच ग्रन्थ अप्रकाशित हैं।

कवि परिचय

प्रस्तुत रीतिग्रन्थ रघुवरजसप्रकासकी समाप्ति पर स्वयं कविने एक छप्पय लिख कर अपना वंश-परिचय दिया है, वह इस प्रकार है —

छप्पै

'दुरसा' घर 'किसनेस', 'किसन' घर सुकवि 'महेसुर'।
सुत 'महेस' 'खुमांण' 'खांन साहिब' सुत जिण घर ।।
'साहिब' घर 'पनसा' है 'पना' सुत 'दुलह' सुकव पुण।
'दूलह' घर खट पुत्र 'दांन' 'जस' 'किसन' 'बुधो' भण ।।
'सारूप' 'चिमन' मुरधर उतन, परगट नगर पांचेटियौ।
चारण जात आढ़ा विगत, 'किसन' सुकवि पिंगळ कियौ ।।

स्वयं कवि द्वारा प्रदत्त वंश-परिचयसे हमें ज्ञात होता है कि लाक्षणिक ग्रंथ रघुवरजसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनजी राजस्थानके प्रसिद्ध एवं राष्ट्र-भक्त कवि आढ़ा गोत्रके चारण श्रीदुरसाजीकी वंश-परम्परामें थे। प्रस्तुत ग्रंथ-रचयिताके परिचयके पूर्व उनके पूर्वज चारण-कुल-भूषण सुकवि दुरसाजीका संक्षिप्त परिचय देना आवश्यकीय होगा।

सुकवि दुरसाजी आढ़ा गोत्रके चारण थे जिनका जन्म जोधपुर राज्यांतर्गत सोजत तहसीलके धूंधला नामक ग्राममें अमराके पुत्र मेहाके घर संवत्

१५९२में हुआ था। दुर्भाग्यसे बाल्यावस्थामें ही पितृ-प्रेमसे वंचित हो गये[1]। अतः बगड़ी गाँवके ठाकुर श्री प्रतापसिंहजी सूंडाने इनका पालन-पोषण किया और वयस्क होने पर अपने यहां कार्य पर रख लिया। दुरसाजी अपनी काव्य-प्रतिभाके कारण शीघ्र ही विख्यात हो गये और दिल्लीके सम्राट अकबरके दरबारमें भी अच्छा सम्मान प्राप्त किया।

दुरसाजो राजस्थानके बहुत लोकप्रिय और यशस्वी कवि हुए हैं। आपने कविताके नामसे बहुत सम्मान व धन प्राप्त किया।

काव्य-रचनाके दृष्टिकोणसे भी दुरसाजीका स्थान बहुत ऊँचा माना जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं। इनके लिखे तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—१. बिरुद-छिहत्तरी, २. किरतारबावनी और ३. श्रीकुमार अज्जाजीनी भूधर मोरीनी गजगत। इन ग्रंथोंके अतिरिक्त दुरसाजीके लिखे पचासों डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं।

दुरसाजीके दो स्त्रियां थीं जिनसे चार पुत्र हुए। ये अपने सबसे छोटे पुत्र किसनाजीके साथ पांचेटियामें ही रहते थे। वहीं सं० १७१२में इनका देहावसान हुआ। इन्हीं दुरसाजीकी वंश-परम्परामें किसनाजीने मारवाड़ राज्यांतर-गत पांचेटिया ग्राममें जन्म लिया जिसका वंश क्रम इस प्रकार है—

१ दुरसौ,
२ किसोजी,
३ महेस,
४ खुमांन,
५ साहिबखांन,
६ पनजी
७ दूल्हजी,
८ किसनोजी,

इस प्रकार कवि-परिचयके प्रारम्भमें दिए हुए छप्पयके अनुसार रघुवर-जसप्रकासके रचयिता सुकवि किसनाजी आढ़ाका जन्म दुरसाजी आढ़ाकी आठवीं पुश्तमें (पीढ़ीमें) दूल्हाजी नामक कविके घर हुआ। दूल्हजीके कुल छः पुत्र थे जिनमें किसनोजी तीसरे थे। इनके जीवनके सम्बंधमें श्रीमोती-

---

१ नोट— इनके पिताने सन्यास ले लिया था।

लालजी मेनारिया द्वारा लिखित राजस्थानी भाषा और साहित्यमें बहुत संक्षिप्त परिचय ही प्राप्त है ।

किसनाजी संस्कृत, प्राकृत, बृजभाषा एवं राजस्थानी भाषाके उद्भट विद्वान थे । लाक्षणिक ग्रंथोंका भी इनका ज्ञान पूर्ण परिपक्व था । इतिहासकी ओर भी आपकी विशेष रुचि थी । कर्नल टॉडको अपना राजस्थानका वृहद् इतिहास लिखनेमें किसनाजीके अथक परिश्रमसे पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हुई थी ।

ये उदयपुरके तत्कालीन महाराणा भीमसिंहजीके पूर्ण कृपापात्र थे । महाराणा भीमसिंहजीने आपको काव्य-रचनासे प्रभावित होकर सीसोदा नामक ग्राम प्रदान किया था जो अद्यावधि इन्हींके वंशजोंके अधिकारमें रहा ।

महाराणा भीमसिंहजी द्वारा इस ग्रामको किसनाजीको प्रदान करनेका किसनाजी कृत निम्नलिखित एक डिंगल गीत हमारे संग्रहमें है—

गीत

कीजै कुण-मीढ न पूजै कोई,
धरपत झूठी ठसक धरै ।
तो जिम 'भीम' दिये तांबा पत्र,
कवां अजाची भलां करै ॥ १ ॥

पटके अदत खजांना पेटां,
देतां बेटां पटा दिये ।
सीसोदौ सांसण सीसोदा,
थारा हाथां मौज थियै ॥ २ ॥

मन महारांण धनौ मेवाड़ा,
दाखै धाड़ा दसूं दसा ।
राजा अन बांधे रजवाड़ा,
तूं गढवाड़ा दिये तसा ॥ ३ ॥

अधपत तनै दियारौ अंजस,
लोभीं अंजस लियारौ ।
भांणै साच जणायौ 'भीमा',
हाथां हेत हियारौ ॥ ४ ॥

किसनाजी द्वारा रचे हुए मुख्य दो ग्रंथ उपलब्ध हैं—एक भीमविलास और दूसरा रघुवरजसप्रकास । भीमविलास महाराणा भीमसिंहजीकी आज्ञासे संवत्

१८७९में लिखा गया था जिसमें उक्त महाराजाका जीवन-वृत्त है । रघुवरजस-प्रकास प्रकाशित रूपमें आपके समक्ष है । इनके अतिरिक्त कविके रचे हुए फुट-कर गीत अधिक संख्यामें उपलब्ध होते हैं जो कविकी विशिष्ट काव्य-प्रतिभा एवं प्रौढ़ ज्ञानका परिचय देते हैं ।

रघुवरजसप्रकास

प्रस्तुत ग्रंथ रघुवरजसप्रकास राजस्थानी भाषाका छंद - रचनाका उत्कृष्ट लाक्षणिक ग्रन्थ है । इस ग्रन्थमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश व हिन्दीके छंदोंका अपनी मौलिक रचनामें पूर्ण विवेचन है ।

ग्रंथमें कविने मुख्य विषय छंद-रचनाके लक्षणों व नियमोंका बड़ी सरल व प्रसादगुणपूर्ण भाषामें वर्णन किया है । छंदोंके वर्णनमें कविने अपनी राम-भक्तिका पूर्ण परिचय दिया है । राम-गुणगान ही कविका मुख्य ध्येय था । अतः छंद-रचनाके लक्षणोंके साथ-साथ रामगुण-वर्णन करते हुए कविने एक पंथ दो काजकी कहावतको पूर्ण रूपसे चरितार्थ किया है ।

प्रकाशित रीति ग्रन्थ रघुनाथरूपकमें लाक्षणिक वर्णनके अतिरिक्त उदा-हरणके गीतोंमें रामकथाका ही सहारा लिया है । इसमें रामायणकी भांति रामगाथा क्रमबद्ध चलती है । परन्तु किसनाजीने अपने ग्रन्थमें मुक्तक रूपसे राम-महिमाका वर्णन किया है । इसमें कोई कथाका क्रम नहीं है । कविने रीतिके अनुसार ग्रंथको पांच भागोंमें विभाजित किया है । छंद-लक्षण जैसे अरुचिकर विषयको अत्यंत सरल बना कर ग्रन्थको पर्ण प्रसादगुणयुक्त कर दिया है । ग्रंथका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

प्रथम प्रकरणमें मंगलाचरण, गणागण, गणागणदेव, गणागणका फलाफल, गण मित्र शत्रु, दोषादोष, आठ प्रकारके दग्धाक्षर, गुरु, लघु, लघु गुरुकी विधि, मात्रिक गण, मात्रिक गणोंके भेदोपभेद व उनके नाम तथा छंदशास्त्रके आठ प्रत्ययों—१ प्रस्तार, २ सूची, ३ उद्दिष्ट, ४ नष्ठ, ५ मेरु, ६ खंडमेरु, ७ पताका, ८ मर्कटिका संक्षिप्त वर्णन व विवेचन किया गया है ।

द्वितीय प्रकरणमें मात्रिक छंदका वर्णन किया गया है । कविने इस प्रकरणमें कुल २२४ मात्रिक छंदोंके लक्षण देकर उनके उदाहरण भी दिए हैं । लक्षण कहीं-कहीं पर प्रथम दोहोंमें या चोपईमें दिये गये हैं । फिर छंदोंके उदाहरण दिये हैं । कहीं-कहीं लक्षण और छंद सम्मिलित ही दे दिये गये हैं । इस प्रकरणमें

राजस्थानीकी साहित्यिक गद्य-रचनाके नियम भी समझाए हैं। उनके भेदोपभेद[1] संक्षिप्त रूपमें दिये हैं जो राजस्थानी साहित्यका ही एक मुख्य अंग है। ऐसी गद्य-रचनाओंका हिन्दीमें अभाव ही है। इस प्रकरणमें चित्र-काव्यके भी उदाहरण कमलबंध, छत्रबंध आदि समझाए गये हैं।

तृतीय प्रकरणमें छंदोंके दूसरे भेद, वर्णवृत्तोंके लक्षण व उदाहरण दिए हैं। प्रारम्भमें कविने एक अक्षरसे छब्बीस अक्षरके छंदोंके नाम छप्पय कवित्तमें गिनाए हैं। ये सब छंद संस्कृत छंद हैं—इनका स्वतंत्र उदाहरण राजस्थानीमें नहीं मिलता। तत्पश्चात् क्रमशः ११७ वर्णवृत्तोंके लक्षण व उदाहरण दिये हैं। कविने अपनी अनन्य रामभक्ति प्रकट करते हुए छंदोंके उदाहरणस्वरूप राम-गुणगान किया है।

ग्रंथके इस चौथे प्रकरणमें राजस्थानी (डिंगल) गीतका (छंदोंका) विस्तार-पूर्वक विशद् वर्णन है जो इस ग्रंथका मुख्य विषय है और साथमें डिंगल भाषाके छंदशास्त्र या लाक्षणिक ग्रन्थकी अपनी विशेषता भी है। गीत नामक छंद, उसके भेद डिंगल भाषाके कवियोंकी अपनी मौलिक देन है। ग्रन्थकारने गीतोंके वर्णनमें गीतोंके अधिकारी, गीतोंके लक्षण, गीतोंकी भाषा, गीतोंमें वैणसगाई, वैण-सगाईके नियम, वैणसगाई और अखरोट, अखरोट और वैणसगाईमें अंतर, गीतोंमें नौ उक्तियाँ, गीतोंमें प्रयुक्त होने वाली जथाएं, गीत-रचनामें माने गये ग्यारह दोष एवं विभिन्न गीतोंकी रचना, नियम आदिका पूर्ण और सरल भाषामें विशद् वर्णन दिया है।

राजस्थानीमें प्राप्त छंद-रचनाके लाक्षणिक ग्रन्थोंमें इतना विस्तारपूर्ण एवं इतने गीतोंका वर्णन किसी भी ग्रन्थमें प्राप्त नहीं होता है। प्राप्त ग्रन्थोंमें जो गीत दिये गये हैं उनकी जानकारी यहां दी जाती है—

१ **पिंगल-सिरोमणि**—इसमें कुल तेतीस गीतोंके लक्षण व उदाहरण दिए गए हैं।

२ **हरि-पिंगल**—इसमें प्रथम छंदोंके लक्षण दिये गये हैं। तत्पश्चात् बाईस गीतोंके भी लक्षण दिये गये हैं। इसकी रचनाका समय संवत् १७२१ है।

३ **पिंगळप्रकास**—इसमें केवल 'छोटा सांणोर' और उसके तीस भेदों तथा 'वडौ सांणोर' और उसके चार भेदोंका ही वर्णन है; शेष पुस्तकमें छंदोंके लक्षण हैं।

---

१ इस प्रकरणमें राजस्थानीकी गद्य सम्बन्धी रचनायें दवावैत, वचनिका और वारता आदि समझाई गई हैं।

४ लखपतपिंगल—इसमें गीत-रचनाके लक्षण तो नहीं हैं परंतु ग्रन्थके अंतमें चौबीस भिन्न-भिन्न गीतोंकी जाति व गीत दिए गए हैं।

५ कविकुलबोध—इसमें चौरासी प्रकारके गीत, अट्ठारह उक्तियाँ, बाईस जथाएं आदिका बड़ा विशद् वर्णन है। यह अत्युत्तम लाक्षणिक ग्रंथ है।

६ रघुनाथरूपक—यह प्रकाशित ग्रन्थ है। इसमें बहत्तर प्रकारके गीतोंका वर्णन है।

७ डिंगल-कोश—यह ग्रन्थ प्रधान रूपसे पद्यवंध शब्दकोश है। इसमें भी पंद्रह गीतोंके लक्षण दिए हैं और उदाहरणके गीतोंमें डिंगलके पर्यायवाची कोशके शब्दोंका वर्णन है।

८ रण-पिंगल—यह छंदशास्त्रका बृहद् लाक्षणिक ग्रंथ है। इसके तीन भाग हैं। इसके तृतीय भागमें भिन्न-भिन्न प्रकारके तीस गीतोंके लक्षण व उदाहरण दिए गये हैं। अधिकांश रघुनाथरूपकके हो गीत इसमें हैं। यह ग्रंथ प्रकाशित है किन्तु अप्राप्य है।

९ रघुवरजसप्रकास—प्रस्तुत ग्रन्थ रघुवरजसप्रकासमें ९१ प्रकारके गीतोंके लक्षण आदिका विस्तृत वर्णन है। केवल गीतोंका ही वर्णन नहीं, गीतोंके विभिन्न अंगोंका वर्णन भी बड़े ही सुन्दर एवं विस्तृत ढंगसे किया गया है। गीतोंके ग्यारह प्रकारके दोष, गीतोंमें वैणसगाईके प्रयोगका महत्त्व आदिका सुन्दर वर्णन है। गीतोंमें वैणसगाईके प्रयोगके जो उदाहरण दिए गये हैं वे कविकी रचनाके महत्त्वको द्विगुणित कर गंथकारकी काव्य-प्रतिभाका परिचय देते हैं।

छंद शास्त्रमें चित्र काव्यका अपना एक विशेष स्थान है। साहित्यकारोंने इसे एक स्वतन्त्र रूपसे अलंकार माना है जो शब्दालंकारका एक भेद माना गया है। संस्कृत व व्रज भाषामें चित्र काव्य पर्याप्त मात्रामें उपलब्ध होता है परन्तु राजस्थानी (डिंगल) गीतोंमें चित्र काव्यका उल्लेख नहीं मिला। अद्यावधि डिंगल गीतोंके लाक्षणिक ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं—उनमें किसीमें भी चित्र-काव्य सम्बन्धी विवरण नहीं है; परन्तु रघुवरजसप्रकासमें एक 'जाळीबंध वेलियो सांणोर' गीतका चित्र-काव्यके रूपमें उदाहरण मिला है। मेरे निजी संग्रहमें इस जाळीवंध गीतके चित्र बने हुए हैं। एक-दो उदाहरण प्राचोन भी मिलते है। इन उदाहरणोंसे पता चलता है कि डिंगल गीतमें भी चित्रकाव्यकी रचना प्रारंभ हो गई थी।

पंचम प्रकरण ग्रन्थका अंतिम प्रकरण है। इसमें ग्रन्थाकारने एक राजस्थानी छंद विशेष निसांणीका वर्णन करते हुए इसके मुख्य बारह भेदोंके साथ इसके भेदोपभेदोंका तथा एक मात्रिक छंद कड़खाका भी वर्णन किया है। प्रकरणके प्रारम्भमें प्रथम निसांणीके लक्षणोंको देकर उदाहरणोंको प्रस्तुत किया है। फिर रामगुण-गाथा गाते हुए निसांणीके अन्य भेदोंका उत्तम रीतिसे वर्णन किया है। प्रकरणके अंतमें कविने अपनी वंशपरम्पराका परिचय देकर ग्रंथको समाप्त किया है। स्वयम् कवि द्वारा दिए गये इस वंश-परिचयसे कविके जीवन-वृत्तको जाननेमें बहुत सहायता प्राप्त होती है।

ग्रन्थ रचना-काल

इस ग्रन्थकी रचनाका प्रारंभ और समाप्ति सम्बन्धी स्वयं कविने अपने वंश-परिचयके पश्चात् एक छप्पय कवित्त इस प्रकार दिया है जिससे पता चलता है कि यह ग्रन्थ वि. सं. १८८०की माघ शुक्ला चतुर्थी बुधवारको प्रारंभ किया गया था। कविने अपनी कुशाग्र बुद्धि और प्रौढ़ ज्ञानके सहारे वि. सं. १८८१के आश्विन् शुक्ला विजयादशमी, शनिवारको ग्रंथ पूर्ण रूपसे तैयार कर लिया। ग्रन्थ-रचनाके सम्बन्धमें स्वयं कविने अपने ग्रन्थके समाप्ति-प्रकरणमें लिखा है—

छप्पय कवित्त

उदियापुर आथांण रांण, भीमाजळ राजत।
कवरां-मुकट'जवांन' नीत मग जग नीवाजत।।
अठ्ठारै सै समत वरस असियौ माह सुद।
बुद्धवार तिथ चौथ हुवौ प्रारम्भ ग्रन्थ हद।।
अठारै अनै अकयासिये, सुद आसोज सराहियौ।
सनि बिजैदसमी रघुवर सुजस 'किसन' सुकवि सुभक्त कियौ।।

भूमिका समाप्त करनेके पूर्व हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके प्रति आभार प्रदर्शित किए बिना नहीं रह सकते। कारण कि प्रतिष्ठान इस प्रकारके अमूल्य ग्रन्थ जो, साहित्यकी अप्राप्य निधि हैं "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला"के अन्तर्गत प्रकाशित कर साहित्यके कलेवरको बढ़ानेमें सतत प्रयत्नशील है। प्रस्तुत ग्रन्थको इस रूपमें प्रकाशित करानेका श्रेय श्रद्धेय मुनिवर श्रीजिनविजयजीको है जिन्होंने राजस्थानीके छंद-शास्त्रके इस अमूल्य ग्रन्थका प्रकाशन राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला द्वारा करना स्वीकार किया। श्रीगोपालनारायणजी बहुरा, एम. ए. व श्रीपुरुषोत्तमलालजी मेनारिया, एम. ए. प्री. साहित्यरत्नका भी पूर्ण रूपसे आभार मानता हूँ कि इन्होंने समय-समय पर पुस्तकके प्रूफ-संशोधन और सम्पादन-कार्यमें योग दिया।

हमारे संग्रहमें ग्रंथकी प्रतिलिपि मौजूद थी परन्तु उनके क्षतविक्षत होनेके कारण उसका सम्पूर्ण प्रकाशन सम्भव नहीं था। इस कार्यके लिए मेवाड़के अन्तर्गत मेंगटिया ग्रामके ठा. श्री ईश्वरदानजी आसियाने प्रस्तुत ग्रन्थकी हस्तलिखित प्रति, जो पूर्ण सुरक्षित थी, हमें प्रदान कर अपूर्व सहयोग दिया है। उसके लिए वे धन्यवादके पात्र हैं और मैं उनके इस सहयोगके लिए कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

जोधपुर,
२१ फरवरी, १९६० ई.

सीताराम लाळस
सम्पादक

विषय - सूची

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगुरुगणपतीष्ट देवताभ्यो नमः ॐ नमः श्रीसीतारामाय

अथ आढ़ा किसनाजी कृत

पिंगल रघुवरजसप्रकास

लिख्यते

श्रीगणेस स्तुति

छप्पै कवित्त—भाखा मुरधर

श्री लंबोदर परम संत बुद्धवंत परम सिद्धिबर ।
आच फरस ओपंत, विघन-बन हंत ऊबंबर ॥
मद कपोल महकंत, मधुप भ्रामंत गंधमद ।
नंद महेसुर जन निमंत, हित दयावंत हद ॥
उचरंत 'किसन' कवि यम अरज, तन अनंत भगति जुगत ।
जांनकी-कंत अक्खण सुजस, एकदंत दीजै उगत ॥ १

प्रथम अहंम मझ्भ बेद, छंद मारग दरसायौ ।
खग अग पिंगळनाग, 'नागपिंगळ' कर गायौ ॥
'काळिदास', 'केदार', 'अमरगिर' पिंगळ अक्खे ।
भाखा ब्रज सुखदेव, 'सुरतचिंतामण' भक्खे ॥
लछ भाखा पिंगळ ग्रंथ लख, एकठ बोह मत आंणियौ ।
रघुबरप्रकास जस नांम रख, 'किसन्न' सुकव पिंगळ कीयौ ॥ २

---

१. आच—हाथ । फरस—परशु । ओपंत—शोभा देता है । हंत—नाशक । ऊबंबर—समर्थ । निमंत—नमते हैं, झुकते हैं । हद—असीम । यम—इस प्रकार । अक्खण—कहनेके लिए, वर्णन करनेके लिए । एकदंत—गणेश । उगत—उक्ति ।

२. मझ्भ—मध्य । खग—गरुड़ । अग—सम्मुख । पिंगळनाग—शेषनाग । नागपिंगळ—'नागराज पिंगळ' नामक छंदशास्त्र का ग्रंथ । गायौ—वर्णन किया । अक्खे—कहा, सुनाया । भक्खे—कहा, वर्णन किया । लच्छ—लक्षण । एकठ—एकत्रित । बोह—बहुत ।

दूहा

बिबुध-भाख ब्रज-भाख बिच, पिंगळ बोहत प्रसिद्ध ।
मुरधर-भाखा जिण निमंत, 'किसनै' रूपग किद्ध ॥ ३
जांणण छंदां मुख जपण, राघव-जस दिन-रात ।
भाड़ौ सांठौ ज्यूं भरै, जाणौ पोहकर जात ॥ ४
पेट काज नर जस पढ़ै, औ कारज अहलोक ।
जस राघव जपणौ जिकौ, लेख काज परलोक ॥ ५
जुध करणौ जमराज हूं, काज विलंबै केण ।
तव नस-दीहा हर तिकौ, जीहा दीधी जेण ॥ ६

अथ गणागण वरणण*

मगण त्रिगरु यगणह लघु, आद कहै सह कोय ।

---

३. बिबुध-भाख—देववाणी । निमंत—लिए । रूपग—वह काव्य-ग्रंथ जिसमें किसी महान योद्धाका चरित्र हो या वह रीतिग्रंथ जिसमें विशेषकर डिंगलके गीत छंदोंकी रचना आदिके नियमों का वर्णन हो । किद्ध—किया ।

४. भाड़ौ—(सं. भाटक) किराया । सांठौ—अधिक, ईख । पोहकर—पुष्कर । जात—यात्रा ।

५. अहलोक—इहलोक, यह संसार । लेख—समझ, समझना ।

६. केण—किसलिए । तव—(स्तवन) स्तुति । नस-दीहा—निशि-दिन । हर—(हरि) ईश्वर । जीहा—जिह्वा । जेण—जिससे, जिसने ।

*

नाम	रेखारूप	वर्णरूप	लघु संज्ञा	शुभाशुभ
मगण	S S S	मागाना	म	शुभ
यगण	I S S	यगाना	य	,,
भगण	S I I	भागन	भ	,,
नगण	I I I	नमन	न	,,
रगण	S I S	रामना	र	अशुभ
सगण	I I S	सगना	स	,,
तगण	S S I	तागान	त	,,
जगण	I S I	जगान	ज	,,

भगण आद गुरु नगणसौ, त्रिलघु चिहुं सुभ जोय ॥ ७
रगणमध्य लघु सगणरै, अंत गुरु लघु अंत ।
तगण मध्य गुरु जगण अै, च्यारूं असुभ कहंत ॥ ८

गणागण देवता*

दूहौ

देव धरा जळ चंद अह, आग पवन नभ भांण ।

फलाफल

सुख मुद मंगळ धी जळण । दुख निफळ घर हांण ॥ ९

---

७. चिहुं–चार ।
९. अह–स्वर्ग । भांण–सूर्य ।
जळण–दाह । हांण–हानि ।

*गणागण देवता और उनके फलाफल

नाम	रूप	देवता	फल
मगण	ऽ ऽ ऽ	पृथ्वी	सुख
यगण	। ऽ ऽ	जल	प्रसन्नता
भगण	ऽ । ।	चंद्र	मंगल
नगण	। । ।	स्वर्ग	धी
रगण	ऽ । ऽ	अग्नि	दाह
सगण	। । ऽ	पवन	दुख
तगण	ऽ ऽ ।	नभ	निष्फल
जगण	। ऽ ।	भानु	गृह हानि

अथ गण मित्र सत्रु कथनं*

दूहौ

म न सुमित्र य भ दास मुण, दख ज त विहुं उदास ।
र स बिहुं वै गण सत्रु रट, पढ़ फिर दुगण प्रकास ॥ १०

अथ दुगण कथनं

कवित्त छप्पैं†

मित्र मित्र रिध सिध, मित्र दासह जय पावत ।
हितु उदास धन हांण, मित्र अरि रोग बधावत ॥
दास मित्र सिध काज, दास दासह सुवसीक्रत ।
दास उदासह हांण, दास अरि हार सु आवत ॥
उदास मित्र फळ तुच्छ गिण, विपत उदास जु दास कर ।
उदास उदास सु निफळ कह, मिळ उदास रिपु सत्रु कर ॥ ११

१०. मुण—कह । दख—कह । बिहुं—दोनों ।

*मित्र दास उदास और शत्रु गण

मित्र मगण, नगण	फल	दास यगण भगण	फल
मित्र + मित्र	सिद्धि	दास + मित्र	सिद्धि
मित्र + दास	जय	दास + दास	वशीकरण
मित्र + उदासीन	हानि	दास + उदास	हानि
मित्र + शत्रु	रोग	दास + शत्रु	पराजय

†

उदासीन जगण, तगण	फल	शत्रु रगण, सगण	फल
उदासीन + मित्र	अल्पफल	शत्रु + मित्र	शून्य
उदासीन + दास	विपत् (विपत्ति)	शत्रु + दास	जीवहानि
उदासीन+उदासीन	निष्फल (शून्य)	शत्रु + उदासीन	शत्रुहानि
उदासीन+शत्रु	शत्रूत्पत्ति	शत्रु + शत्रु	क्षय

दूहौ

सत्रु मित्र मिळ सुन्य फळ, सत्रु दास जिय हांण।
सत्रु उदाससं हांण अरि, अरि नायक खय जांण॥ १२

दोसादोस कथन

दूहौ

नर-कायब करवा निमत, वद गण अगण विचार।
गुण राघव मझ असुभ गण, न कौ दोस निरधार॥ १३

अथ अस्टदगध अखिर कथनं

दूहौ

ह झ ध र घ न ख भ आठ ही, दगध अखिर दाखंत।
कायब्र अग्र वरजित तिकण, भल किव नह भाखंत॥ १४

हकारादि अस्टदगध अखिर क्रमसूं उदाहरण

दूहौ

हेत हांण तन रोग व्है, नरपत भय धन नास।
त्रीया घात निरफळ तवां, जस खय भ्रमण प्रवास॥ १५

अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळका रूपग गीत. कवित, दूहा, गाहा, छंद तथा सरवत्र छंदरै आद दस आखिर नहीं आवै नै वरजनीक छै सौ लिखां छां।

दूहौ

अै औ अंमळ अग्रका, दाख ल ह्व ह अै दोय।
क च ट त वरगका अंतका, पद दस वरणन होय॥ १६

अरथ—ऐ १ औ २ अः ३ य ४ स ५ ल्ल ६ क्ष ७ ङ ८ ञ ९ ण १०।

---

१२. खय–(क्षय) नाश।
१३. नर-कायब–(नरकाव्य) मनुष्यकी प्रशंसाका काव्य। वद–कह। कौ–कोई।
१४. कायब–काव्य। किव–कवि। भाखंत–कहता है।
१५. तवां–कहता हूँ। आद–आदि, प्रथम। आखिर–अक्षर। वरजनीक–त्याज्य।

अै दस अखिर गीत कवित छंदकै पैल्ही न होय। एकार आगलौ अईकार (ऐ) अोकार आगलौ अऊकार (औ)। अंकार आगलौ अः कार। मकार आगलौ यकार। लकार आगलौ सकार। सकार आगलौ ल्लकार नै क्षकार। अै दस आखर भाखारै आद न होवै। नाग यूं कह्यौ छै। इति अरथ।

अथ गुरु लघु कथनं

दूहौ

गण संजोगी आद गुरु, संजुत ब्यंदु गुरेण।
गुरु फिर बक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण॥ १७

उदाहरण

दूहौ

लंक अम्हींणा भाग लग, सुपनै लिखीउ सोय।
मौजी राघव पलकमैं, जन सरणागत जोय॥ १८

संजोगी आद वरण विचार

दूहौ

संजोगी पहलौ अखिर, वस कोई ठौड़ वसेख।
कियां विचार प्रकार किण, लघु संग्या तिण लेख॥ १९

उदाहरण

दूहौ

रे नाहर रघुनाथरा, यळ जाहर दत अंक।
विगर लिन्हाई छिनक विच, लहर दिन्हाई लंक॥ २०

---

१७. संजोगी–संयुक्त। संजुत–संयुक्त। ब्यंदु–बिंदु। कळेण–(कला) मात्रासे।
१८. लंक–लंका। अम्हींणा–मेरा। सोय–वह। मौजी–उदार।
१९. वसेख–विशेष।
२०. यळ–इला, पृथ्वी। दत–दान। छिनक विच–क्षण भरमें।

लघु दीरघ दीरघ लघु करण विधि वरणणं

दूहौ

लघु दीरघ दीरघ लघु, पढ़ियां सुधरै छंद ।
दीह लघु लघु दीह करि, पढ़ि कविराज अनंद ॥ २१

उदाहरण

दूहौ

सिर दस दस सिर साबतै, रांम हतै धख राख ।
बिबुधांणी चक्रत हुवा, अ ह ह ह वांणी आख ॥ २२

अथ मंगळादिक वरण गण नांम कथनं

दूहौ

मगण नांम संभू मुणै, राक्षस तगण रसाळ ।
यगण बाज आखै इळा, जगण उरौज विसाळ ॥ २३

तगण व्यौम कर सगण तव, रगण सूरमौ राख ।
वरण गणां वाळा विहद, यम कवि नांम स आख ॥ २४

अथ मात्रा पंच गण नांम कथनं

कवित्त छप्पै

ट ठ ड ढ ण गण अरेह, मात्र गण पंच प्रमांणै ।
टगण छ कळ तेरह सुभेद, कवि ठगण बखांणै ॥
पंच कळा अठ भेद, डगण चव कळ सु भेद पंच ।
ढगण तीन कळ तीन, भेद भाखंत नाग संच ॥
णगणहसु दु कळ दुव भेद निज, लिख प्रसतार निहारियै ।
तिण भेद तेर अठ पंच त्रय, दुव जिण नांम उचारियै ॥ २५

---

२१. दीह–दीर्घ ।
२२. धख–क्रोध । बिबुधांणी–देवता । आख–कहना ।
२३. रसाळ–रसयुक्त । इळा–पृथ्वी ।
२४. विहद–असीम । यम–ऐसे ।
२५. अरेह–पवित्र । छ कळ–छ मात्रा । सत्य ।

प्रथम टगण छ मात्रा तेरह भेद नांम*

दूहौ

हर १ ससि २ सूरज ३ सुर ४ फणी ५, सेस ६ कमळ ७ ब्रहमांण ८।
कळ ९ सु चंद्र १० ध्रुव ११ धरम १२ कहि, जपै 'साळिकर' १३ जांण ॥२६

A दुतीय ठगण पंच मात्रा आठ भेद नांम

दूहौ

इंद्रासण १ रवि २ चाप ३ कहि, हीर सु ४ सेखर ५ संच।
कुसुंम ६ अहिगण ७ पाप ८ कह, आठ भेद कळ पंच ॥ २७

B त्रतीय डगण च्यार मात्रा पंच भेद नांम

दूहौ

करण दु गुरु १ करताळ सौं, अंत गुरु २ मन आंण।
पय हर ३ वसुपय ४ मध्यः, अहिप्रिय चौ लघु पहिचांण ॥ २८

२६. ब्रहमांण–ब्रह्मा।
२८. चौ–चार।

*टगण, ठगण और डगण मात्रिक गणों का नकशा—

	रूप	संज्ञा		रूप	संज्ञा		रूप	संज्ञा
				A			B	
		१ टगण			२ ठगण			३ डगण
१	SSS	हर	१	ISS	इंद्रासन	१	SS	कर्ण
२	IISS	शशि	२	SIS	रवि	२	IIS	करताळ
३	ISIS	सूर्य	३	IIIS	चाप	३	ISI	पयहर
४	SIIS	सुर	४	SSI	हीर	४	SII	वसु पय
५	IIIIS	फणी	५	IISI	शेखर	५	IIII	अहिप्रिय
६	ISSI	शेष	६	ISII	कुसुम			
७	SISI	कमल	७	SIII	अहिगण			
८	IIISI	ब्रम्हा	८	IIIII	पाप			
९	SSII	कळि						
१०	IISII	चंद्र						
११	ISIII	ध्रुव						
१२	SIIII	धर्म						
१३	IIIIII	साळिकर						

नोट–मूल ठगण में पायक है किन्तु शुद्ध पाप है।

चौथे ढगण तीन मात्रा तीन भेद लघ्वादि नांम *

दूहौ

ध्वज चिंन्ह वास चिराळ, चिर तौमर तूंमर घास।
नूंत माळ रस वलय अे, लादि त्रिमात्र प्रकास॥ २६

त्रिमात्रा गुरुवादि दुतिय भेद नांम

दूहौ

सुरपति पट्टह ताळकर, ताळ अनंद छंद सार।
आदि गुरु त्रय मत्तकौ, नांम द्विभेद उचार॥ ३०

त्रिमात्रा त्रतीय सरव-लघु भेद नांम

दूहौ

भावा रस तांडव कहौ, आंकुस और अनार।
है त्रय लघुका नाम अे, त्रय मत्ता प्रस्तार॥ ३१

पंचमौ णगण द्विमात्रादि भेद प्रथम एक गुरु नांम

---

२६. लादि–लघ्वादि।

	रूप	* संज्ञा
		४ ढगण
१	।ऽ	ध्वज, चिंन्ह, वास, चिराळ, चिर, तौमर, तूंमर, घास, नूंत माळ रस वलय
२	ऽ।	सुरपति, पट्टह, ताळकर, ताळ, अनंद, छंद, सार
३	।।।	भावारस, तांडव आंकुस, अन्तर

	रूप	† संज्ञा
		५ णगण
१	ऽ	नूपुर, रसना, भरण, फणि, चांमर, कुंडळ, हिंमेण, मुग्ध, वक्रमांण, वलय, हार।
२	।।	प्रिय, परमप्रिय।

दूहौ

नूपुर रसना भरण फणि, चांमर कुंडळ हिमेण।
मुग्ध वक्रमांणसु वलय, हारसु गुरु यकेण ॥ ३२

द्विमात्रा द्विलघु भेद नांम

दूहौ

निज प्रिय कहिये परम प्रिय, दु लघु द्वि मत्ता नांम।
गुण यम मात्रा पंच गण, रट कीरत रघुरांम ॥ ३३

अथ साधारण गण नांम

दूहा

आयुध गण कह पंच कळ, दुज तुरंग कळ च्यार।
करण दु गुरु प्रिय दोय लघु, लघु गुरु ध्वज गुरु हार ॥ ३४
तविया गण एता तकौ, समभण छंद सुजांण।
ल कहिये समझे लघु, ग कहिये गुरु जांण ॥ ३५

अथ सोडस करम वरणण

दूहा

संख्या प्रस्तर सूचिका, नस्ट उदिस्ट सुमेर।
ध्वजा मरकटी जांण सुध, आठूं करम अफेर ॥ ३६
आठ सुमत्ता करम अे, आठ वरण अपणाय।
पिंगळ मत अे कवि पढ़ै, सोड़स करम सुभाय ॥ ३७

---

३२. यकेण—एक।

३३. गुण—समझ। यम—इस प्रकार।

३५. तविया—कहे।

३६. प्रस्तर—प्रस्तार। सुध—(सुधि) विद्वान्। अफेर—अटल।

प्रथम लछण

दूहौ

यतरी मत यतरा वरण, कितरा रूप हुवंत।
अन किव, किव पूछै उठै, संख्या तठै सझंत॥ ३८

संख्याविधि

दूहौ

एक दोय लिख पुरव जुगै, संख्या मत्त सुभाय।
दोय हूंत दुगणा वधै, संख्या वरण सझाय॥ ३९

अथ प्रस्तार लछण

दूहौ

संख्यामें कहिया सकौ, परगट रूप प्रकास।
जे लिख सरब दिखाळजै, सौ प्रस्तार सहास॥ ४०

मात्रा प्रस्तार विधि

दूहौ

पहला गुरु तळ लघु परठ, सद्रस पंथ अग्र साय।*
वंचे जिकौ मात्रा वरण, ऊरध परठौ आय। ४१

---

३८. अन–अन्य।
४१. परठ–रख। वंचे–शेष रहना। ऊरध–ऊपर।

* आदिमें जहां गुरु हो उसके नीचे लघु लिखो (गुरुका चिन्ह ऽ लघुका चिन्ह । है) फिर अपनी दाहिनी ओर ऊपरके चिन्होंकी नकल उतारो। बांई ओर जितने स्थान रिक्त हों (क्रमशः दाहिनी ओरसे बांई ओर तक) गुरुके चिन्ह ऽ तब तक रखते चले जाओ जब तक कि सर्व लघु न आ जाय। जब सर्व लघु आ जाय तब उसीको उसका अन्तिम भेद समझो। प्रत्येक भेदमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि वह मात्रिक प्रस्तार है तो, उसके प्रत्येक भेदमें उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने मात्राका प्रस्तार होगा। यदि वह वर्णिक प्रस्तार है तो उसके प्रत्येक भेदमें उतने ही चिन्ह आवेंगे जितने वर्णका प्रस्तार होगा।

मात्रिक प्रस्तारके सम कलमें पहला भेद गुरुओंका तथा विषम कलमें पहला भेद लघुसे प्रारंभ होता है।

वर्णिक प्रस्तारमें पहला भेद गुरुओंका ही रहता है।

वरण प्रस्तार विधि

दूहौ

वरण तणा प्रस्तार विधि, गुरु तळ लघू गिणंत।
उबरै सौ कीजै उरध, सब ही गुरू सुभंत॥ ४२

सूची लछण

सोरठौ दूहौ

तवौ अमुक प्रस्तार, भेद किता लघु आद भल।
अर लघु अंत उचार, गुर अंतर गुर आद गुण॥ ४३
आद अंत (फिर) लघु ऊचरै, आद अंत गुरु अक्ख।
सूचीसूं जद समझणौ, पेख आंक परतक्ख॥ ४४

---

४३. तवौ–कहो। भल–ठीक।
४४. पेख–देख कर। परतक्ख–प्रत्यक्ष।

(१) र्णिक प्रस्ता८ ३ वर्ण	(२) वर्णिक प्रस्तार ४ वर्ण	विषम कल (प्रस्तार ५ मात्रा)	सम कल (प्रस्तार ६ मात्रा)
ग SSS	१ SSSS	१ ISS	१ SSS
य ISS	२ ISSS	२ SIS	२ IISS
र SIS	३ SISS	३ IIIS	३ ISIS
स IIS	४ IISS	४ SSI	४ SIIS
त SSI	५ SSIS	५ IISI	५ IIIIS
ज ISI	६ ISIS	६ ISII	६ ISSI
भ SII	७ SIIS	७ SIII	७ SISI
न III	८ IIIS	८ IIIII	८ IIISI
	९ SSSI		९ SSII
	१० ISSI		१० IISII
	११ SISI		११ ISIII
	१२ IISI		१२ SIIII
	१३ SSII		१३ IIIIII
	१४ ISII		
	१५ SIII		
	१६ IIII		

मात्रा सूची विधि

पूरब जुगळ पहलां पढ़ी, संख्या मत्त सहास।
पूरण अंक नेड़ौ तिकौ, पूरब अंक प्रकास ॥ ४५
आद लघु, लघु अंतमें, जितरा है कवि जांण।
तिणसूं पूरब अंक ते, आद अंत गुरु आंण ॥ ४६

चौपई

पूरण अंकसूं तीजौ अंक, आद अंत लघु जिता निसंक।
जिणसूं तीजौ अंक जिताय, आद अंत गुरु जिता कहाय ॥ ४७

मात्रा सूची संख्या रूप

१	२	३	५	८	१३

अथ वरण सूची विधि

चौपई

वरण संख बे दुगणी वेस, सम लघु गुरुचा रूप सरेस।
पूरण निकट पुरव अंक होय, आद अंत लघु गुरु है सोय ॥ ४८
अंक तीसरौ पूरण हूंत, आद अंत लघु गुरुचौ कूंत।
सूची कौतक अरथस कीजै, तौ के आंन विधांन तवीजै ॥ ४९

वरण सूची संख्या रूप

२	४	.८	१६	३२

अथ ऊदिस्ट लछण

चौपई

बीयौ रूप लिख कहै बताय। किसौ भेद ऊदिस्ट कहाय ॥ ५०

---

४५. जुगळ–दो। नेड़ौ–नजदीक।
४६. आंण–लाओ।
४८. गुरुचा–गुरुका।
४९. गुरुचौ–गुरुका। कूंत–समझ। कौतक–शेष केवल कौतुकं। तवीजै–कहा जाता है।
५०. बीयौ–दूसरा।

अथ मात्रा ऊदिस्ट*

दूहा

मत ऊदिस्ट सुरूप लिख, पूरब जुगळ सिर अंक।
लघु सिर एकही अंक लिख, गुरु अध ऊरध अंक॥ ५१
गुरु सिर ऊपर अंक जे, विच प्रस्तार घटाय।
सेख रहै सौ जांण यम, भेद कहौ कविराय॥ ५२

वरण ऊदिस्ट†

दूहौ

आखर वरण उदीठ पर, दुगण अंकां देह।
ऊपरलां लघु अंकड़ां, यक वद भेद अखेह॥ ५३

---

५३. उदीठ–उद्दिष्ठ। अखेह–कहना।

*मात्रिक उद्दिष्ट—

मात्रिक उद्दिष्टमें जहां गुरुका चिन्ह हो उसके ऊपर और नीचे सूचीके अंक क्रमशः लिखो। लघुके ऊपर भी क्रमशः सूचीके अंक लिखो। गुरुके ऊपरके अक्षरोंको पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो तो भेद संख्या मालुम हो जावेगी।

उदाहरण, मात्रिक उद्दिष्ट

प्रश्न–बताओ ६ मात्राओंमें से यह। ऽ ऽ। कौनसा भेद है ?

उ०–पूर्ण सूची–१ २ ५ १३ पूर्णाङ्क १३
। ऽ ऽ।
३ ८

गुरुके चिन्हों पर २ और ५ हैं दोनोंका योग ७ हुआ। पूर्णाङ्क १३ में से ७ घटाने पर ६ शेष रहते हैं अतः यह छटा भेद है।

†वर्णिक उद्दिष्ट—

वर्णिक उद्दिष्टमें सूचीके अंक आधे आधे लिखो। उसके नीचे रूप लिखो। गुरु चिन्होंके ऊपर जो संख्या हो उसे पूर्णाङ्कमेंसे घटा दो। जो शेष रहेगा, वही उत्तर है।

उदाहरण

प्रश्न–बताओ ४ वर्णोंमें यह। ऽ ऽ। कौनसा भेद है ?

उ०–अर्ध सूची–१ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
। ऽ ऽ।

गुरुके चिन्होंके ऊपर २ और ४ हैं। दोनोंका योग ६ हुआ। ६को पूर्णाङ्क १६में से घटाया तो शेष १० रहे। अतएव १०वां भेद है।

अथ नस्ट लछ्छण

दूहौ

विण लखियां मात्रा वरण, पूछै भेद सुपात।
बुधबळसूं अखुं जेण विध, क्रमसौ नस्ट कहात॥ ५४

अथ मात्रा नस्ट*

कवित्त छप्पै

मात्रा नस्ट विधांन, कहत कविराज प्रमांणहु।
सब लघु कर तिण सीस, पूरब जुग अंकां ठांणहु॥
पैलौ पूछै भेद, अंक तिणरौ विलोप कर।
तिण लोपै फिर रहै सेस, सौ अंक लोप धर॥
पुरब जु अंक तिण अंकसूं, पर मिळाय गुरु कर कहौ।
औ मात्र निस्ट पिंगळ अखत, सुकवि 'किसन' यण विध लहौ॥५५

---

५४. विण लखियां–विना समझे। सुपात–(सुपात्र) कवि। बुधबळ–बुद्धिबल। अखुं–कहता हूँ

*मात्रिक नष्ट–

मात्रिक नष्टमें सूचीके पूरे-पूरे अंक स्थापित करो। छंदके पूर्णाङ्कसे प्रश्नाङ्क घटाओ, शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बांई ओरके जो जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो किन्तु जहां-जहां गुरु हों उनके आगेकी एक एक मात्रा मिटा दो।

प्रश्न–बताओ ६ मात्राओंमें ११वां भेद कैसा होगा ?

रीति–पूर्णाङ्क १३में से ११ घटाये, शेष २ रहे। २ में से २ ही घट सकते हैं अतः २ को गुरु कर दिया और उसके आगेकी मात्रा मिटा दी।

यथा–पूर्ण सूची–१ २ ३ ५ ८ १३
साधारण चिन्ह । । । । । ।

उ०–। ऽ । । । यही ११वां भेद है।

अथ वर्ण नस्ट विधि*

दूहौ

भाग चींतवौ वरण नव, लघु करि सम जिण वोड़ ।
विसम भागमें मेल यक, गुर कर कवि सिर मोड़ ॥ ५६

अथ सोड़स विधि मात्रा वरण प्रस्तार लिखण विधि कौतुकार्थे लिख्यते ।

वारता

एक तौ पिंगळ मत सुधौ प्रस्तार ऊपरासूं नीचौ लिख्यौ जाय सौ, ज्यौं ही सुद्ध प्रस्तार नीचासूं ऊंचौ लिख्यौ जाय जीनै प्रकारांत कहीजै । इतरैसूं आठ प्रकार तौ मात्रा प्रस्तार । हर आठ प्रकार ही वरण प्रस्तार छै जे कहै छैं ।

अथ नांम जथा

सुद्ध, मात्रा सुद्ध १, मात्रा सुद्ध प्रकारांतर २, मात्रा स्थांन विपरीत ३, मात्रा स्थांन विपरीत प्रकारांतर ४, मात्रा संख्या विपरीत ५, मात्रा संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६ मात्रा संख्या स्थान विपरीत ७, मात्रा संख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर ८, ए आठ मात्रा प्रस्तार विधि ।

***वर्णिक नष्ट—**

वर्णिक नष्टमें सूचीके अंक आधे-आधे लिखो । छंदके पूर्णाङ्कमेंसे प्रश्नाङ्क घटाओ । शेष बचे उसके अनुसार दाहिनी ओरसे बांई ओरके जो-जो अंक क्रमपूर्वक घट सकते हों उनको गुरु कर दो ।

प्रश्न—बताओ ४ वर्णोंमें ९वां रूप कौन सा होगा ?

रीति—पूर्णाङ्क ८×२=१६ में से ९ घटाये, शेष ७ रहे । ७ में से ४, २ और १ ही घट सकते हैं । इसलिए इन तीनोंको गुरु कर दिया ।

यथा—अर्ध सूची— १ २ ४ ८ पूर्णाङ्क १६
साधारण चिन्ह । । । ।
उ०—ऽ ऽ ऽ । यही नवां भेद है ।

दूसरा प्रकार—

जितने वर्णका वर्णिक नष्ट निकालना हो उतने ही अंकों तक प्रश्नाङ्कमें २का भाग देकर भागफलको क्रमशः बांई ओरसे रख दीजिये किन्तु जिन विषम संख्याओंमें २का भाग पूरा-पूरा नहीं जाता हो उनमें १ जोड़ देना चाहिए । सम संख्याके नीचे लघु और विषमके नीचे गुरु रखने पर उत्तर मिल जायगा ।

चार वर्णों का ९वां रूप—

रीति—९ ५ ३ २
ऽ ऽ ऽ । यही ऽ ऽ ऽ । उत्तर है ।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार लछण ।

दूहौ

अंत गुरु तळ लघु धरौ, आगै पंत समांण ।
ऊबरे सौ गुरु लघु धरौ, पाछै एह प्रमांण ॥ ५७

अथ मात्रा स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर ।

चौपई

अंत निकट लघु सिर गुरु धरौ, अधर पंत सम अग्र विचारौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, कळा थांन विपरीत कहावै ॥ ५८

अथ मात्रा संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर दोनूं भेळा कहै छै ।

चंद्रायणौ

आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै ।
जेम प्रकारांतर गुरु सिर लघु जांणजै ॥
धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर कीजियै ।
संख्या बिहुं प्रकार उलट्ट सुणीजियै ॥ ५९

वारता

संख्या विपरीतका आद लघुका अंतकौ लघु जींके नीचे गुरु करणौ । आगै उरध पंत, सम पंत, ऊबरे सौ लघु करणा । अथ मात्रा संख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर दोनूं भेळा कहां छां ।

चंद्रायणौ

अंत रेख तिण आद, हेठ गुरु अख्यजै ।
भल प्रकार गुरु अंत, सीस लघु भख्यजै ॥

---

५७. तळ–नीचे । पांत–पंक्ति । समांण–समान । एह–यह ।

५९. संनिध–पास । धुर–प्रथम । पछ–पश्चात् ।

६०. हेठ–नीचे । अख्यजै–कहिए । भख्यजै–कहिए ।

धुर सम पछ लघु गुरु लघू फिर धारजै।
संख्या थळ विपरीत उभय संभारजै॥ ६०

वारता

स्थांन विपरीतके सरव लघु कर अंत लघुका आद। लघु नीचे गुरु लखजै। आगै उरध पंगत सम पंगत करणो पाछै ऊबरे सौ सरव ही लघु करणा। इति अरथ।

मात्रा संख्या प्रकारांतरे आदरा गुरु सिर लघू धरजै। आगे पंगत नीचली पंगत समांन अर पाछै ऊबरे सौ दोय ऊबरे तौ गुरु करणौ नै तीन ऊबरे तौ गुरु करे नै लघु करणौ।

अरथ

प्रकारांतरे स्थांन विपरीतके सरव गुरु कर अंतका गुरुके सिर लघु धरणौ। आगे नीचली पंगत समांन पंगत करणी। पाछै एक ऊबरे तौ लघु करणौ, दोय ऊबरे तौ गुरु करणा, गुरु कर लघु करणौ। इति अरथ। इति अष्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार संपूरण।

अथ मात्रा अस्ट प्रकार नस्ट उदिस्ट कथन।

वारता

मात्रा सुधकौ अरु मात्रा सुद्धका प्रकारांतरकौ तौ निस्ट उदिस्ट आगे सनातनी कहै छै जेहीज जांणणा। हर छः प्रकारका फेर कहां छां।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत उदिस्ट विधि।

दूहा

थळ विपरीत उदिस्ट सिर, उलटा दीजै अंक।
गुरु सिर अंकां उरध अध, लघु सिर एकही अंक॥ ६१
गुरु सिर वाळा अंक गिणि, पूरण अंकसूं टाळ।
बाकी रहैस भेद कवि, वेडर कहे वताळ॥ ६२

---

६०. धुर–प्रथम। पछ–पश्चात्। थळ–स्थान। संभारजै–सम्हालना। लखजै–लिखिए। सनातनी–पूर्वाचार्य। हर–प्रत्येक।

६२. वेडर–निर्भय। वताळ–वतला कर।

मात्रा स्थांन विपरीत हर प्रकारांतकौ नष्ट उदिष्ट एकही छै । मात्रा स्थांन विपरीत भेद छठौ ।

१३	८	५	३	२	१

१३	५	२	१
		ऽ	।
।	ऽ	३	

भेद आठमौ स्थांन विपरीत उदिस्टकौ ।

१३	८	५	३	२	१
।	।	।	।	।	।

१३	५	३	२	१
।	ऽ	।	।	।

अथ मात्रा स्थांन विपरीत हर प्रकारांतर दोनूंकौ नस्ट कहै छै ।

चौपई

थळ विपरीत नस्ट कळ कीजै, दखिण उलट अंक क्रम दीजै ।
पूछ्यौ भेद पूरणसूं टाळै, पाछै रहैस लोप दिखाळै ॥
उलटै क्रम सिर अंकां आवै, पूरब मत्त पर मत्त मिळावै ।
गुरु कर रूप भेद सौ गावै, थळ विपरीत नस्ट यम थावै ॥ ६३

६३. थळ–स्थान । थावै–होता है ।

मात्रा सुद्ध प्रस्तार	मात्रा सुद्ध प्रस्तार-कौ प्रकारांतर नीचा सूं ऊंचौ लिख्यौ जाय छै	मात्रा स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार	मात्रा स्थांन विपरीत कौ प्रकारांतर प्रस्तार
ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ
।।ऽऽ	।।ऽऽ	ऽऽ।।	ऽऽ।।
।ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।
ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ
।।।।ऽ	।।।।ऽ	ऽ।।।।	ऽ।।।।
।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ।	।ऽऽ
ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	।ऽ।ऽ
।।।ऽ।	।।।ऽ।	।ऽ।।।	।ऽ।।।
ऽऽ।।	ऽऽ।।	।।ऽऽ	।।ऽऽ
।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।	।।ऽ।।
।ऽ।।।	।ऽ।।।	।।।ऽ।	।।।ऽ।
ऽ।।।।	ऽ।।।।	।।।।ऽ	।।।।ऽ
।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।	।।।।।।

मात्रा संख्या प्रस्तार विपरीत प्रस्तार	मात्रा संख्या विपरीतके प्रकारांतर प्रस्तार	मात्रा संख्या स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार	मात्रा संख्या स्थांन विपरीत प्रकारांतर कड़ौट फेर नीचा सूं ऊंचौ लिख्यौ जाय सौ प्रस्तार
I I I I I I	I I I I I I	I I I I I I	I I I I I I
S I I I I	S I I I I	I I I I S	I I I I S
I S I I I	I S I I I	I I I S I	I I I S I
I I S I I	I I S I I	I I S I I	I I S I I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I I I S I	I I I S I	I S I I I	I S I I I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
I I I I S	I I I I S	S I I I I	S I I I I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S S S	S S S	S S S	S S S

मात्रा संख्या विपरीत संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ज्यौं दोयांईकौ उदिस्ट कहूं छूं ।

दूहौ

सूधै क्रमदै अंक सिर, विध संख्या विपरीत ।
गुरु सिर अंकां एक विध, भेद उदिस्ट अभीत ।। ६४

अथ मात्रा संख्या विपरीत हर संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर यां दोयां कोई नस्ट कहूं छूं ।

चौपई

नस्ट संख्य विपरीत निदांन, मत्त सीस क्रम अंकसु मांन ।
पूछया भेद मांझ घट एक, बाकी रहै सगुरु कर देख ।। ६५

कड़ौट–पंक्तिके उलटनेकी क्रिया या भाव ।

६४. सूधै–सीधा । विध–विधि । अभीत–निर्भय । दोयां–दोनोंका ।

६५. मांझ–मध्य ।

पूरब मत्त पर मत्त मिळाय, गुरु करि नस्ट भेद यम गाय ॥ ६६

अथ मात्रा संख्या स्थांन विपरीत हर प्रकारांतर यां दोयांईकौ उदिस्ट कहूं छूं ।

चौपई

भेद सीस दखिण ब्रत अंक, दै उलटा क्रंम हूंत निसंक ।
गुरु सिर अंकां मझ सिवाय, एक मेळ कर भेद बताय ॥ ६७

अथ मात्रा संख्या स्थांन विपरीतकौ हर संख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर यां दोयांईकौ नस्ट कहूं छूं ।

चौपई

क्रम विपरीत अंक लघु सीस, दै पूछ्ल यक घाट करीस ।
रहैस पूरब जोड़ पर मत, नस्ट संख्य ऊलट थळ सत ॥ ६८

दूहा

आठ भांत प्रस्तार मत्त, नस्ट ऊदिस्ट प्रकार ।
'किसन' सुकवि जस रांम कज, रटिया मत अनुसार ॥ ६९

इति अस्ट प्रकार मात्रा प्रस्तार उदिस्ट नस्ट संपूरण ।

अथ अस्ट प्रकार वरण प्रस्तार विधि लिख्यते ।

वारता

वरण सुध प्रस्तारकौ तौ लछ्ण आगे कह्यौईज छै । अथ अस्ट वरण प्रस्तार नांम । यथा—

वरण सुध प्रस्तार १, वरण सुध प्रकारांतर २, नीचासूं ऊंचौ लख्यौ जाय जींकौ नांम प्रकारांतर कहियै, वरण स्थांन विपरीत ३, प्रस्तार नै कड़ौट फेरा-वणी सौ स्थांन विपरीत कहीजै । वरण स्थांन विपरोत प्रकारांतर ४, वरण

---

६६. यम–इस प्रकार । गाय–कह ।

६७. सीस–ऊपर । ब्रत–व्रत । सिर–ऊपर ।

६८. घाट–घटाना । करीस–करना । पर–आगेकी । सत–साथ ।

६९. मत–मात्रा । कज–लिए । मत–(मति)बुद्धि । कड़ौट–पंक्तिके उलटनेकी क्रिया या भाव । फेरावणी–उलटना ।

संख्या विपरीत ५, वरण संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर ६, वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ कड़ौट फेर ७, वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतरमें ग्रस्ट वरण प्रस्तारकौ तुकारथ लिखां छां ।

अथ वरण सुद्ध प्रस्तारका प्रकारांतरकौ लछण ।

चौपई

धुर लघुके ऊरध गुरु धरौ, आगे अरध पंत सम करौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आवै, वरण प्रकार यम सुध गावै ॥ ७०

अथ वरण स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार लछण ।

चौपई

अंत गुरु हेठै लघु आंणौ, जुगति अग्र ऊरध सम जांणौ ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु लेखौ, वरण स्थांन विपरीत विसेखौ ॥ ७१

अथ वरण स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतरकौ लछण ।

चौपई

अंत लघु सिर गुरु परठीजै, रूप अरध सम अग्र करीजै ।
ऊबरे सौ पाछै लघु लेखौ, प्रकारांतर उलट थळ पेखौ ॥ ७२

अथ वरण संख्या विपरीत लघवादिकसूं प्रस्तार चालै जींनै संख्या विपरीत कहीजै

चौपई

आद लघु तळ गुरु धरिये एम, तव उरध सम आगे तेम ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण, वरण संख्या विपरीत बखांण ॥ ७३

फेर–फिर । तुकारथ–पंक्तिका अर्थ ।

७०. धुर–प्रथम । ऊरध–ऊपर । पंत–पंक्ति । येम–इस प्रकार ।

७१. हेठै–नीचे । विसेखौ–विशेष ।

७२. सिर–ऊपर । परठीजै–रखिये । पेखौ–देखिए ।

वरण संख्या विपरीतकौ प्रकारांतर लछण ।

चौपई

धुर गुरु सीस प्रथम लघु धारौ, अग्र अरध सम पंत उचारौ ।
ऊबरे सौ पाछै गुरु देह, वरण प्रकार उलट थळ एह ॥ ७४

अथ वरण संख्या स्थांन विपरीत कड़ौट फेर लछण ।

चौपई

अंत लघू तळ गुरु धरि एहौ, उरध पंत सम अग्र अछेहौ ।
ऊबरे सौ पाछै लघु आंण, संख्या वरण उलट थळ जांण ॥ ७५

अथ वरण संख्या विपरीत प्रकारांतर लछण ।

चौपई

थिर गुरु अंत सीस लघु थाप, अग्र अरध सम पंत अमाप ।
वचै स पाछै गुरु करिवेस, संख्या उलट प्रकार सु देस ॥ ७६
पुणिया आठ वरण प्रस्तार, वडा सुकव लीजियौ विचार ॥ ७७

इति अस्ट विधि वरण प्रस्तार संपूरण ।

---

७४. एह–यह ।

७५. एहौ–ऐसा । अछेहौ–अच्छा ।

७६. थाप–स्थापित कर । करिवेस–करिये । देस–दीजिये ।

७७. पुणिया–कहे ।

अथ अष्टविध वरण-प्रस्तार

वरण सुद्ध प्रस्तार	वरण सुद्ध प्रस्तार प्रकारांतर	वरण स्थांन विपरीत कड़ौट फेर प्रस्तार	वरण स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर कड़ौट फेर
S S S S	S S S S	S S S S	S S S S
I S S S	I S S S	S S S I	S S S I
S I S S	S I S S	S S I S	S S I S
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S S I S	S S I S	S I S S	S I S S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I I I S	I I I S	S I I I	S I I I
S S S I	S S S I	I S S S	I S S S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I I S I	I I S I	I S I I	I S I I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I S I I	I S I I	I I S I	I I S I
S I I I	S I I I	I I I S	I I I S
I I I I	I I I I	I I I I	I I I I

वरण संख्या विपरीत प्रस्तार	वरण संख्या विपरीतके प्रकारांतर	वरण संख्या विपरीतकौ स्थांन विपरीत प्रस्तार	वरण संख्या विपरीत स्थांन विपरीतकौ प्रकारांतर प्रस्तार
I I I I	I I I I	I I I I	I I I I
S I I I	S I I I	I I I S	I I I S
I S I I	I S I I	I I S I	I I S I
S S I I	S S I I	I I S S	I I S S
I I S I	I I S I	I S I I	I S I I
S I S I	S I S I	I S I S	I S I S
I S S I	I S S I	I S S I	I S S I
S S S I	S S S I	I S S S	I S S S
I I I S	I I I S	S I I I	S I I I
S I I S	S I I S	S I I S	S I I S
I S I S	I S I S	S I S I	S I S I
S S I S	S S I S	S I S S	S I S S
I I S S	I I S S	S S I I	S S I I
S I S S	S I S S	S S I S	S S I S
I S S S	I S S S	S S S I	S S S I
S S S S	S S S S	S S S S	S S S S

अथ अस्ट विध वरण प्रस्तार ज्यांका उदिस्ट, नस्ट लिखां छां ।

वारता

वरण सुद्ध १ हर वरण सुद्धका प्रकारांतरकौ तौ सदा व्है छै ज्यूं हींज छै । हर वाकीरा छ प्रकारकौ लिखां छां ।

अथ वरण स्थांन विपरीतका प्रकारांतर दोयकौ उदिस्टकौ लछण ।

चौपई

ऊलट क्रम दखिणसूं अंक, रूप वरण सिर धरौ नसंक ।
ऊपर गुरु अंक जे आवै, पूरण अंक मधि तिके घटावै ॥ ७८
बाकी रहैस भेद बिचार, सब तज भज रावौ गुण सार ॥ ७९

अथ वरण स्थांन विपरीत ईंका प्रकारांतरकौ नस्ट कहां छां ।

दूहौ

दखिण क्रमसूं भाग दै, सम लघु रूप सराह ।
विखम एक दे गुरु करौ, उलट नस्ट आ राह ॥ ८०

अथ वरण संख्या विपरीतकौ हर ईंका प्रकारकौ उदिस्ट कहां छां ।

दूहौ

यक सूं दुगणा रूप सिर, दै क्रम अंक कवेस ।
गुरु सिर अंकां एक मिळ, आखव रूप असेस ॥ ८१

अथ वरण संख्या विपरीत हर प्रकारांतर दोनूंकौ नस्ट कहां छां ।

चौपई

सूधा क्रमसूं कळपौ भाग, विखम थांन लघु करि अनुराग ।
विखम एक मिळ आध कराय, समथळ गुरू विखम लघु थाय ॥ ८२

व्है छै–होते हैं ।
७८. नसंक–निःसंदेह । मधि–मध्य । कहां छां–कहता हूं ।
८०. आ–यह । राह–तरीका ।
८१. कवेस–कवीश । आखव–कह । असेस–अपार ।
८२. कळपौ भाग–भाग करो ।

विधयण नस्ट संख्य विपरीत, बुध बळ समझौ सुकवि बिनीत ॥ ८३

अथ वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ हर ईंका प्रकारांतरकौ उदिस्ट कहां छां ।

चौपई

रूप सीस दखिण ब्रत अंक, दै उलटै क्रमसूं कवि निसंक ।
गुरु सिर अंकां एक मिळाय, भेद कहौ कवि 'किसन' सुभाय ॥ ८४

अथ वरण संख्या स्थांन विपरीतकौ हर ईंका प्रकारांतरकौ दोन्यांकौ नस्ट कहां छां ।

चौपई

भाग कळप दखिण कर ओर, विखम भाग लघु करौ सतौर ।
एक भेळ वांटा कर दोय, सम थळ गुरू विखम लघु होय ॥ ८५
नस्ट उदिस्ट आठ परकार, निज कहि 'किसन' वरण निरधार ।
तू अन आळ जंजाळ तियाग, रघुबर सुजस सार चित राग ॥ ८६

अथ सोड़स प्रस्तार मात्रा वरणका सुगम लिखण विध ।

दूहा

सुध सुध विपरीत थळ, संख्या उलट प्रकार ।
संख्या उलट प्रकार थळ, गुरु लघु पच्छु विचार ॥ ८७
सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारांत बिहुं जांण ।
संख्य विपरजय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु आंण ॥ ८८

वारता

सुधकै १ । सुध स्थांन विपरीतकै २ । संख्या विपरीतका प्रकारांतरकै ३ ।

---

८४. सीस–ऊपर । ब्रत–वृत्त । हर ईं–प्रत्येक । दोन्यांकौ–दोनोंहीका ।

८५. सतौर–ठीक । वांटा–विभाजन । थळ–स्थान ।

८६. परकार–प्रकार । अन–अन्य । आळजंजाळ–झूठा मायामोह । तियाग–त्याग । सार–तत्व । राग–अनुराग ।

८७. पच्छु–पीछे ।

८८. बिहुं–दोनों । विपरजय–विपर्यय । वारता–गद्य ।

संख्या स्थांन विपरीतका प्रकारांतरकै ४ । सम ऊबरे तौ गुरु करणा, बिसम ऊबरे तौ गुरु करनै लघु करणा । सुधका १ । सुध स्थांन विपरीतका प्रकारांतर दोयांईंके २ । हर संख्या विपरीतके ३ । हर संख्या स्थांन विपरीतके ४ । श्रां च्यार प्रस्तारांके ऊबरे, सौ सरवे पाछै लघु करणा ।

इति प्रस्तार सुगम विध ।

मात्रा वरण उदिस्ट नस्ट सुगम लछण ।

दूहा

सुद्ध बिहुं उदिस्ट नस्ट, सुद्धा क्रमसूं श्रंक ।
बे संख्या बिपरीतरै, निज सुद्ध श्रंक निसंक ॥ ८९

बे सुद्ध थळ विपरीतरै, बि थळ संख्य विपरीत ।
श्रां चहुं निस्ट उदिस्ट सिर, श्रंक उलट क्रम दीत ॥ ९०

क्रम संख्या विपरीत बे, बि क्रम बि थळ बिपरीत ।
पूछ ल यक घट नस्ट गुरु, वध उदिस्ट कहीत ॥ ९१

सुद्ध बे सुद्ध थळ उलट बे, क्रम बी क्रम धर श्रंक ।
पूछ सेस घट नस्ट कर, वध उदिस्ट गुरु श्रंक ॥ ९२

इति रघुवरजसप्रकास ग्रंथे श्राढ़ा किसना कृत मात्रा वरण सोड़स प्रस्तार उदिस्ट निरूपण संपूरण ।

श्रथ मेर लछण ।

दूहा

मुण श्रमका प्रस्तार मझ, सरब गुरू केह ।
एक एक घट फिर श्रखौ, सब लघु घट लघु जेह ॥ ९३

ऊबरे–शेष रहते हैं । श्रां–इन ।
८९. बिहुं–दोनों ।
९०. बि–दो । संख्य–संख्या । सिर–ऊपर । दीत–दीजिये ।
९१. वध–विधि । कहीत–कहते हैं ।
९२. घट–घटाना ।
९३. मुण–कह । श्रमका–इसका । श्रखौ–कहो । जेह–जिस ।

पूछै यूं अन कवि प्रसन, थाप मेर जिण ठांम।
प्रथम मेर मत कवि परठ, रट कीरत रघुरांम ॥ ९४

अथ मात्रा मेर विध।

कवित छप्पै

कर सम बे बे कोठ, अंत यक अंक भरीजै।
आद कोठ यक अंक, दुवौ तिण तर हर दीजै॥
ऊरध जुगळ फिर अंक, देह पैलां कोठां दख।
विध मध कोठा भरण, लछ आखंत सुकवि लख॥
सिर अंक त्याग दछ अंक सौ, समिळ लेख अध कोठ सुज।
कह मत मेर यण विध 'किसन', तूं रट राघव आंन तज॥ ९५

---

९४. यूं-इस प्रकार। अन-अन्य। प्रसन-प्रश्न। थाप-स्थापित कर। मेर-मेरु। ठांम-स्थान। परठ-रच।

९५. कोठ-कोठा। दुवौ-दूसरा। तिण-उस। तर-तल, नीचे। ऊरध-उर्ध्व। दख-कह। विध-विधि। मध-मध्य। लछ-लक्षण। आखंत-कहते हैं। समिळ-साथ। अध-नीचे। सुज-वह। आंन-अन्य।

अथ वरण मेर भरण विध

अथ एकादस मात्रा मेर स्वरूप ।

१	१						भेद १
२	१	१					भेद २
३	२	१					भेद ३
४	१	३	१				भेद ५
५	३	४	१				भेद ८
६	१	६	५	१			भेद १३
७	४	१०	६	१			भेद २१
८	१	१०	१५	७	१		भेद ३४
९	५	२०	२१	८	१		भेद ५५
१०	१	१५	३५	२८	९	१	भेद ८९
११	६	३५	५६	३६	१०	१	भेद १४४

अथ पताका लछण ।

दूहौ

मुणिया भेळा मेरमें, गुरु लघु रूप गिनांन ।
जपौ जेण थळ जूजुवा, थपि पताक कह थांन ॥ ९६

अथ मात्रा पताका विध ।

कवित छप्पै

अंक रीत उदिस्ट देहु, पूरण अंक बांमह ।
अंक पूरब ता अंक मेटि, क्रम क्रम विधि तांमह ॥
एक अंक लोपंत, एक गुरु ग्यांन गिणीजै ।
दोय अंक ओपंत, दोय गुरु ग्यांन भणीजै ॥
त्रय लोप त्रि गुरु चव लोप चव, गुरु गियांन यम जांणियै ।
लिख्य मेर संख्य ध्वज मत सौ, जस राघव ध्वज जांणियै ॥ ९७

---

९६. मुणिया—कहे । भेळा—शामिल । गिनांन—ज्ञान । जूजुवा—पृथक्-पृथक् । थपि—स्थापित कर । थांन—स्थान ।

९७. देहु—देकर । बांमह—वायां । तामह—उसमें । लोपंत—लोप होते हैं । ओपंत—शोभा देता है । चव—कहो । चव—चार ।

१																				
२	४	९	२२	५६																
३	६	७	१४	१५	१७	३५	३६	३८	४३											
५	१०	११	१२	२३	२४	२५	२७	२८	३०	५७	५८	५९	६१	६२	६४	६९	७०	७२	७७	
८	१६	१८	१९	२०	३७	३९	.	४०	४१	४४	.	४५	४६	.	४८	.	४९	५१	.	
१३	२६	२९	३१	३२	३३	६०·	६३	६५	६६	६७	७१	७३	७४	७५	७८	७९	८०	८२	८३	८५
२१	४२	४७	५०	५२	५३	५४														
३४	६८	७६	८१	८४	८६	८७	८८													
५५																				
८९																				

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताका

दस मात्राकी पताकाका दूसरा रूप यह भी होता है।

१	१५		३५		२८		९		१
SSSSS	IISSSS		IIIISSS		IIIIII SS		SIIIIIIII		IIIIIIIIII
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
			८ ६१		२१		५५		
	३ ३५		१०		२६		६८		
	४		११ ६२		२९		७६		
	६ ३६		१२ ६४		३१		८१		
	७ ३८		१६ ६९		३२		८४		
	९		१८		३३		८६		
	१४ ४३		१९ ७०		४२		८७		
	१५		२० ७२		४७		८८		
	१७ ५६		२३ ७७		५०				
	२२		२४		५२				
			२५		५३				
			२७		५४				
			२८		६०				
			३०		६३				
			३७		६५				
			३९		६६				
			४०		६७				
			४१		७१				
			४४		७३				
			४५		७४				
			४६		७५				
			४८		७८				
			४९		७९				
			५१		८०				
			५७		८२				
			५८		८३				
			५९		८५				

अथ मात्रा पताका अन्य विध ।

दूहा

अंक मत्त उदिस्ट लिख, समझ विचार सुजांण ।
वळे पताखा दंड विच, विध एही बुधवांण ॥ ९८

विरळी पूरण अंक विण, बे बे पंकत बंध ।
ऊपरली बे पांतरौ, आंक उपंत समंध ॥ ९९

असौ अंक पूरण अंकसूं, परठव तीजी पंत ।
गुणीयण कहणौ गुरु लघु, पहली तरह पढ़ंत ॥ १००

अन्य प्रकार नवीन मत दस मात्रा पताका स्वरूप ।*

---

९८. वळे–फिर । बुधवांण–बुद्धिमान् ।

९९. पांत–पंक्ति । उपंत–उपांत्य । समंध–सम्बन्ध ।

१००. परठव–रच । गुणीयण–कवि ।

---

* दूसरे प्रकारसे सप्त मात्रा पताकाके स्वरूपकी तरह १० मात्रा पताकाका स्वरूप भी निकाला जा सकता है ।

अथ सप्त मात्रा पताका स्वरूप ।*

१	२	३	५	८	१३	२१
२		५		१३		
४		६		१६		
९		७		१८		
		१०		१९		
		११		२०		
		१२				
		१४				
		१५				
		१७				

---

* ७ मात्राओंकी पताका निम्न प्रकारसे भी लिखी जाती है ।

७ मात्राओंकी पताका

१	२१									
६	८	१३	१६	१८	१९	२०				
१०	३	५	६	७	१०	११	१२	१४	१५	१७
४	१	२	४	९						

अथ वरण मेर भरण विध ।

दूहौ

संख्या अक्खर कोठ सम्झ, एकौ आदर अंत ।
सूंन कोठ सिर अंक बे, समिल लेख अध संत ॥ १०१

अथ वरण मेर खंड विध ।

दूहौ

परठ दच्छ सुधी पंगत, उत्तर चढ़ा उतार ।
आद अंत भर एकड़ौ, आंन अग्र उणहार ॥ १०२

अथ सप्त वरण मेर स्वरूप ।

सप्त वरण मेर ।

२								
१	१							भेद २
१	२	१						भेद ४
१	३	३	१					भेद ८
१	४	६	४	१				भेद १६
१	५	१०	१०	५	१			भेद ३२
१	६	१५	२०	१५	६	१		भेद ६४
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१	भेद १२८

---

१०२. उणहार—समान ।

अथ वरण खंड मेर स्वरूप

							१
						१	१
					१	२	१
				१	३	३	१
			१	४	६	४	१
		१	५	१०	१०	५	१
	१	६	१५	२०	१५	६	१
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१

प्राचीन मत च्यार वरण पताका स्वरूप

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

अथ वरण पताका विध ।

दूहा

यक दौ च्यार सु आठ विध, अंक वरण उदिच्छ ।
पुरण अंकसूं वांम तिण, परलौ लोपव पच्छ ॥ १०३

एक अंक लोपै तिकण, पंत एक गुरु ग्यांन ।
दोय अंक दु गुरू त्रियंक, तीन गुरू मन मांन ॥ १०४

१									
२	३	५	९	१७					
४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५
८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९
१६	२४	२८	३०	३१					
३२									

अथ वरण पताका नवीन मत अन्य विध सुगम ।

दूहा

वरण पताका आंन विध, अंक उदिस्ट विधांन ।
पूरण अंक संनिधि जिकौ, पूरब अंकसु मांन ॥ १०५

पूरब अंक सिर अंकसूं, जोड़ अंक गिण जेह ।
सौ पूरणसूं दूसरी, पंकत धरौ सप्रेह ॥ १०६

पूरब अंक सिर पंतसूं, पह भर छेल्ही पंत ।
त्रतीय अंक गुण पुब्बसूं, पंत दुती भर संत ॥ १०७

१०५. संनिधि—निकट ।

१०६. सप्रेह—सप्रयत्न ।

१०७. सिर—ऊपर । पंत—पंक्ति । पह—प्रथम । छेल्ही—अंतिम । पुब्बसूं—पूर्वसे । दुती—द्वितीय । संत—सज्जन ।

यण विध पूरब अंक जुड़, सिर पंकतरा अंक ।
वरण पताका नवीन विध, सूधौ मत निरसंक ॥ १०८

अथ मरकटी लखण कथन ।

छप्पै

किव पूछै जौ कोय, ग्यांन खट भांत एक थळ ।
जिणरी अखु' जुगत, सुणौ कवि सुमति सउज्जळ ॥
किती व्रत्तिके भेद, मात्र कितरीके वरणह ।
कितरा गुरु लघु किता, रटौ हिक ठौड़ सु निरणह ॥
मांडजै तेण पुळ मरकटी, खट विध ग्यांन दिखाइयै ।
'किसनेस'सुकव धन जनम किव,गुण जौ राघव गाइयै ॥१०९

अथ मात्रा मरकटी विध कथन ।

कवित छप्पै

पंकत खट करि प्रथम, संख्य मत्ता कोठा सम ।
पांत व्रत्त भर प्रथम, एक दौ त्रय चव यण क्रम ॥
पूरव जुगळ भर भेद पंत, त्री चवथ पंच तज ।
पंत छटी भर पहल, एक बे अंक परठ सुज ॥
धर बीय सीस अकौं सधर, बियौ भेद पंकत सुमिळ ।
लख बीया अग्र पांचौं सुलछं, पांत छठी यम भर प्रघळ ॥ ११०

आद सुन्य गुरु पंत, अंक अन गुरु लघु आरख ।
गुरु लघु पंकति गिणौ, वरण पंकत भर बेधख ॥

---

१०८. निरसंक–निशंक ।

११०. पांत–पंक्ति । त्रय–तीन । चव–चार । यण–इस । त्री–तीन । चवथ–चौथा । बे–दो । परठ–रख । बीय–दूसरा । बियौ–दूसरा । सुलछं–अच्छे लक्षण । प्रघळ–अच्छी प्रकार ।

१११. आरख–समझ । बेधख–निर्भय ।

व्रत भेद गुण विन्हैं पंत, विच मत्त पंत धर।
यम खट पंकत सुकवि, सुमत हूंता पूरण भर॥
मरकटी मत्त यम 'किसन' मुण, खट विध ग्यांन सु एक थळ।
जनम कर सफळ पायौ जिकौ, आख क्रीत रघुबर अमळ॥ १११

अथ दस मात्रा मरकटी स्वरूप

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०

अथ वरण मरकटी भरण विध

कवित छप्पै

प्रथम परठ खट पंत, कोठ वरणां समांन कर।
व्रत पंत यक दोय तीन, चव पंच सस्ट भर॥
भेद पंत बे च्यार आठ भर दुगुण अंक भण।
व्रत्ति भेद गुण बिहुं, वरण वंकत चौथी वण॥
वरण पंत अंक कर अरध धर, गुरु लघु पंकत भर गहर।
गुरु वरण पंत जै अंक मिळ, भल मत पंकत त्रतीय भर॥ ११२

इति वरण मरकटी।

१११. विन्हैं—दोनों। हूंता—से। मुण—कहना। एक थळ—एक स्थान। आख—कह। क्रीत—कीर्ति। अमळ—निर्मल।

११२. कोठ—कोष्ठक। व्रत—वृत। बिहुं—दो। गहर—गंभीरता।

अथ अष्ट बरण मरकटी स्वरूप ।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७	८
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१ ४४	३०७२
वरण	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६	२०४८
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४

अथ सात मात्रा मरकटी स्वरूप ।

वृत्ति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८
लघु	१	२	५	१	२०	३८	७१

इति मात्रा वरण सोड़स करम संपूरण ।

अथ मात्रा व्रत्ति वरणण

दूहा

मत्त व्रत्तमें सुकव मुण, मात्र प्रमांण मुकांम।
आवै समता आखिरां, वरण व्रत्त जिण ठांम॥ १
मत्त व्रत हिक अह मुणी, पढ़ि सौ च्यार प्रकार।
मत्त छंद उप छंद पद, असम सुदंडक धार॥ २

छंद चंद्रायणौ *

लग मत्ता चौवीस छंद मत्त लेखजै।
सुज यां अधिका मत उपछंद विसेखजै॥
वरण मत सम नहीं असम पद जांणजै।
बे छंदां मिळ दंडक मत्त बखांणजै॥ ३

अथ मात्रा छंद तंत्र गमक छंद

पंच मत, गमक सत।
सीत बर, रांम रर॥ ४

छंद बांम छ मात्रा

छ मत 'बांम' समरि स्यांम।
झूठ धंध, मन म बंध॥ ५

---

१. मुकांम–स्थान। आखिरां–अक्षरोंमें। ठांम–स्थान।
२. हिक–एक। अह–शेषनाग। मुणी–कही।
३. लेखजै–समझिये।
४. सत–सत्य। रर–राम शब्दकी ध्वनि।
५ छ–६, है। मत–मात्रा, मति। बांम–एक छंदका नाम, स्त्री। स्यांम–स्वामी, ईश्वर। धंध–सांसारिक प्रपञ्च। म–मत।

रे मूर्ख! तेरी बुद्धि स्त्रीमें है। तू सांसारिक झूठे प्रपञ्चोंमें अपने मनको मत फँसा और ईश्वरका स्मरण कर।

---

* एक मात्रासे २४ मात्रा तकके पद्यको छंद कहते हैं। २४ मात्रासे अधिक को उपछंद तथा छंद और उपछंदके मेलको दंडक छंद कहते हैं। मतान्तर से ३२ मात्राके छन्दको भी दंडक कहते हैं।

छंद कंता सात मात्रा

कळ सत 'कंत', जिण जगणंत ।
रट रघुराय, थिर सुख थाय ।। ६

दूहौ

सात मत्त पद प्रत पड़ै, सुगति छंद सौ थाय ।
आठ मत्त अंतह तगण, पगण छंद कहवाय ।। ७

छंद सुगति

भूप रघुबर, सझत धनु सर ।
जूझ मंडे, दैंत दंडे ।। ८

छंद पगण अस्ट मात्रा

रांम महराज, करण जन काज ।
कोट रवि क्रांत, देह दुति वंत ।। ९

छंद मधु-भार

चव कळ जगांण, मधु भार जांण ।
भजि औध भूप, रवि कोट रूप ।।
श्रीरांमचंद्र, बिबुधेस बंद ।
तन दीध तास, जपि क्रीत जास ।। १०

---

६. **कळ**–मात्रा, संसार । **सत**–सात, सत्य । **जिण जगणंत**–जिसके अन्तमें जगण होता हो । जिसमें सारा जग विलीन होता हो । **थिर**–स्थिर । **थाय**–होता है ।

संसारमें सत्य केवल ईश्वर है जिसमें ही जगत विलीन होता है । अतः हे मन ! तू रामचन्द्रजीको रट जिससे तेरे सब सुख स्थिर हो जायें ।

७. **पद प्रत पड़ै**–प्रत्येक चरणमें हो ।

८. **जूझ**–युद्ध । **मंडे**–रचा । **दैंत**–दैत्य । **दंडे**–दण्ड दिया ।

९. **क्रांत**–कांति । **दुतिवंत**–दीप्तिमान् ।

१०. **चव**–चार, कह । **कळ**–मात्रा, दुःख । **जगांण**–जिसके अंतमें जगण हो, संसार । **मधुभार**–एक छंद का नाम (मधु–नशा । भार–बोझ) ।

अथ नव मात्रा छंद

छंद रसकल

नौ मात जैरै, गुरु अंतपै रै।
रसकळ सूछंद, भज्जि कवसलैंद ॥ ११

अथ दस मात्रा छंद

छंद दीपक

मुण पाय दह मात, दीपक्क सुखदात।
जीहा अठूंजांम, संभार स्री रांम ॥ १२

इग्यारे मात्रा छंद

छंद रसिक

चव लघु सिव मत चरण।
वळ खट पय तिण वरण॥
रसिक जिकण जग रटत।
मुण रघुबर अघ मटत॥
धनख धरण धुर धमळ।
'किसन' समर मुख कमळ॥ १३

बिबुधेस–इंद्र। दीध–दिया। तास–उसने। क्रीत–कीर्ति। जास–जिसकी।

हे मन! तू इस संसारको दुःखका घर और सांसारिक नशेको बोझ समझ। देवताओंके स्वामी इन्द्रके वन्दनीय और करोड़ों सूर्योंके समान तेजस्वी अयोध्याके स्वामी श्रीरामचंद्रजी, जिन्होंने तुझे यह शरीर दिया है उनका स्मरण एवं सदैव कीर्ति-गान कर।

११. नौ–नव, न। मात–मात्रा। जैरै–जिसके। अंतपै–अंतमें। कवसलैंद–कौशलेन्द्र, श्री रामचंद्र।

१२. पाय–चरण। दह–दस। जीहा–जिह्वा। अठूंजांम–अष्टयाम। संभार–स्मरण कर।

१३. चव–कह। सिव–ग्यारह। मत–मात्रा। वळ–फिर। तिण–उस। जिकण–जिसको। मटत–मिटते हैं। धनख धरण–धनुर्धारी। धुर–बोझ। धमळ–वहन करने वाला।

छंद आभीर

जै पय सिव मत जांण।
अंत पयोधर आंण॥
छंद आभीर अछेह।
रट रघुनाथ अरेह॥
हर जस गावण हार।
धन मांनुख तन धार॥१४

बारै मात्रा छंद

उद्धौर

कळ भांण पाय कहंत।
उद्धोर जिण जगणंत॥
रे किसन भजि सियरांम।
धांनंख धर सुख धांम॥१५

त्रयोदस मात्रा छंद

छंद अनांम

तेरै मत्त गुर लघु अंत।
किव छंद अनांम कहंत॥
रट सीता नायक रांम।
करौ चित तणा सिध कांम॥१६

---

१४. जै–जिस। पय–चरण। सिव–ग्यारह। पयोधर–मध्यगुरुकी चार मात्राका नाम ।ऽ।।
अछेह–अखंड। अरेह–निष्कलंक।

१५. भांण–(भानु) बारह। पाय–चरण। जगणंत–जिसके अंतमें जगण हो।

१६. किव–कवि।

चतुरदस मात्रा छंद

छंद हाकल

त्रै दुज गुर कळ चवद तठै।
जांणौ हाकळ छंद जठै॥
भव सागर तर रांम भजौ।
तै विण आंन उपाय तजौ॥ १७

छंद झंपताल

गुर अंत मत चवदह गिणौ।
भल झंपताळी कवि भणौ॥
रघुनाथ जेण रिझावियौ।
पद उरध तै कवि पाइयौ॥ १८

पंचदस मात्रा छंद

छंद जैकरी

कळ दह पंच जांण जैकरी।
दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी॥
भज भज सीता राघव भई।
दस सिर जेता अघ हर दई॥ १९

छंद चौपई

पद दस पंचह मत्त प्रमांण, जगण अंत चौपई सजांण।
पायौ जै धन मांनव पिंड, आखै राघव क्रीत अखंड॥ २०

---

१७. त्रै–तीन। दुज–४ मात्रा। तै विण–उसके बिना। आंन–अन्य।
१८. भल–ठीक। रिझावियौ–प्रसन्न किया। उरध–ऊर्ध्व। पाइयौ–प्राप्त किया।
१९. दह–दस। दुज–४ मात्रा। मुर–तीन। प्रिय–दो मात्रा। जेता–विजयी।
२०. पायौ–प्राप्त किया। जै–जो। पिंड–शरीर। आखै–कह। क्रीत–कीर्ति।

सौड़स मात्रा छंद

दूहौ

च्यार चतुकळ सोळमत, सगण अंत पय साज ।
सिंह बिलोकण छंद सौ, रट कीरत रघुराज ॥ २१

छंद सिंह विलोकण

धन धन हरि चाप निखंग धरी ।
धर सील सधर क्रत ऊंच करी ॥
करतार करां जग झौक जपै ।
जय क्रती जिकै खळ पाप खपै ॥ २२

छंद चरना कुलक

सौ पदकूळ पय मत्त सोळै ।
अंतक सूं निरभै हर ओळै ॥
जै कज हे किव रांम जपीजै ।
जांण करंजुळ आयुख छीजै ॥ २३

छंद अरिल

दौ लघु अंत पयं मत्त खोड़स ।
छंद अरिल्ल विना हर खोड़स ॥
केसव नांम विना अणभै कर ।
कौसळनंद जनं नरभै कर ॥ २४

---

२१. सौ–(सः) वह ।
२२. धन–धन्य । निखंग–(निषंग) तर्कश । सधर–द्रढ़, अटल । क्रत–कार्य । ऊंच–श्रेष्ठ । झौक–धन्य-धन्य । जयक्रति–विजयी । जिकै–जिसके । खळ–दुष्ट । खपै–नाश होते हैं ।
२३. सौ–उसके । पदकूळ–चरनाकुल । अंतक–यमराज । हर–(हरि) ईश्वर । ओळै–ओट । जै–जिस । कज–लिये । करंजुळ–हाथका जल । आयुख–आयु । छीजै–नष्ट होनी है ।
२४. अणभै–निर्भय । जनं–भक्त । नरभै–निर्भय ।

छंद पाद्धरी

अख मत्त सोळ यक जगण अंत ।
पाद्धरी छंद कवि जे पढ़ंत ॥
राजाधिराज माराज रांम ।
ते ताज सीस आलम तमांम ॥
'अरिहंत' भरत अग्रज अहेस ।
जांनुकीकंत मतिवंत जेस ॥
तन स्यांम घणा घण रूप ताय ।
पट पीत बरण तड़िता प्रभाय ॥
आजांणबाहु अद्वितीय अंग ।
निज पांण बांण धनु कटि निखंग ॥
सीय बांम अंग मुख अग्र सेख ।
बजरंग पाय सेवत बिसेख ॥
इण रूप ध्यांन निज अवध ईस ।
कर भजन 'किसन' निस दिन कवीस ॥ २५

छंद बै अख्यरी

गुरु लघु अनियंम सोळ मता गण ।
छंद बै आखरी सोय बिचच्छण ॥
दाटक रांम आलाटक दंडण ।
हाटक कोट अधीस विहंडण ॥

---

२५. आलम–संसार । अरिहंत–शत्रुघ्न । अहेस–लक्ष्मण । मतिवंत–बुद्धिमान् । घणाघण–(घनाघन) बादल । तड़िता–बिजली । प्रभाय–चमक । आजांणबाहु–आजानुबाहु । पांण–(पांणि) हाथ । सेख–लक्ष्मण । बजरंग–हनुमान । पाय–चरण ।

२६. अनियंम–नियम नहीं । बिचच्छण–विचक्षण । दाटक–समर्थ । आलाटक–दुष्ट । दंडण–दंड देने वाला । हाटक–स्वर्ण । कोट–गढ़ । अधीस–स्वामी । विहंडण–नष्ट करने वाला ।

आस्त्रय आय भभीखण आतुर।
बेख ब्रवी जिण लंक सियाबर॥
एक घड़ी मझ दास उधारै।
धांनुंखधार बडा व्रद धारै॥
सौ नित गाव 'किसन' सुभायक।
नाथ अनाथ धणी रघुनायक॥ २६

छंद रड्डु

सप्तदस मात्रा

दूहौ

कीजै दूहौ प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय।
तिथ रिव तिथ सिव तिथ, सुपय रड्डु छंद कहाय॥ २७

छंद ग्रंथां तरे चूडामण नांम

धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयण सिरताज।
भजियां जन कारक अभै, जै राघव माहराज॥
राज भभीखण लाज राखण, सरणागत साधारण।
धनंख सायक भुजां धारण, मह असुर खळ मारण॥
जांनुकीवर मरम जांणंग, तेग अरेसां तायक।
'किसन' भज जन मांन रखके, दांन अभै वरदायक॥ २८

---

२६. आतुर–दुखी। बेख–देख। ब्रवी–इनायत की। मझ–मध्य। दास–भक्त। धांनुखधार–धनुषधारी। व्रद–विरुद। सुभायक–सुरुचिकर। धणी–स्वामी।

२७. तिथ–१५। रिव–१२। सिव–११।

२८. त्रैभोयण–त्रिभुवन। साधारण–रक्षा करने वाला। मह–(महि) पृथ्वी। मरम–मर्म। जांणंग–जानने वाला। अरेसां–(अरि+ईस) शत्रु। तायक–नाश करने वाला।

नोट—सप्तदस मात्राके रड्डु छंदका लक्षण जैसा ग्रंथकारने दिया है उसके अनुसार उदाहरण नहीं है, क्योंकि सत्रह मात्रा किसी भी चरणमें नहीं हैं।

अथ वीस मात्रा पवंगम छंद

ग्रंथांतरे चंद्रायणौ छंद

दूहौ

त्रे खट कळ लघु गुरु चरण, अंत मत्त इक वीस ।
चुरस छंद चंद्रायणौ, आख सुजस अवधीस ॥ २६

छंद चंद्रायणौ

स्यांम घटा तन रूप विराजत सांमळा ।
बेखौ दुपटा पीत छटा जिम बीजळा ॥
कट तट ओप निखंग कोट छिब कांमकी ।
रूप अनूप सचूप यसी दुति रांमकी ॥ ३०

तेवीस मात्रा

छंद महादीप

महदीप छंद तेरहै दस मत पय जांणौ ।
यण जोड़ सुजस रांम नूपत उर मझ्झ आंणौ ॥
जनपाळ स्री दयाळ सुलख जियगतजांमी ।
सरण सधार बिरदधार हणूंमांन सांमी ॥ ३१

छंद हीर

त्रय खटकळ अंत रगण नांम छंद हीर है ।
सौ पसु कव धन्य पढ़त कीरत रघुबीर है ॥

---

२६. त्रे–३ । खट–६ । चुरस–श्रेष्ठ ।

३०. बेखौ–देखिए । छटा–दीप्ति । बीजळा–बिजली । कटतट–कटितल । ओप–शोभित । निखंग–तर्कश । सचूप–सुन्दर । यसी–ऐसी । दुति–द्युति ।

३१. मझ्झ–मध्य । जनपाळ–भक्तोंकी रक्षा करने वाले । जीयगतजांमी–अन्तर्यामी । सरणसधार–शरणमें आये हुएकी रक्षा करने वाला । हणूंमांन–हनुमान । सांमी–स्वामी ।

३२. पसु–पशु, मूर्ख । कव–कवि, विद्वान ।

धरण धनुस बांम पांण बांण दच्छ हाथ है।
भंजण गढ़ लंक भूप गजण दस माथ है ।। ३२

छंद रोला

औयण मत चौवीस होय जिण रोळा आखत।
भल कवि जोड़ग छंद मांझ, राघौ जस भाखत ।।
गैल औण रज परसत रीजै नारी गौतम।
प्रतिपल 'किसना' रांमचंद्र सौ भज पुरसोतम ।। ३३

छंद बथुवा

भव तेरह मत औण, कोय उप दोहा भाखै।
अख रोळा बथु ऊभै, त्रिविध आंनंद बथु आखै ।।
दस तेरह मत्त रुद्र रुद्र रुद्रह नव आवै।
राय बिथु तिण नांम रुद्र दस अंन मत गावै ।। ३४

अथ छंद काव्य

आद मत्त अगीयार, दुतीय पद तेर मात दख।
काव्य छंद तिण कहत, अवध ईस्वर कीरत अख ।।
जिग कोसिक रख जेण, असुर मारीच उडायौ।
मार सुबाह मदंध, प्रगट रघुबर जय पायौ ।। ३५

---

३२. बांम—वायां। पांण—(पाणि) हाथ। दच्छ—दाहिना। भंजण—तोड़ने वाला। लंक—लंका। गंजण—पराजित करने वाला। दसमाथ—रावण।

३३. औयण—चरण। मत—मात्रा। आखत—कहते हैं। भल—उत्तम, श्रेष्ठ। जोड़ग—रचना करने वाला। मांझ—मध्य। राघौ—श्री रामचंद्र भगवान। गैल—रास्ता। औण—चरण।

३४. भव—ग्यारह। भाखै—कहते हैं। रुद्र—ग्यारह।

३५. आद—आदि। अगीयार—ग्यारह। मात—मात्रा। दख—कह। अख—कह, वर्णन कर। जिग—यज्ञ। कोसिक—विश्वामित्र। रख—रक्षा कर। जेण—जिस।

दूहौ

मत्त छंद 'किसनै' मुणै, निज कीरत रघुनंद ।
सुणौ सुकव अखं‌ु सकौ, अब मत्ता उप छंद ।। ३६

इति मात्रा छंद संपूरण

अथ मात्रा उप छंद वरणण

दूहौ

जिण पय मंदाकिण जनम, अघ नासिणी अपार ।
जिण भजतां अघ जाणरौ, विसमय किसुं विचार ।। ३७

तत्रादि हरि गीत छंद

चव आद खटकळ दुकळ गुरु यक पाय मत अठ वीसयं ।
हरि गीत सौ जिण अंत लघु सौ रांम गीत मती सयं ।।
बपु स्यांमसुंदर मेघ रुचि फबि तड़ित पीत पटंबरं ।
सुज बांम चाप निखंग कटि तट दच्छ कर आंमत्त सरं ।। ३८

छंद रांम गीत

दसमाथ भंज समाथ भुज रघुनाथ दीन दयाळ ।
गुह ग्राह ग्रीधक बंध तै गत व्रवण भाल विसाळ ।।
सुग्रीव निरबळ राखि सरणै सबळ बाळ संधार ।
पह जोय 'किसना' नांम परचौ तोय गिरवर तार ।। ३९

---

३७. पय–चरण । मंदाकिण–(मंदाकिनी) गंगा । अघ–पाप । नासिणी–नाश करने वाली, मिटाने वाली । विसमय–(विस्मय) आश्चर्य । किसूं–कैसा ।

३८. चव–कह । आद–(आदि) प्रथम । बपु–शरीर । रुचि–कांति । तड़ति–बिजली बांम–बायां । चाप–धनुष । निखंग–तर्कश । दच्छ–दक्षिण ।

३९. दसमाथ–रावण । समाथ–समर्थ । गत (गति) मोक्ष । व्रवण–देने वाला । बाळ–बालि नामक बंदर । परचौ–चमत्कार । तोय–पानी । गिरवर–पर्वत ।

नोट—हरि गीत और राम गीतमें यही अंतर है कि राम गीतमें अंतिम वर्ण ह्रस्व रहता है । परन्तु उपर्युक्त राम गीत में छब्बीस मात्रा ही हैं ।

छंद सवैइया

अंत भगण ईकतीस मत्त पद छैस सवैयौ छाजत।
लख कारज तज समर रांम पद बीजां भजतौ मुढ़ न लाजत॥
संत अनेक उधार सियाबर पै सरणा अनाथां पाळण।
गढ़वा जै पढ़ वीज सची गथ जनमां तणा दुख सौ जाळण॥ ४०

दूहौ

पद प्रत मत गुणतीस पढ़ि, अंत गुरु लघु होय।
राघव जस जिण मझ रटां, कहै मरहट्टा सोय॥ ४१

छंद मरहट्टा

सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंगपांणी सांम।
मीढ़ न मघवांणी बळ ब्रहमांणी, नहिं रुद्रांणी नांम॥ ४२
जे अंतर जांमी वार नमांमी, स्वांमी जग साधार।
जोड़ी चिरजीवं पतनी पीयं, सुज सस दीवं सार॥ ४३

दूहौ

सात चतुकळ चरण मैं, एक होय गुरु अंत।
चतुर पदी कोइक चवै, रुचिरा कोय रटंत॥ ४४

छंद चतुरपदी तथा रुचिरा

दस माथ विहंडण आसुर खंडण, राघव भूप अरोड़ा।
पाथर रच पाजं समुद सकाजं, तैं गड हाटक तोड़ा॥

---

४०. छाजत–शोभा देता है। लख–लाखों। बीजां–दूसरोंको।

४१. पद–चरण। प्रत–प्रति। सोय–वह।

४२. सारंगपांणी–(सारंगपाणि) विष्णु, श्रीरामचंद्र। सांम–(स्वामी) पति। मीढ़–समता। मघवांणी–इन्द्राणी। ब्रहमांणी–ब्रह्माणी। रुद्रांणी–पार्वती, सती।

४३. साधार–रक्षक। पतनी–पत्नी। पीयं–पति। सस–शशि, चंद्रमा। दीवं–सूर्य।

४४. कोइक–कोई। चवै–कहते हैं। रटंत–कहते हैं।

४५ विहंडण–नाश करने वाला। अरोड़ा–जबरदस्त। पाथर–पत्थर। पाजं–सेतु, पुल। हाटक–स्वर्ण। रिव–(रवि) सूर्य।

सीताचौ स्वांमी अंतरजांमी रवि कुळ मंडण राजा।
जिण सुजस जपीजै लभ तन लीजै कीजै सुक्रत काजा ॥ ४५

छंद धत्ता

सत दुजबर ठांणौ त्रय कळ आंणौ कहि धत्ता यक तीस कळ।
रटजै मझ्झ राघौ दुख अघ दाघौ फिर तन धारण पाय फळ ॥
द्रुम सात बिभेदण क्रमगत छेदण तै जस कह भव सिंधु तर।
सुत स्त्री कौसल्या तार अहल्या, करुणानिध सौ याद कर ॥ ४६

ग्रंथांतरे धतानंद अन्य विध

दस सात मात्रा पर विस्रांम अंत लघु सतरै मात्रा सौ धतानंद छंद।

छंद त्रिभंगी

दस अठ अठ छामं चव विस्रांमं छंद सुनांमं तिरभंगी।
रघुनाथ समथ्थं हणि दसमथ्थं रखि यळ गथ्थं रिण संगी ॥
ससिबदनी सीता कंत पुनीता दास अभीता कुळदीता।
'किसना' जिण कीता गुण मुख गीता प्रगट पुणीता जग जीता ॥ ४७

खट सद्रस्य छंद लछण

दूहौ

तिरभंगी १ पदमावती २ दंडकळ ३ लीलावती ४।
दुमिळा ५ जनहर ६ छंद दख श्रै सम छहूं अखंत ॥ ४८

---

४५. मंडण–आभूपण। लभ–लाभ। काजा–कार्य।

४६. सत–सात। दुजबर–चार मात्राका नाम। ठांणौ–रखो। त्रय–तीन। मझ–मध्य। दाघौ–जलाओ। बिभेदण–भेदन करने वाला। क्रमगत–कर्मगति। छेदण–नाश करने वाला। भव–संसार।

४७. छामं–छ मात्रा। चव–कह। समथ्थं–समर्थ। हणि–मार कर। दसमथ्थं–रावण। रखि–रख कर। यळ–पृथ्वी। गथ्थं–गाथा, वृत्तान्त। ससिबदनी–चन्द्रमुखी। कंत–पति। पुनीता–पवित्र। दास–भक्त। अभीता–निर्भय। कुळदीता–(कुल+आदित्य) सूर्यवंशी। कीता–कीर्ति। गीता–गाया।

छंद पदमावती

दस वसु खट आठं इक पद पाठं सौ पदमावती छंद सही।
सौ सुकव सुभागी हरि अनुरागी मत लागी जस रांम मही॥
सीता वर सुंदर मह गुण मंदर पाय पुरंदर दास पड़ै।
चव जै जस चारण 'किसन' सकारण धारण सौ यक एक धड़ै॥४९

छंद दंडकल

दस अठ चवदेसं दंडकळेसं मत्त बतेसं जेण पयं।
कह जे मझ्झ कीरत पावत स्रीपत लाभ सधारण देह लयं॥
अवधेस अभंगं, जीपण जंगं कोटि अनंगं धारी कळं।
खर दूखर खंडण बाळ विहंडण दाप निवारण पाप दळं॥५०

छंद दुमिला

दस वसुखट ठांणौ फिर वसु आंणौ दुमिळा ठांणौ करणांता।
दसरथ सुत नृपवर कळख खयंकर, सौ भव दध तिर निज संता॥
रवि कोट प्रकासं जपि मुख जासं, देण अभेपद निज दासं।
निस दिन पत्रासं, हरखि हुलासं, जस प्रतिसासं जपि जासं॥५१

---

४९. वसु–आठ। खट आठं–चौदह। सौ–वह। सुकव–सुकवि। सुभागी–भाग्यशाली। मत–मति। मह–महि, महान्। पाय–पैर। पुरंदर–इंद्र। दास–भक्त। धड़ै–तराजूके पलड़ेमें।

५०. चवदेसं–चवदह। मत्त–मात्रा। बतेसं–बत्तीस। पय–चरण। मझ्झ–(मध्यमें)। अभंगं–वीर। जीपण–जीतने वाला। जंग–युद्ध। कळं–कांति। खर दूखर–खर, दूषण। खंडण–मारने वाला। बाळ–बालि। विहंडण–नष्ट करने वाला। दाप–दर्प, अभिमान। दळ–समूह।

५१. वसुखट–चौदह। ठांणौ–स्थापित करो। आंणौ–लाओ। करणंता–जिसके अंतमें कर्ण (ऽऽ) हो। कळख–कलुष। खयंकर–नष्ट करने वाला। भव–संसार। दध–(उदधि) समुद्र। अभेपद–निर्भयता। पत्रासं–पत्ते खाकर। जस–यश। प्रतिसासं–(श्वास प्रतिश्वास) प्रत्येक श्वास।

छंद लीलावती

गुरु लघु विण नियमं तीस बि मत्ता।
लीलावती गुरु अंत कहै।
जौ रघुबर गावै सब सुख पावै,
निभय जिकां जम ताप नहै।
सर गिरवर तारे पदम अठारै,
सेन उतारे जगत सखै।
भिड़ रांवण भंजे गढ़हिम गंजे,
अमरां रंजे ब्रहम अखै। ५२

छंद जनहरण

सब लघु पय पय धरि पछ यक गुरु करि,
जळहर कळ सम लछण धरै।
सुज उर दुति सरवर तिम कळ तरवर,
सिध रघुवर सुजस बरै।
हर अकरण करण सरण असरण हरी,
तरण अतर भव जळधि तिकौ।
कट कट अघ दुघट विकट्ट थट अण घट,
झट झट रट रट 'किसन' जिकौ। ५३

छंद वरवीर

चव कळ उरोज थळ च्यार वोज,
वरवीर छंद कह यम कव्यंद।

---

५२. विण–विना। मत्ता–मात्रा। नहै–नष्ट होते हैं। सर–समुद्र। सखै–साक्षी देता है। भिड़–योद्धा। भंजे–नाश किया। गढ़हिम–लंका। गंजे–जीत लिया। रंजे–प्रसन्न किया। ब्रहम–ब्रह्मा। अखै–कहता है।
५३. पय–चरण। पछ–पश्चात्। जळहर–छंदका नाम। विकट्ट–भयंकर। थट–समूह। अणघट–जो घटित न हो।
५४. कव्यंद–कवींद्र, महाकवि।

जस वांण जास मधि चित हुलास ,
अख पाप नास रघुवंस यंद ।
दसरथ कुमार, धनुबांण धार ,
जुध असुर जार सरणा सधार ।
जांनकीनाथ गिरतार पाथ ,
सौ है समाथ भव सिंधु सार । ५४

सोरठौ

वीस मत्त विसरांम, दुवै सतर गुरु अंत दस ।
तीस सात मत तांम, जिण पद छंद सझूलणा ॥ ५५

दूहौ

आठ पंच कळ पाय यक, आख फेर गुरु अंत ।
नांम जेण पिंगळ निपुण, उप झूलणा अखंत ॥ ५६

छंद झूलणा

वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण वळै खट भाख जीहा वखांणै ।
भांत पौरांण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगतां तणा भेद आंणै ॥
राग खट तीस धुनि ब्यंग भूखण सुरस पात पद ।
जिकै विण समझ चंडूल पंखी जिंही जे न रघुनाथचौ नांम जांणै ॥ ५७

---

५४. मधि–मध्य । यंद–इन्द्र । असुर–राक्षस । जार–नष्ट कर । पाथ–जल । समाथ–समर्थ । भव–संसार । सिंधु–समुद्र ।

५६. पाय–चरण । यक–एक । आख–कह । अखंत–कहते हैं ।

५७. वळै–फिर । भाख–भाषा । जीहा–जिह्वा । पौरांण–पुराण । उगत–उक्ति । जुगतां–युक्तियों । धुनि–(सं० ध्वनि) वह निबंध या काव्य जिसमें शब्द और उसके साक्षात् अर्थसे व्यंगमें विशेषता या चमत्कार हो । ब्यंग–(सं० व्यंग्य) व्यंजना वृत्तिसे प्रकट शब्दका गूढ़ार्थ । भूखण–अलंकार । विण-समझ–मूर्ख, अज्ञानी । चंडूळ–एक प्रकारकी खाकी रंगकी छोटी चिड़िया जो वृक्षों पर बहुत सुंदर घोंसला बनाती है और बहुत ही मधुर बोलती है । पंखी–पक्षी । जिंही–जैसे । जे–जो ।

छंद उप झूलणा

सीस दीधौ जिकौ नांम रघूनाथसूं ,
नैण दीधा जिकौ निरख माधव नरा ।
जीभ दीधी जिकै क्रीत स्रीवर जपौ ,
होठ मुसुकाय रिझवाय पातक हरा ।
हाथ दीधा जिकौ जोड़ आगळ हरी ,
उदर परसाद चरणा-अम्रत आचरा ।
पाय दीधा जिकै 'किसन' पर-दछ ,
फिर नाच राघव आगै सफळ कर तन नरा ॥ ५८

छंद मदन हरा लछण

दूहौ

अठ दुजबर खटकळ सुयक, एक हार गण अंत ।
मदन हरा सौ छंद मुणि, राघव सुजस रटंत ॥ ५९

छंद मदन हरा

रज पाय परस जिण नार रिखी ,
तज देह सिला छिन मांह तरी, रट सौ हरी ।
दिन मांन कदन नृप जनक सदन धनुभंजी ,
वदै जग सीय बरी, क्रत उद्धकरी ।

---

५८. दीधौ–दिया । दीधा–दिये । नरा–नर, मनुष्य । दीधी–दी । स्रीवर–(श्रीवर) विष्णु । पातक–पाप । हरा–मिटाने वाला । आगळ–अगाड़ी । पर-दछ–प्रदक्षिणा । आगै–अगाड़ी ।

नोट—छंद-शास्त्रके अनुसार झूलणा (ना) छंदके लक्षणमें १०, १०, १० और ७ पर विश्रामसे कुल ३७ मात्राएं प्रत्येक चरणके अंतमें यगण सहित होती हैं । यहां पर ग्रंथकर्ताके दिए झूलणा छंदके लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं । इसी प्रकार उपझूलणाके भी लक्षण स्पष्ट नहीं हैं ।

५९. अठ–आठ । दुजबर–चार मात्राका नाम । मतांतरसे आदि गुरुकी चार मात्राका नाम (ऽ।।) । हार–एक दीर्घका नाम (ऽ) ।

६०. रज–धूलि । पाय–चरण । कदन–नाश । सदन–भवन । क्रत–(क्रतु) यज्ञ । उद्धकरी–उद्धार किया ।

आजांनसुकर सर चाप सुधर,
जिण अतुळ पराक्रम वेद अखै, सिस सूर सखै ।
'किसनेस' सुकव दख सौ निस दिव,
रदि सिं····भाखै, भव कंज भखै ॥ ६०

दूहौ

कर दुजवर नव रगण हिक, चव पै मत चाळीस ।
सुकवी खंजा छंद सौ, मुण कीरत लिछमीस ॥ ६१

छंद खंज

रखण जन सरण रघुराज कौसळ कंवर,
धनुख सर धरण कर सकळ सुख धांम है ।
भरत्थ अरिहा लछण भ्रात अग्रज सुभग महा,
मन हरण घण रूप तन स्यांम है ।
सरल तन सहज दन मुकत दायक सुमत,
गजगमणी जांनकी भांम गुण ग्रांम है ।
रात दिन हुलस मन सुजस 'किसनेस' रट,
रखण जन मांम तरुकांम रघु रांम है ॥ ६२

दूहौ

बार प्रथम तेरह दुतीय, रगण अंत विस्रांम ।
मांझ चरण पचीस मत्त, निज गगनागा नांम ॥ ६३

---

६०. आजांनसुकर–आजानबाहु । सर–बाण, तीर । चाप–धनुष । सिस–(शशि) चन्द्रमा । सूर–सूर्य । सखै–साक्षी देते हैं । दख–कह । निस दिव–रात दिन । रदि–हृदय ।

६१. लिछमीस–(लक्ष्मी+ईश) विष्णु, श्रीरामचन्द्र ।

६२. भरत्थ–भरत । अरिहा–शत्रुघ्न । लछण–लक्ष्मण । घण–(घन) बादल । मुकत–मुक्ति, मोक्ष । गजगमणी–गजगामिनी । भांम–भामिनी । गुण ग्रांम–गुणोंका समूह । जन–भक्त । मांम–प्रतिष्ठा, मर्यादा । तरुकांम–कल्प वृक्ष ।

६३. बार–बारह । मांझ–मध्य, में ।

छंद गगनागा

खळ दळ समर खपावत किव जण गावत कीरती ।
सीता वाहर सभ्भतां वसुधा जाहर वीरती ॥
'किसना' निस दिन जस कर गुणियण जैनं गावजै ।
राघव राजा सौ रट प्रगट उंच पद पावजै ॥ ६४

दूहौ

एक छकळ फिर च्यार कळ, पांच होय गुरु अंत ।
अठावीस कळ औण प्रत, द्रुपदी छंद दखंत ॥ ६५

छंद द्रुपदी

जनक सुता मन रंजण गंजण, असुर अगंजण आहवं ।
मैं सरणागत कदम सदा मद, मो लजा रख माहवं ॥
दीनांनाथ अभै वरदाता, त्राता सेवग तारणं ।
तो निज पायनि मौ दसरथ तण, घण पापां सिंघारणं ॥ ६६

दूहौ

दस दस पर विसरांम चव, मत चाळीस हुवंत ।
गुरु लघु अखिर नियम नहिं, उद्धत छंद अखंत ॥ ६७

छंद उद्धत

दळ सभ्भत खळ दाह यभ बाज अणथाह ,
गह रचण गजगाह नरनाह रघुनाथ ।

---

६४. खपावत–नाश करते हैं । कीरती–कीर्ति यश । वाहर–रक्षा । वसुधा–पृथ्वी । जाहर–जाहिर, प्रसिद्ध । वीरती–वीरत्व, शौर्य । गुणियण–कवि । जैनूं–जिसको ।

६५. अठावीस–अट्ठाईस । औण–चरण । प्रत–प्रति । दखंत–कहते हैं ।

६६. रंजण–प्रसन्न करने वाला । गंजण–नाश करने वाला । अगंजण–वह जो जीता न जा सके, अजयी । आहवं–युद्ध । घण–बहुत । सिंघारणं–संहार करने वाला ।

६७. चव–कह । हुवंत–होते हैं, होती हैं । अखंत–कहते हैं ।

६८. यभ–इभ, हाथी । बाज–घोड़ा । अणथाह–अपार । गह–गंभीर, महान । गजगाह–युद्ध ।

सट पटत भर सेस अति चकित अरेस,
दिन धंूधळ दिनेस थरराहइ अर साथ।
निहसंत नीसांण ह्वै बाज हींसांण,
सभ्भ काज घमसांण अपांण भड़ ओघ।
नृप दासरथनंद सौ कारुणासिंध,
जस राच राजिंद मुख वाच आमोघ ॥ ६८

दूहौ

दुजबर नव ता पछ रगण, करण ता पछै होय।
अरध फेर गाथा अधर, माळा कहजै सोय ॥ ६९

छंद माला

अवधपति अनम सुज, तेज रवि कौट सम,
सियपति सरम रख लख जनां आधार है आखां।
नृप राघव जगनायक लायक,
भूपाळ लेण जस लाखां ॥ ७०

दूहौ

सात टगण फिर त्रिकळ यक, अंत रगण इक आंण।
मत सैंताळी पायमें, पंच वदन सौ जांण ॥ ७१

---

६८. अरेस–(अरीश) शत्रु। धूंधळ–धूलि आच्छादित, धूमिल, धुंधला। दिनेस–सूर्य। थरराहइ–कंपायमान होते हैं। अर (अरि)–शत्रु। साथ–सेना, दल, समूह। निहसंत–बजते हैं। नीसांण–नगाड़ा। व्है–होता है, होती है। हींसांण–हिनहिनाहट। घमसांण–युद्ध। अपांण–शक्तिशाली। ओघ–समूह। सौ–वह। कारुणासिंध–(करुणासिंधु) दयासागर। आमोघ (अमोघ)–अव्यर्थ, अचूक।

६९. करण–दो दीर्घका नाम ऽ ऽ। सोय–वह।

७०. रवि–सूर्य। कौट–करोड़। लख–लाखों। आखां–कहता हूँ।

७१. पाय–चरण।

छंद पंच-वदन

रघुवर महाराज गाव नह्चै यक पळ न लाव,
रंक करै सोई राव सुद्ध भाव सांम रे।
दीनबंधु देवदेव भाखत स्रुति अ्रहम भेव,
जेता जग सौ अजेव गहर गरुड़ गांम रे।
जळद नील देह जेह तड़िता पट पीत तेह,
गोब्यंद सत क्रत गेह सीत नेह संजणं।
राखण मिथळेसराज लाखवात अघट लाज,
करि अमाप सबळ करग भरग चाप भंजणं॥ ७२

दूहौ

अै मात्रा उपछंद, कहिया मत माफक 'किसन'।
नह्चै सुण रघुनंद, निज सेवगां निवाजसी॥ ७३

इति मात्रा उपछंद संपूरण।

अथ मात्रा असम चरण छंद वरणण

दूहौ

मरण जनमचौ सळ मिटण, सौ सलभ व्है संभार।
जंम मौ सळ भंजै जिसौ, कौसळ राजकंवार॥ ७४
नर तन पावै जे नरा, गुण गावै गोब्यंद।
जनम सफळ थावै जिकै, फिर नावै जम फंद॥ ७५

---

७२. राव–राजा। सांम–स्वामी। अ्रहम–ब्रह्मा। भेव–भेद। जेता–जीतने वाला। अजेव (अजय)–जो किसीसे जीता न जा सके। गहर–गंभीर। जळद–बादल। जेह–जिस। तड़िता–बिजली। तेह–उस। गोब्यंद–गोविन्द। सीत–सीता, जानकी। नेह–स्नेह, प्रेम। संजणं–साधन करने वाला। करग–हाथ। भरग–भृगु मुनि, परशुराम। चाप–धनुष। भंजणं–भजन करने वाला।

७३. अै–ये। मत–मति, बुद्धि। माफक–माफिक। निवाजसी–प्रसन्न होंगे।

७४. चौ–का। सळ–कष्ट। सलभ–सुलभ। संभार–स्मरण कर। मौ–मेरा। जिसौ–जैसा।

७५. गुण–यश, कीर्ति। गोब्यंद–गोविंद। फंद–जाल, बंधन।

अथ मात्रा असम चरण छंद वरणण ।

तत्रादि दोहा छंद

दूहौ

तेर मत्त पद प्रथम त्रय, दुव चव ग्यारह देख ।
अख सम पूरब उत्तर अध, लछण दूहा लेख ।। ७६

अन्य लछण दूहा

दूहौ

सुज उलटायां सोरठौ, सांकलियौ आदंत ।
मध्य मेळ दूहौ मिळै, तव तंबेरौ तंत ।। ७७

दूहौ

अजामेळ पर आविया, साठ सहंस जम साज ।
नांम लियां हिक नारियण, भड़ सोह छूटा भाज ।। ७८

सोरठौ

प्रगट ऊब्हांणै पाय, आयौ सोह जांणै यळा ।
सिंधुरतणी सिहाय, कीधी धरणीधर 'किसन' ।। ७९

सांकलियौ दूहौ

मत जकड़ी भव माग, मकड़ी जाळा जेम मन ।
हर द्रढ़ कर पकड़ी हिया, लकड़ी हरी पळ लाग ।। ८०

---

७६. तेर–तेरह । मत्त–मात्रा । त्रय–तृतीय । दुव–दूसरा द्वितीय । चव–चतुर्थ । लछण–लक्षण ।

७७. मध्य मेळ दूहौ–वह दोहा छंद जिसकी तुकबंदी द्वितीय और तृतीय चरणसे की जाती है । इस दोहा छंदका दूसरा नाम तूंबेरा (तूंबेरौ) भी है । तव–कह । तंत–उसे ।

७८. सहंस–सहस्र । जम–यम, यमदूत । साज–सुसज्जित होकर । हिक–एक । नारियण–नारायण । भड़–योद्धा । सोह–सब । भाज–भग कर ।

७९. ऊब्हांणै–नंगे पैर । यळा–इला, पृथ्वी, संसार । सिंधुर–गज, हाथी । तणी–की । सिहाय–सहाय, सहायता । कीधी–की । धरणीधर–ईश्वर ।

८०. सांकळियौ–वह दोहा छंद जिसकी तुकबन्दी प्रथम चरण और चतुर्थ चरणसे की जाती है । इस दूहा (दोहा) छंदका दूसरा नाम अन्तमेळ भी है । कहीं-कहीं इसे वडा दूहा भी कहा गया है । मत–मति, बुद्धि । जकड़ी–बंधनमें की गई । भव–संसार । मकड़ी–(सं०मर्कटक) आठ आंखों और आठ पैरों वाला एक कीड़ा जो दीवारों आदि पर अपना जाल बनानेमें प्रसिद्ध है ।

दूहौ तूंबेरौ

मेवा तजिया महमहण, दुरजोधनरा देख।
केळा छोत विसेख, जाय बिदुर घर जीम्हिया ॥ ८१

दूहौ

सौ दूहा तेईस सुज, नांम सहत निरधार।
जोड़ देखाऊं जूजुवा, सुणौ रांम जस सार ॥ ८२

कवित छप्पै

भ्रमर १ भ्रामरौ २ सरभ ३ सैन ४,
मंडुक ५ मरकट ६ सख।
करभ ७ नरह ८ सुमराळ ९,
श्रवर मदकळ १० पयधर ११ अख ॥
चळ १२ वांनर १३ कह त्रकळ १४,
मच्छर १५ कच्छप १६ सादूळह।
अहिवर १८ बाघ १९ बिडाळ २०,
सुनकर २१ ऊंदर २२ स्रप २३ थूळहा ॥
तेईस नांम दूहां तणौ,
वरणे 'किसन' बखांणियौ।
यळ व्रथ जनम खोयौ अवस,
ज्यां हरि नांम न जांणियौ ॥ ८३

उदाहरण

दूहौ

भमर अखिर छाईस भण, चव लघु गुरु बाईस।
यक गुर घट बे लघु बधै, सौ सौ नांम कवीस ॥ ८४

---

८१. महमहण—विष्णु, ईश्वर। छोत—छिलका। विसेख—विशेष। जीम्हिया—भोजन किया।

८२. सौ—वे। जोड़—रच कर। जूजुवा—पृथक-पृथक।

८३. व्रथ—व्यर्थ। अवस—अवश्य।

८४. अखिर—अक्षर। छाईस—छब्बीस। भण—कह। चव—चार। यक—एक। बे—द्वे, दो।

अथ भ्रमर नांम
अख्यर २६ गुरु २२ लघु ४

दूहौ

ना कीज्यौ सैणा नरां, काचौ बीजौ कांम ।
राखै लाजा संतरी, राजा साचौं रांम ॥ ८५

अथ भ्रांमर नांम
अख्यर २७ गुरु २१ लघु ६

दूहौ

कोड़ां पापां कीजतां, कोपै धू की नास ।
जीहा राघौ जौ जपै, तौ नांही तिल त्रास ॥ ८६

अथ नांम सरभ
अक्षर २८ गुरु २० लघु ८

दूहौ

मांनौ वारंवार मैं, देखे नां नर देह ।
गायां स्त्री राघौ गुणां, अै पायां फळ एह ॥ ८७

अथ नांम सैन
अख्यर २९ गुरु १९ लघु १०

दूहौ

भौळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झौड़ तमांम ।
दीहा छेल्है देख रे, कैसे हूंता कांम ॥ ८८

अथ मंडूक नांम
अख्यर ३० गुरु १८ लघु १२

दूहौ

जाई बेटी जांनकी, रांम जमाई रंज ।
भाग बडाई जनकरी, गाई बेद अगंज ॥ ८९

---

८५. अख्यर–अक्षर । सैणा–सज्जन । काचौ–कच्चा । बीजौ–दूसरा । लाजा–लज्जा । साचौं–सत्य ।

८६. तिल–किंचित । त्रास–भय । राघौ–श्री रामचन्द्रजी ।

८८. झौड़–कलह, प्रपंच । दीहा–दिन । छेल्है–अन्तिम ।

८९. जमाई–दामाद । रंज–प्रसन्न, खुश । अगंज–न मिटने वाला ।

अथ मरकट नांम
अख्यर ३१ गुरु १७ लघु १४
दूहौ

हर मत छाडै रै हिया, लिया चहै जौ लाह ।
दिल साचै तेड़ौ दियां, नेड़ौ लिछमी नाह ॥ ९०

अथ करभ नांम
अख्यर ३२ गुरु १६ लघु १६
दूहौ

मांनवियां छाडौ मती, कर गाढ़ौ भज टेक ।
जाडौ दळ फिरियां जमां, आडौ राघव अेक ॥ ९१

अथ नर नांम
अख्यर ३३ गुरु १५ लघु १८
दहौ

रोम रोममैं रम रि'यौ, देख अखंड दईव ।
चोरी जिणसूं नह चलै, जाबक भोळा जीव ॥ ९२

अथ मराळ नांम
अख्यर ३४ गुरु १४ लघु २०
दूहौ

मूरख जाचक जाच मत, जाच जाच जगदीस ।
के रंकां राजा करै, एक पलक मझ ईस ॥ ९३

अथ मदकळ नांम
अख्यर ३५ गुरु १३ लघु २२
दूहौ

भख पुंहचावै भूधरौ, अजगर रै अनय्यास ।
किम भूलै संतां 'किसन', संभरतां सुख रास ॥ ९४

---

९०. हर–इच्छा । छाडै–त्यागे । लाह–लाभ । तेड़ौ–बुलावा । नेड़ौ–निकट । लिछमी–लक्ष्मी । नाह–नाथ, पति ।

९१. मांनवियां–मनुष्यों । छाडौ–त्यागो, छोडो । गाढ़ौ–दृढ़, मजबूत । जाडौ–घना, अधिक । आडौ–रक्षक ।

९२. दईव–देव, ईश्वर । जाबक–जंबुक, मूर्ख । भोळा–अज्ञानी ।

९३. जाचक–याचक । रंकां–गरीबों । मझ–मध्य, में । ईस–ईश्वर ।

९४. भख–भोजन । –भूधरौ–भूधर, ईश्वर । अनय्यास–अनायास, बिनाश्रम ।

अथ पयोधर नांम
अख्यर ३६ गुरु १२ लघु २४
दूहौ

मन दुख दाधा डौल मत, साधा जग तज साव ।
मांनव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव ॥ ६५

अथ चळ नांम
अख्यर ३७ गुरु ११ लघु २६
दूहौ

सह रांचै जन सादियां, मत बहरौ कर मांन ।
कीड़ी पग नेवर भ्रणक, भणक सुणै भगवांन ॥ ६६

अथ वांनर नांम
अख्यर ३८ गुरु १० लघु २८
दूहौ

रै चित व्रत द्रढ़ प्रेम रख, मूरत स्यांम मझार ।
मेल्ह सुरत नट वांसमैं, प्रगट वरत व्हे पार ॥ ६७

अथ त्रिकळ नांम
अख्यर ३९ गुरु ९ लघु ३०
दूहौ

केसव भजतौ हरख कर, मत कर आळस मूढ़ ।
जिण दीधौ मनखा जनम, गरभ कौल कर गूढ़ ॥ ६८

अथ मच्छ नांम
अख्यर ४० गुरु ८ लघु ३२
दूहौ

चित जे मत व्है चळ विचळ, भज भज नहचळ भाय ।
कूक करै जिण दिन कुटंब, स्रीवर करै सिहाय ॥ ६९

---

६५. दाधा–दग्ध, जला हुआ । साव–स्वाद । भव–संसार । भीता–भीति, डर, भय ।
६६. सादियां–पुकार करने पर । बहरौ–बहरा । नेवर–पैरोंका आभूषण विशेष । भ्रणक–ध्वनि । भणक–आवाज, शब्द ।
६७. मूरत–मूर्ति । स्यांम–श्याम, श्रीकृष्ण । मझार–मध्य, में । सुरत–ध्यान । वरत–वरत्र, चमड़ेका बना मोटा रस्सा ।
६८. मूढ़–मूर्ख । दीधौ–दिया । मनखा जनम–मनुष्य जन्म । कौल–वादा, प्रण । गूढ़–गुप्त ।
६९. चळ विचळ–डांवाडोल । कूक–पुकार । स्रीवर–श्रीवर, विष्णु । सिहाय–सहाय ।

अथ कछप नांम

अख्यर ४१ गुरु ७ लघु ३४

दूहौ

मिळै न पुळ पुळ तन मनख, धनख-धरण चित धार।
पात झड़ै तरवर पहव, चढ़े न फेर विचार॥ १००

अथ सादूळ नांम

अख्यर ४२ गुरु ६ लघु ३६

दूहौ

धन धन कुळ पित मात धन, नर अथवा धन नार।
रघुबर जस अह-निस रटै, जे धन अवन मझार॥ १०१

अथ अहिवर नांम

अख्यर ४३ गुरु ५ लघु ३८

दूहौ

हर हर जप अनम कर हर, परहर अहमत पोच।
व्यापक नर हर जगत विच, अंतर गत आलोच॥ १०२

अथ बाघ नांम

अख्यर ४४ गुरु ४ लघु ४०

दूहौ

अमरत दध नह तिय अधर, विधु यिमरत न वखांण।
के जन अजरांमर करण, जस हर यिमरत जांण॥ १०३

---

१००. पुळ पुळ–बार बार। तन–शरीर। मनख–मनुष्य। धनख-धरण–धनुषधारी, श्री रामचंद्र। पात–पत्ता, पान। पहव–प्रथम।

१०१. धन धन–धन्य धन्य। पित–पिता। मात–माता। नार–नारी, स्त्री। अह-निस–रात दिन। अवन–अवनी, भूमि। मझार–मध्यमें।

१०३. दध–उदधि, समुद्र। तिय–स्त्री। अधर–ओष्ठ। विधु–चंद्र, चंद्रमा। यिमरत–अमृत। अजरांमर–वह जो न वृद्ध हो और न मृत्युको प्राप्त हो। हर–हरि, विष्णु, ईश्वर। जांण–समझ।

अथ विडाळ नांम

अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२

दूहौ

जिण हर सरजत नर जनम, सुजदी रसण समाथ।
कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ ॥ १०४

अथ सुनक नांम

अख्यर ४६ गुरु २ लघु ४४

दूहौ

परगट कट तट तड़त पट, सरस सघण तन स्यांम।
गह भर समपण कनक गढ़, रहचण दस-सिर रांम ॥ १०५

अथ ऊंदर नांम

अख्यर ४७ गुरु १ लघु ४६

दूहौ

राघव रट रट हरख कर, मट मट अघ दळ महत।
जनम मरण भय हरण जन, कज भव हर रिख कहत ॥ १०६

अथ सरप नांम

अख्यर ४८ गुरु ० लघु ४८

दूहौ

हर रिण दस-सिर विजय हित, धर निज कर सर धनक।
पढ़त 'किसन' कवि सरण पय, जय रघुबर जग जनक ॥ १०७

---

१०४. सरजत–रचता है। रसण–जिह्वा, जीभ। समाथ–समर्थ। झटपट–शीघ्र। कवियण–कविजन, कवि। नित प्रत–नित्य प्रति, सदैव।

१०५. परगट–प्रकट। कट–कटि, कमर। तड़त–तड़िता, बिजली। पट–वस्त्र। कनक गढ़–लंका। रहचण–नाश करने वाला। दस सिर–दशानन।

१०६. मट–मिटते हैं। अघ–पाप। दळ–समूह। महत–महान। कज–ब्रह्मा। भव–महादेव। हर–हरि, विष्णु। रिख–ऋषि। कहत–कहते हैं।

१०७. कर–हाथ। सर–बाण। धनक–धनुष। जग–संसार। जनक–पिता।

अथ चरणा दूहा विचार

पहल त्रतीय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख।
चरणा दूहा चुरस कर, भल किव तिणनूं भाख॥ १०८

उदाहरण

चरणा दूहौ

दट अणघट अघ विकट दळांरौ, राजा सांचौ रांम।
बळ सौ है दिन जन निबळांरौ, नित जापौ तै नांम॥ १०९

पंचा दूहौ लछण

पहलै तीजै बार पढ़, उभये वेद इग्यार।
पंचा दूहा सौ पुणै, सुकव जिके मतसार॥ ११०

उदाहरण

रांम भजनसूं राता, महत भाग जे मांन।
ज्यां सारीखौ जगमें, उत्तम न जांणै आंन॥ १११

अथ नंदा दूहा तथा बरवै छंद

मोहणी लछण

दूहौ

धुर तीजै मत बार धर, सुज बे चौथे सात।
नंदा दोहा मोहणी, बरवै छंद कहात॥ ११२

---

१०८. सोळ–सोलह। मत–मात्रा। दुव–दूसरा। चव–चतुर्थ। दाख–कह। चुरस–रीति, अनुसार, नियमानुसार। भल–श्रेष्ठ। किव–कवि। तिण–उस। भाख–कह।

१०९. दट–दुष्ट। अणघट–अपार। अघ–पाप। सांचौ–सच्चा। सौ–वह। जापौ–जपो। तै–उसका।

११०. पहलै–प्रथम। बार–बारह। ईग्यार–ग्यारह। पुणै–कहते हैं। मत–बुद्धि, मति।

१११. राता–अनुरक्त, लीन। महत–महान। भाग–भाग्य। सारीखौ–सदृश, समान। आंन–अन्य।

११२. धुर–प्रथम। मत–मात्रा। बार–बारह। बे–दूसरा।

नोट– ग्रंथकर्ताने नन्दा मोहणी और बरवैको एक-दूसरेके पर्याय मान कर रचना नियमके एक ही लक्षण प्रथम तथा तृतीय चरणमें बारह मात्रा और द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सात-सात मात्रा मानी हैं पर नंदा मोहणी और बरवैमें पूर्वाचार्य्योंके मतसे कुछ-कुछ भिन्न लक्षण होते हैं। बरवैमें प्रथम तृतीय चरणमें बारह-बारह मात्रा तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणमें सात-सात मात्रा सहित अंतमें जगण होना आवश्यक माना गया है। इसी प्रकार मोहणी छंदके अन्तमें सगण होना आवश्यक होता है।

उदाहरण बरवै नंदा

दूहौ

पह ज्यांरा चित लागा, रघुबर पाय ।
पुळ पुळमें त्यां पुरखां, थिर सुख थाय ॥ ११३

अथ चौटिया दूहा लछण

चौटियौ दूहौ

दूहा पूरब अरध पर, अधक बार मत होय ।
उत्तरारध दस मत अधक, दुहौ चौटियौ सोय ॥ ११४

उदाहरण

चौटियौ दूहौ

महाराजा रघुवंसमरण, सुज रावण समथरा धनु सर पांणां धारै ।
वायक सत सीतावरण, नूप नायक रघुनाथ तूं संतां तारै ॥ ११५

अथ दूहाकौ नांम काढ़ण विध

दूहौ

दूहा लघु गिण आध कर, ज्यां मझ घट कर एक ।
रहेस बाकी नांम रट, वीदग अघट विसेक ॥ ११६

इति भ्रमरादिक तेवीस दूहा नांम करण विध संपूरण ।

छंद चूळियाळा

दूहा अध पर पंच मत, चूळियाळा सौ जांणसु ।
कविवर देह लियां फळ एह, दख बद जीहा बाखांण स रघुबर॥११७

---

११३. पह–प्रथम । ज्यांरा–जिनके । पाय–चरण । थिर–स्थिर, अटल ।
११४. अधक–अधिक । सोय–वह ।
११५. रघुवंसमण–रघुवंशमणि । धनु–धनुष । सर–बाण । पांणां–हाथों ।
११६. वीदग–विदग्ध, कवि, पंडित ।
११७. एह–यह । दख–कह । बद–वर्णन कर । जीहा–जिव्हा । बाखांण–वर्णन, यश ।

छंद निस्रेणका

सम्भ तेरह धुर फेर दस, जांणौ निस्रेणी।
रिख नारी तरगी हरी, परसत पग रेणी॥
जेण रांम जस दिवस निस, किव 'किसन' जपीजै।
लाभ देह रसना समुख, पायांरौ लीजै॥ ११८

छंद चौबोला

धुर मत्त सोळ अवर चवदह धर, अंत गुरु चौबेल अखै।
सौ भज 'किसन' रांम सीतावर, संत तार ब्रद निगम सखै॥
रांवण कंूभ मेघ खर रहचे, कथ सौ बेद पुरांण कही।
बगसी भूपां भूप बभीखण, सरणागत हित लंक सही॥ ११९

छंद ककुभा

कळ धुर सोळ बार सौ ककुभा, उप चौबोलक कहावै।
सुणजै सौ सुभ छंद, जेणमें गुण सीतावर गावै॥
जांमण मरण मरण फिर जांमण, जग नट गौटौ जांणौ।
सौ दुख मेट अखै पद समपण, केसव नांम कहांणौ॥ १२०

दूहौ

खट दुजवर कर प्रथम पद, अंत जगण गण आंण।
दूजी तुक दुज सात धर, जगण सिखा सौ जांण॥ १२१

---

११८. धुर–प्रथम। रिख–ऋषि। रेणी–धूलि। रसना–जिह्वा।

११९. सोळ–सोलह। अवर–अपर, अन्य। निगम–वेद। सखै–साक्षी देता है। कूंभ–कुंभकर्ण, रावणका छोटा भाई। मेघ–मेघनाद, रावणका पुत्र। खर–एक राक्षसका नाम। रहचे–मार डाला, संहार किया। बगसी–बख्शिश कर दी। सरणागत–शरणमें आया हुआ। लंक–लंका।

१२०. कळ–मात्रा। सोळ–सोलह। बार–बारह। सीतावर–श्रीरामचन्द्र भगवान। गावैं–वर्णन करें। जांमण–जन्म। मरण–मृत्यु, मौत। नट गौटौ–नट क्रीड़ा, ऐंद्रजालिक खेल। अखै–अक्षय। समपण–देने वाला। कहांणौ–कहा गया।

छंद सिख

सर धनुख सभ्रत जन सरण,
रख करण सुख रट सु भ्रट रांम।
'किसन' किव समर पल यक न कर,
गहर सुण धर विरद भज सुख धांम ॥ १२२

छंद रस उल्लाला

पनरै तेरैह मत्त पय, छंद उल्लाल पिछांणजै।
रघुनाथ सुजस सौ छंद रच, बीदग मुख वाखांणजै ॥ १२३

रस उल्लारा भेद
दहा

रस उल्लाल तिथ तेर मत, छवीस सम पद स्यांम।
स्यांमक रस दूहा सहित, मुण तै छप्पय नांम ॥ १२४
उलटौ रस उलाल उण, आख वरंग उलाल।
दाख त्रिदस फिर पंच दस, तुक बिहुं वै पड़ताळ ॥ १२५
पनर पनर मत दोय पथ, कांम उलाल कहंत।
यण विध छंद उलालरा, भेद पांच भाखंत ॥ १२६

अथ माहा छंद लछण *

प्रथम त्रीये मत बार पढ़, अख पद बियै अठार।
चौथै पनरह मात रच, यम गाथा उच्चार ॥ १२७
सात चतुर कळ अंत गुरु, जगण छठे थळ जोय।
उत्तर दळ छट्ठे सुथळ, दुज कै यक लघु होय ॥ १२८

---

१२३. बीदग—(सं० विदग्ध) पंडित, कवि।

१२४. तिथ—पन्द्रह।

१२५. त्रिदस—तेरह।

नोट—ग्रंथकर्तानि निम्नलिखित रस उल्लालाके पांच भेदोंके नाम दोहोंमें बतलाये हैं, उनके उदाहरण नहीं दिये। १. रस उल्लाला, २. स्यांम उल्लाला, ३. छप्पय उल्लाला, ४. वरंग उल्लाला, ५. कांम उल्लाला।

* ग्रंथकर्तानि महाछंद शीर्षक देकर नीचे गाथा अर्थात् आर्या छन्दोंका विवरण दिया है।

तीस समत पूरब अरध, उत्तर सत्ताईस।
सत्तावन मता सरब, आखव नांम छवीस ॥ १२९

अथ गाथा उदाहरण

गिरिसि गिरा गौ गौरी, हर गिर हिम हंस हास सिस हीरा।
सुसरि सेस सुरेसं ए, स्रीरांम क्रत आरख्यं ॥ १३०

अथ गाथा गुण दोस कथन

छंद बेअखरी

निज आखै किव 'किसन' निरूपण, सुणौ गाहा गुण दोस सुलछण।
सात चतुरकळ अंत गुरु सज्ज, देह छठे थळ जगण तथा दुज ॥१३१
बांधव पूरब अरध एण बिध, यम हिज जांण जगण उत्तरारध।
काय छठे थळ यक लघु कीजै, दुसट विखम थळ जगण न दीजै ॥१३२
मत्त सतावन स्रब गाथा मह, कळातीस पूरबा अरध कह।
वीस सात कळ उतर अरध विच, रेणव अेम छंद गाथौ रच ॥१३३
पाय प्रथम पढ़ हंस गमण पर, कह गत दुवै पाय विध केहर।
गज गत तीजै पाय गुणीजै, श्रौण चवथ गथ सरप अखीजै ॥१३४
एक जगण जिण मांहे आवै, कुळवंती सौ गाहा कहावै।
बे जगण परकीया बखांणौ, जगण घणा तिण गनका जांणौ ॥१३५
जगण विनां सौ रांड गणीजै, किणी मांझ सौ गाहा न कीजै।

---

१२९. आखव–कह। छवीस–छब्बीस।
१३१. निरूपण–निर्णय। थळ–स्थान। दुज–चार मात्रा।
१३२. एण–इस। यम–ऐसे। हिज–ही। यक–एक।
१३३. मत्त–मात्रा। मह–में। रेणव–कवि। गाथौ–गाथा।
१३४. पाय–चरण। विध–विधि। श्रौण–चरण। चवथ–चतुर्थ।
१३५. मांहे–में। गाह–गाथा, गाहा।

नोट—गाहा छंदमें जगण। ऽ। गण आना अनिवार्य माना गया है। जिस गाथा छंदमें एक जगण होता है उस गाहा छंदको कुलवंती गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें दो जगण हों उसको परकीया गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें जगण अधिक आ जाते हैं उसे गणिका गाथा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें जगण न हो उसे विधवा गाथा कहेंगे।

विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै ॥१३६
सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।
बिण अनुसार अंध का वाचत, सुज अनुसार एक कांणी सत ॥१३७
ब्यंदु दोय सुनयणा बिसेखौ, बहु अनुसार मनहरा बेखौ।
विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत ॥१३८
च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार संखणी बतावी।
गण बोह करण जिका बाळा गण, सुगधा करतळ घणा तिका सुण ॥१३९
भगण बहुत सौ प्रौढ़ा भंणजै, गण बोह विप्र वरधका गिणजै।

---

१३६. रांड–विधवा। मांझ–(मध्य) में। जिस गाथा छंदमें १३ लघु वर्ण होते हैं उसे विप्र कहते हैं। २१ लघु वर्ण जिस गाथामें आ जाते हैं उसे क्षत्रिया संज्ञा दी गई है। इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें २७ लघु वर्ण आ जाँय उसको वैश्य संज्ञा दी गई है और जिस गाथा छंदमें २७ से भी अधिक लघु वर्ण आ जाते हैं उसकी शुद्रा संज्ञा मानी जाती है।

१३७. गाथा छंदमें अनुस्वार आना जरूरी माना गया है। जिस गाथा छंदमें अनुस्वार न हो उसकी संज्ञा अंध मानी गई है। जिस गाथा छंदमें एक ही अनुस्वार होता है उसे एकाक्षी कहते हैं। इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें दो अनुस्वार आते हैं उसको सुनयणा कहते हैं और जिसमें अनुस्वारों की बाहुल्यता होती है उसे मनोहरा गाथा कहते हैं।

१३८. जिस प्रकार गाथा छंदमें अनुस्वार लेना ठीक माना गया है ठीक उसके विपरीत सकार अक्षरका न प्रयोग करना ही सुंदर गिना जाता है। जिस गाथा छंदमें सकार नहीं होता है उसकी संज्ञा पद्मिनी मानी गई है। जिसमें एक भी सकार आ जाय उसे चित्रणी, जिसमें चार सकार आ जाय उसे हस्तिनी तथा सकार-बाहुल्या गाथाको शंखणी कहते हैं।

१३९. गण–गाथा छंदमें चार मात्राके नामको गण कहते हैं। ऐसे चतुष्कलात्मक सात गण और एक गुरुके विन्याससे गाथा छंदका पूर्वार्द्ध बनता है। वे चतुष्कलात्मक पांच गण निम्न प्रकारके होते हैं—

प्रथम गण— (ऽऽ) चार मात्राका। इसका दूसरा नाम कर्ण भी है।
द्वितीय गण—(।।ऽ) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम करतळ या करताळ भी है।
तृतीय गण—(।ऽ।) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम पयहर, पयोहर, पयोधर भी है।
चतुर्थ गण—(ऽ।।) चार मात्रा। इसका दूसरा नाम वसु, पय भी है।

जिस गाथामें दो दीर्घ मात्राका करण (कर्ण) गण बहुत आता हो उसे बाला गाथा कहते हैं तथा जिस गाथामें करतळ या करताळका [।।ऽ प्रथम दो ह्रस्व मात्रा तथा एक दीर्घ मात्रा कुल चार मात्राके समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे मुग्धा कहते हैं। जिस गाथा छंदमें भगणका [प्रथम दीर्घ फिर दो ह्रस्वके चार मात्राके समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे प्रौढ़ा कहा गया है। ठीक इसी प्रकार जिस गाथा छंदमें विप्रका [दुज=द्विज, चार मात्राके ही समूहका] प्रयोग बहुत हो उसे वरधका [वृद्धा] गाथा कहा जाता है।

कका दोय मझ गौरी कहीयै, चंपा अंगीक केहि कच हीयै ॥१४०
भीना अंगी तीन कके भण, तव बौह ककां नांम काळी तण ।
आंमी वसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत ॥१४१
पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्यांम वसन गण ।
गौरे वरण विप्रणी गाहा, चंपक वरण खित्रणी चाहा ॥१४२
भीनै रंग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रंग लायक ।
मुगता भूखण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत ॥१४३
रूपा भरण वैसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत ।
ऊजळ तिलक विप्रणी ओपत, तिलक सुद्रणी लाल ओपत ॥१४४
पीळौ तिलक वैसणी परगट, रुच सुद्रणी स्यांम टीलौ रंट ।
गाहा तणौ छंद कुळ गायौ, वेद पिता कवि जणां वतायौ ॥१४५
सरस भाख माता सुरसत्ती, उप राजक भ्रहमांण उकती ।
स्रवण नखित्र मझ जनम तास सुण, कहियौ सरब गाह चौकारण ।
गाथा नांम छवीस गिणावै, ग्रंथ अनेक वडा कवि गावै ॥१४६

---

१४०. जिस गाथा छंदमें दो 'क' होते हैं उसकी गौरी संज्ञा होती है । जिसमें एक ही 'क' हो उसकी संज्ञा चंपा वर्ण मानी गई है । जिसमें तीन 'क' होते हैं उसका वर्ण (रंग) श्यामता लिए हुए गौर माना गया है और जिसमें 'क' की बाहुल्यता होती है उसकी काली संज्ञा मानी जाती है ।

१४१. सेत–स्वेत । खित्रणी–क्षत्रिया ।

१४२. पीत–पीला । दुकूळ–वस्त्र । वैसणी–वैश्य (स्त्री) । सुद्रणी–शुद्रा । वसन–वस्त्र ।

१४३. विप्री–विप्रा । खित्रिणि–क्षत्रिया । हिम–सोना ।

१४४. वैसणी–वैश्य (स्त्री) । राजत–शोभा देती है । विप्रणी–ब्राह्मणी । ओपत–शोभा देती है ।

१४५. टीलौ–तिलक ।

१४६. भाख–भाषा । उकती–उक्ति । नखित्र–नक्षत्र । मझ–(मध्य) में । तास–उस ।

अथ गाथा छंद छवीस नांम कथन

कवित छप्पै

लच्छी रिद्धी बुद्धी, लज्जा विद्या खंम्या ।
लहदेवी गौरी धात्री, कविस चूरणा छाया ॥
कह कांती मह माया, ईस कीरती सिद्धी ।
मांणणि रांमा गाहेणि, वसंत सोभा हरणी ॥
सुण चक्कवी, सारसी, कुररी चवी, सिंघी हंसी साखिए ।
छावीस नांम गाथा छजै, भल राघव जस भाखिए ॥ १४७

अथ लछी नांम गाथा लछण

सतावीस गुरु त्रय लघू, लछी आखर तीस ।
यक गुरु घट बे लघु वधै, सौ सौ नांम कवीस ॥ १४८

लछी गाथा उदाहरण

अख्यर ३० गुरु २७ लघु ३

तौ सारीखौ तंूही, जै जै स्री रांम जीपणा जंगां ।
सीता वाळा स्वांमी, भूपाळां मौड़ हंू भांमी ॥ १४९

गाथा नांम रिद्धी

अख्यर ३० गुरु २६ लघु ४

रै झौका स्रीरांमं, तंू सातै ताळ वेधण तीरं ।
थूरै दैतां थौका, दीनांचा नाथ जगदाता ॥ १५०

---

१४७. **चवी**–कही । **छजै**–शोभा देते हैं ।

१४८. **त्रय**–तीन । **यक**–एक ।

१४९. **तौ**–तेरे । **सारीखौ**–सदृश, समान । **जीपणा**–जीतने वाला । **जंगां**–युद्धों । **मौड़**–अवतंश । **हूं**–मैं । **भांमी**–वलैया लेता हूँ, न्यौछावर होता हूँ ।

१५०. **झौका**–धन्य-धन्य । **ताळ**–ताड़, वृक्ष । **थूरै**–नाश करता है । **दैतां**–दैत्यों । **थौका**–समूह ।

नोट—गाथाकी संख्याका छप्पय मूल प्रतिके अनुसार ही है किन्तु ठीक प्रतीत नहीं होता ।

गाथाओं के २६ नाम—लच्छी, रिद्धी, बुद्धी, लज्जा, विद्या,खंम्या, देवी, गौरी, धात्री, चूरणा, छाया, कांती, महामाया, कीरती, सिद्धी, मांणणि, रामा, गाहेणि, वसंत, सोभा, हरणी, चक्कवी, सारसी, कुररी, सिंही, हंसी ।

गाथा नांम बुद्धी

अख्यर ३२ गुरु २५ लघु ७

जीहा राघौ जंपै, मोटौ छै भाग जेणरौ भूमं ।
तोटौ ना'वै त्यांरै, केसौ पय सेव अधिकारी ॥ १५१

गाथा नांम लज्जा

अख्यर ३३ गुरु २४ लघु ६

कां कहणौ कौसल्या, मोटौ तैं कीध पुन्य अै ब्रममं ।
जै कंूखै खळ जेता, आखै जग रांम औतारं ॥ १५२

गाथा नांम विद्या

अख्यर ३४ गुरु २३ लघु ११

वेदां भेदां वेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौरांणं ।
राघौ नांम सरीखं, नह कौ नर देव नागिंद्रं ॥ १५३

गाथा नांम खम्या

अख्यर ३५ गुरु २२ लघु १३

है कांनै मौताहळ, कर पंूची कंठमाळ पै संकळ ।
राघौ नांम विहंूण, अनखांणौ ढोर आदम्मी ॥ १५४

गाथा नांम देवी

अख्यर ३६ गुरु २१ लघु १५

सुंदर स्यांम सरीरं, बाधौ कट रांम पीत पीतंबर ।
काळै वादळसंू कै, वीटांणी वीज वरसाळै ॥ १५५

---

१५१. जीहा–जिह्वा । जंपै–जपता है । भूमं–भूमि । तोटौ–कमी । त्यांरै–उनके । केसौ–केशव, विष्णु । पय–चरण ।

१५२. मोटौ–महान । कीध–किया । पुन्य–पुण्य । ब्रममं–ब्रह्म, परब्रह्म । जै–जिस । कूंखै–कुक्षि । खळ–असुर, राक्षस । जेता–जीतने वाला । औतारं–अवतार ।

१५३. वेखौ–देखिये, देखो । पेखौ–देखो । दह–दस । हेर–देख कर । पौरांणं–पुराण । सरीखं–समान, सदृश । नागिंद्रं–(नागेन्द्र) नाग ।

१५४. कांनै–कानोंमें । मौताहळ–मोती । कर–हाथ । पूंची–हाथकी कलाईका आभूषण विशेष । विहूंण–बिना, रहित । अनखांणौ–अन्न खाने वाला । ढोर–पशु ।

१५५. कट–कटि, कमर । पीत–पीला । वीटांणी–वेष्टित हुई । वीज–बिजली । वरसाळै–वर्षा ऋतुमें ।

गाथा नांम गौरी

अख्यर ३७ गुरु २० लघु १७

सज्भी न राघव सेवं, सेवा सौ जाय घरोघर साभ्कै ।
निज सिर हरी न ना'यौ, उण ना'यौ सीस जग अग्गां ॥ १५६

गाथा नांम धात्री

अख्यर ३८ गुरु १६ लघु १६

पढ़ सीतावर प्रांणी, जगचा तज आंन आळ जंजाळं ।
उंबर अंजुळि आब, नहचै आ जांण थिर नांही ॥ १५७

गाथा नांम चूरणा

अख्यर ३६ गुरु १८ लघु २१

रिख सिख गंगा रांम, सेवै पद कंज मंजु सीतावर ।
सौ राघौ पै 'किसना', चींतव निस दिवस उर चंगा ॥ १५८

गाथा नांम छाया

अख्यर ४० गुरु १७ लघु २३

रट रट स्री रघुरांम, दस-सिर जे तार तारके दीनं ।
करुण ऊदध कर कंजं, सीतावर संत साधारं ॥ १५६

गाथा नांम कांती

अख्यर ४१ गुरु १६ लघु २५

अजामेळ यक वारं, आखे अणजांण नारायण ।
जांण आंण जम हरिजन, जुड़ियौ नह मग्गा घर जेणं ॥ १६०

---

१५६. सज्भी–हुई । सेवं–सेना । सौ–वह । ना'यौ–नमाया । उण–उस । अग्गां–अगाड़ी ।

१५७. आंन–अन्य । आळ–असत्य, झूठ । जंजाळ–प्रपंच । उंबर–उम्र, आयु । आब–पानी । नहचै–निश्चय । थिर–स्थिर ।

१५८. कंज–कमल । मंजु–सुंदर । चींतव–स्मरण कर । चंगा–श्रेष्ठ, उत्तम, स्वस्थ ।

१६०. यक–एक । वारं–समय । आखे–कहा । अणजांण–अज्ञानावस्था । जुड़ियौ–प्राप्त हुआ । मग्गा–मार्ग । जेणं–जिस ।

गाथा नांम महामाया

अख्यर ४२ गुरु १५ लघु २७

आळस न कर अजांणं, निज मन कर हरख भजन रघुनाथं ।
सुपन रूप संसारं, विण संतां देहनां वारं ॥१६१

गाथा नांम कीरती

अख्यर ४३ गुरु १४ लघु २९

कमळनायण कमळाकर, कमळा प्रांणेस कमळकर केसौ ।
तन कमळ भातेसं, जे मुख च्यार कमळभू जंपै ॥१६२

गाथा नांम सिद्धो

अख्यर ४४ गुरु १३ लघु ३१

रिखय मख कर रखवाळं, तारी रिख घरण चरण रज हूंता ।
राख जनक पण रघुबर, भागौ कोदंड भूतेसं ॥१६३

गाथा नांम मांणणी

अख्यर ४५ गुरु १२ लघु ३३

जिण दिन रघुबर जंपै, सुकियाअरथ दिवस सोय नर संभळ ।
दखै न राघव जिण दिन, जांणे सोय आळजंजाळं ॥१६४

गाथा नांम रांमा

अख्यर ४६ गुरु ११ लघु ३५

निज कुळ कमळ दिनेसं, चवि सुर गण नखत जांण तिण चंदं ।
मुनि बन रखण म्रगाधिपं, रघुबर अवतं(स) राजेसं ॥१६५

---

१६१. अजांणं–अज्ञान । सुपन–स्वप्न ।

१६२. कमळाकर–विष्णु । कमळा–लक्ष्मी । प्रांणेस–पति । कमळभू–ब्रह्मा ।

१६३. रिखय–ऋषि । मख–यज्ञ । रखवाळं–रक्षा । घरण–स्त्री, पत्नी । हूंता–से । पण–प्रण । कोदंड–धनुष । भूतेसं–महादेव ।

१६४. जंपै–जपता है, स्मरण करता है । सुकियाअरथ–सफल । दिवस–दिन । सोय–वह । संभळ–समझ । दखै–कहता है । आळजंजाळ–व्यर्थ ।

१६५. दिनेसं–सूर्य । चवि–कह कर । नखत–नक्षत्र । म्रगाधिपं–मृगेन्द्र, सिंह । अवतं(स)–शिरोमणि । राजेसं–सम्राट ।

गाथा नांम गाहेणी
अख्यर ४७ गुरु १० लघु ३७

असमझ समझ अखीजै, तौ पण हरि नांम अवस जन तारत ।
जिम परसत अजांणं, दगधत तन समथ्थ दावानळं ॥१६६

गाथा नांम वसंत
अख्यर ४८ गुरु ९ लघु ३९

रघुबर सौ प्रभु तज कर औयण जे अवर अमर अभियासत ।
त्रखित सुरसुरी तीरह, खिती कंूप खणत नर मूरख ॥१६७

गाथा नांम सोभा
अख्यर ४९ गुरु ८ लघु ४१

अघ हर सुखकर अमळं, रट रट जस अघट भाग धन रघुबर ।
गावण जिण फळ गहरं, बगै बलमी करिख बिसुधा ॥१६८

गाथा नांम हरिणी
अख्यर ५० गुरु ७ लघु ४३

नित जप जप जगनायक, वायक सत कहण सुजस कमळावर ।
सुकरत करण सदीवत, सोहत औ करत सत पुरसं ॥१६९

गाथा नांम चक्कवी
अख्यर ५१ गुरु ६ लघु ४५

अह मत तज भज ईसर, करणाकर सधर सु तन दसरथकौ ।
यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबररे ॥१७०

---

१६६. **असमझ**–अज्ञ नावस्था । **समझ**–ज्ञान, बुद्धि । **अखीजै**–कहा जाय । **पण**–भी । **अवस**–अवश्य । **जन**–भक्त । **तारत**–उद्धार करता है । **परसत**–स्पर्श करते हैं । **अजांणं**–भूलसे । **दगधत**–जलाता है । **समथ्थ**–समर्थ । **दावानळं**–दावाग्नि ।

१६७. **सौ**–जैसा । **प्रभु**–प्रभु, ईश्वर । **औयण**–चरण । **अभियासत**–अभ्यास करते हैं, स्मरण करते हैं । **त्रखित**–त्रषित, प्यासा । **सुरसुरी**–गंगानदी । **तीरह**–तट । **खिती**–पृथ्वी । **खणत**–खोदता है ।

१६८. **अमळं**–पवित्र । **गहरं**–गंभीर । **बलमी**–बलमीकि, बांबी । **करिख**–कर्षण कर । **बिसुधा**–पृथ्वी ।

१६९. **कमळावर**–कमलापति, विष्णु । **सुकरत**–श्रेष्ठ कार्य, सुकृत्य । **सदीवत**–सदैव, नित्य ।

१७०. **अह**–अभिमान, गर्व । **मत**–बुद्धि । **करणाकर**–करुणाकर, दयालु । **यक**–एक । **छिन**–क्षण ।

गाथा नांम सारसी

अख्यर ५२ गुरु ५ लघु ४७

जन लज रखण जरूरह,
दसरथ सुत सकळ सुजन सुखदायक।
सिरदस घायक समहर,
सत वायक रांम सरसत सुभ ॥१७१

गाथा नांम कुररी

अख्यर ५३ गुरु ४ लघु ४९

भुज-बळ खळ-दळ भंजण,
निज जन सुख करण सरण राखण नित।
कहत वरण कथ जग कर,
आपण दत लंक चित अपहड़ ॥ १७२

गाथा नांम सिंघी

अख्यर ५४ गुरु ३ लघु ५१

असन वसन जळ अहनिस,
मत कर मन फिकर समर महमाहण।
पोखण भरण दिवस प्रत,
निज जन फिकर चित्त रघुनायक ॥ १७३

गाथा नांम हंसी

अख्यर ५५ गुरु २ लघु ५३

जगत जनक हरि जय जय,
भय जांमण मरण हरण कर निरभय।

---

१७१. जरूरह–अवश्य। सिरदस–रावण। घायक–संहारक, नासक। समहर–युद्ध। वायक–वाक्य, शब्द।

१७२. आपण–देने वाला। दत–दान। लंक–लंका। अपहड़–उदार।

१७३. असन–भोजन। वसन–वस्त्र। अहनिस–रात दिन। महमाहण–विष्णु, ईश्वर। दिवस–दिन। प्रत–प्रति।

१७४. जांमण–जन्म। हरण–मिटाने वाला।

'किसन' सुकव सिर धर कर,
रखण चरण सरण रघुनायक ॥ १७४

दूहौ

विध यण गाथा वरणिया, सुजस रांम कथ सार ।
विध कोई चूकौ वरणतां, सत किव पढ़ौ सुधार ॥ १७५

अथ गाहा १ गाहू २ विगाहा ३ उगाहा ४ गाहेणी ५ सीहणो ६ खंधांणा ७ ।

विचार लछण वरणण ।

गाहा विगाहा लछण

छंद बेग्रख्यरी

गाहा१ मात्र सतावन गावै, गाहौ२ उलट विगाह गिणावै ।
चौपन मत गाहू३ उचरीजै, उगाहौ४ मत्त साठ अखीजै ॥१७६
गांहेणी५ बासठ मत गावत, कियां उलट सीहणी६ कहावत ।
चौसठ मत खंधांणा७ चवीजै, कळ विभाग यां पद-प्रत कीजै ॥१७७

गाथारै पद-प्रत मात्रा वरणण

आद बार मत दुवै अठारह, बार त्रतीय चव पनर विचारह ।

विगाह पद-प्रत मात्रा

पद धुर बार दुवै पनरह पुण, तीयै बार अठार चवथ तिण ॥१७८

गाहू पद-प्रत मात्रा

प्रथम बार मत्त पनर दुवै पद, वळ तिय बार पनर चौथै वद ।

उगाहा पद-प्रत मात्रा प्रमांण

पहला बार अठार दुवै पद, तीजै बार अट्ठार चवथ द्रढ ॥१७९

---

१७५. विध—विधि । यण—इस । किव—कवि ।
१७६ मात्र—मात्रा । उचरीजै—कहिए । अखीजै—कहिए ।
१७७. मत—मात्रा । कहावत—कहा जाता है । चवीजै—कहिए । पदप्रत—प्रति पद, प्रति चरण ।
१७८. पद—चरण । धुर—प्रथम । बार—बारह । दुवै—दूसरे । पुण—कह । तीयै—तृतीय । चवथ—चतुर्थ ।
१७९. वळ—फिर । तिय—तृतीय ।

गाहेणी पद-प्रत मात्रा

आद बार अट्ठार दुतीय अख, सुज तिय बार बीस चोथै सख ।

सींहणी पद-प्रत मात्रा

बाद आद दूसरै वीस बळ, कह तिय बार अठार चवथ कळ ॥१८०

खंधांणा पद-प्रत मात्रा

मात्र बतीस च्यार तुक मांही, दोय गुरु पद अंत दियांही ।
निज किव किसन कियां यम निरणौ, बड कवि सीय रांम जस वरणौ ॥१८१

अथ गाथा अथवा गाहा उदाहरण

महकुळ धिंन पित मातं, सौ घर न धन्य सुरग पित्रेसुर ।
सौ धन भवन सकाजं, बासै जै दास रघुबरकौ ॥१८२

अथ विगाहौ उदाहरण

करणी धन कौसळ्या, उदरे जिण रांम औतारं ।
भण दसरथ बडभागं, जिण घर सुत रांमचंद्र जगं जेता ॥१८३

अथ गाहू उदाहरण

सुखदाता सरणायां, निज संतां जानुकी नायक ।
दस सिर भंज दुबाहं, राहं जग कीत राजेस्वर ॥१८४

अथ उगाहौ

तं जौ चाहै तरबौं, जप मत मन आंन आळ जंजाळं ।
नित जप राघव नांमं, तिण पाथर नाव उदध कपि तारे ॥१८५

---

१८०. आद–आदि, प्रथम । दुतीय–द्वितीय । अख–कह । सुज–फिर । तिय–तृतीय । कळ–मात्रा ।

१८१. मात्र–मात्रा । मांही– में, अंदर । यम–इस प्रकार ।

१८२. धिन–धन्य । पित–पिता । मातं–माता । सुरग–स्वर्ग । धन–धन्य ।

१८४. सरणायां–शरणमें आया हुआ । दुबाहं–वीर ।

१८५. तरबौ–तैरना, उद्धार करना । आंन–अन्य । आळ जंजाळं–व्यर्थका प्रपंच । पाथर–पत्थर । उदध–उदधि, सागर । कपि–बंदर ।

अथ गाहिणी

तन घणस्यांम तराजं, तड़िता छिब भात पीत पीतंबर ।
सुकर बांण सारंगं, सीता अंग बांम रांम भज नूप सिध ॥१८६

अथ सीहणी

आखर बखत उचारै, जीहवा धन रांम नांम रट भ्रट जौ ।
पोखणतौ भर पायौ, भोजन अढार भांतचौ भरणौ ॥१८७

अथ खंधांणा

दीन करण प्रतपाळ दासरथ, भारत खळदळ सबळ बिभंजे ।
धनख धरण तन बरण नीरधर, रघुबर जनक सुता मन रंजे ॥१८८
संूदर रूप अनूप स्यांमता, अंजण नयण मुनी रिख अंजे ।
तीनकाळदरसी व्है ततपुर, गौरव कांम क्रोध अध गंजै ॥१८९

अथ एकसूं लगाय छवीस तांई गाथा काढण विध

दूहौ

गाथारा लघु अखिर गिणि, जां मझ एक घटाय ।
आध कियांसंू ऊबरै, सोई नांम सुभाय ॥ १९०

अरथ

हरेक गाथारा लघु आखिर गिणणा ज्यांमेंसूं पेली तौ एक अखिर घटाय देणौ, पछै बाकी रहै ज्यांनै दोय भागमांसूं एक भाग परौ काढचां बाकी रहै अखिर जतरमौ गाहौ छै, यूं जांणणौ ।

---

१८६. घण—घन, बादल । तराजं—समान । तड़िता—विजली । छिब—कांति, शोभा । भात—शोभा । सुकर—हाथ । बांण—तीर । सारंगं—धनुष ।

१८७. आखर—आखिर, अंतिम । बखत—समय । जीहवा—जिव्हा, जीभ । पोखणतौ—पोषण करता हुआ ।

१८८. दीन—गरीब । प्रतपाळ—पालन-पोषण । विभंजे—नाश किये । नीरधर—बादल । रंजे—प्रसन्न किया ।

१८९. तीनकाळदरसी—त्रिकालदर्शी ।

१९०. अखिर—अक्षर । जां—जिन । मझ—मध्य । आध—आधा । सोई—वही । ज्यां—जिन ।

अथ गद्य छंद लछण विध

दूहौ

गद्य पद्य बे जगतमें, जांण छंदकी जात।
सम पद पद्य सराहजै, छूटक गद्य छ जात ॥ १९१
दवावैत फिर बात दख, जुगत वचनका जांण।
औछ अधक तुक असम अे, बीदग गद्य बखांण ॥ १९२

अथ दवावैत

माहाराजा दसरथके घर रांमचंद्र जनम लिया।
जिस दिन सै आसरू नै ऊदेग देवतूं नै हरख किया।
विसवामित्र मख-रख्याके काज अवधेसतैं जाच लिये।
माहाराजा दसरथ उसी बखत तईनाथ किये।
सात रोज निराहार एकासण सनद्ध रहै।
रिखराजका जिगकी रछ्याकाज रजवाटका बिरद भुजदंडूं गहे।
सुबाहूकूं बांणसे छेद जमराजके भेट पुंहुंचाया।
मारीचके तांई वाय बांणसे मार उडाया।
रज पायसे तारी गौतमकी घरणी।
खंडपरसका कोदंड खंड कर जांनुकी परणी।

---

१९१. सम पद–यहां छंद-शास्त्रानुसार छंदोंके नियममें बंधे हुए शब्द व वाक्य। सराहजै–सराहना कीजिए। छूटक–जिन पदोंमें छंद-शास्त्रानुसार नियम न हो, गद्य।

१९२. औछ–कम। अधक–अधिक। बीदग–विदग्ध, पंडित, कवि।

१९३. आसरू–असुर, राक्षस। ऊदेग–उद्वेग, चिंता। मख-रख्या–यज्ञकी रक्षा। जाच लिये–मांग लिये। तईनाथ–तैनात, किसी काम पर लगाया या नियुक्त किया हुआ। निराहार–बिना भोजन। एकासण–एक ही आसन या बैठक। सनद्ध–(संनद्ध) कटि-बद्ध। जिग–यज्ञ। रछ्या–रक्षा। रजवाट–क्षत्रियत्व, वीरता। बिरद–विरुद। गहे–धारण किये। तांई–लिये। रज–धूलि। पाय–चरण। घरणी–स्त्री, पत्नी। खंड-परसका–खंडपरशु महादेवका। कोदंड–धनुष।

अवधकूं आते दुजराजकूं सुद्ध भाव किया।
जननीसे सलांम कर सपूतीका ब्रिरद लिया।
ऐसा स्री रांमचंद्र सपूतांका सिरमोड़।
अरोड़ का रोड़।
गौ बिप्रांका पाळ।
अरेसांका काळ।
सरणायां-साधार।
हाथका उदार, दिलका दरियाव।
रजवाटकी नाव।
भूपांका भूप साजोतका रूप।
काछवाचका सबूत।
माहाराज दसरथका सपूत।
भरथ लछमण सत्रुघणका बंधु।
करुणाका सिंधु। १९३

वचनका

हांजी ऐसा माहाराजा रांमचंद्र असरण-सरण।
अनाथ नाथ बिरदकूं धारै।
सौ ग्राहकूं मार न्याय ही गजराजकूं तारै।
और भी नरसिंघ होय प्रवाड़ा जगजाहर किया।
हरणाकुसकूं मार प्रहलादकूं उबार लिया।
प्रळैका दिन जांण संत देस उबारणकूं मच्छ देह धारी।

---

१९३. जननी–माता। सलांम–प्रणाम। सपूती–सुपुत्र होनेका भाव। अरोड़–वह जो किसीके बंधन या रोकमें न रह सके। रोड़–रोक, बंधन। अरेसूं–अरीश, शत्रु। काळ–मृत्यु। सरणायूं-साधार–शरणमें आने वालेकी रक्षा करने वाला। साजोतका रूप–ज्योति-स्वरूप। काछवाचका सबूत–जितेन्द्रिय नियतात्मा और सत्य-संध। सिंधु– समुद्र।

१९४. असरण-सरण–जिसे कोई शरण न देने वाला हो उसे भी शरण देने वाला। प्रवाड़ा–महान् कार्य, चमत्कारपूर्ण कृत्य। हरणाकुस–हिरण्यकशिपु। प्रळै–प्रलय, नाश। मच्छ–मत्स्यावतार।

सतब्रतकी भगती जगजाहर करी।
ऐसा स्रीरांमचंद्र करणानिध।
असरण-सरण न्याय ही वाजै।
जिसके तांई जेता बिरद दीजै जेता ही छाजै॥ १९४

वारता

रांमचंद्र जिसा सिध रजपूत कोई वेळापुळ होवै छै।
ज्यांके प्रताप देव नर नाग खटब्रन सुख नींद सोवै छै।
राजनीतका निधांन सींह बकरी एक घाटै नीर पावै छै।
पंछीकी पर बागां बाज दहसत खावै छै।
तपके प्रभाव पांणी पर सिला तरै छै।
भ्रगुपत सा त्रबंक ज्यांका बळ काढ़ सणांकसुधा करै छै।
बाळ दहकंधसा अरोड़ानं रोड़ जमींदोज कीजै छै।
सुग्रीव भभीखण जिसा निरपखांनं केकंधा लंक दीजै छै।
जांका भाग धन्य जे रांमगुण गावै छै।
जांमण मरण भय मेट अभैपद पावै छै॥ १९५

---

१९४. करणानिध–करुणानिधि, दयासागर। तांई–लिए, निमित्त। जेता–जितने। छाजै–शोभा देते हैं, शोभित होते हैं।

१९५. जिसा–जैसा। सिध–सिद्ध, वीर। वेळापुळ–समय, कभी। खटब्रन–षडवर्ण, ब्राह्मणादि छ जातिएं विशेष। निधांन–खजाना। पर–पंख। बाज–शिकारी पक्षी विशेष। दहसत–भय, डर। सिला–पत्थर। भ्रगुपत–परशुराम। त्रबंक–विकट, बांकुरा अथवा त्र्यंबक, महादेव। बळ–गर्व। सणंकासुधा–बिलकुल सीधा। बाळ–बालि बंदर। दहकंध–दशकधर, रावण। अरोड़ा–जबरदस्त। जमींदोज–जो गिर कर जमीनके बराबर हो गया हो, जमीनके अंदर। भभीखण–विभीषण। निरपखां–जिसका कोई पक्ष या सहायक न हो। केकंधा–(सं० किष्किंधा) मैसूरके आसपासके देशका प्राचीन नाम। जांका–जिनके। जांमण–जन्म। अभैपद–मोक्ष।

दूहौ

असम चरण मात्रासु यम, कहीया छंद 'किसन'।
राघव जस छंदां रहस, बुध सारीख ·····न ॥ १९६

इति मात्रा असम चरण छंद संपूरण ।

अथ मात्रा दंडक छंद वरणण

दूहौ

भगवत गीताऊ भणै, बीता अघ सरबेण ।
सीता नायक संभरै, जन भीता नह जेण ॥ १९७

सोरठौ

पेट हेक कज पात, मेट सोच सांसौ म कर ।
रे संभर दिन-रात, नांम विसंभर नारियण ॥ १९८

अथ मात्रा दंडक छंद लछण

दूहौ

बे छंदां मिळ छंद व्है, मात्रा दंडक सोय ।
छप्पें कुंडळियौ कवित्त, फिर कंूडळिया होय ॥ १९९

अथ छप्पै लछण

दूहौ

कायब उल्लालौ मिळै, छप्पै तिण थळ होय ।
ग्यार तेर मत च्यार पय, पनर तेर पय दोय ॥ २००

छप्पै उदाहरण

कवित छप्पै

पंखी मुनि मन पंख, तीर भव-सिंधु तरायक ।
मुकत त्रिया सुख मूळ, स्रवण ताटंक सुभायक ॥

---

१९६. यम–ऐसे । रहस–रहस्य, भेद ।
१९७. भणै–कहते हैं । बीता–व्यतीत हो गये । अघ–पाप । सरबेण–सब, समस्त । संभरै–स्मरण कर । भीता–भयभीत । जेण–जिससे ।
१९८. पेट हेक कज–एक पेटके लिए । पात–पात्र, कवि । सोच–चिंता । सांसौ–संशय, शक । संभर–स्मरण कर । विसंभर–विश्वंभर, ईश्वर । नारियण–नारायण ।
१९९. सोय–वह ।
२००. कायब–काव्य, काव्यछंद । थळ–स्थान । मत–मात्रा । पय–चरण ।
२०१. पंखी–पक्षी । तीर–तट, किनारा । भव-सिंधु–संसार रूपी समुद्र । तरायक–तैरने वाला । मुकत–मुक्ति । स्रवण–कान । ताटंक–कर्ण-भूषण । सुभायक–सुन्दर ।

अघ कळ घोर अंधार, बिंब रवि चंद्र बिकासरा।
प्रगट धरम द्रुम उभय यम स्रुति नयरा सुभासरा॥
बद 'किसन' रकार मकार बिंदु, सत रथ चक्र समाथका।
भव जन तमांम कारक अभय, नांम अंक रघुनाथका॥ २०१

अजय नांम छप्पै लछण

दूहौ

बिध यकहत्तर छपय बद, सतर गुरु लघु बार।
अजय जिकौ गुरु घट बधै, बेलघु नांम निहार॥ २०२

अजय छप्पै उदाहरण

छप्पय

जै जै भूपां भूप, सदा संतां साधारै।
दीनां दाता देव, मेछ आनेकां मारै॥
सीता स्वांमी सूर, बीर बागां बांणासां।
लंका जैहा ले'र, दांन देणौ तं दासां॥
सेहाई संतां सेवगां, ताई देणा तापरां।
औनाड़ा राघौ भू अखै, पांणां धाड़ा आपरां॥ २०३

अथ यकहतर छप्पै नांम कथन

छप्पै

अजय १ बिजय २ बळ ३ करण ४,
बीर ५ वैताळ ६ व्रहंजळ ७।
मरकट ८ हरि ९ हर १० ब्रहम ११,
इंद १२ चंदण १३ सुभकर १४ वळ।

---

२०१. अघ–पाप। कळ–समूह, कलियुग। बिंब–प्रतिबिंब। भव–संसार। कारक–करने वाला।

२०३. साधारै–रक्षा करता है। मेछ–म्लेच्छ, असुर। आनेकां–अनेक। सूर–सूरवीर। बागां–बजने पर, चलने पर। बांणासां–तलवारों। जैहा–जैसा। दासां–भक्तों। सेहाई–सहायक। ताई–आततायी, दुष्ट। ताप–कष्ट। औनाड़ा–वीर। पांणां–हाथों। धाड़ा–धन्य-धन्य।

स्वांन १५ सिंघ १६ सादूळ १७,
कूरम १८ कोकिल १९ खर २० कुंजर २१ ।
मदन २२ मच्छ २३ तालंकर २४,
सेस २५ सारंग २६ पयोधर २७ ।
कह कुंद २८ कमळ २९ बारण ३० सरभ ३१,
जंगम ३२ जुतिस्ट ३३ बखांण जग ।
दाता ३४ सर ३५ सुसरह ३६ समर ३७ दख,
सारस ३८ सारद ३९ कह सुभग ॥ २०४

फेर नांम

छप्पै

मेर ४० मकर ४१ मद ४२ सिद्ध ४३,
बुद्धि ४४ करतळ ४५ कमळाकर ४६ ।
धवळ ४७ सुमण ४८ फिर मेघ ४९,
कनक ५० क्रस्णह ५१ रंजन ५२ धर ।
ध्रुव ५३ ग्रीखम ५४ गरुड़ह ५५,
गिणा (य) ससि ५६ सूर ५७ सल्य ५८ सख ।
नवरंग ५९ मनहर ६० गगन ६१,
रतन ६२ नर ६३ हीर ६४ भ्रमर ६५ श्रख ।
सेखर ६६ कुसम ६७ कहि दीप ६८ संख ६९,
बसु ७० सबद ७१ बाखांणीये ।
कवि छपय नांम जसराम कज,
जग यकहतर जांणीये ॥ २०५

१. **अजय**—ग्र० ८२ गु० ७० ल० १२ । २ **विजय**—ग्र० ८३ गु० ६९ ल० १४ । ३. **बल्**—ग्र० ८४ गु० ६८ ल० १६ । ४. **करण**—ग्र० ८५ गु० ६७ ल० १८ । ५. **बीर**—ग्र० ८६ गु० ६६ ल० २० । ६. **बैताल्**—ग्र० ८७ गु० ६५ ल० २२ । ७. **ब्रहंजल्**—ग्र० ८८ गु० ६४ ल० २४ ।

८ **मरकट**—ग्र० ८९ गु० ६३ ल० २६ । ९. **हरि**—ग्र० ९० गु० ६२ ल० २८ । १०. **हर**—ग्र० ९१ गु० ६१ ल० ३० । ११ **ब्रहम**—ग्र० ९२ गु० ६० ल० ३२ । १२. **इंद**—ग्र० ९३ गु० ५९ ल० ३४ । १३. **चंदरण**—ग्र० ९४ गु० ५८ ल० ३६ । १४. **सुभकर**—ग्र० ९५ गु० ५७ ल० ३८ । १५. **स्वांन**—ग्र० ९६ गु० ५६ ल० ४० । १६. **सिंघ**—ग्र० ९७ गु० ५५ ल० ४२ । १७ **सारदूल**—ग्र० ९८ गु० ५४ ल० ४४ । १८. **कूरम**—ग्र० ९९ गु० ५३ ल० ४६ । १९. **कोकिल**—ग्र० १०० गु० ५२ ल० ४८ । २०. **खर**—ग्र० १०१ गु० ५१ ल० ५० । २१. **कुंजर**—ग्र० १०२ गु० ५० ल० ५२ । २२ **मदन**—ग्र० १०३ गु० ४९ ल० ५४ । २३. **मछ**—ग्र० १०४ गु० ४८ ल० ५६ । २४. **तालंक**—ग्र० १०५ गु० ४७ ल० ५८ । २५. **सेस**—ग्र० १०६ गु० ४६ ल० ६० । २६. **सारंग**—ग्र० १०७ गु० ४५ ल० ६२ । २७. **पयोधर**—ग्र० १०८ गु० ४४ ल० ६४ । २८. **कुंद**—ग्र० १०९ गु० ४३ ल० ६६ । २९ **कमल**—ग्र० ११० गु० ४२ ल० ६८ । ३०. **बारण**—ग्र० १११ गु० ४१ ल० ७० । ३१. **सरभ**—ग्र० ११२ गु० ४० ल० ७२ । ३२. **जंगम**—ग्र० ११३ गु० ३९ ल० ७४ । ३३ **जुतिष्ट**—ग्र० ११४ गु० ३८ ल० ७६ । ३४. **दाता**—ग्र० ११५ गु० ३७ ल० ७८ । ३५ **सर**—ग्र० ११६ गु० ३६ ल० ८० । ३६ **सुसर** (सुस्सू)—ग्र० ११७ गु० ३५ ल० ८२ । ३७ **समर** (व्रद्ध नाळीक जात)—ग्र० ११८ गु० ३४ ल० ८४ । ३८. **सारस**—ग्र० ११९ गु० ३३ ल० ८६ । ३९. **सारद** (ईंनै वळता संख कैवै छै)—ग्र० १२० गु० ३२ ल० ८८ । ४० **मेर**—ग्र० १२१ गु० ३१ ल० ९० । ४१. **मकर**—ग्र० १२२ गु० ३० ल० ९२ । ४२. **मद**—ग्र० १२३ गु० २९ ल० ९४ । ४३. **सिंघ**—ग्र० १२४ गु० २८ ल० ९६ । ४४. **बुद्धि**—ग्र० १२५ गु० २७ ल० ९८ । ४५. **करतल** (मुगताग्रह)—ग्र० १२६ गु० २६ ल० १०० । ४६. **कमलाकर**—ग्र० १२७ गु० २५ ल० १०२ । ४७. **धवल**—ग्र० १२८ गु० २४ ल० १०४ । ४८. **सुमण**—ग्र० १२९ गु० २३ ल० १०६ । ४९. **मेघ**—ग्र० १३० गु० २२ ल० १०८ । ५०. **कनक** (कमळबंध ग्रंत नगण सरवत्र)—ग्र० १३१ गु० २१ ल० ११० । ५१. **क्रष्ण**—ग्र० १३२ गु० २० ल० ११२ । ५२ **रंजन**—ग्र० १३३ गु० १९ ल० ११४ । ५३. **ध्रुव**—ग्र० १३४ गु० १८ ल० ११६ । ५४. **ग्रीखम** (ग्रीष्म)— ग्र० १३५ गु० १७ ल० ११८ । ५५. **गरुड़** (ईं कवितकौ नांम समवळति विधांन कहै छै) —ग्र० १३६ गु० १६ ल० १२० । ५६. **ससि**—ग्र० १३७ गु० १५ ल० १२२ । ५७. **सूर**—ग्र० १३८ गु० १४ ल० १२४ । ५८. **सल्य** (शल्य)—ग्र० १३९ गु० १३ ल० १२६ । ५९. **नवरंग**—

अ० १४० गु० १२ ल० १२८ । **६०. मनहर** (मनोहर)—अ० १४१ गु० ११ ल० १३० । **६१. गगन्द**—अ० १४२ गु० १० ल० १३२ । **६२. रतन**—अ० १४३ गु० ६ ल० १३४ । **६३. नर**—अ० १४४ गु० ८ ल० १३६ । **६४. हीर**—अ० १४५ गु० ७ ल० १३८ । **६५. भ्रमर**—अ० १४६ गु० ६ ल० १४० । **६६. सेखर**—अ० १४७ गु० ५ ल० १४२ । **६७. कुसम** (ईंकौ नांम जातासंख कैवै छै)—अ० १४८ गु० ४ ल० १४४ । **६८. दीप**—अ० १४६ गु० ३ ल० १४६ । **६६. संख**—अ० १५० गु० २ ल० १४८ । **७०. वसु**—अ० १५१ गु० १ ल० १५० । **७१. सब्द**—अ० १५२ गु० ० ल० १५२ ।

अथ छप्पै नांम काढण विध । छप्पैरा लघु आखर व्है ज्यांमेंसूं दस घटाय दोय भाग करणा, एक भाग घटायां बाकी रहै जतरमौ छप्पै छै ।

अथ अजयादिक यकहत्तर छप्पै नांम काढण विध ।

दूहा

गिण छप्पयचा बरण लघु, त्यां मज्झे दस टाळ ।
आधा कीधां ऊबरै, वेडर नांम वताळ ॥ २०६

इति यकहत्तर विध छप्पय अख्यर गुरु लघु प्रमांण नांम कथन संपूरण ।

सुभं भवतु

अथ मात्रा छंद, मात्रा उपछंद, मात्रा असम चरण, मात्रा दंडक छंद गुरु लघु काढण विध ।

अथ दूहौ

पूछै अन कवि छंद पढ़ि, गिण जिण मत्त प्रमांण ।
घटै स गुरु कह गुरु घटै, सेख रहै लघु जांण ॥ २०७

अरथ

पैला कवेस्वर दूहौ पढ नै कहै--यणमें गुरु कितरा, लघु कितरा सौ कहौ । जठै दूहारी सरब मात्रा अड़ताळीस गिणणी, अड़ताळीसमें घटै जतरा गुरु अखर जांणणा नै गुरु हुवै सौ घटायां बाकी रहे सौ लघु जांणणा । यूं सरब मात्रा छंद गीत कवितादिक जांणणा ।

---

२०५. **ज्यांमेंसूं**–जिनमें । **जतरमौ**–उतना । **यकहत्तर**–इकहत्तर ।

२०६. **वेडर**–निर्भय । **बताळ**– बतला ।

२०७. **काढण**–निकालने । **अन**–अन्य । **सेख**–शेष । **पैला**–प्रथम । **कवेस्वर**–कवीश्वर । **यण**–इस । **कितरा**–कितने । **जतरा**–उतने, जितने । **यूं**–इस प्रकार ।

उदाहरण

दूहौ

रे चित व्रत द्रढ़ एम रख, मूरत सांम मझार।
मेल्ह सुरत नट वांसमें, प्रगट वरत व्है पार ॥ २०८

अरथ

इण दूहारा अड़तीस अखिर छै, नै दूहौ छंद अठताळीस मात्रारौ व्है छै। अठताळीस मांहासूं दस अखिर गिया जद अड़तीस रह्या।

सौ ईं दूहामें दस गुरु आखिर छै, नै अड़तीस मांसूं दस गुरु आखिर घटाया जद अठाईस रह्या, सौ अठाईस आखिर लघु छै, यूं समस्त मात्रा छंद जांणणा।

दूहौ

वळ अह-पिंगळ कवितरी, वदी जात बावीस।
तवूं नांम सारा तिकै, वळ नोखा वरणीस ॥ २०९

अथ बावीस छप्पै नांम

कवित छप्पै

वळता १ जाता संख २ कमळबंधह ३ समबळ ४ कह।
लघु ५ व्रद्धनाळीक ६ छत्र ७ नीसरणीबंधह ८ ॥
नाट ९ चोप १० संकळह ११ अनै मुगताग्रह १२ अक्खव।
कुंडळियौ १३ चौटियौ १४, वेध-हीरा १५ कर-पल्लव १६ ॥

---

२०८. एम–इस प्रकार। मूरत–मूर्ति। सांम–श्याम, स्वामी, श्रीरामचंद्र भगवान। मझार–मध्य, में। मेल्ह–रख। सुरत–ध्याव। वरतन–वरत्र, चमड़ेका मोटा रस्सा।

२०९. वळ–फिर। अह-पिंगळ–नागराज पिंगल, शेषनाग। वदी–कही। तवूं–कहता हूं। तिकै–वे

२१०. २२ छप्पय कवित्तोंके नांम—

१. वळता (वळता-संख), २. जाता संख, ३. कमळबंध ४. समवळ (समवळ विधांन अथवा समवळ विधांनीक), ५. लघुनाळीक, ६. व्रद्धनाळीक, ७. छत्रबंध, ८. नीसरणी-बंध, ९. नाट, १०. चोप, (मतांतरसे चोपई, छप्पै, कवित), ११. संकळ (संकळजात), १२. मुकताग्रह, १३. कुंडळियौ, १४. चौटियौ (चौटीबंध), १५. वेधहीरा (हीराबेधी) १६. करपल्लव।

एक-लवयण १७ मज्झ अक्खरौ १८ ,
विधांनीक १९ हल्लव २० विहद्द ।
ताळूर-ब्यंव २१ अहरेअळग २२ ,
वीस दोय छप्पय सुवद ॥ २१०

अथ अनुक्रमसे छप्पै नांम

दूहा

वळता १ जाता २ संख लघू ३ व्रद्ध-नाळीक ४ ।
समवळ ५ नाट ६ चौटियौ ७, ताळब्यंव ८ तहतीख ॥ २११
चोप ९ हल्लव १० कवीत ए, दिया नाग दरसाय ।
यकहतरसूं अधिक कहि, कीधी जुगत न काय ॥ २१२
कर विचार मनहूं कहूं, वरणण सुद्ध वणाय ।
तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय ॥ २१३

उक्त छप्पै

दूहा

कमळ १ छत्रबंधह २ कवित, निसरणीबंध ३ नांम ।
मुगताग्रह ४ करपल्लवी ५, तव कुंडळियौ ६ ही तांम ॥ २१४
हीरावेधी ७ हिक वयण ८, मझ्झ अखिरौ ९ विधांन १० ।
अहरअळग ११ संकळयता १२, मुणिया नाग सुमांन ॥ २१५
द्वादस छपय अह दखे, जुगत रूप सुध जांण ।
बावीसह छप्पय वदूं, वरणे रांम वखांण ॥ २१६

---

१७. एकळवयण (हेकलवयण), १८. मज्झअखरौ, १९. विधांनीक, २०. हल्लव, २१. ताळूरब्यंव, २२. अहरेअळग (अहरअळग) ।

नोट—उपर्यूक्त २२ ही छप्पय कवित कविने आगे इसी क्रमसे नहीं दिये हैं ।

२११. **यकहतर**—इकहत्तर । **कीधी**—की । **जुगत**—युक्ति ।

२१२. **काय**—कुछ । **तगसीरी**—तकसीर, कमी । **छिम**—क्षरण, क्षीण ।

२१३. **तव**—कह ।

२१४. **मुणिया**—कहे । **नाग**—नागराज पिंगल, शेषनाग ।

२१६. **वदूं**—कहता हूँ । **वखांण**—यश, कीर्ति ।

अथ समवळ विधांन छप्पै मात्रा वरण लछण

दूहौ

आद अंत छप्पय नगण, गुरु पनरहै उगुणीस ।
यक सौ सैंतीसह अखर, बद लघु सौ बावीस ॥ २१७

अरथ

छ ही चरणके आद अंत नगण आवै, एकसौ सैंतीस सरव अखिर। पनरै गुरु अखिर होवै, लघु अखिर एकसौ बावीस होवै अर उपमे उपमांनकौ सम भाव वरणै सौ समवळ विधांन कवित छप्पै ।

दूहौ

जिणमें समता वरणजै, उपमे अर उपमांन ।
जांणौ छप्पै अह जपै, सौ सम वळह विधांन ॥ २१८

समबल विधांन छप्पै उदाहरण

नयण कंज सम निपट, सुभग आंणण हिमकर सम ।
जप सम 'ग्रीवह' जळज, तवत सम हीर डसण तिम ॥
अधर ब्यंब सम अरुण, समह भुज नागरौ ज सख ।
सिल समांन उर समर, अथघ सम स्यंध उदर अख ॥
कह सम मयंद अत छीण कट, जयत खंभ रिण सुपय जिम ।
समवळ विधांन खटपद 'किसन', सुज राघव रवि कोट सम ॥२१९

जाता संख लछण दूहौ

रस स्यंगार य हासरस, बिच जिण कवित बखांण ।
जाता संख जिणनुं कहै, वरणव रांम वखांण ॥ २२०

---

२१७ उगणीस–उन्नीस ।

२१८. समता–समानता, सादृश्य । उपमे–उपमेय, जिसकी उपमा दी जाय, वर्णनीय । उपमांन–वह पदार्थ जिससे किसी दूसरे पदार्थको उपमा दी जाय । अह–शेषनाग ।

२१९. कंज–कमल । सम–समान । निपट–अत्यन्त । सुभग–सुंदर । आंणण–आनन, मुख । हिमकर–चंद्रमा । जळज–शंख । हीर–हीरा । डसण–दांत । अधर–ओष्ट । ब्यंब–बिंब । अरुण–लाल । समह–समान । नागरौ–हाथीका । समर–युद्ध । अथघ–अपार । स्यंध–सिंधु । मयंद–सिंह । छीण–क्षीण । कट– कटि, कमर । खंभ–स्तंभ । सुपय–चरण, पैर । खटपद–छप्पय ।

२२०. स्यंगार–शृंगार । हास रस–हास्यरस । वखांण–वर्णन । वरणव–वर्णन कर । वखांण–यश, कीर्ति ।

जाता संख छप्पै उदाहरण हास्यरस

सगर सुतण जिग करत, अगत हकनाहक दीनी ।
वर करतां सुपनखा, कांन नासा विण कीनी ॥
जाचंतां निज रूप, कियौ नारद मुख बंदर ।
त्यागी सौळ हजार, घाल कुबज्या घर अंदर ॥
कैळासे नरग उधार कीय, अजामेळ उतावळां ।
आदेस करै 'किसनौ' अनंत, राघव कौतक रावळां ॥ २२१

अथ वळता संख छप्पै लछण

दूहौ

वदीस तुक पाछी वळै, पर लाटानुप्रास ।
वळता संख वखांणजै, सकौ कवित सर रास ॥ २२२

अरथ

पैली कही सौ तुक फेर पाछी कहै, लाटानुप्रास अलंकार ज्यूं तथा सीह चला गीत ज्यूं सौ वळता संख कवित तुकां पाछी वळै जींसूं ।

अथ वळता संख उदाहरण

कवित छप्पै

जिण भजियौ जगदीस, जिकौ जमहूंत न भजियौ ।
नह तजियौ रघुनाथ, तेण म्रत जांमण तजियौ ॥
निज लीधौ हरि नांम, जिकण जम नांम न लीधौ ।
तिण नंह अम्रत त्रखा, रांम नांमांम्रित पीधौ ॥

---

२२१. **सुतण**–सुत, पुत्र । **जिग**–यज्ञ । **अगत**–अधोगति । **हकनाहक**–व्यर्थ । **दीनी**–दी । **वर**–पति । **नासा**–नाक । **विण**–बिना, रहित । **कीनी**–की । **केळा**–क्रीड़ा, खेल । **नरग**–नरक । **ऊतावळां**–शीघ्रता करने वालों । **आदेस**–नमस्कार । **अनंत**–विष्णु, ईश्वर । **कौतक**–कौतुक, खेल, क्रीड़ा । **रावळां**–आपके ।

२२२. **वदीस**–कही जाती । **वळै**–फिर । **वखांणजै**–वर्णन कीजिये । **सकौ**–वह । **ज्यूं**–जैसे । **जींसूं**–जिससे ।

२२३. **जिण**-जिस । **भजियौ**–भजन किया, स्मरण किया । **जिकौ**–वह । **जमहूंत**–यमराजसे । **भजियौ**–भागा । **म्रत**–मृत्यु । **जांमण**–जन्म । **लीधौ**–लिया । **जिकण**–जिसका । **त्रखा**–तृषा, प्यास । **नांमांम्रित**–नाम रूपी अमृत । **पीधौ**–पिया ।

नर च्यार असी नाचै निकं, निज हरि आगळ नाचियौ ।
जाचणौं जिकां रहियौ न जग, ज्यां रघुनायक जाचियौ ॥

अथ संकल् जात छप्पै लछण

एक सबदकी तेवड़ी, व्है आवरत विसेस ।
कहियौ अह तिण कवितरौ, संकळ नांम कवेस ॥ २२४

सांकळ कवित उदाहरण

छप्पै

पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय ।
हाथ जुड़त तिल चढ़ न, हाथ डुळ हाथ हजूरिय ॥
दिल ऊजळ नर उजळ, लखिन ऊजळ सिर लेखीय ।
दौलत दौलत मिलि न, लगी दो लत द्रिढ़ लेखीय ॥
कवि क्रिस्ण क्रिस्ण चित दुरन किय, क्रस्ण जगत देखोय कपट ।
रे रांम मंत्र रट रांम रट, रांम रांम रट रांम रट ॥२२५

कमळबन्ध लछण

दूहौ

द्वादस दळ द्वादस तुकां, अखर एक तुक अंत ।
सौ अधबिच तुक चौतरफ, कमळबंध स कहंत ॥ २२६

---

२२३. आगळ–अगाड़ी, अग्र । जाचणो–याचना । जिकां–जिनको ।

२२४. तेवड़ी–तीन वार । आवरत–आवृति ।

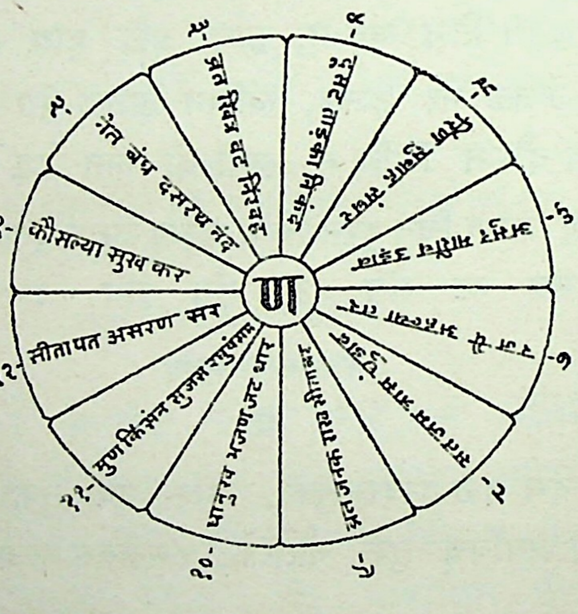
२२५. पूर–पूर्ण । अपूरिय–अपूर्ण । पिण–भी । दौलत–परिभ्रमण । दौलत–धन, संपत्ति । लेखीय–समझिये ।

२२६. द्वादस–बारह । दळ–फूलोंकी पंखड़ी । सौ–वह । अधबिच–ठीक मध्यमें । चौतरफ–चारों ओर । स–वह । कहंत–कहा जाता है ।

कमळबंध उदाहरण

छप्पै

कौसळ्या सुख करण, नेत-बंध दसरथ नंदण ।
व्रत खित्रवट निरवहण, दुसट ताड़का निकंदण ॥
रिण सुबाह संघरण, असुर मारीच उडावण ।
रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण ॥
व्रत जनक राख सीताबरण, धांनुखभंजण जटधरण ।
मुण 'किसन' सुजस रघु-बंस-मण, सीतापत असरण सरण ॥ २२७



२२७. नेत-बंध—अपना निजका झंडा या ध्वजा रखने वाला, वीर । नंदण—पुत्र । व्रत—वृत, आचार । खित्रवट—क्षत्रियत्व, वीरता, शौर्य । निरवहण—वहन करने वाला, धारण करने वाला, निभाने वाला । निकंदण—संहार करने वाला, मारने वाला । रिण—युद्ध । संघरण—संहार करने वाला, मारने वाला । रज—धूलि । पै—चरण, पैर । तरण—उद्धार करने वाला । जम—यम, यमराज । त्रास—भय, डर । व्रत—प्रण । सीताबरण—सीतापति, श्रीरामचंद्र । धांनुख—धनुष । भंजण—तोड़ने वाला । जटधरण—महादेव । मुण—कह, वर्णन कर । रघु-बंस-मण—रघुवंशमणि । सीतापत—सीतापति ।

अथ छत्रबंध छप्पै लछण

दूहौ

सरब कवितकौ अरथ सौ, अंत चरण आभास ।
आद अखर तुक नीसरै, जपै छत्रबंध जास ॥ २२८

छत्रवंध उदाहरण

								कै								
							कै	स	कै							
						कै	स	धे	स	कै						
					कै	स	धे	व	धे	स	कै					
				कै	स	धे	व	अ	व	धे	स	कै				
			कै	स	धे	व	अ	त्र	अ	व	धे	स	कै			
		कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै		
	कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	प	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै	
कै	स	धे	व	अ	त्र	छ	प	ओ	प	छ	त्र	अ	व	धे	स	कै

छप्पै

कह सेवा की कहै १ ?, नांम परजंक कवण भण २ ? ।
अख के मासां अयन ३ ?, नांम की सिंभ जयौ जिण ४ ? ॥
कहजै देवां किसं ५ ?, महत आदरैन केन ६ ? ।
दूधां सिंघ कुण दूध ७ ?, मित्र दाखत कीजै नं ८ ? ॥
रिप पंड कवण कह नांम जिण ९ ? संतां तार सुरेसके ।
कवि 'किसन' छत्रबंधह कवित, ओप छत्र अवधेसके ॥२२९

---

२२९. परजंक–पर्यंक, पलंग । कवण–क्या । भण–कहै । अख–कहै । के–कितने । अयन–सूर्य अथवा चंदकी उत्तर दक्षिणकी ओर गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन भी कहते हैं । जयौ–जीता । रिप–शत्रु । पंड–पंडव । कवण–कौन । सुरेस–इंद्र ।

नोट—१ ओयण (चरण) । २ पलंग । ३ छ मासां । ४ त्रपुर । ५ अमर । ६ वडाई । ७ धेनकौ । ८ सजण । ९ कैरव । इन शब्दोंके आदि अक्षरके पढ़नेसे 'ओप छत्र अवधेसकै' इस तुकका छत्रबंध बनता है ।

अथ मझ अखिरा छप्पै लछण

दूहौ

कवित अरथ बाहर लिखै, अखिर मझ विचार।
और जठै प्रगटै अरथ, सौ मझ अख्यर धार ॥ २३०

अथ मझ अखिरा छप्पै उदाहरण

स्वाद मीठा कह किसौ १ ?, किसूं मूरखनूं कहजै २ ?।
की कह भ्रात कनेठ ३ ?, नांम रेखा की लहजै ४ ?॥
कहै धरानूं किसूं ५ ?, रंक किण नांम जितूं कह ६ ?।
मंदभाग की मुणै ७ ?, ठहै तारा किण ठांमह ८ ?॥
रघुनाथ भगौ की जनकघर ९ ?,
भल बुध किसूं भणीजियै १० ?।
कवि 'किसन' कवित मझ अख्यिर कह,
जस रघुनाथ जपीजियै ॥ २३१

अथ लघुनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

अखर अठारह चरण चव, बे चरणां बावीस।
कवित लघु नाळीक कहि, बरणत सरब कवीस ॥ २३२

अथ लघुनाळीक छप्पै

तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळे।
हण सुबाह मारीच, पैज खित्रवट ध्रंम पाळे ॥

---

२३०. **जठै**–जहां। **प्रगटै**–प्रकट होता है। **अख्यर**–अक्षर।
२३१. **मीठ**–मीठा। **किसौ**–कौनसा। **किसूं**–क्या। **की**–क्या। **कनेठ**–कनिष्ठ। **धरा**–अवनी, पृथ्वी। **जितूं**–जीता। **मंदभाग**–अभाग्य। **मुणै**–कहते है। **ठहै**–ठहरते हैं। **ठांमह**–स्थान। **भगौ**–तोड़ा। **अख्यिर**–अक्षर।
नोट—१ मिश्रीको। २ अजांण। ३अनुज। ४ लकीर। ५ अवन। ६ मल्लको। ७ अभागी। ८ गयण। ९ धनख। १० सुमत। इनके मध्याक्षरके पढ़नेसे श्री जांनुकी वल्लभाय नाम बनता है।
२३२. **अखर**–अक्षर। **चव**–चार। **बे**–दो।
२३३. **तिण**–जिस, उस। **जिकण**–जिस। **रिख**–ऋषि। **मख**–यज्ञ। **रखवाळे**–रक्षा की। **हण**–मार कर। **पैज**–मर्यादा, नियम, आचरण। **खित्रवट**–क्षत्रियत्व, वीरता, शौर्य। **ध्रंम**–धर्म। **पाळे**–पालन किया।

नग रज गौतम नार, जेण उधरी जग जांणै।
धनुख भंज सीय बरी, प्रथी भुज जोर प्रमांणै॥
रे अधम समझ मुख नांम रट, सीत-बर समराथकौ।
कह जीहहूंत 'किसना' कवी, नितप्रत जस रघुनाथकौ॥ २३३

अथ ब्रधनाळीक छप्पै लछण

दूहौ

उगणीसह चव पद अखिर, अकवीसह बे औण।
कवित ब्रधनाळीक कवि, भणै नाग त्रय-भौण॥ २३४

अथ ब्रधनाळीक छप्पै उदाहरण

जिण राघव जापियां, थरू घर नवनिध थावत।
जिण राघव जापियां, प्रसध ईजत नर पावत॥
जिण राघव जापियां, सुलभ भवसागर तरसी।
जिण राघव जापियां, सरब मन कारज सरसी॥
जापियां जेण रघुबर सुजस, धरै ऊंच विरदां धरा।
तैं नांम जोड़ नां ज्याग तप, नित राघव जप जप नरा॥ २३५

अथ निसरणीबंध छप्पै लछण

दूहौ

एक दोय त्रण ऐण क्रम, छप्पय करै वखांण।
गत जिम चढजे गातियां, निसरणीबंध जांण॥ २३६

---

२३३. नग–चरण। रज–धूलि। नार–नारी, स्त्री। जेण–जिस। अधम–नीच, पतित। सीत-बर–सीतावर, श्री रामचंद्र भगवान। समराथकौ–समर्थका। जीहहूंत–जिह्वासे। नितप्रत–नित्यप्रति।

२३४. अकवीसह–इक्कीस। बे–दो। औण–चरण। त्रय-भौण–त्रिभुवन।

२३५. जिण–जिस। जापियां–जपने या भजन करने पर। थरू–स्थिर। नवनिध–नवनिधि। थावत–हो जाती है। प्रसध–प्रसिद्धि। पावत–प्राप्त करता है। भवसागर–संसार रूपी समुद्र। कारज–कार्य, काम। सरसी–सफल होंगे, सिद्ध होंगे। जेण–जिस। विरद–विरुद, कीर्ति। तै–उस, उसके। जोड़–समान, बराबर। नां–नहीं। ज्याग–यज्ञ।

२३६. गत–प्रकार, तरह। गातियां–काष्ट या लोहकी बनी निश्रेणीके बीच-बीचमें लगे वे डंडे जिन पर पैर रख-रख कर चढ़ते व उतरते हैं, पांवदान।

अथ निसरणीबंध छप्पै कवित उदाहरण

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण दख।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख॥
आठ कुळाचळ अनड़, नाग नव नाथ निरंतर।
दस द्रिगपाळ दुबाह, रुद्रह एकदस सर तर॥
सभ्भ सभ्भ उमंग बारह सघण, बिसुध चित्त कायक बयण।
तेरहा भांण पय रांमतौ, भल सेवै चवदह भुयण॥२३७

अथ नाट नांम छप्पै लछण

दूहौ

नाट सबद जिण कवितमें, आद अंत लग होय।
नाट नांम तिणनं कहै, सुकव महा-मत सोय॥ २३८

अथ नाट छप्पै उदाहरण

लाभ नहीं अहलोक, नहीं परलोकह निरभय।
सुमति नहीं ज्यां स्यांन, खांत ज्यां नहीं पाप खय॥
जीवण सुख नहिं जिकां, नहीं ज्यां मुवां मुकत निज।
नहीं जिके नहच्यंत, कदे ज्यां नहीं सरै कज॥
निकलिंक बांण ज्यांरी नहीं, दसा नहीं सुभ ज्यां दपै।
ज्यां नहीं सफळ मनखा जनम, जिके नहीं रघुबर जपै॥ २३९

---

२३७. **अहनिसा**–रात-दिन। **रवि**–सूर्य। **चंद**–चंद्र। **दख**–कह। **तत**–तत्त्व। **पंच**–पांच। **सपत**–सात। **सिंध**–समुद्र। **कुळाचळ**–आठ पर्वतोंका समूह, मतांतरसे सात पर्वतोंका समूह, कुलपर्वत। **अनड़**–पर्वत। **द्रिगपाळ**–दिकपाल। **दुबाह**–महान, दृढ़। **उमंग**–तरंग, इच्छा। **सघण**–घन, बादल। **पय**–चरण। **भल**–ठीक, श्रेष्ठ। **भुयण**–भवन।

२३८. **नाट**–नहीं, नहीं अर्थका शब्द। **महा-मत**–महामतिवान। **सोय**–वह।

२३९. **अहलोक**–इह लोक, इस संसारमें। **सुमति**–श्रेष्ठ मति। **स्यांन**–बुद्धि। **खांत**–विचार। **ज्यां**–जिन। **खय**–नाश। **मुकत**–मुक्ति, मोक्ष। **नहच्यंत**–निश्चित। **कज**–काम। **दपै**–शोभायमान होती है। **मनखा जनम**–मनुष्य जन्म।

अथ चौपई नांम छप्पै लछण

दूहौ

बीस बीस चोंपद बरण, दोय बीस दो पाय।
चोप किवत जिण चोपसुं, रटीयौ पनंगांराय ॥ २४०

अथ चौपई छप्पै उदाहरण

चोप अरच हरि चरण, चोप फिर रे परदछण।
चोप करे करजोड़, जनम सरजत आगळ जण॥
चोप करे चित बीच, नांम सिर अगर सु नर हर।
चंनण घस जुत चोप, कमळ त्यं ू तिलक चोप कर॥
अत चोप भजन सी-वर उचर, ध्यांन हृदय जुत चोप धर।
कवि चहै चोप रघुराजकौ, कर कर चोप स भजन कर ॥२४१

अथ मुकताग्रह नांम छप्पै लछण

दूहौ

आद अंत तुकरै झमक, अरथ अवर उर आंण।
गंूथ मुकत जिम छपय गत, मुगता ग्रह परमांण ॥ २४२

अथ मुकताग्रह कवित उदाहरण

भव व्रहमा जिण भजै, भजै तिण नांम पाप भर।
भर टाळण सह भूम, भूम-पतनकौ जेण सर॥
सर धनुं धार समाथ, माथ दस भंज समर मह।

---

२४०. चोपद-चार पद या चरण। बरण-अक्षर। पाय-चरण। चोप-बुद्धि, चतुराई, दक्षता। पनंगांराय-शेषनाग।

२४१. अरच-पूजा कर। परदछण-प्रदक्षिणा। जनम सरजत-जो जन्म देता है, जन्म रचता है। आगळ-अगाड़ी। जण-जिस। चोप-ध्यान। कमळ-शिर, मस्तक। सी-वर-सीतावर, श्री रामचन्द्र। उचर-उच्चारण कर, भजन कर। चोप-कृपा, दया।

२४२. झमक-यमकानुप्रास। गूंथ-रच, बना। मुकत-मोती।

२४३. भव-महादेव, शिव। व्राहम-व्रह्मा। भर-भार, बोझ। भूम-भूमि। भूमपत-भूमिपति। सर-बाण, तीर। धनुं-धनुष। समाथ-समर्थ। माथ-मस्तक, सिर। समर-युद्ध। मह-में।

मह राखण मुरजाद, जादपत पब्बै तार जह ॥
जह दुसह पाळ जन सांमरथ, रथ खगेस मारुत सजव ।
सज मख सिहाय भंजण सुभुतज, भज रघुबर तर उदध भव ॥ २४३

अथ छप्पै नांम कवित कुंडळिया लछण

दूहौ

पहलां दूहौ एक पुण, आद अंत तुक जेण ।
पलटै धुर पूठा कवित, तव कुंडळियौ तेण ॥ २४४

अथ कुंडलिया उदाहरण

जपै रसण रघुबर जिकै, अध त्यां कपै अमांण ।
जनम मरण सुधरै जिकां, जे बड़भागी जांण ॥
जे बड़भागी जांण, लाभ तन पायां लीधौ ।
त्यां जिग किया तमांम, कांम सुक्रत ज्यां कीधौ ॥
वां व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रां हथ ।
ज्यां सधिया अठ जोग, त्यां किया कौटक तीरथ ॥
धन मात पिता जिण वंस धर, कळुख तिकां दरसण कपै ।
कवि 'किसन' कहै धन नर तिकै, जिके रसण रघुबर जपै ॥२४५

---

२४३. मह–महि, पृथ्वी । मुरजाद–मर्यादा । जादपत–यादपति, समुद्र । पब्बै–पर्वत । जह–जिस । सांमरथ–समर्थ । खगेस–गरुड़ । मारुत–पवन । सजव–वेग सहित । मख–यज्ञ । सिहाय–सहाय । उदध–उदधि, समुद्र । भव–संसार ।

२४४. पहलां–प्रथम । पुण–कह । धुर–प्रथम । तव–कह ।

२४५. रसण–रसना, जिह्वा । अघ–पाप । कपै–नाश होते हैं । अमांण–अपार । वडभागी–वड़े भाग्यशाली । जांण–समझ । जे–वे, जो । लीधौ–लिया । त्यां–उन्होंने । जिग–यज्ञ । तमांम–सब, समस्त । सुक्रत–पुण्य । कीधौ–किया । वां–उन्होंने । हिरण–हिरण्य, सोना । हथ–हाथ । सधिया–साधन किये । अठ-जोग–अष्ट-योग । कौटक–करोड़ों । धन–धन्य । मात–माता । कळुख–पाप । तिकां–जिनके, उनके । जिके–जो, वे ।

अथ चौटीबंध छप्पै लछण

दूहौ

आद कहै सौ अंतमें, नांम गणात नरबाह।
सिरै कवित बंधै सिखा, चौटीबंध सराह ॥ २४६

अथ चौटीबंध छप्पै उदाहरण

सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम।
उर दाहक सम आग, तौर सुर-राज राज तिम ॥
सत हरचंद समांन, प्रगट दरियाव अथघपण।
सुर तर आस सपूर, जांण पारस सेवक जण ॥
रवि अमी आग इंद चंद हरि, दध सुरतरमण आद ले।
परभाव आठ निज कांम पर, एक रांम तन ऊझळै ॥ २४७

अथ हीरावेधी छप्पै लछण

दूहौ

एकण हीरौ विहरियां, दूजौ हीरौ थाय।
हीराबेधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय ॥ २४८

अथ हीराबेधी छप्पै उदाहरण

नारंगी संसार नीम, ऊंबर कर अंबह।
करणा सुभ करतूत, झाल हर कदमां झंबह ॥

---

२४६. सिरै–श्रेष्ट। सराह–प्रशंसा कर, सराहना कर।

२४७. सूरजपणौ–सूर्यत्व, सूर्यका गुण। स्रवण–श्रवण, टपकना। हिमकर–चंद्रमा। सम–समान। दाहक–जलाने वाला। सुरराज–इन्द्र। सत–सत्य। हरचंद–हरिश्चंद्र, हरिचंदन। अथघपण–अथाहपन, गहरापन। अमी–अमृत। सुरतर–कल्प वृक्ष। मण–मणि। आद–आदि। ऊझळै–प्रभाव दिखाता है।

२४८. विहरियां–विदीर्ण करने पर, चीरने पर।

२४९. ऊंबर–वृक्ष विशेष। अंबह–आम्र। करणा–वृक्ष विशेष व उसका फल। करतूत–कर्त्तव्य, काम। झाल–पकड़। कदमां–चरण, वृक्ष विशेष। झंबह–सहारा।

बोर छोड़ बावळा, खैर करमद बकायण।
बीजा धव बट बैत, ईख सुरतर नारायण॥
खरबूजा जग सह जाय रे, सौ असोक अंमर सदै।
सैमळ सरीस तज आंन सुण, दाख रांमफळ सेवदे॥ २४९

अथ करपल्लव नांम छप्पै लछण

दूहौ

आंगळियां करसूं अरथ, जेण कवितरौ होय।
आछी विध अह अक्खियौ, करपल्लव कह सोय॥ २५०

अथ करपल्लव छप्पै कवित उदाहरण

यूं जे तैं न कियौ, करसु यूं जण जण आगळ।
यूं न लिया हरि अगै, लेस नितप्रत गदगद गळ॥
कीध यूं नह कदे, करसु तोपण विध दुख तन।
यूं न कियौ उण हेत, देस तौ यूं जग दन दन॥
यम येम ए मन कीयौ अधम, मूरख यूं जम मारसी।
यूं कियौ ज तैं अहनिस अवस, यूं रघुनाथ उधारसी॥ २५१

अरथ

हे प्रांणी तैं स्री रांमचंद्र आगै हाथ नहीं जोड़्या तौ तूं जणा जणा आगळ हाथ जोड़सी। जो तैं दसी आंगळ प्रभु आगै मुखमें न लिया, तौ जगत आगै

---

२४९. बोर–बदरी नामक वृक्ष या उसका फल। बावळा–मूर्ख। खैर–वृक्ष विशेष, कुशल। करमदा–वृक्ष विशेष, तथा उसका फल। बकायण–नीम जैसा एक वृक्ष। बीजा–दूसरा, एक वृक्ष विशेष या उसका फल। धव–वृक्ष विशेष। बट–बरगदका वृक्ष। बैत–बेंत, एक लता। ईख–देख, गन्ना, इक्षु। सुरतर–कल्पवृक्ष। आंन–अन्य। दाख–द्राक्षा, कह। रांमफळ–सरीफा, सीताफल।

२५०. अह–अहि, शेषनाग। अक्खियौ–कहा।

२५१. यूं–ऐसे। तैं–तूने। आगळ–अगाड़ी। अगै–अगाड़ी। लेस–किंचित। नितप्रत–नित्य-प्रति। गदगद गळ–गदगद कंठ। कीध–किया। कदे–कभी। तोपण–तो भी। हेत–स्नेह। अवस–अवश्य। आंगळ–उंगुली।

गदगद कंठ होय नित हाहा खासी नै आंगळी मूंढ़ामें लेसी। जे तैं श्री रांम आगै ऊभी आंगळी न कीदी, तौ सरीरमें दुख पाय जणा जणा आगै ऊभी आंगळी करसी। ऊण ईस्वर निमत यूं कैतां देवाकै वासतै हाथ पांची आंगळयांसूं ऊंचौ न कीधौ तौ थारै जगत माथामें यूं पांची आंगळयांसूं डूचका देसी। यम कैतां प्रभुनै कदी पांच ही आंगळयांसूं चंदण पुसप चढ़ाया अरच्या नहीं, फेर एम कैतां प्रभुरी आरती उतारी नहीं, फेर यम कैतां प्रभुनै नमसकार प्रणांम कीधौ नहीं तौ यूं जम मार देसी, अर कदा'क तैं यूं कैतां आंगळयांसूं रात दिन माळा फेरे नै भजन कीधौ छै तौ यूं कहतां बांह पकड़ नै भवसागर मांसूं, यूं स्त्री रघुनाथ उधारसी, इति करपल्लव कवित अरथ।

अथ हेकल्लवयण छप्पै लछण

दूहौ

यक सौ अर बावन अखर, जठै सरब लघु जांण।
एकल बयणौ कवित यं , वदियौ नाग वखांण॥ २५२

अथ हेकल्लवयण छप्पै कवित उदाहरण

तरण सरस छब तरण, सरण असरण हरखण सक।
मरण जनम भय मटण, धरण बड बरद रहत धक॥
अजर जरण रण असह, दन जद ससर सम वड दह।
लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथघ कह॥
भल करम मन वतन, अत दलभ, अखत बयण अह नर अमर।
कर हरख पहर अठ कव 'कसन', सधर समन रघबर समर॥२५३

---

२५१. आंगळी–उंगुली। कीदी–की। निमत–निमित्त, लिए। वासतै–लिए। कीधौ–किया। डूचका–मुट्ठी बंद करके मध्यमा उंगलीको इस स्थितिमें रखना जिससे उसका पीछेका जोड़ दूसरी उंगलियोंसे कुछ आगे निकला हुआ हो। इस उठे हुए भागसे किया जाने वाला प्रहार या चोट। कदी–कभी। कदाक–कभी।

२५२ यक सौ–एक सौ। जठै–जहां। वदियौ–कहा। नाग–शेषनाग।

२५३. तरण–तरणि, सूर्य। सरस–समान। तरण–तरुणी। बड–बड़ा। बरद–विरुद। धक–इच्छा। रण–युद्ध। असह–असह्य। कहर–कोप। अथघ–अपार। अत दलभ–अति दुर्लभ। अखत–कहता है। अह–नाग। अमर–देवता। रघबर–रघुवर। समर–याद कर, स्मरण कर।

अथ हल्लव नांम कवित लछण

दूहौ

वीस वीस चौतुक अखर, बेतुक कह बावीस।
हल्ल सबद वरणौ सुमझ, हल्लव नांम कहीस ॥ २५४

अथ हल्लव नांम कवित उदाहरण

हल हल्लिय गिर आठ, सपत हल्लिय जळ सायर।
धूजह हल्लिय धरण, गिरद हल्लिय नभ छायर।
सिर हल्लिय अध सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय।
हल्लिय दाढ़ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय।
हल हल्लिय लंक गढ़ बंकसौ दस-धू पै हल काहल्लिय।
हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ॥ २५५

अथ कवित छप्पै नांम ताळूरब्यंब लछण

दूहौ

लागै पढ़तां ताळवै, जीहा अग्र जरूर।
कहजे छप्पय 'किसन' कवि, तिकौ ब्यंब ताळूर ॥ २५६

अथ ताळूरब्यंब छप्पै उदाहरण

रट रट रे नर ईस, नाय औणे जिण सीसं।
चाळ झाल कर चहूं, देस ईछत जगदीसं ॥
ईस अचळ सरणाय रीझ इज्जत द्रढ़ रक्ख्यण।
दट दट अक्रत दूठ, ईस नां छोड अधक्खण ॥

---

२५४. चौतुक—चार तुक।

२५५. हल हल्लिय—चलायमान हुए। सपत—सप्त, सात। सायर—सागर, समुद्र। धूजह—ध्रुव। वराह—विष्णुका एक अवतार विशेष। दहल्लिय—भयभीत हुए, कंपायमान हुए। दस-धू—दश शिर वाला रावण।

२५६. ताळवै—तालु, तालू। जीहा—जिह्वा। तिकौ—वह। ब्यंब ताळूर—तालूर व्यंब।

२५७. नाय—नमा कर। औणे—चरणोंमें। सरणाय—शरण देने वाला। रक्ख्यण—रखने वाला। दट—नाश कर। अक्रत—दुष्कर्म, पाप। दूठ—दुष्ट, भयंकर। नां—नहीं। अधक्खण—अधक्षण।

तीरथां इळा अट अट स तं, देणौ चित सतसंग दुस ।
दस सिर खळ गंजण दाख रे, जांनकीनायक सुजस ॥ २५७

अहर अळग कवित छप्पै

दूहौ

पढ़तां होठ मिळै नहीं, ऊ प फ ब भ म न आंण ।
कहियौ अह अन कवि कहै, अहर अळग सौ जांण ॥ २५८

अथ अहर अळग छप्पै उदाहरण

नारायण नरकार, नाथ नरहर जग-नायक ।
कंज नयण कर कंज, तरण संतां खळ-तायक ॥
धरणीधर गिरधार धनौ स्रीधर धू धारण ।
हाथी ग्रह निज हाथ, तोयहूंता झट तारण ॥
करुणा निधांन कोदंड कर, नित चालण यळ रीत नय ।
रघुकुळ दिनेस जन लाज रख, जग अधार औधेस जय ॥ २५९

अथ विधांनीक जात छप्पै कवित लछण

दूहौ

ले खटहूंता नव लगै, वरणै मांझ विधांन ।
विधांनीक छप्पय वदै, वडा सुकवि बुधवांन ॥ २६०

अथ सप्त विधांन छप्पै उदाहरण

कमळ उदध कळवरछ, भांण मघवांण, मेर ससि ।
वदन, सहज, दत, तेज, राज, गरूवत दीठ लसि ॥

---

२५७. खळ–असुर, राक्षस । गंजण–नाश करने वाला । दाख–कह ।

२५८. अह–शेषनाग । अन–अन्य । अहर–अधर, होठ । अळग–दूर, पृथक ।

२५९. नरकार–निराकार । कंज–कमल । कर–हाथ । तरण संतां–संतोंका उद्धार करने वाला । खळ-तायक–असुरोंका संहार करने वाला । तोयहूंता–पानीसे । झट–शीघ्र । तारण–उद्धार करने वाला । कोदंड–धनुष । चालण–चलने वाला । यळ–इला, पृथ्वी । नय–नीति । दिनेस–सूर्य । औधेस–अवधेश, श्रीरामचंद्र ।

२६०. विधांन–किसी कार्यकी विधि या व्यवस्था । वदै–कहते हैं । बुधवांन–बुद्धिमान ।

२६१. उदध–उदधि, समुद्र । कळवरछ–कल्पवृक्ष । भांण–सूर्य । मघवांण–इन्द्र । मेर–सुमेरु पर्वत । ससि–चद्र । वदन–मुख । दत–दान । गरूवत–गंभीर, भारी । दीठ–दृष्टि ।

सजळ, सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्रंग, ससीतळ ।
प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह, राका मिळ ॥
प्रफुलंत, अथग, दतवार, तप, ओज, सरण, स्रावण, अम्रत ।
तन एक रांम दसरथ सुतण, विहद सात गुण निरवहत ॥ २६१

इति पुरस प्रत विधांनिक

अथ सत्री प्रत विधांनिक छप्पै

सेस, इंदु, म्रग, दीप, जांण, कोकिल, म्रगपति, गज ।
बेण, वदन, चख, नाक, बोल, कटि, जंघ, चाल, सज ॥
असित, सकळ, चळ, सुथिर, गुप्त, अंगिरात, अक्रमत ।
सुरभि, ब्योम, बन, अयन, नूत, पब्बय, सुब्यंध, थित ॥
मण, सरद, चकित, निस, रतिपतिह, लंघणीक, मंदह चलत ।
मिथलेस कुवरि सीता सुतन, कवि एती ओपम कहत ॥ २६२

इति विधांनिक संपूरण

अथ नाट सला छप्पै लछण

दहौ

यक तुक तौ थापै अरथ, अन तुक दियै उडाय ।
नाट सलौ तिण कवित नै, सुकवि कहै सुभाय ॥ २६३

---

२६१. प्रात–प्रातःकाल । पुनिम–पूर्णिमा । मधु–वसंत, अथवा मधु-वसंत, मधु-चैत है, मधु मदिरा मकरंद । मधुपै मधुहरि मधुसुधा मधुमाधव गोविन्द ॥ राका–पूर्णिमा । दतवार–दान । स्रावण(श्रावण)–श्रवण करने वाला । सुतण–सुत । विहद–अपार । निरवहत-धारण करते, वहन करते ।

२६२. प्रत–प्रति । सत्री–स्त्री, नारी । सेस–शेष, यहां कृष्ण-सर्प अर्थ है । इंदु–चंद्रमा । म्रग–हरिण । दीप–दीपक, दिया । कोकिल–कोयल । म्रगपति–सिंह । गज–हाथी । बेण–वेण, वेणी, स्त्रियोंके सिरके बालोंकी चोटी । बदन–मुख । चख–चक्षु, नेत्र । बोल–शब्द, आवाज, वचन । कटि–कमर । जंघ–जांघ, ऊरू । चाल–गति । असित–श्याम, काला । सकळ–शुक्ल, सफ़ेद । चळ–चंचल । सुथिर–स्थिर । सुरभि–सुगधि, खुशबू । ब्योम–आकाश । नूत–आम्र, आम । पब्बय–पर्वत । थित–स्थित । मण–मणि । निस–निशा, रात्रि । रतिपतिह–कामदेव । लंघणीक–भूखा, कृशोदर । मंदह–मंद । मिथलेस–राजा जनक । सुतन–पुत्री । एती–इतनी । ओपम–उपमा । कहत–कहता है ।

२६३. यक–एक । थापै–होता है । अन–अन्य, दूसरी । उडाय–मिटा कर । सुभाय–सुरुचिकर ।

अथ नाट सला छप्पै

उदाहरण

सूर प्रभवतौ तेज, तेज नंह इम्रत स्रायक।
यिम्रत स्रायक चंद, चंद नह स्यांम सुभायक॥
स्यांम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावंतह।
मायावंतह साह, साह नाहीं खर अंतह॥
खर अंत ततौ चित्रक अखव, नह चित्रक नर जांणिये।
नर नहीं नरां नायक निपट, प्रभव-भांण पहचांणिये॥ २६४

अथ सुद्ध कुंडळियौ लछण

कायब दूहासूं मिळै, कुंडळियौ सुध कत्थ।
अम्रत-धुन अनुप्रास घण, स्री रघुनाथ समत्थ॥
स्री रघुनाथ समत्थ, हत्थ धारण धनु सायक।
सेवक सरण सधार, लेख सेवै पद लायक।
सीतानाथ सुजांण, पांण खग धन ब्रद पायब।
कुंडळियौ सौ कहै, मिळै दूहासूं कायब॥ २६५

---

२६४. सूर–सूर्य। प्रभवतौ–उत्पन्न करता है, उत्पन्न करता हुआ। इम्रत–अमृत। स्रायक–श्रायक, श्रवने वाला, देने वाला। सुभायक–रुचिकर, मनोहर। मायावंतह–धनाढ्य। साह–सेठ। खर–खरदूषण राक्षससे तात्पर्य है। अखव–कह। चित्रक–हरिण। प्रभव-भांण–सूर्यवंशी।

नोट—नाट नामक छप्पयका उल्लेख पूर्व २२ छप्पयोंमें मय उदाहरणके हो चुका है—यह नाटसला भी उसीका एक भेद प्रतीत होता है।

२६५. कायब–काव्य छंद, यह रोला छंदका ही एक भेद है जिस रोला छंदके चारों चरणोंमें ११वीं मात्रा ह्रस्व हो उसे काव्य-छंद कहते हैं। किसी-किसीके मतसे दोहाके पश्चात् रोला छंदको जोड़ने से ही कुंडलिया छंदकी रचना मानी गई है। कत्थ–कह। अम्रत-धुन–अमृत-ध्वनि। यह भी छ चरणका एक मात्रिक छंद है जो दोहा और दोहाके पश्चात् २४ मात्रा अथवा रोला छंदके जोड़नेसे ही बनता है परन्तु अमृत-ध्वनिमें यमकालंकारको तीन बार झमकावके आठ-आठ मात्रा सहित रखा जाता है। घण–वहुत। समत्थ–समर्थ। हत्थ–हस्त, हाथ। धनु–धनुष। सायक–बाण, तीर। सरण-सधार–शरणागत रक्षक। लेख–देव, देवता। खग–तीर, बाण। ब्रद–विरुद, यश। पायब–प्राप्त करने वाला।

अथ कुंडळियौ झड़ उलट लछण

दूहौ

दूहौ धुर धुर पच्छ तुक, आद अंत उलटंत।
वीस मत्त चो तुक वळै, सौ झड़ उलट समंत ॥ २६६

कुंडळिया झड़ उलट उदाहरण

भुज दंड लीजै भांमणा, अधियांवणा अभीत।
विध-विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत ॥
जीत जुध पावणा, आद असुरां जरे।
सीस दस कुंभ घण, नाद सा स्यंघरे ॥
सधर कर भभीखण, रवि जस रसांमण।
भुजां रघुबर अडर, लीजिये भांमणा ॥ २६७

अथ कुंडळियौ जात दोहाळ लछण

दूहौ

सुध कुंडळिया अंत सुज, एक दूहौ फिर आख।
कुंडळियौ दोहाळ कह, भल राघव जस भाख ॥ २६८

अथ कुंडळियौ दोहाळ

उदाहरण

केकंधा लंका कहे, जस रघुनाथ सुजांण।
कहै भभीखण रविजकी, मुख हूं अवळीमांण ॥

---

२६६. **धुर**–प्रथम । **पच्छ**–पश्चात् । **मत्त**–मात्रा । **चो**–चार । **तुक**–चरण । **वळै**–फिर ।

२६७. **भांमणा**–बलैया । **अधियांवणा**–वीर, जबरदस्त, शक्तिशाली । **अभीत**–निडर, निर्भय । **विध-विध**–तरह-तरहसे । **दास**–भक्त । **वचावणा**–बचाने वाला । **पावणा**–प्राप्त करने वाला । **सजीत**–विजयी । **जरे**–नष्ट कर,मार कर । **सीस दस**–रावण । **कुंभ**–कुंभकर्ण । **घणनाद**–मेघनाद, इन्द्रजीत । **सा**–समाना, जैसा । **स्यंघरे**–संहार किये । **सधर**–दृढ़, मजबूत, निर्भय, निशंक, राज्य या धरा सहित । **भभीखण**–विभीषण । **रवि**–रवि, सूर्य । **रसांमण**–रश्मि, किरण ।

२६८. **आख**–कह । **भल**–श्रेष्ठ, उत्तम । **भाख**–कह ।

२६९. **केकंधा**–किष्किधा । **रविजकी**–सूर्यवंशीकी, श्रीरामचंद्रजीकी । **हूं**–से । **अवळीमांण**–अपने ऐश्वर्यका उपभोग करने वाला वीर ।

मुखहू अवळीमांण, किसूं पायक जस कत्थै।
दत देखा दत दहूं, सुजस जग कहै समथ्थै॥
कासीदी गुण करै, जिका कथ सह जग जांणै।
केतक डमरां कुसम उरड़ भमरां दळ आंणै॥
जुग जुग मुख 'किसना', जपै नित नव नव एहनांण।
केकंधा लंका कहै, जस रघुनाथ सुजांण॥ २६९

अथ कुंडळणी लछण

दूहौ

उगाहौ कर आद यक, तुक पलटै धुर भंत।
कायबरी तुक च्यारि कह, कुंडळणी स कहंत॥ २७०

अथ कुंडलणी उदाहरण

यिक रघुनाथ उजाळौ सारौ, रघुवंस जेण दुति सरसत।
विध जूं है कळ वाळौ, मझ सह नभं तेज करत तेजोमय॥
तेजोमय नभ होत, चंदहूंता जग चावौ।
एक सेस अजवाळ, सरब कुळ सरप सुभावौ॥
हेक मेर-गिर हुवै, सौ भगिर वंस सिघाळौ।
विध जिण सह रघुवंस, एक रघुनाथ उजाळौ॥ २७१

कवित कुंडळिया १ सुध कुंडळिया २ झड़ उलट कुंडळिया ३ दोहाळ कुंडळिया ४ कुंडळणी ५—इति पंच प्रकार कुंडळिया संपूरण।

---

२६९. अवळीमांण—अपने ऐश्वर्यका उपयोग करने वाला, वीर। किसूं—कैसे। पायक—सेवक। कत्थै—कहे। दत—दान। समथ्थै—समर्थ। कासीदी—कासिदका कार्य, हरकाराका कार्य। गुण—लाभ। कथ—कथा। सह—सब। केतक—केतकी, केवड़ा। डमरां—सुगंधि, महक। कुसुम—पुष्प, फूल।

२७१. यिक—एक। दुति—द्युति। विध—विधु, चन्द्रमा। जूं—जैसा। कळ—कला। मझ—मध्य। सह—सब। नभं—आकाश। तेजोमय—प्रकाशमय। चंदहूंता—चन्द्रमासे। चावौ—प्रसिद्ध। मेर-गिर—सुमेरु-पर्वत। सौ—वैसा। भगिर—अयोध्या नरेश दिलीपके पुत्र, भगीरथ। सिघाळौ—श्रेष्ट। उजाळौ—प्रकाश, रोशनी।

दूहा

मात्रा दंडक वरणिया, इण विध छंद उदार।
'किसन' रिझावण जस कियौ, रांमचंद्र रिझवार ॥ २७२
किव राजांसूं किसन किव, यम अक्खै अरदास।
माफ करौ तगसीर मौ, देख रांम पय दास ॥ २७३

इति मात्रा व्रत संपूरण

+++++++++

---

२७२. रिझावण–प्रसन्न करनेके लिए। रिझवार–प्रसन्न होने वाला।
२७३. यम–ऐसे। अक्खै–कहता है। अरदास–प्रार्थना। तगसीर (तकसीर)–कमी। मौ–मेरी। पय–चरण। दास–भक्त।

अथ वरण व्रत (वृत) वरणण

दूहा

स्री गणनायक सारदा, दीजै उकत दराज।
वरण व्रति 'किसनौ' वदै, जस राघव महराज ॥ १

वरण व्रति सौ दोय विधि, कहै वडा कवि कत्थ।
वरणछँद उपछँद वद, स्री धर सुजस समथ्थ ॥ २

लेखव वरण छवीस लग, वरण छँद सौ वेस।
आखर छविसां ऊपरां, सौ उपछँद सरेस ॥ ३

अथ एक वरणसूं लगाय छवीस वरण तांई छंदांरी जातरा नांम वरणण।

कवित छप्पै

उक्ता अत्युक्ताह अखंत, मध्या, वखांणत।
वळे प्रतिस्ठा वेस, जगत सु प्रतिस्ठा जांणत ॥
गायत्री ऊसणीक अनुस्टप, व्रहती पंगत।
त्रिस्टुप जगती तवां, अती जगती सकरी मत।
अत सकरी अस्टती यिस्टि अख ध्रति ॥
अति ध्रती, क्रती प्रक्रतीय।
आक्रति, विक्रति, फिर संसक्रती ॥
अतक्रति, उतक्रति, हरि भजीय ॥ ४

दूहौ

यकसूं वरण छवीस लग, बरण छंदकी जात।
क्रीत रांम वरणण कियां, सुकवि सुमुख सरसात ॥ ५

नोट—छप्पयमें आए हुए छंदोंके शुद्ध संस्कृत नांम—

१ उक्था, २ अत्युक्था, ३ मध्या, ४ प्रतिष्ठा, ५ सुप्रतिष्ठा, ६ गायत्री, ७ उष्णिक, ८ अनुष्टुप, ९ बृहति, १० पंक्ति, ११ त्रिष्टुप, १२ जगती, १३ अति जगती, १४ शक्वीर, १५ अति शक्वरी, १६ अत्यष्ठि, १७ अष्ठि, १८ धृति, १९ अति धृति, २० कृति, २१ प्रकृति, २२ आकृति, २३ विकृति, २४ संस्कृति, २५ उत्कृति, २६ अतिकृति।

अथ छंद वरणण

दूहौ

एक गुरु स्री छंद कहि, दु गुरु छंद कहि कांम।
दोय लघु मधु, लघु गुरु, महि छँद रटि रांम ॥ ६

अथ स्री छंद, जात उक्ता (ग.)

गै । गै । स्री । थी । रां । कां ॥ ७

कांम छंद (ग. ग.)

गौ दौ । कांमौ । गावौ । रांमौ ॥ ८

दोय वरण छंद जात अत्युक्ता

मधु छंद (ल. ल.)

हरि । हरि । ररि । ररि ॥ ९

मही छंद (ल. ग.)

रमा उमा। पियं वियं। रटौ उठौ। अघं दघं ॥ १०

दूहौ

गुरु लघु सार वखांणजै, फेर मगण प्रस्तार।
आठ छंद तिण ऊपना, वे कवि नांम उचार ॥ ११

ताळी १ ससी २ प्रिय ३ रमण ४,
तवि मुणि पंचाळ ५ म्रगिंद्र ६।
किसन फेर मंदर ७ कमळ ८,
चवि जस राघवचंद्र ॥ १२

---

७. उक्ता–उक्था छंद।

९. अत्युक्ता–अत्युक्था छंद।

११. सार–छंद का नाम। फेर–फिर। तिण–उससे। ऊपना–उत्पन्न हुए।

१२. ताळी–शब्द मूलमें भी है अतः हमने भी यहां ताली ही रखा है—परन्तु यहां पर नारी शब्द होना चाहिए। तवि–कह कर। मुणि–कह, कह कर। चवि–कह, कह कर। राघवचंद्र–रामचंद्र।

सार छंद (ग. ल.)

रांम, चंद, भूप, वंद, क्रीत गाय धन्य थाय ॥ १३

तीन वरण छंद जात मध्या छंद ताळी (ग. ग. ग.)

जौ बंदै, गोबंदै, तौ देही, नां रेही ॥ १४

छंद ससी (ल.ग.ग. अथवा यगण)

रटौ रांमचंदं, कटौ पाप कंदं ।
करौ सुद्ध देहं, बडौ लाभ एहं ॥ १५

छंद प्रिया (ग.ल.ग. अथवा रगण)

रांम सीतापती, औेर वी अक्रती ।
सिंध साभाय जे, पंकज पाय जे ।
जीभ दीधी जकौ, क्यं ू न गावै तकौ ॥ १६

छंद रमण (ल.ल.ग. अथवा सगण)

रट दासरथी, कथ बेद कथी ।
रज जे पगरी, रिख नार तरी ॥
हर चाप जिया, सत खंड किया ।
रट सौ रसना, किव तं ू किसना ॥ १७

छंद पंचाल (ग.ग.ल. अथवा तगण)

स्री रांम राजेस, सेवो 'क्रिसंनेस' ।
जोवौ जसं जेस, भाखै भुजंगेस ॥ १८

---

१३. वंद–नमस्कार कर । क्रीत–कीर्ति । गाय–वर्णन कर । थाय–हो, हो कर ।
१४. गोबंदै–गोविन्द । तौ–तेरी । देही–(देह) शरीर । नां–नहीं । रेही–रहेगी ।
१५. कंदं–मूल । एहं–यह ।
१६. वी–उस, उसकी । अक्रती–आकृति, बनावट । सिंध–(सिंधु) समुद्र । साभाय–स्वभाव । जे–जो । पंकज–कमल । पाय–चरण । जकौ–जिसने । तकौ–उसको ।
१७. दासरथी–श्री रामचंद्र भगवान । रज–धूलि । जे–जिसके । रिख–ऋषि । नार–नारी । चाप–धनुष । रसना–जिह्वा । किव–कवि ।
१८. राजेस–राजाओंका राजा, सम्राट । जसं–(यश) कीर्ति । जेस–जिसका । भुजंगेस–शेषनाग ।

छंद म्रिगेंद्र (ल.ग.ल. अथवा जगण)

नमौं रघुनाथ, सधीर समाथ ।
गणां गजगाह, दसानन दाह ॥
भभीखण आथ, सु आस्रय पाय ।
व्रवी जिण रंक, लछीवर लंक ॥ १९

छंद मंद (ग.ल.ल. अथवा भगण)

सीत-पती कह, ओघ अघं दह ।
देह अभै करि, रांम रदे धरि ॥
गावत पांमर, झूठ पयंपर ।
ऊंबर सौ वित, कांय गमावत ॥ २०

छंद कमल (ल.ल.ल. अथवा नगण)

भगत-विछळ, नयण कमळ ।
जगत जनक, धरण-धनक ॥
सिर नमि नमि, चरण पदम ।
'किसन' रसण, रघुबर भण ॥ २१

अथ च्यार अखिर छंद जात प्रतिस्ठा

दूहौ

जीरण चरणह च्यार गुरु, धांनी रल पहिचांण ।
जगण निगल्ली अंत गुरु, संमोहा गुरु बांण ॥ २२

---

१९. म्रिगेंद्र–मृगेन्द्र । सधीर–धैर्यवान । समाथ–समर्थ । गजगाह–युद्ध । दसानन–रावण । दाह–जलाने वाला, ध्वंशक । भभीखण–विभीषण । आस्रय (आश्रय)–शरण, पनाह । पाय–प्राप्त कर । व्रवी–प्रदान की, दे दी । रंक–गरीब । लछीवर–लक्ष्मीपति । लंक–लंका ।

२०. सीत-पती (सीतापति)–श्रीरामचंद्र । ओघ–समूह । अघं–पाप । रदे–हृदय । पांमर–नीच, तुच्छ । ऊंबर (उम्र)–आयु । वित–धन । कांय–क्यों । गमावत–गमाता है, नाश करता है ।

२१. भगत-विछळ–भक्त-वत्सल । धरण-धनक–धनुष धारण करने वाला । पदम(पद्म)–कमल । रसण–जिह्वा, जीभ । भण–कह ।

२२. प्रतिष्ठा चतुक्षरावृत्तिका नाम है जिसके प्रस्तार भेदसे क्रमशः १६ भेद होते हैं । उन सोलह भेदोंके अंतर्गत जीर्णा (मतांतरसे तीर्णा) धांनी और निगल्लिका आदि हैं । र ल रगण और लघु ।

छंद जीरणा (जीर्णा) (म.ग.)

सीता राघौ गावै सोई, जीता है जम्मारा जोई ।
चेता राघौ नां चीतारै, है सोई जम्मारा हारै ॥ २३

छंद धांनी (र.ल.)

ईंद चंद्रमा अहेस, साधना करै महेस ।
सीतनाथ रांमचंद, सीस नांम पाय वंद ॥ २४

छंद निगल्लिका (ज.ग)

दसाननं विनासनं, असेख पाप नासनं ।
सदाजनं सिहायकं, नमांमि सीत-नायकं ॥ २५

पंचगुरु अखिर, पंचा अखिर छंद वरणण जात प्रतिस्ठा

छंद समोहा (म.ग.ग.)

सीता प्राणेसं, राजा-राजेसं ।
गावौ स्री रामं, पावौ जे धांमं ॥ २६

दूहौ

हारी तगण सु करण यक, हंस भगण करणेण ।
नगण दुलघु, मिळ जमकहि, जस भण राघव जेण ॥ २७

---

२३. जीरणा (जीर्णा) इसका दूसरा नाम तीर्णा या कन्या भी है । सोई–वही । जम्मारा–जीवन । जोई–वही । चेता–चित्त । चीतारै–स्मरण करता है ।

२४. अहेस–(अहीस) शेषनाग । सीतनाथ (सीतानाथ)–श्री रामचन्द्र भगवान । नांम–नमा कर, झुका कर । पाय–चरण ।

२५. दसाननं–रावण । विनासनं–नाश करने वाला । असेख (असंख्य)–अपार । नासनं–नाश करने वाला । सिहायकं–सहायक । सीत-नायकं–सीतापति ।

नोट—मूल हस्तलिखित प्रतिमें पांच गुरु अखिर पंचाखिर छंद वरणण जात प्रतिष्ठा है परन्तु पंचाक्षरा वृत्तिका शुद्ध नाम सुप्रतिष्ठा पंचाक्षरा वृत्ति है ।

२६. प्राणेसं (प्राण+ईश)–पति । राजा-राजेसं–(राजाओंका राजा) सम्राट । जे–जिसका । धांमं–स्थान, मोक्ष ।

२७. करण (कर्ण) दो दीर्घका नाम ऽऽ । करणेण–दो दीर्घ ऽऽ से । भण–कह । जेण–जिस, जिससे ।

छंद हारी (त.ग.ग.)

धांनंख-धारी, पै नीत-चारी ।
सौ सीळ सींधू, बाताद बंधू ॥
सोहै सकाजं, जांनंक राजं ।
जामात जोई, संभार सोई ॥
रेवंस रूपं, भूपाळ भूपं ।
सारंगपाणं, जीहा जपांणं ॥
दी औध ईसं, पै बंद सीसं ।
तूं धन्य तांमं, रे सेव रांमं ॥ २८

छंद हंस (भ.ग.ग)

रांम भजीजे, झौड़ तजीजे, लाभ सदेही, वेद वदेही ।
संत सिहाई, राघवराई, वौ हरि गावौ, पै उध पावौ ॥ २९

छंद जमक (न.ल.ल.)

धर धनक, जग जनक ।
दहण दुख, समुद सुख ॥
अवधपत, सरस सत ।
कमळकर, समर हर ॥ ३०

---

२८. **धांनंख-धारी**–धनुषधारी । **पै**–चरण । **नीत-चारी**–नीति पर चलने वाला । **सींधू**–(सिन्धु) समुद्र । **बाताद**–(वात+अद=पवनाशन=सर्प=शेषनाग) लक्ष्मण । **जांनंक**–राजा जनक । **जामात**–दामाद । **जोई**–जो, वह । **संभार**–स्मरण कर । **सोई**–वही, उसी । **रेवंस** (रवि-वंश)–सूर्यवंश । **सारंगपाणं** (सारंगपाणि)–सारंग नाम धनुष धारण करने वाले, विष्णु, श्री रामचन्द्र । **जीहा**–जिव्हा । **जपांणं**–जप कर, भजन कर ।

२९. **हंस**–इस छंदका दूसरा नाम पंक्ति भी है । **झौड़**–प्रपंच । **ततीजे**–तजिये । **वदेही**–कहते हैं । **सिहाई**–सहायक । **राघवराई**–श्री रामचन्द्र । **पै**–पद । **उध**–उद्धार ।

३०. **जमक**–इस छंदका दूसरा नाम करता भी है । **धनक**–धनुष । **जनक**–पिता । **दहण**–जलाने वाला । **समुद** (समुद्र)–सागर । **अवधपत्त** (अयोध्यापति)–श्री रामचन्द्र । **कमळकर**–कमल स्वरूप हाथ । **समर**–युद्ध ।

अथ खड़ाखर छंद गायत्री

दूहौ

दोय मगण सेखा, तिलक सगण दु, रगण दोय।
वीजोहा दुजबर करण, सौ चऊरसा होय॥ ३१

छंद सेखा (म.म.)

राघौजी जौ गावौ, प्राभ्भी लच्छी पावौ।
संतां कारी साता, देखी दीनां दाता॥ ३२

छंद तिलका (स.स.)

रघुनाथ रटौ, क्रत हीण कटौ।
कवसल्ल सुतं, दिननाथ दुतं॥
तन स्यांम सुभं, घण रूप लुभं।
कट पीत पटं, छज ओप छटं॥
कवि तूं 'किसना', रट सौ रसना॥ ३३

छंद विजोहा (र.र.)

नांम है रांमकौ, ओक आरांमकौ।
साच राघौ कथा, वांण दूजी व्रथा॥ ३४

---

३१. खड़ाकर–षड़ाक्षर, छ अक्षर। गायत्री–छ वर्णोंकी एक वर्ण-वृत्ति जिसके कुल ६४ भेद होते हैं। उनमेंसे कुछका उल्लेख ग्रन्थकर्ताने भी किया है। दुजबर–चार लघु मात्रा। करण–दो दीर्घ मात्रा।

३२. प्राभ्भी–बहुत, अपार। लच्छी–लक्ष्मी। कारी–करने वाला। साता–सुख।

३३. क्रत–कार्य, काम। हीण–तुच्छ, भद्दा। कटौ–काट डालो। कवसल्ल–कौसल्या। सुतं–पुत्र। दिननाथ–सूर्य। दुतं–(द्युति) कांति, दीप्ति। तन–शरीर। सुभं–शुभ। घण–(घन) बादल। लुभं–लोभाय, मान करने वाला। कट–(कटि) कमर। पीत–पीला। पटं–वस्त्र। छज–शोभा, शोभा देता है। ओप–कांति, दीप्ति। छटं–(छटा) विजली। रसना–जिव्हा, जीभ।

३४. विजोहा–विमोहा नाम ६ वर्णका छंद जिसके अन्य नाम जोहा, द्वियोधा, विज्जोदा भी मिलते हैं। ओक–घर। साच–सत्य। राघौ–राम। वांण–वाणी, शब्द। व्रथा–व्यर्थ।

छंद चऊरस (ल.ल.ल.ल.ग.ग)

रिख मख त्राता, दित कुळ घाता।
सु भुज निधायौ, किरण उडायौ॥
गवतम नारी, रज पय तारी।
भव जय भाखी, सुर मुनि साखी॥ ३५

दूहौ

यगण संखनारी उभय, दोय तगण मंथांण।
दुजगण प्रियगण मिळ दहूं, मदनक छंद प्रमांण॥ ३६

छंद संखनारी तथा विराज (य.य.)
(तथा छंद रसावळा)

रिखं साथ रांमं, गये कांम धांमं।
सुरं तीन भूपं, तहां आय नूपं॥
दसग्रीव बांणं, उभै जोर बांणं।
बियं आय तत्थं, ठयं मंच जत्थं॥
भुजं-बीस भल्लं, धनू काज हल्लं।
कसै चाप केमं, जती चीत जेमं॥
हजार दसानं, नूपं भंग मांनं।
पड़े जोर पोचं, अनंगेस सोचं॥

---

३५. रिख–ऋषि। मख–यज्ञ। त्राता–रक्षक। दित–दैत्य, असुर। घाता–संहारक, ध्वंशक। गवतम–गौतम। रज–धूलि। पय–चरण। भव–महादेव। भाखी–कही। साखी–साक्षी।

३६. दुजगण–चार लघु मात्राका नाम।
प्रियगण–दो लघु मात्राका नाम।

३७. संखनारी–इसका दूसरा नाम सोमराजी भी है। रिखं–ऋषि। दसग्रीव–रावण। ठयं–हुआ। मंच–ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठ कर सर्वसाधारणके सामने किसी प्रकारका कार्य किया जाय। जत्थं–यूथ, झुण्ड। भुजं-बीस–रावण। भल्लं–ठीक, श्रेष्ठ। धनू–धनुष। काज–लिये। हल्लं–चला। चाप–धनुष। केमं–कैसे। जती–(यती) जितेन्द्रिय। चीत–चित, मन। जेमं–जसे। दसानं–रावण। मांनं–प्रतिष्ठा। पोचं–कम। अनंगेस–महादेव। सोचं–भय।

नरव्वीर रेणां, भई भांत केणां ।
सुणे सेख तत्थं, कहे तांम कथ्थं ॥
मिथल्लेस राजं, कहौ केण काजं ।
नरब्बीर बांणी, महाहीण मांणी ॥
हुवै रांम जत्थं, अखौ नां अकथ्थं ।
उठे रांम तांमं, जगै कोप जांमं ॥
कटं पीतपट्टं, सुबंधे सुघट्टं ।
गतं पंचमुखं, चले चाप रूखं ॥
करं बांम चापं, उठायौ अमापं ।
नमायौ निखंगं, गुणं वाळ अंगं ॥
रमानाथ रीसं, करंते कसीसं ।
कुडंडं अचूकं, कियौ टूक टूकं ॥
सिया मात सुक्खं, विदेहं हरक्खं ।
नूपं जीत जांमं, वरी सीत वांमं ॥
जसं ओधरायं, 'किसनेस' गायं ॥ ३७

---

३७. नरव्वीर–नरवीर । रेणं–भूमि । भांत–प्रकार । केणं–किस, कैसे । सेख–(शेष) लक्ष्मण । तत्थं–वहाँ । तांम–उनको । कथ्थं–शब्द, वचन । मिथल्लेस–राजा जनक । केण–किस । काजं–लिए । बांणी–शब्द, वचन । महाहीण–महा तुच्छ, अति तुच्छ । अखौ–कहो । नां–नहीं । अकथ्थं–अकथनीय, बुरी बात । तांमं–तब । जांमं–परशुराम । कटं–(कटि) कमर । पीतपट्टं–पीताम्बर । सुघट्टं–सुन्दर, दृढ़ । गतं–प्रकार, तरह । पंचमुखं–सिंह । रूखं–ओर, तरफ । करं–हाथ । बांम–(वांम) वाया । चापं–धनुष । निखंगं–(निषंग) तर्कश, तूणीर, गुण धनुषको डोरी, प्रत्यंचा । रमानाथ–लक्ष्मीपति, श्री रामचन्द्र । रीसं–रिस, कोप । करंतै–हाथसे । कसीसं–धनुषको मोड़ कर प्रत्यंचा चढ़ाई, धनुष चढ़ाया । कुडंडं–(कोदंड) धनुष । अचूकं–अव्यर्थ । टूक टूकं–खंड खंड । सिया–सीता । मात–माता । विदेहं–राजा जनक । हरक्खं–हर्ष, प्रसन्नता । जीत–जीत कर । जामं–परशुराम । वरी–वरण की । सीत–सीता । वांमं–(वाम) स्त्री । जसं–यश । ओधरायं–श्री रामचन्द्र ।

छंद मंथांणी (त.त.)

सीता रमा सोय, कीजै समं कोय ।
भाखौ परीभ्रंम्म, राघौ महारंभ ॥ ३८

छंद मदनक (ल. ६)

सहदत सत, दसरथ सुत ।
रिवकुळमण, रघुबर भण ॥ ३९

दूहौ

दोय जगण यक चरणमें, सौ मालती सुभाय ।
कीरत जिणमें 'किसन' कवि, रट रट स्री रघुराय ॥ ४०

छंद मालती (ज.ज.)

वडौ धन वेस, म खोय मुढेस ।
चवां चित चेत, पुणौं मत प्रेत ॥
भणां धन भाग, रघुब्बर राग ॥ ४१

अथ सप्त वरण छंद जात उस्णिक

दूहौ

रगण जगण पय अंत गुरु, समांनिका कह सोय ।
दुजबर भगण पयेण जिण, छंद सबासन होय ॥ ४२

ंद समांनिका (र.ज.ग.)

रांम नांम गाव रे, पाय कंज धाव रे ।
जांनकीस जांण रे, वेस तूं जवांण रे ॥ ४३

---

३८. **रमा**–लक्ष्मी । **सोय**–वह । **समं**–समान । **कोय**–किस । **परीभ्रंम्म**–(परब्रह्म) परमात्मा । **महारंभ**–(महारम्भ) जिसके आरम्भ करनेमें महान यत्न करना पड़े. महान, बड़ा ।
३९. **रिवकुळमण**–रविकुलमणि । **भण**–कह ।
४१. **वडौ**–महान, बड़ा । **वेस**–आयु, उम्र । **म**–मत । **खोय**–गमा, नष्ट कर । **मुढेस**–मूर्ख । **चवां**–कहता हूँ । **चेत**–सतर्क हो । **पुणौ**–कहो । **भणां**–कहता हूँ । **राग**–प्रेम, अनुराग ।
४२. **पय**–चरण । **सोय**–वह । **दुजवर**–चार लघु मात्रा । **पयेण**–चरण ।
४३. **पाय**–चरण । **कंज**–कमल । **धाव**–ध्यान कर । **जांनकीस**–श्री रामचन्द्र भगवान । **जांण**–समझ । **वेस**–आयु, उम्र । **जवांण**–जवान, युवा ।

छंद सबासन
(४ ल.भ. अथवा न.ज.ल.)

खर खळ खंडण, महपत मंडण ।
रसण वडापण, रघुवर जंपण ॥ ४४

दूहौ

दुजबर जगण पयेण जिण, सौ करहची सुणंत ।
सात गुरु पय जास मध, सीखा छंद सुभंत ॥ ४५

छंद करहची
(४ ल.ज. अथवा न.स.ल.)

लसत चख लाज, सुकर धनु साज ।
सभ्रण सगरांम, रसण भज रांम ॥ ४६

छंद सिखा
(७ ग. अथवा म.म.ग.)

जांणै सौ राघौ जांणै, ठांणै सौ राघौ ठांणै ।
जीवाड़ै राघौ जैनं ू, तौ मारै केहौ तैनं ू ॥ ४७

अथ अस्टाखिर छंद वरणण, जात अनुस्टप
दूहौ

आठ गुरू पद छंद जिण, विद्युन्माळा अक्ख ।
गुरु लघु क्रम अठ वरण पद, सौ मल्लिक विसक्ख ॥ ४८

---

४४. छंद सबासनका ठीक लक्षण नगण जगण और एक लघुसे बैठता है परन्तु कविने अपनी दक्षतासे चार लघु और एक भगण कर दिया । खर–एक राक्षसका नाम । खळ–असुर । खंडण–नाश करने वाला । महपत–(महीपति) राजा । मंडण–आभूषण । रसण–जिव्हा, जीभ । जंपण–जपना ।

४५. दुजबर–चार लघु मात्रा । पयेण–चरण । पय–चरण ! करहची–इसका दूसरा नाम करहंस है । जास–जिसके । मध–मध्य । सुभंत–शोभा देता है ।

४६. लसत–शोभा देता है, शोभा देती है । चख–(चक्षु) नेत्र, नयन । सुकर–श्रेष्ट हाथ । धनु–धनुष । सभ्रण–सुसज्जित होनेके लिए । सगरांम–युद्ध । रसण–जीभ ।

४७. जांणै–जानता है । ठांणै–विचारता है । ज.वाड़ै–जीवित रखता है । जैनूं–जिसको । केहौ–कौन । तैनूं–उसको ।

४८. अस्टाखिर–अष्टाक्षर । अक्ख–कह । अठ–आठ । विसक्ख–विशेष ।

छंद विद्युन्माला

(८ ग. अथवा म.म.ग.ग.)

राघौ राजा सीता रांणी, वेदांमें धाता वाखांणी ।
सौ गावै जोई है साचौ, कीटांनं गावै सौ काचौ ॥ ४६

छंद मल्लिका (र.ज.ग.ल.)

आच आब जेम आय, जोव तांस छीज जाय ।
कोय अंत नाय कांम, रे अबूझ गाय रांम ॥ ५०

छंद प्रमांणी तथा अरध नाराज तथा तुंग

(ज.र.ल.ग.)

दूहौ

लघु गुरु क्रम वरण अठ, छंद प्रमांणी कथ्थ ।
दोय नगण फिर करण दे, सौ कह तुंग समथ्थ ॥ ५१

छंद प्रमांणी

नमौ नरेस राघवं, दराज पाय दाघवं ।
उपंत स्यांम अंगयं, सनीर अब्र ढंगयं ॥
दकूळ पीत लोभयं, सुरूप बीज सोभयं ।
निखंग पीठ रज्जयं, सुचाप पांणि सज्जयं ॥
मुखारविंद मोहनं, सुमंद हास सोहनं ।
जु बांम अंग जांनकी, सु सोभना समांनकी ॥

---

४६. धाता–ब्रह्मा । वाखांणी–वर्णन की, यश गायन किया । सौ–उस, वह । जोई–वही । साचौ–सच्चा । कीटांनूं–कीटोंको, तुच्छ देवोंको । काचौ–कच्चा ।

५०. मल्लिका प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे रखे हुए आठ वर्णका छंद । आच–हाथ । आब–पानी । जेम–जैसे । आय–आयु, उम्र । छीज जाय–नाश हो रही है, नाश होती है । कोय–कुछ । अबूझ–मूर्ख ।

५१. प्रमांणी–प्रमाणिका छंद । कथ्थ–कह । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम । समथ्थ–समर्थ ।

५२. दराज–लंबा, विशाल । उपंत–शोभा देता है । स्यांम–श्याम । अंगयं–शरीर । सनीर–कांतिवान । दकूळ–वस्त्र । पीत–पीला । लोभयं–लोभायमान करने वाला । बीज–बिजली । सोभयं–शोभायमान । निखंग, (निषङ्ग)–तर्कश । रज्जयं–शोभायमान । सुचाप–सुंदर धनुष । पांणी–हाथ । सज्जयं–धारण किए हुए है । मुखारविंद–कमल-स्वरूपी मुख । मोहनं–मोहित करने वाला । सुमंद–सुंदर और मंद । हास–हँसी । सोहनं–शोभायमान होती है । बांम–बायां ।

वसंत ध्यांन मंजयं, हृदे महेस कंजयं ।
तवै ज क्रीत तासयं, जनंम धन्य जासयं ॥ ५२

छंद त्वंग तथा तुंग (न.न.ग.ग.)

दस सिर खळ दाहं, सुचित सुजन चाहं ।
जप जप रघुराजं, सु भुज समर लाजं ॥ ५३

दूहौ

दुजबर जगण सु अंत गुरु, कमळ छंदस कहांण ।
भगण करण फिर सगण मिळ, मांन क्रीड़सु वखांण ॥ ५४

छंद कमल (४ ल ज ग.)

रवि सुनिभ राजही, सुकर धनु साजही ।
सुकव धर सीस जौ, अवधपुर ईस जौ ॥ ५५

छंद मांनक्रीड़ा (भ.ग.ग.स.)

स्यांम भजै तांम सुखी, दांम भजै और दुखी ।
सीतपती गाव सदा, राख जिकौ ध्यांन रिदा ॥ ५६

दूहौ

च्यार तुकां लघु पंचमौ, खट आठम गुरु आंण ।
दूजी चौथी सातमौ, लघु अनुस्टुप जांण ॥ ५७

---

५२. मंजयं–मध्यमें । हृदे–हृदय । महेस–महादेव । कंजयं–कमल । तवै–कहता है, स्तवन करता है । क्रीत–कीर्ति, यश । तासयं–उसका । जासयं–जिसका ।

५४. दुजबर–चार लघु मात्राका नाम । कहांण–कहा गया । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ।

५५. रवि–सूर्य । सुनिभ–समान, आभा, प्रभा । राजही–शोभा देता है । साजही–शोभा देता है । अवधपुर–अयोध्या ।

५६. स्यांम–स्वामी, श्याम, श्रीराम । तांम–बहुत, अधिक । सीतपती–(सीतापति) श्रीरामचंद्र भगवान । जिकौ–वह, उस । रिदा–हृदय ।

नोट—जिसके चारों चरणोंमें पांचवा अक्षर लघु और छठा अक्षर दीर्घ हो और सम पदोंमें सातवां अक्षर भी लघु हो, इनके अलावा अन्य अक्षरों पर कोई खास नियम न हो उसे श्लोक तथा अनुस्टुप कहते हैं । ग्रंथकारने जो अनुस्टुपका लक्षण दिया है वह संस्कृतके ग्रंथोंसे मेल नहीं खाता ।

वारता

जींके चार ही तुकां पंचमौं अखिर लघु आवै, अरु छठौ आठमौ गुरु आवै, दूजै, चौथै, सातमौ लघु आवै, च्यार ही तुकां सौ अनुस्टुप छंद छै। पैलौ तीजौ अछिरकौ गुरु लघुकौ नेम ही नहीं, गुरु आवै भावै लघु, पंचमौ अखिर च्यार ही तुकां लघु, छठौ च्यार ही तुकां गुरु। दूजी चौथी तुकरा सातमौ अखिर लघु आवै सौ अनुस्टुप कै छै।

छंद अनुस्टुप

राघव जपतौ प्रांणी, मूढ आळस मां करै ।
आव दरब आळपं, चेता अंध सचेत रे ॥ ५८

अथ ब्रहती जात नव-अखिर छंद वरणण

दूहौ

महालिछमी पद मही, तीन रगण दरसंत ।
दुजबर करणह सगण दखि, सारंगिका लसंत ॥ ५९

छंद महालक्षिमी (र.र.र.)

रांम राजै रसा रूप रे, नेतबंधी वणै नूप रे ।
सीत वाळौ पती साच रे, रे मना जेणहूं राच रे ॥ ६०

छंद सारंगिका

(४ ल.ग.ग.स. अथवा न.य.स.)

रघुबर भीली कर रे, बिलकुल सीताबर रे ।
रुचि करकंधू फळ रे, जमि हसि पीधौ जळ रे ॥ ६१

---

५८. **मूढ**–मूर्ख । **मां**–मत । **आव**–आयु, उम्र । **दरब**–(द्रव्य) धन-दौलत । **आळपं**(अल्प)–अल्प, कम । **चेता**–चितसे ।

५९. **ब्रहती**–(बृहती) । **नव-अखिर**–नवाक्षर वृत्ति । **महालिछमी**–महालक्ष्मी । **पद**–चरण । **मही**–में । **दरसंत**–दिखाई देते हैं, देखे जाते हैं । **दुजबर**–चार लघु मात्राका नाम । **करणह**–दो दीर्घ मात्राका नाम । **दखि**–कह कर । **लसंत**–शोभा देता है, शोभा देती है ।

६०. **महालक्षिमी**–महालक्ष्मी । **राजै**–शोभा देता है । **रसा**–पृथ्वी । **नेतबंधी**–अपना निजका झंडा या ध्वजा रखने वाला, वीर । **सीत**–सीता । **वाळौ**–का । **मना**–मन । **जेणहूं**–जिससे । **राच**–अनुरक्त या लीन रह ।

६१. **भीली**–भिल्लनी । **कर**–हाथ । **सीताबर**–सीतापति, श्रीरामचंद्र । **करकंधू** (कर्कन्धु)–बेरका फल या वृक्ष, बदरीफल । **जमि**–खा कर । **हसि**–हंस कर । **पीधौ**–पिया ।

दूहौ

मगण भगण फिर सगण मुणि, पायत छंद प्रकास ।
गण बे दुजबर एक गुर, रति पद सौ सुख रास ॥ ६२

छंद पायत (म.भ.स.)

तौ पै धूळी सिल तरगी, वारी सारै हि......।
ऊं ही राघौ तरणि उडै, छै य्यौ साकौ स कुळ छुडै ॥
धोवौ पै तौ कदम घरौ, कै कीरौ कै करौ ॥ ६३

छंद रतिपद (८ ल.ग. अथवा न.न.स)

धरण कर धनक है, जगत सह जनक है ।
समर कळतरस है, सुज जनम सरस है ॥ ६४

दूहौ

न स य बिंब तोमर सगण, यक बे जगण स कोय ।
च्यार करण गुरु एक सौ, रूपा-माळी होय ॥ ६५

छंद बिंब (न.स.य.)

मुण महण तार माथै, सुज गिरवरां समाथै ।
खळ सबळ वंस खोयौ, जग सरब तेण जोयौ ॥
जस 'किसन' ते जपीजै, लभ रसण देह लीजै ॥ ६६

---

६२. मुणि–कह कर । पायत–एक छंदका नाम, इस छंदका दूसरा नाम पाईता भी है । बे–(द्वे) दो । दुजबर–चार लघु मात्राका नाम ।

६३. तौ–तेरे । पै–पैर । सिल–पत्थर । वारी–जल । ऊं ही–ऐसे ही । राघौ–श्रीरामचंद्र भगवान । तरणि–नौका, नाव । छुडै–छूट जाय । तौ–तब । कदम–चरण । क-कड़ता है । कीरौ–कीर, धीवर, मल्लाह । कै–या, अथवा । करद–किराया या कर देने वाला ।

६४ धरण–धारण किए हुए । कर–हाथ । धनक–धनुष । जनक–पिता । समर–स्मरण कर । कळतरस (कल्पतरु)–कल्प वृक्ष । सरस–सफल ।

६५ न स य–नगण सगण यगणका संक्षिप्त रूप । बिंब–एक छंदका नाम । यक–एक । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ऽऽ । रूपामाळी–एक छंदका नाम ।

६६. महण–महार्णव सागर, समुद्र । माथै–ऊपर । समाथै–समर्थ, महान । खोयौ–नाश किया । जोयौ–देखा । ते–उसका । जपीज–जप, जपना चाहिए । लभ–लाभ । रसण–जिह्वा, जीभ । देह–शरीर ।

छंद तोमर (स.ज.ज.)

कटि तंूण चाप कराग, खळ भंज रावण खाग ।
पह सिद्ध बंधण पाज, मनमोट स्री महराज ॥
तिय जांनुकी भरतार, कुळमौड़ भू करतार ।
जप पात तूं अठजांम, रवि वंस ओपम रांम ॥ ६७

छंद रूपमाली (६. ग. अथवा म.म.म.)

आपे लंकासी मौजां यंूही, तौ जेहौ आखां दाता तंूही ।
थूरै जंगां के दैतां थौका, झौका झौका जी राघौ झौका ॥ ६८

अथ दस अखिर छंद वरणण जात पंक्ति

दूहौ

एक सगण बे जगण गुरु, संजुतका सौ गाय ।
चंपक माळा भ म स गुरु, त्रिभग सारवति ठाय ॥ ६९

छंद संजुतका (स.ज.ज.ग.)

जय रांम संत सिहायकं, घण दैत आहव घायकं ।
मिथळेस राजकुमारयं, उरहार प्रांण अधारयं ॥

---

६७. कटि–कमर । तूंण (तूण)–तर्कश, भाथा । चाप–धनुष । कराग (कराग्र)–हाथमें । खळ–राक्षस । भंज–नाश कर । पह–प्रभु । सिद्ध–सफल, प्रयत्न । पाज–सेतु । मनमोट–उदार । तिय–स्त्री । जांनुकी–सीता । कुळमौड़–कुलश्रेष्ठ । भू–भूमि । पात (पात्र)–कवि । अठजांम–अष्ठ याम, आठों पहर । रवि (रवि)–सूर्य । ओपम–शोभा, कांति ।

६८. आपे–दे दी, प्रदान कर दी, अर्पण कर दी । लंकासी–लंकाके समान । मौजां–दान । यूंही–ऐसे ही । तौ–तेरे । जेहौ–जैसा । आखां–कहता हूं । दाता–दातार । थूरै–नाश करता है, संहार करता है । दैतां–दैत्यों । जंगां–युद्धोंमें । थौका–समूह । झौका–धन्य-धन्य ।

६९. संजुतका–एक छंदका नाम, इसका दूसरा नाम संयुत भी है । भ म स–भगण, मगण, सगणका संक्षिप्त रूप । त्रिभग–तीन भगण और एक गुरुका संक्षिप्त नाम । सारवति–एक छंदका नाम ।

७०. सिहायकं–सहायक । घण–बहुत, अधिक । दैत–दैत्य । आहव–युद्ध । घायकं–नाश करने वाला । मिथळेस–राजा जनक । राजकुमारयं राजकुमारी । अधारयं–आधार ।

तन कंद स्यांम सुभावनं, पटपीत विद्युत पावनं।
'किसनेस' पात उधारयं, धनु बांण पांणसु धारयं ॥ ७०

छंद चंपकमाळा (भ.म.स.ग)

गोह सरीखा पांमर गाऊं, ब्याध कबंधा ग्रीध बताऊं ।
नै सट पापी गौतम नारी, ते रज पावां भेटत तारी ॥
देव सदा दीनां दुख दाघौ, रे भज प्रांणी भूपत राघौ ॥ ७१

छंद सारवती (भ.भ.भ ग.)

चाप करां नृप रांम चढ़े, मांझ रजी तद भांण मढ़े ।
खौहण के असुरांण खपे, पंख सिवा पळ खाय त्रपे ॥
रे नित सौ जन भीड़ रहै, कूंण जनां दुख देण कहै ॥ ७२

दूहौ

तगण यगण भगणह गुरु, सुखमा छंद सुभाय ।
नगण जगण नगणह गुरु, अम्रित गत यण भाय ॥ ७३

---

७०. तन–शरीर । कंद–वादल । सुभावनं–सुन्दर । पटपीत–पीताम्बर । विद्युत–विजली । पावनं–पवित्र । धनु–धनुष । पांणसु–हाथमें । धारयं–धारण किए हुए ।

७१. गोह (गुह)–प्रसिद्ध राम-भक्त निषादराज जो शृंगवेरपुरका स्वामी था । सरीखा–समान, सदृश । पांमर–नीच । ब्याध (विराध)–एक राक्षसका नाम जिसको दण्डकारण्यमें लक्ष्मणने मारा था । कबंधा–एक दानव जो देवीका पुत्र था, इसका मुंह इसके पेटमें था । कहते हैं कि इन्द्रने इसको एक बार वज्रसे मारा इससे शिर और पैर पेटमें घुस गये थे । इसे पूर्वजन्मका विश्वासु गंधर्व लिखा है । रामचंद्रजीसे इसका दण्डकारण्यमें युद्ध हुआ था । रामचंद्रजीने इसका हाथ काट कर इसको जीवित भूमिमें गाड़ दिया । ग्रीध–जटायु नामका पक्षी । नै–और । सट–मूर्ख । रज–धूलि । पावां–पैरों । भेटत–स्पर्श करते ही । तारी–उद्धार कर दिया । दाघौ–जलाया, जलाने वाला । भूपत (भूपति)–राजा । राघौ–श्री रामचंद्र ।

७२. चाप–धनुष । करां–हाथों । मांझ–मध्य, में । रजी–धूलि । तद–तब । भांण–सूर्य । मढ़े–आच्छादित हो गया । खौहण (अक्षौहिनी)–सेना । असुरांण–असुर, राक्षस । खपे–नाश हो गये । पंख–पक्षी । सिवा (शिवा)–शृगाली । पळ–आमिष । त्रपे–संतुष्ठित हुए, अघाये । सौ–वह । भीड़–सहाय, मदद । कूंण–कौन । जनां–भक्तों । देण–देनेको ।

७३. सुभाय–अच्छा लगे । यण–इस । भाय–प्रकार ।

छंद सुखमा (त.य.भ.ग.)

नागेस भजै राघौ नत ही, साधार धरा भासै सत ही ।
जे गाव कवि तूं धन्य जथा, क्यूं और बखांणै आळ कथा ॥ ७४

छंद अंमृत गति (न.ज.न.ग.)

दसरथ राजकँवर है, सुभ कर धांनख सर है ।
रघुबर सौ किव रट रे, मळ तनचा सब मट रे ॥ ७५

अथ एकादस अखिर छंद वरणण, जात त्रिस्टूप

दूहौ

तीन भगण दौ गुरु जठै, दोधक छंद स दाख ।
दोय लघु त्रय सगण पद, सौ सुमुखी अहि साख ॥ ७६

छंद दोधक (भ.भ.भ.ग.ग.)

राघव ठाकुर है सिर ज्यांरै, तौ किसड़ी घर ऊंणत त्यांरै ।
की जिण राखस सेव करी सी, वेख भभीखण लंक वरी सी ॥ ७७

छंद समुखी (ल.ल.स.स.स. अथवा न.ज.ज.ल.ग.)

जय जय राघव दैतजई, महपत मूरत साचमई ।
हरण अनेक विघंन हरी, कमळ करं प्रतपाळ करी ॥ ७८

---

७४. **नागेस**–शेष नाग । **नत**–नित्य । **साधार**–आधार, सहारा । **धरा**–पृथ्वी । **भासै**–मालूम होता है, शोभा देता है । **सत**–सत्य । **जे**–अगर । **जथा** (यथा)–कथा, वृत्तान्त । **क्यूं**–क्यों । **बखांणै**–वर्णन करता है । **आळ**–व्यर्थ, असत्य ।

७५. **कर**–हाथ । **धांनख**–धनुष । **सर**–बाण । **सौ**–वह, उस । **किव**–कवि । **मळ**–मैल । **तनचा**–शरीरका । **मट**–मिटा दे ।

७६. **जठै**–जहां । **स**–वह । **दाख**–कह । **सौ**–वह । **अहि**–शेषनाग । **साख**–साक्षी ।

७७. **ठाकुर**–स्वामी । **ज्यांरै**–जिनके । **तौ**–तब । **किसड़ी**–कैसी । **ऊंणत**–अभाव, कमी । **त्यांरै**–उनके । **राखस**–राक्षस । **वेख**–देख । **भभीखण**–विभीषण । **वरी**–प्रदान की ।

७८. **दैतजई**–दैत्योंको (असुरोंको) जीतने वाला । **महपत** (महिपति)–राजा । **मूरत**–मूर्ति । **साचमई**–सत्यमयी । **करं**–हाथ । **प्रतपाळ**–रक्षा । **करी**–हाथी अथवा की ।

दूहौ

दोय करण फिर रगण दौ, अंत एक गुरु आंण ।
सुणियौं खग कहियौ सरप, छंद सालिनी जांण ॥ ७९

छंद सालिनी

(४ ग.र.र.ग. अथवा म.त.त.ग.ग.)

गावै राघौ सोभणौ पात गाढ़ौ ।
आखै वांणी यूं 'किसन्नेस' आढ़ौ ॥
ते भूला राघौ, विगूतौ भवि त्यांरौ ।
जांणैसी पीछै वडौ भाग ज्यांरौ ॥ ८०

दूहौ

दौ दुजबर अंतह सगण, मदनक छंद मुणंत ।
गुरु लघु क्रम ग्यारह वरण, सौ सेनका सुणंत ॥ ८१

छंद मदनक (८ ल.स. अथवा न.न.न.ल.ग.)

हरण कसट जन हर है ।
विमळ बदन रघुबर है ॥
सरब सगुण सह सरसै ।
दनुज दहण भुज दरसै ॥ ८२

---

७९. करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ऽ ऽ। आंण–ला कर । खग–गरुड़ । सरप–शेषनाग ।

८०. राघौ–श्री रामचंद्र । सोभणौ–शोभा देने वाला । अथवा–सो = वह, भणौ = कहो । पात (पात्र)–कवि । गाढ़ौ–दृढ़, गंभीर । आखै–कहता है । आढ़ौ–आढ़ा गोत्रका चारण । ते–वे । विगूतौ–बरबाद हुआ, व्यर्थ गया । भवि (भव)–जन्म या संसार । त्यांरौ–उनका । जांणैसी–जानेंगे । पीछै–पश्चात् । वडौ–महान । भाग–भाग्य । ज्यांरौ–जिनका ।

८१. दुजबर–चार लघु मात्रा । । । । मुणंत–कहा जाता है । सुणंत–सुना जाता है ।

८२. बिमळ–पवित्र । बदन–मुख या शरीर । दनुज–राक्षस । दहण–नाश करनेको । दरसै–दिखाई देते हैं ।

छंद सैनिका

(ग.ल.ग.ल.ग.ल.ग.ल.ग.ल.ग. अथवा र.ज.र.ल.ग)

माथ पंच दूण जुद्ध मारणं ।
धांनुखं सरेण पांण धारणं ॥
बार बार रांम क्रीत बोल रे ।
ताहरौ वडौ कवेस तौल रे ॥ ८३

दूहौ

मालतिका ग्यारह गुरु, बि तगण ज करण जांण ।
छंद इंद्र वज्रा छजै, वड कवि रांम वखांण ॥ ८४

छंद मालतिका

(११ ग. अथवा म.म.म.ग.ग.)

राघौ रूड़ौ स्री सीता स्वांमी राजै ।
भारांथां लाखां दैतां थौका भांजै ॥
जैनूं जीहा रातौ-दीहा जी जंपौ ।
कांतौ थे कीनासाहूंता ही कंपौ ॥ ८५

छंद इंद्र वज्र (त.त.ज.ग.ग.)

गोपाळ गोव्यंद खगेस-गांमी ।
नागेस सज्या क्रत सैन नांमी ॥

---

८३. माथ (मस्तक)–शीश । दूण–दुगना । मारणं–मारने वाला । धांनुखं–धनुष । सरेण–बाण, बाणसे । पांण (पाणि)–हाथ । धारणं–धारण करने वाला । क्रीत(कीर्ति)–यश । ताहरौ–तेरा । कवेस (कवीश)–महाकवि । तौल–मान, प्रतिष्ठा ।

८४. बि (द्वि)–दो । ज–जगण । करण–दो गुरु मात्रा ऽऽ । छजै–शोभा देता है । बखांण–वर्णन कर ।

८५. रूड़ौ–बढ़िया । राजै–शोभा देता है । भाराथां–युद्धों । थौका–समूह । भांजै–नाश करता है, तोड़ता है । जैनूं–जिसको । जीहा–जीभ । रातौ-दीहा–रातदिन । जी–जीव, प्राण । जंपौ–याद करो, स्मरण करो । कांतौ–पति । कीनासहूंता–यमराजसे । कंपौ–कम्पायमान है ।

८६. गोव्यंद–गोविंद । खगेस-गांमी–गरुड़ पर सवारी करने वाला, गरुड़के वाहनसे गमन करने वाला । नागेस–शेषनाग । सज्या–शय्या । क्रत–करने वाला । सैन–शयन । नांमी–नाम वाला ।

है जंग वागां दस-माथ हंता।
माहेस वाछळ्य सुकंठ मीता ॥ ८६

दूहौ

जगण तगण जगण करण, छंदस वज्रउपेंद।
वज्र इंद ऊपयंद पद, मिळ उपजाती छंद ॥ ८७

उपेंद्रवज्रा (ज.त.ज.ग.ग.)

अरेस जेतार जुधां अथाहं।
बिसाळ ऊरंसु अजांनबाहं ॥
धनेस देवेस दुजेस ध्यावै।
गुणीस राघौ नित क्यूं न गावै ॥ ८८

छंद उपजात

स्री जांनुकीनाथ सदा सराहौ।
चिंतस बीजौ भजवा न चाहौ ॥

---

८६. जंगवागां–युद्ध होने पर। दस-माथ–रावण। हंता–मारने वाला। माहेस–शिव। वाछळ्य–वात्सल्य। सुकठ–सुग्रीव। मीता–मित्र।

८७. वज्रउपेंद–उपेन्द्रवज्रा नामक छंद। ऊपयंद–उपेन्द्रवज्रा छंद। उपजाती (उपजाति)–इन्द्र-वज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे बनने वाला छंद कहलाता है। इस प्रकारके छंद संस्कृत साहित्यमें १४ हैं जो इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्राके योगसे ही बनते हैं यथा कीर्ति, वाणी माला, शाला, हंसी, माया, जाया, बाला, आर्द्रा, भद्रा, प्रेमा, रामा, ऋद्धि और सिद्धि।

नोट–कहीं-कहीं इंद्रवंश और वंशस्थ तथा कहीं-कहीं सार्दूल विक्रीड़ित और स्रग्धरा छंदके योगसे बनने वाले छंदोंकी संज्ञा भी उपजाति मानी गई।

८८. अरेस (अरीश)–महाशत्रु। जेतार–जीतने वाला। अथाहं–अपार। ऊरंसु–उरसे, हृदयसे, वक्षस्थलसे। अजांनबाहं–आजानबाहु। धनेस–कुबेर। देवेस–इन्द्र। दुजेस(द्विजेश)–बड़े-बड़े ऋषि, नारद, व्यासादि। गुणीस (गुणीश)–महाकवि। राघौ–श्रीरामचंद्र। क्यूं–क्यों ? न–नहीं।

८९. उपजात–उपजाति। सदा–नित्य। सराहौ–कीर्तन करो, यशगान करो। चिंतस–चित्तसे। बीजौ–दूसरा। भजवा–भजन करनेको। चाहौ–इच्छाकरो।

दीनांदयावंछित मौज दाता ।
भला गुणां जोग अहेस आता ॥ ८९

दूहौ

रगण नगण रगणह ध्वजा, रथोद्धिता सौ होय ।
रगण नगण भगणह करण, जिकौ स्वागता जोय ॥ ९०

छंद रथोद्धिता (र.न.र.ल.ग.)

गौर स्यांम सिय रांम गाव रे, पात तूं सपद ऊंच पाव रे ।
नेक पाप हर जेण नांम रे, राज राज जगमौड़ रांम रे ॥ ९१

छंद स्वागता (र.न.भ.ग.ग.)

रांम नांम सर पाथर तारे, आप पांण कपि सेन उतारे ।
जेण नांम सिव संकर जापै, मांझ कासि नर मोख समापै ॥ ९२

अथ द्वादसाखिर छंद जात जगती

च्यार यगण पदप्रत्त चवां, छंद भुजंगप्रयात ।
लिखमीधर पदप्रत सुलछ, रगण च्यार दरसात ॥ ९३

छंद भुजंगप्रियात

निमौ रांम जेणां तरी भ्रम्ह नारी ।
यूंहीं ताड़का मार बांणां उधारी ॥

---

८९. दीनांदयावंछित–दीनों पर दया करनेकी इच्छा वाला अथवा हे दीनों, जो तुम अपने पर दया की इच्छा करते हो । मौज–दान । दाता–देने वाला । भला–श्रेष्ठ । जोग–योग्य । अहेस (अहीस)–लक्ष्मण ।

९०. ध्वजा–एक लघु और एक दीर्घ मात्राका नाम । जिकौ–वह ।

९१. रथोद्धिता–रथोद्धता नामक छंद । सिय–सीता । पात (पात्र)–कवि । नेक–थोड़ा, किंचित । जेण–जिसका । जगमौड़–संसार-शिरोमणि ।

९२. सर–सागर, समुद्र । पाथर–पत्थर । पांण–शक्ति, बल, भुजा, हाथ । सेन–सेना । जापै–जपते हैं । मांझ–मध्यमें । मोख–मोक्ष । समापै–देते हैं ।

९३. द्वादसाखिर छंद–द्वादशाक्षरावृत्ति । पदप्रत–प्रति पद या चरण । चवां–कहता हूं ।

९४. भ्रम्ह–ब्राह्मण, यहां गौतम ऋषिसे अभिप्राय है जिनकी स्त्रीका नाम अहल्या था । यूंहीं–ऐसे ही ।

सुबाहं कियौ खंड खंडं सरंखे ।
निमौ च्यारसै कोस मारीच नंखे ॥
करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्जं ।
दखे जै जया बोल आंनेक दुज्जं ॥
चितं चाय सीता सपीता अचूकं ।
कियौ चाप भूतेसरौ टूक-टूकं ॥
'किसन्नेस' आखै अरज्जी कविंदं ।
बडौ आसरौ रांम पादारब्यंदं ॥ ९४

छंद लक्ष्मीधर (र.र.र.र.)

रांम वाळी रजा सीस ज्यांरै रहै ।
कूण त्यांनै हुवा हीण मांणं कहै ॥
वीसरै जीवहूं जेह सीतावरं ।
न्यायहीण मदां होय तेता नरं ॥ ९५

दूहौ

च्यार स तोटक च्यार तह, कह सारंग सुतत्थ ।
च्यार ज मुत्तीय दांम चव, च्यार भ मोदक कत्थ ॥ ९६

---

९४. सरंखे–बाणसे । च्यारसै–चार सौ । नंखे–फेंक दिया, डाला । ज्याग–यज्ञ । स्याहाय–सहायता । मूनेस (मुनीश)–विश्वामित्र मुनि । कज्जं–लिए । दखे–कहते हैं । जै–जय । जया–जय । आंनेक–अनेक । दुज्जं (द्विज)–ब्राह्मण । चाय–चाह कर । चाप–धनुष । भूतेसरौ–महादेवका । टूक-टूकं–खंड-खंड । आखै–कहता है । अरज्जी–प्रार्थना । कविंदं (कवीन्द्र)–महाकवि । आसरौ–आश्रय, सहारा । पादारब्यंदं–(पादारविंद) कमलस्वरूपी चरण ।

९५. लक्ष्मीधर–इस छंदके अन्य नाम कामिनीमोहन, लक्ष्मीधरा, शृंगारिणी तथा स्रग्विणी भी हैं । रजा–आज्ञा । ज्यांरै–जिनके । कूंण–कौन । त्यांनै–उनको । हीण–रहित । वीसरै–विस्मरण करता है । जीवहूं–जीवसे । जेह–जिसको । सीतावरं–श्रीरामचंद्र । तेता–उतने ।

९६. स–सगण ।।S । तह–तगण SS। । ज–जगण ।S। । चव–कह । भ–भगण S।। । कत्थ–कह ।

छंद तोटक (स स.स.स.)

रघुराज सिहायक संत रहै ।
कथ भेद जिकौ अज वेद कहै ॥
दसमाथ बिभंज भराथ दखं ।
पहनाथ समाथ अनाथ पखं ॥
पत-सीत प्रवीत सनीत पढं ।
दळ जीत लखां रिण जीत दढं ॥
रसना 'किसना' जिण क्रीत रटौ ।
दुख प्राचत ओघ अमोघ दटौ ॥ ९७

छंद सारंग (त.त.त.त.)

राजेस स्रीरांम जे नैण राजीव ।
पातां अभै दांनकी जांनकी पीव ॥
औधेस आछेहके संत आधार ।
सारंग-पांणी 'किसन्नेस' साधार ॥ ९८

छंद मोतीदांम (ज.ज.ज.ज.)

दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणां खळ घायक सेवग-पाळ ।
चढे दसमाथ विभंजण वंक, लछीवर देण भभीखण लंक ॥ ९९

---

९७. **सिहायक**–सहायक । **जिकौ**–जिस, वह । **अज**–ब्रह्मा । **दसमाथ**–रावण । **बिभंज**–नाश कर । **भराथ** (भारत)–युद्ध । **पहनाथ** (प्रभुनाथ)–ईश्वर । **समाथ**–समर्थ । **पखं**–पक्ष, मदद । **पत-सीत** (सीतापति)–श्रीरामचंद्र । **प्रवीत**–पवित्र । **दळ**–सेना । **रिण**–युद्ध । **रसना**–जीभ । **जिण**–जिसकी । **क्रीत**–कीर्ति, यश । **प्राचत**–पाप, दुष्कर्म । **ओघ**–समूह । **अमोघ**–निष्फल न होने वाला, अव्यर्थ । **दटौ**–नाश करो ।

९८. **राजेस** (राजेस)–सम्राट । **जे**–जिसके । **राजीव**–कमल । **पातां**–कवियों । **पीव**–पति । **औधेस**–अयोध्या-नरेश, श्रीरामचंद्र । **आछेह**–अपार । **सारंग-पांणी** (सारंग-पाणि)–सारंग नामक धनुषको धारण करने वाला, विष्णु, श्रीरामचंद्र । **साधार**–रक्षक ।

९९. **दिपै**–शोभायमान होते हैं । **पुणां**–कहता हूं । **खळ**–असुर, राक्षस । **घायक**–विध्वंशक, नाश करने वाला । **सेवग-पाळ**–सेवक या भक्तकी रक्षा करने वाला । **दसमाथ**–रावण । **विभंजण**–नाश करनेको, मिटानेको । **वंक**–वक्रता, गर्व । **लछीवर**–लक्ष्मीपति, श्रीरामचंद्र । **देण**–देनेको । **भभीखण**–विभीषण । **लंक**–लंका ।

छंद मोदक (भ.भ भ.भ.)

नायक है जग रांम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर।
सीत तणौ पत संत सधारण, चाव करे भज तूं धिन चारण ॥ १००

दूहौ

च्यार नगण पद अकमें, तरळनयण भण तास।
नगण भगण बे सगण निज, सौ सुंदरी सुभास ॥ १०१

छंद तरलनयण (न.न.न.न.)

विकट कसट हर रघुबर।
सभ्रत सुकर निज धनु सर ॥
भगतविछळ जिण व्रद भण।
सुकवि 'किसन' तिण भज सुण ॥ १०२

छंद सुंदरी (न.भ.भ.स.)

समरमें दसकंठ जिण सजे, पह वडा हर चाप दळ पजे।
मनव ते धन जांण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता ॥ १०३

चौपई

सगण जगण सगणह बे पच्छ।
सौ प्रमिताखिर छंद सुलच्छ ॥ १०४

---

१००. नरेसर–नरेश्वर। देवतरेसर (देवतरु)–कल्प-वृक्ष। सीत–सीता। तणौ–का। पत–पति। सधारण–रक्षक, सहायक। चाव–उत्साह. उमंग, इच्छा। धिन–धन्य।

१०१. भण–कह। तास–उसको। सौ–वह।

१०३. समरमें–युद्धमें। दसकंठ–रावण। जिण–जिस। सजे–संहारे, मारे। पह–प्रभु, राजा। वडा–महा। हर–महादेव। चाप–धनुष। दळ–समूह। पजे–पराजित किये, सजा दी। मनव–मानव, मनुष्य। धन–धन्य। जांण–समझ। मता (मति)–बुद्धि। जेस–जो। रता–अनुरक्त, लीन।

१०४. बे (द्वे)–दो। पच्छ–पश्चात। सौ–वह। प्रमिताखिर–प्रमितासरा नामक छंद।

छंद प्रमिताखिरा (स.ज.स.स.)

लिछमीस रांम अण-भंग लखौ ।
परमेस पाळ जन दीन पखौ ॥
हर पाप ताप दुख-ताप-हरी ।
तिण पाय रेण रिख नार तरी ॥ १०५

अथ त्रयोदस अखिर छंद वरणण जात अतिजगति

दूहौ

पंच गुरू सगणह भगण, करणसु माया जांण ।
तोटकमें गुरु एक वध, तारक छंद वखांण ॥ १०६

छंद माया

(५ ग.स.भ.ग.ग. अथवा म.त.य.स.ग.)

राघौ राघौ जंपणरी, ढील म राखै ।
देवा दैतां मांनव नागा, सह दाखै ॥
सीतारौ सांमी, जन पाळै ।
सतधारी थासी आ देही धन गायां जण थारी ॥ १०७

छंद तारक (स.स.स.स.ग.)

घणस्यांम सरूप अनूप घणौ रे ।
तड़ता पळकौ पटपीततणौ रे ॥

---

१०५. अण-भंग—न भागने वाला, अखंड, वीर । लखौ—समझो । परमेस—परमेश्वर । पाळ—रक्षक । जन—भक्त । पखौ—पक्ष, मदद । दुख-ताप-हरी—दुःख और ताप मिटाने वाला । तिण—उस । पाय—चरण । रेण—धूलि । रिख (ऋषि)—गौतम । तरी—उद्धरी, उद्धार हुआ ।

१०६. त्रयोदस अखिर छंद—त्रयोदशाक्षरा वृत्ति । करणसु—दो दीर्घ मात्रासे । वखांण—वर्णन कर ।

१०७. राघौ—श्री रामचंद्र । जंपणरी—जपनेकी । ढील—विलंब, देरी । म—मत, नहीं । देवा—देवता । दैतां—दैत्यों । मांनव—मनुष्य । नागा—नाग, सर्प । सह—सब । दाखै—कहते हैं । सांमी—स्वामी । सतधारी—सत्य या शक्तिको धारण करने वाला । थासी—होगी । आ—यह । देही—शरीर । धन—धन्य-धन्य । गायां—गाने पर । जण—जिसको । थारी—तेरी ।

१०८. तड़ता (तड़िता)—बिजली । पळकौ—चमक । पटपीततणौ—पीताम्बरका ।

धनु सायक पांण सुभायक धारै ।
रघुनायक लायक संतसु तारै ॥ १०८

दूहौ

छंद भुजंगी पर लघू, अेक वधै सौ कंद ।
पंकावळि यक गुरु छ लघु, बि भगण कहत फुणिंद ॥ १०९

छंद कंद (य.य.य.य.ल.)

नरांनाथ सीतापती रांम जै नांम ।
सत्रां भंज लाखां भुजां पांण संग्रांम ॥
महाबाह बांणावळी कूंण जे मीढ ।
अखां रांम छै रांम राजेस ही ईढ ॥ ११०

छंद पंकावळी (ग.छ.ल.भ.भ.)

धांनुख-धर कर पंकज धारत ।
सेवग अगणत काज सुधारत ॥
जांमण मरणतणौ भय भंजण ।
राघव समर सिया मन रंजण ॥ १११

दूहौ

सम पद दुज सगण जगण, करण अंत निरधार ।
दुज भगण रगण यगण, विसम अजास विचार ॥ ११२

---

१०८. धनु–धनुष । सायक–बांण । पांण (पाणि)–हाथ । सुभायक–शोभा देने वाला, सुंदर । तारै–उद्धार करते हैं ।

१०९. बि (द्वि)–दो । फुणिंद–शेषनाग ।

११०. भंज–नाश करता है, नाश करने वाला । महाबाह–महाबाहु, बड़ी-बड़ी भुजाओं वाला, समर्थ । बांणावळी–धनुर्विद्यामें प्रवीण । कूंण–कौन । जे–जिसके । मीढ–समान, समानता । अखां–कहता हूँ । ईढ–प्रतिस्पर्द्धा ।

१११. धांनुख-धर–धनुषधारी । कर–हाथ । पंकज–कमल । अगणत (अगणित)–अपार । काज–कार्य । सुधारत–सुधारता है । जांमण–जन्म । भंजण–मिटाने वाला । समर–युद्ध । सिया–सीता । रंजण–प्रसन्न करने वाला ।

११२. दुज–चार लघु मात्राका नाम । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम ।

छंद अजास

(विषम-पद ४ ल.स.ज.ग.ग., सम-पद ४ ल.भ.र.य.)

गढ कनक जिसा अगंज गाहै, सुर नर नाग महेस सा सराहै।
कुळ-तरण जनां सिहायकारी, धनुसर पांण रहै सधीरधारी ॥ ११३

अथ चतुरदस अखिर छंद वरणण, जात सक्करी

दूहौ

कहि वसंत तिलका त,भ ज दोय करण जिण अंत।
आद अंत गुरु मध्य लघु, बारह चक्र लसंत ॥ ११४

छंद वसंततिलका (त.भ.ज.ज.ग.ग.)

सारंगपांण जय रांम तिलोकस्वांमी।
भूपाळ-भूप भुजडंड प्रचंड भांमी ॥

---

११३. कनक–स्वर्ण, सोना। अगंज–जिससे कोई जीत न सके, अजयी। गाहै–नष्ट कर देता है, ध्वंश कर देता है। सुर–देवता। महेस–महादेव। सराहै–प्रशंसा करते हैं, स्तुति करते हैं। कुळ-तरण (तरकुल)–सूर्यवंशी। सिहायकारी–सहायता करने वाला। सधीरधारी–धैर्यवान।

नोट---छंद अजासके जो लक्षण ग्रंथकर्त्तानि दोहेमें दिये हैं उनसे उदाहरण नहीं मिलता।

११४. चतुरदस अखिर छंद–चतुर्दशाक्षरावृत्ति। सक्करी–शक्कर या शक्वरी। चौदह अक्षरों वाले छंदोंकी संज्ञाके अंतर्गत निम्नलिखित वर्णवृत्त संस्कृत साहित्यमें है, उनमेंसे ग्रंथ-कर्त्तानि सिर्फ उपर्युक्त दो वर्णवृत्तोंका ही उल्लेख किया है। वे वर्णवृत्त ये हैं—वसंत-तिलका, असंबाधा,अपराजिता,प्रहरणकलिका, वासंती, मंजरी, कुटिल, इन्दुबदना, चक्र, नांदीमुख, लाली तथा अनंद। उपर्युक्त वर्ण वृत्तोंमें वसंततिलकाको कवि-समाजमें अधिक महत्त्व दिया गया है। वैसे प्रस्तार-भेदसे चौदह अक्षरों वाले छंदोंकी कुल संख्या १६३८४ होती है। त–तगण। भ–भगण। ज–जगण। दोय–दो। करण–दो दीर्घ मात्राका नाम। ग्रंथकर्त्तानि चक्रछंदका लक्षण लिखते समय अपनी प्रखर बुद्धिसे सिर्फ यह लिख दिया कि जिसके आदि और अंतमें दीर्घ वर्ण और मध्यमें बारह लघु वरण हो सो भी अति सुंदर लक्षण है। इस छंदमें सात-सात वर्ण पर यति होती है।

११५. सारंग-पांण (सारंगपाणि)–विष्णु, श्री रामचन्द्र भगवान। तिलोकस्वांमी–त्रिलोक-पति। भूपाळ-भूप–राजाओंका राजा, सम्राट। भांमी–वलैया, बलैया लेता हूं। न्यौछावर होता हूं।

भूतेस चाप छिनमेक चढाय भंज्यौ।
राजाधिराज सिय मांनस कंज रंज्यौ॥ ११५

छंद चक्र

(ग., १२ ल.,ग. अथवा भ.न.न.न.न.ल.ग.) ७,७

रांम भजन विण अहळ जनम रे।
नांम समर पय सिर नित नम रे॥
मांस असत तन चरमसु मळ रे।
स्रीवर रट रट रसण सफळ रे॥ ११६

अथ पनरह अखर छंद वरणण, जात अतिसक्वरी

दूहौ

गुरु लघु क्रम आखिर पनर, सौ चांमर सुखकंद।
बि नगण २ करण १ बि रगण २ गुरु ह्वै सालिनी छंद॥ ११७

छंद चांमर (र.ज.र.ज.र.)

कौड़ दैत भंज संज, पांण चाप सायकं।
नागराज भ्रात बंस, मीत सीतनायकं॥
देवराट क्रीत खाट, नाट बोल ना दखं।
रे नरेस राघवेस, गावजै भजै रिखं॥ ११८

---

११५. भूतेस—महादेव, शिव। चाप—धनुष। छिनमेक—एक क्षण। भंज्यौ—तोड़ा। सिय—सीता। मांनस (मानस)—चित्त, हृदय, मन। कंज—कमल। रंज्यौ—प्रसन्न किया।

११६. अहळ (अफल)—निष्फल, व्यर्थ। समर—स्मरण कर। पय—चरण। नित—नित्य, सदैव। असत (अस्थि)—हड्डी। चरमसु—चमड़ी। मळ—मैल, विष्टा। स्रीवर (श्रीवर)—विष्णु, श्रीरामचंद्र। रसण (रसना)—जिह्वा, जीभ।

११७. पनरह अखर छंद—पंचदशाक्षर वृत्ति। पन्द्रह वर्णोंके वृत्तोंकी संज्ञा अतिशक्वरी कही जाती है जिसके अंतर्गत कुल वृत्त प्रस्तार भेदसे ३२७६८ तक हो सकते हैं।

११८. कौड़ (कोटि)—करोड़। दैत (दैत्य)—असुर। भंज—नाश कर, संहार कर। संज—अस्त्र, शस्त्र, उपकरण। चाप—धनुष। सायकं—बाण। नागराज—शेषनाग, लक्ष्मण। भ्रात—भाई! मीत (मित्र)—सूर्य। सीतनायकं—सीतापति, श्रीरामचंद्र। देवराट—इन्द्र। क्रीत—यश। खाट—प्राप्त कर। नाट—नहीं। बोल—वचन। ना-नहीं। दखं—कहे कहते हैं! नरेस (नरेश)—यहां यह शब्द नरके लिये प्रयोग हुआ है, राजा। राघवेस (राघवेश)—श्रीरामचंद्र। भजै—भजते हैं। रिखं—ऋषि।

छंद सालिनी (न.न.ग.र.र.ग.)

महण मथण राघौ वाग संसार माळी ।
तिपुर घड़ण भंजै वाजन्तां हेक ताळी ॥
ग्रहनिस भज तैनूं ग्राव संसार ओछी ।
छ-दरस यम आखै, जे बिना सब्ब छोछी ॥ ११६

दूहौ

सगण पंच भमरावळी, स ज दौ भ रह विवेक ।
सुकळ हंस चवदह लघू, रभस गुरु पद एक ॥ १२०

छंद भ्रमरावळी (स.स.स.स.स.)

कर साझत रांम सुचाप सरं कळहं ।
दुगमं खळ सीस-दुपंच जिसास दहं ॥
रघुनायक धारत मौज सुचित्त रूड़ी ।
गढ लंक जिसा दत ग्रापत हेक घड़ी ॥ १२१

छंद कलहंस (स.ज.ज.भ.र.)

रघुनाथ भंज दुपंच-माथ ग्रभंग रे ।
जयवांन भूप ग्रमांन ग्रासुर जंग रे ॥

---

११६. **महण** (महार्णव)–सागर, समुद्र । **मथण**–मंथन करने वाला । **तिपुर**–त्रिपुर, त्रिलोक । **घड़ण**–रचना, घड़ना, घड़ता है । **भंजै**–नाश कर देता है । **बाजतां**–वजने पर । **हेक**–एक । **ग्रहनिस**–रात-दिन । **तैनूं**–उसको । **ग्राव**–ग्रायु । **ग्रोछी**–कम । **छ-दरस** (षड़दर्शन)–न्याय मीमाँसादि हिंदुग्रोंके षड़दर्शन, या छ शास्त्र । **यम**–ऐसे । **ग्राखै**–कहते हैं । **जे**–जिस । **सब्ब**–सर्व, सब । **छोछी**–व्यर्थ, निष्फल ।

१२०. **स**–सगण । **ज**–जगण । **भ**–भगण । **रह**–रगण ।

१२१. **कर**–हाथ । **साझत**–धारण करते हैं । **सुचाप**–सुंदर धनुष । **सरं**–बाण । **कळहं**–युद्ध । **दुगमं**–जबरदस्त, महान । **खळ**–ग्रसुर । **सीस-दुपंच**–रावण । **जिसास**–जैसे । **दहं**–नाश, नाश करने वाला । **सुचित्त**–उदार चित्त । **रूड़ी**–बढ़िया, श्रेष्ठ । **जिसा**–जैसा । **दत**–दान । **ग्रापत**–देते हैं, दे दिया । **हेक**–एक ।

१२२. **भंज**–नाश करने वाला । **दुपंच-माथ**–रावण । **ग्रभंग**–न भागने वाला । **ग्रमांन**–ग्रपार । **ग्रासुर** (ग्रसुर)–राक्षस । **जंग**–युद्ध ।

जळधार तार गिरंद बंधण पाज रे।
लिछमीस दास अनाथ राखण लाज रे॥
मछराळ देव दयाळ ग्रीवसु म्यंत रे।
'किसनेस' गाव सचाव सीत-कंत रे॥ १२२

छंद रभस
(१४ ल.ग. अथवा न.न.न.स.) ६,६

रविकुळ मुकट अघट रघुबर है।
सुरतर सर भर जिकण सुकर है॥
हरण सकळ अघ करण अमर है।
चव जस 'किसन' चवत थिर चर है॥ १२३

अथ सोळै अखिर छंद वरणण, जात अस्टि

दूहौ

भ ज स न र ह पनरह अखिर, निसपाळिका सु गाव।
लघु गुरु क्रम सोळह अखिर, सौ नाराज सुभाव॥ १२४

छंद निसपालिका (भ.ज.स.न.र.)

रांम सरखा नरप कोय यळ ना रजै।
छात्रपत रांम सम रांम करगां छजै॥

---

१२२. लिछमीस (लक्ष्मीश)—लक्ष्मीपति, विष्णु, श्रीरामचंद्र। दास—भक्त। मछराळ (मत्स्यावतार)—महान, जबरदस्त। ग्रीवसु—सुग्रीव। म्यंत (मित्र)—मित्र। सचाव—उत्साहपूर्वक, उमंगपूर्वक। सीत-कंत (सीताकांत)—सीतापति, श्रीरामचंद्र भगवान।

१२३. रविकुल (रविकुल)—सूर्यवंश या सूर्यवंशी। अघट—जिसके समान दूसरा न हो, अद्वितीय। सुरतर—कल्पवृक्ष। सर-भर—समान। जिकण—जिसका। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। सकळ—सब। अघ—पाप। चव—कह। चवत—कहते हैं। थिर—स्थावर, अटल। चर—जंगम।

नोट—रभस छंदका दूसरा नाम शशिकला भी है।

१२४. सोळै अखिर छंद—षोड़शाक्षरावृत्ति। अस्टि (अष्टि)—सोलह वर्णकी वर्ण-वृत्ति जिसके कुल भेद ६५५३६ तक हो सकते हैं।

१२५. सरखा (सदृश)—समान। नरप (नृप)—राजा। कोय—कोई। यळ—पृथ्वी। छात्रपत (छत्रपति)—राजा। सम—समान। करगां—हाथ। छजै—शोभा देता है।

कोड़ अघ ओघ जिण नांम अरधै कटै ।
रे 'किसंन' खांत कर क्यूं न तिणनै रटै ॥ १२५

अथ सौलै अखिर छंद ब्रद्धिनाराज
(ज.र.ज र.ज.ग.)

न रूप रेख लेख भेख तेख तौ निरंजणं ।
न रंग अंग लंग भंग संग ढंग संजणं ॥
न मात तात भ्रात जात न्यात गात जासकं ।
प्रचंड बाहु डंड रांम खंड नौ प्रकासकं ॥ १२६

दूहौ

पांच भगण गुरु अंत पद, सौ पद-नील सुछंद ।
गुरु लघु क्रम सोळह वरण, कहि चंचळा कव्यंद ॥ १२७

छंद पदनील (भ.भ.भ.भ.भ.ग.)

कौड़क तीरथ राज चिहूं दिस धाय करै ।
सौ लख कौड़ अखंड वडा व्रत जे सुधरै ॥
ज्याग महा असमेध धरादिक दांन जते ।
तौ पण रांम प्रमांण तणौ तिल जोड़ न ते ॥ १२८

---

१२५. **अरधै**–आधा । **खांत**–विचार । **तिण**–उस ।

१२६. **ब्रद्धिनाराज**–वृहद नाराच । **भेख** (भेष)–पहनावा । **तेख**–तीक्ष्णता, क्रोध । **तौ**–तेरा । **निरंजणं**–मायारहित, दोषरहित, परमात्मा । **लंग** (लिंग)–चिन्ह । **मात**–माता । **तात**–पिता । **गात** (गात्र)–शरीर । **जात**–जाति । **न्यात** (ज्ञाति)–जाति । **जासकं**–जिसके । **खंड**–देश । **नौ**–नव ।

नोट—वृहदनाराच छंदका दूसरा नाम पंचचामर भी है । ग्रंथकर्त्ताने इसके लक्षणमें प्रथम लघु फिर गुरु इस क्रमसेसोलह वर्ण माने हैं ।

१२७. **सौ**–वह । **पद-नील**–छंदके नाम । इस छंदके अन्य नाम नील, अश्वगति, लीला और विशेषक भी मिलते हैं । **चंचळा**–छंदका नाम विशेष । इस छंदका दूसरा नाम चित्र भी मिलता है । ग्रंथकर्त्ताने प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे सोलह वर्णका प्रत्येक चरण माना है । **कव्यंद** (कवीन्द्र)–महाकवि ।

१२८. **कौड़क**–करोड़ । **चिहूं**–चारों । **दिस**–दिशा । **धाय करै**–दौड़ करे, परिभ्रमण करे । **जे**–जो, अगर । **ज्याग**–यज्ञ । **असमेध**–अश्वमेध यज्ञ । **धरादिक**–भूमि आदि । **जते**–जितने । **तौ पण**–तो भी । **जोड़**–बराबर, समान । **ते**–वे ।

छंद चंचला (र.ज.र.ज.र.ल.)

देव देव दीन नाथ राज राज स्री दयाळ।
वासुदेव विस्वदेव वंदनीक नै विसाळ॥
नारसींध नार श्रैण नरांनाह नाभकंज।
रांमचंद्र राघवेस रूपरास रमा रंज॥ १२६

अथ सतरै वरण छंद जात यिस्टी

दूहौ

जगण सगण जगणह सगण, यगण ध्वज जिण ग्रंत।
सुजस रांम 'किसनौ' सुकव, प्रथ्वी छंद पढंत॥ १३०

छंद प्रथ्वी (ज.स.ज.स.य.ल.ग.)

महा सुगण रूप है सुचित सार आचारमें।
सखां कवण जोड़ जे, अघट आज संसारमें॥
यळा सह वदै यसौ सुजन रांम साधार है।
पुणां जस जिकै पढौ सुज कथा स आसार है॥ १३१

---

१२६. वासुदेव–वसुदेवके पुत्र, श्रीकृष्ण। विस्वदेव–ईश्वर। वंदनीक–वंदनीय। नै–और। विसाळ–(विशाल) महान, वड़ा। नारसींघ–नृसिंहावतार। नरांनाह–नरनाथ। नाभकंज–नाभिमें जिसके कमल, विष्णु। रूपरास–रूपकी राशि। रमा–लक्ष्मी। रंज–प्रसन्न करने वाला, सन्तुष्ट करने वाला।

नोट—चंचला छंदके तृतीय चरणमें छंदोभंग दोष है।

१३०. सतरै वरण छंद–सप्तदशाक्षरावृत्ति। जात यिस्टी–यहां पर मूल प्रतिमें यिस्टी लिखा मिला परन्तु यहां पर अति अस्टी या अति यिस्टी शब्द होना चाहिए था। सत्रह वर्णोंकी वर्ण वृत्तिका शुद्ध नाम अत्यष्टि है जिसके अन्तर्गत शिखरणी, हरिणी, पृथ्वी, मन्दाक्रांता आदि छंद होते हैं जिनकी कुल संख्या १३१०७२ तक होती है। ध्वज–प्रथम लघु फिर गुरु मात्राका नाम। जिण–जिस। पढंत–पढ़ता है।

१३१. सुगण–(सगुण) सत्व, रज और तम तीनों गुणों युक्त परमात्माका एक नाम। सार–सारांश, अस्त्र-शस्त्र, तलवार। आचार–व्यवहार। सखां–कहते हैं। कवण–कौन। जोड़–समान। जे–जिस। अघट–अद्वितीय। यळा (इला)–पृथ्वी। सह–सब। वदै–कहते हैं। यसौ–ऐसा। सुजन–श्रेष्ठजन, अथवा स्वजन। साधार–रक्षक। पुणां–कहता हूं। जिकै–जिसका। आसार–यह सार है, अथवा आश्रय है।

दूहौ

दुज ज भ त गुर पायप्रत, सौ माळाधर कत्थ ।
ल गुरु पंच लघु पंच तस, सौ सिखरणी समथ्थ ॥ १३२

छंद मालाधर

(४ ल.ज भ.ज त.ग. अथवा न.स.ज.स.य.ल.ग.)

नरं जनम जे दियौ समर जांनकीनाथ सौ ।
अज अहप ईस रे जपत है सदा गाथ जौं ॥
मत विलम तूं करै भजण रांम माहीप रे ।
जप 'किसन' नांम जे जनम औ लियौ जीप रे ॥ १३३

छंद सिखरणी

(१ ल. ५ ग.न.स.भ.ल ग. अथवा य.म.न.स.भ.ल.ग.)

तवौ राघौ राघौ करम अघ दाघौ तनतणा ।
महाराजा सीता-वलभ कुळ-मीता विण-मणा ॥
यरां जैता जंगां अडर यक-रंगां जग अखै ।
सकौ गावौ जीहा अवस निस-दीहा अज सखै ॥ १३४

---

१३२. दुज–चार लघु मात्राका नाम । भ–भगण । ज–जगण । त–तगण । पायप्रत–प्रति चरण । सौ–वह । माळाधर–छंदका नाम । कत्थ–कह । तस–तगण, सगण । समथ्थ–समर्थ ।

१३३. जे–जिस । समर–स्मरण कर । जांनकीनाथ–सीतापति, श्री रामचन्द्र भगवान । सौ–उस, वह । अज–ब्रह्मा । अहप–(अहिप) शेषनाग । ईस–(ईश) महादेव । सदा–नित्य । गाथ–कथा । जौं–जिस । विलम–(विलम्व) देरी । माहीप (महिपति, महिप)–राजा । जे–जिस, अगर । औ–यह । जीप–जीत, विजय कर ।

१३४. तवौ (स्तवन)–स्तवन करो, यश-गान करो । अघ–पाप । दाघौ–जला दो, भस्म करो । तन–शरीर । तणा–के । सीता-वलभ (सीतावल्लभ)–सीताप्रिय, रामचंद्र । कुळ-मीता (कुल+मित्र)–सूर्य वंश, सूर्य वंशका । विण-मणा–महान, अपार । यरां (अरियों)–शत्रुओं । जैता–जीतने वाला । अडर–निर्भय । यक-रंगा–एक ही रंगका, एक ही स्वभावका । अखै–कहता है । सकौ–सब, उस । जीहा–जीभ । अवस–अवश्य । निस-दीहा–रात-दिन । अज–ब्रह्मा । सखै–साक्षी देता है ।

दूहौ

मगण भगण फिर नगण मुणि, तगण दोय फिर जोय ।
करण एक अहराज कहि, मंदाक्रांता होय ॥ १३५

छंद मंदाक्रांता (म.भ.न.त.त.ग.ग.) ४, ६, ७

सीता सीतारमण हरही नेक संताप संतां ।
मींता मींता सकुळ धर ही भेख लज्जा समंतां ॥
माधौ माधौ रसण जप ही भाग छै जेण मोटौ ।
त्यांरा दासां सरब सुख रे आथरौ नांहि तोटौ ॥ १३६

दूहौ

नगण सगण मगणाह रगण, सगण एक ध्वज अंत ।
खगपत सुण अहपत अखै, हरिणी छंद कहंत ॥ १३७

छंद हरिणी (न.स.म.र.म.ल.ग.)

भजन करणौ जीहा भूपां पती रघु भूपरौ ।
बिरद धरणौ बंका रे कोट भांण सरूपरौ ॥
सुजन वित देणौ लेणौ क्रीत गाथ सधीर है ।
हरण दुख व्है संतां मात-पिता रघुबीर है ॥ १३८

---

१३५. **मुणि**–कह कर । **करण**–दो दीर्घ मात्राका नाम । **अहराज** (अहिराज)–शेषनाग ।

१३६. **सीतारमण**–सीताके साथ रमण करने वाला, श्री रामचंद्र भगवान । **हरही**–दूर करेगा, मिटायेगा । **नेक**–थोड़ा । **संताप**–पीड़ा, कष्ट । **माधौ**–माधव, विष्णु, श्री रामचंद्र । **रसण**–(रसना) जिव्हा, जीभ । **भाग**–भाग्य । **छै**–है । **जेण**–जिसका, जिससे । **मोटौ**–महान । **त्यांरा**–उनके । **दासां**–भक्तों । **आथरौ** (अर्थस्य)–धनका । **नांहि**–नहीं । **तोटौ**–अभाव, कमी ।

१३७. **ध्वज**–प्रथम लघु फिर दीर्घ मात्राका नाम । **खगपत** (खगपति)–गरुड़ । **अहपत** (अहिपति)–शेषनाग । **कहंत**–कहते हैं, कहा जाता है ।

१३८. **जीहा**–जिव्हा, जीभ । **भूपां पती**–(भूपपति) सम्राट । **रघु**–रघुवंशी । **भूपरौ**–राजाका । **बिरद** (विरुद)–यश । **धरणौ**–धारण करने वाला । **बंका**–बांकुरे, महान । **कोट** (कोटि)–करोड़ । **भांण** (भानु)–सूर्य । **सरूपरौ**–स्वरूपका । **सुजन**–सजन, स्वजन । **वित**–द्रव्य, धन-दौलत । **देणौ**–देने वाला । **लेणौ**–लेने वाला । **क्रीत**–कीर्ति । **गाथ**–कथा । **सधीर**–धैर्यवान, दृढ़ ।

अथ अठारै वरण छंद, जात ध्रति

दूहौ

छ गुरु भगण मगणह सगण, मगण छंद मंजीर ।
र स ज ज फिर भगणह रगण, सौ चरचरी सधीर ॥ १३९

छंद मंजीर

(६ ग.भ.म.स.म. अथवा म.म.भ.म स.म.)

हाथी कीड़ी कांटे हेकण सौ तोलै, जग जांणै सारौ ।
रंकां रावां जोड़े राखत, तैं कीजै निबळां निस्तारौ ॥
दीनां लंका जे हाथां न कजै दीधा जग सारौ जांणै ।
वेदां भेदां धाता वीठळ वारंवार रटै वाखांणै ॥ १४०

छंद चरचरी (र.स.ज.ज.भ.र.)

देव राघव दीन पाळ दयाळ वंछित दायकं ।
नाग मांनव देव नांम रटंत सीय सुनायकं ॥
माथ-पंच दुयेण भंज अगंज भूप महाबळं ।
वंद तूं 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळं ॥ १४१

दूहौ

पड़ै यगण खट चरण प्रत, क्रीड़ा छंद कहाय ।
'किसन' सुकव अहपत कहै, रट कीरत रघुराय ॥ १४२

---

१३९. **अठारै वरण छंद**–अष्टदशाक्षरावृत्ति । **जात ध्रति**–अठारह वर्णोंके वृत्तोंकी संज्ञा जिसमें हरिणी प्लुता, चित्रलेखा, मंजीर आदि हैं और जिनकी संख्या २६२१४४ तक है । **चरचरी**–एक छंद । इस छंदका दूसरा नाम चंचरी भी है ।

१४०. **कांटे**–तराजूमें, तकड़ीमें । **हेकण**–एक । **सारौ**–सब । **रंकां**–गरीबां । **रावां**–राजाओं । **जोड़े**–समान, बराबर । **निस्तारौ**–उद्धार । **धाता**–ब्रह्मा । **वीठळ**–विष्णु, ईश्वर ।

१४१. **वंछित**–इच्छित, अभीष्ट । **दायकं**–देने वाला । **रटंत**–रटते हैं । **सीय सुनायकं**–सीतापति श्री रामचंद्र भगवान । **माथ-पंच**–रावण । **दुयेण**–दो, यहां दो हाथोंसे तात्पर्य है । **भंज**–नाश किया । **पात**–कवि । **सुपाय**–सुंदर, श्रेष्ठ । **जे**–जो, जिसके । **जन**–भक्त । **वाछळं**–वात्सल्य !

१४२. **प्रत**–प्रति, हर एक । **क्रीडा छंद**–इस छंदका दूसरा नाम महामोदकारी भी है । **अहपत (अहिपति)**–शेषनाग ।

छंद क्रीड़ा (य.य.य य.य.य.)

रटौ जांम आठंू सदा हो जना चंूपसंू रांम रांमं ।
महाबाह सीतापती राखणौ सेवतां संत सांमं ॥
कटी तंूण पांणं सरं चाप आमाप तेजं कळासै ।
नरां नाथ सामाथ आंनेक ओघं अघं दैत नासै ॥ १४३

अथ उगणीस अख्यर छंद, जात अतिध्रति

दूहौ

मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक ।
सारदूळविक्रीड़तह, वरणौ छंद विसेक ॥ १४४

छंद सारदूल विक्रीड़त (म.स.ज.स.त.त.ग.)

जै जै औध नरेस संत सुखदं स्रीरांम नारायणं ।
सीतानाथ सुनाथ, दास करणं संसार सारायणं ॥
देवाधीस रिखीस ईस अजयं ते सेव पारायणं ।
पायं कंज 'किसन्न' रक्खि सरणं आणंदकारायणं ॥ १४५

---

१४३. जांम आठूं–अष्टयाम, आठ पहर । जना–भक्त । चूंपसूं–दक्षतासे, चतुराईसे । महाबाह (महावाहु)–विशाल भुजा वाला । सीतापती (सीतापति)–श्री रामचन्द्र । राखणौ–रखने वाला । सांमं–स्वामी । कटी (कटि)–कमर । तुंण–तर्कश, भाथा । पांणं (पाणि)–हाथ । सरं–वाण । चाप–धनुष । आमाप–अपार, असीम । सामाथ–समर्थ । आंनेक–अनेक । ओघं–समूह । अघं–पाप । दैत–असुर, दैत्य । नासै–नाश करता है ।

१४४. उगणीस अख्खर छंद (ऊनविंशत्याक्षरा वृत्ति)–उन्नीस अक्षरोंके छंद । छंद जात अतिधृति (अतिधृति) उन्नीस वर्णोंके छंदोंकी संज्ञा जो कुल प्रस्तार भेद से ५२४२८८ तक होते हैं । विसेक–विशेष ।

१४५. जै जै–जय-जय । औध-नरेस–अयोध्या नरेश, श्रीरामचंद्र भगवान । सुखदं–सुख देने वाला । सारायणं–शरण देने वाला । देवाधीस (देवाधीश)–इन्द्र । रिखीस (ऋषीश)–महर्षि । ईस–शिव, महादेव । अजयं (अज)–ब्रह्मा । सेव–सेवा । पारायणं–पूर्ण । पायं–पैर, चरण । कंज–कमल । आणंद-कारायणं–आनंद करने वाला ।

पुन अन्य च अपभ्रंस भाखा

सारदूल् विक्रीड़त (म.स.ज.स.त.त.ग.)

आस्चर्यं रघुनाथ भूप-महदं त्वनांमंमुच्चारणम् ।
जन्मं संचिदघोरघोर कळुसं नासं तमेकं-छिनम् ॥
ते अंभोरुह अंघ्रि एन सरणं प्राप्तं नांमांमीस्वरम् ।
तेसां विघ्नविलीयमांन तुरितं ध्वांतमिव भास्करम् ॥ १४६

दूहौ

अखिर गुणीसह अवर लघु, ग्यारहमौ गुरु होइ ।
छ नगण गुरु अंतह सु फिर, धवळ कहावै सोर ॥ १४७

छंद धवल्

(१० ल.ग. ८ ल. अथवा न.न.न.ज.न.न.ल.)

कळह मझ गहत जद रांम धनु निज सुकर ।
हरत रिम कटक घण-माळ उर सझत हर ॥
खुलत रिख नयण सुण पंख पळचर खरर ।
डगमगत यर घुसत भाज परबत डरर ॥ १४८

---

१४६. **महदं**–उत्सवदायक । **त्वन्नामं**–तेरा नाम । **संचिदघोरघोर** (संचित+अघोर+घोर)–संग्रह किये हुए महान भयंकर । **कळुसं**–पाप । **नासं**–नाश । **तमेकं-छिनम्**–एक ही क्षण भरमें । **ते**–तेरा, तेरे । **अंभोरुह**–कमल । **अंघ्रि**–चरण । **एन** (अयन)–घर । **प्राप्तं**–प्राप्त होकर । **तेसां** (तेषाम्)–उनका, उनके । **विघ्न**–वाधा, अड़चन । **विलीयमांन**–नाश । **तुरितं**–शीघ्र । **ध्वांतमिव**–अंधेरेके समान । **भास्करम्**–सूर्य ।

१४७. **अखिर**–अक्षर । **गुणीसह**–उन्नीस ।

१४८. **कळह**–युद्ध । **मझ** (मध्य)–में । **गहत**–धारण करता है, करते हैं । **जद**–जब । **सुकर**–श्रेष्ठ हाथ । **हरत**–मिटाते हैं, मिटाता है । **रिम**–शत्रु । **कटक**–सेना । **घण-माळ** (शिर, मुख+माळ=माला)–रुंडमाला । **सझत**–धारण करते हैं । **हर**–महादेव । **रिख**–नारद ऋषि । **पंख**–पर, पक्ष । **पळचर**–आमिषहारी । **खरर**–आवाज, ध्वनि विशेष । **डगमगत**–डाँवाडोल होते हैं, कम्पायमान होते हैं । **यर** (अरि)–शत्रु । **घुसत**–प्रवेश करते हैं । **परबत**–पर्वत, पहाड़ । **डरर**–भयसे ।

पुन अन्य विधि छंद धवल

(न.न.न.न.न.न.न.ग.)

जिण पय सुरसरि अघहर सरित जनम है ।
करत मजन तिण जळ जन कटत अक्रम है ॥
बिबुध सकळ अहनिससु जपत सियबर है ।
तव नित 'किसन' रसन रघुबर सुरतर है ॥ १४९

दहौ

सगण तगण यगणाह भगण, सात गुरू पय पच्छ ।
अहपत खगपतसूं अखै, संभू छंद सुलच्छ ॥ १५०

छंद शंभू

(स.त.य.भ ७ ग. अथवा स.त.य.म.भ ग.)

जग माथै राजत औ जेतै हरि एहौ आनूपा जापं ।
तितरै मां मांनव तूं त्रासे जमवाळी मांने धू तापं ॥
'किसनौ' यूं आखत आचांके, बहनांमी भांमी बाबा रे ।
करणारौ बारध छै केसौ, अध नांमे संतां ऊधारै ॥ १५१

अथ वीस अखिर छंद वरणण जात क्रति

दूहौ

सगण जगण बे भगण सुण, रगण सगण ध्वज थाय ।
सकौ गीतिका गंडिका, वीस गुरू लघु पाय ॥ १५२

---

१४९. जिण–जिस । पय–चरण । सुरसरि–गंगा नदी । अघहर–पापोंको मिटाने वाली । सरित–नदी । मजन–स्नान । तिण–उस । कटत–कटते हैं । अक्रम–पाप । बिबुध–देवता । सकळ–सब । अहनिससु–रातदिनमें । सियबर–सीतापति, श्रीरामचंद्र भगवान । तव–स्तवन कर । रसन–रसना, जीभ । सुरतर–कल्प-वृक्ष ।

१५०. पच्छ–पश्चात, बादमें । अहपत–शेषनाग । खगपतसूं–गरुड़से । सुलच्छ–अच्छे लक्षण ।

१५१. माथै–ऊपर, पर । राजत–शोभा देता है । एहौ–ऐसा । आनूपा (अनूप)–अनोखा । तितरै–तब तक । मां–मत । त्रासे–डरे । धू–निश्चय । तापं–भय । आखत–कहता है । बहनांमी–बहुतसे नामों वाला, ईश्वर । भांमी–न्यौछावर, बलैया । बाबा-ईश्वर । करणा (करुणा)–दया । बारध (वारिधि)–सागर । अध–आधा । नांमे–नामसे । ऊधारै–उद्धार करता है ।

१५२. वीस अखिर छंद–विंशत्याक्षरावृत्ति । बीस अक्षरोंके छंदोंकी संज्ञा कृति मानी गई है जिसके अनुसार प्रस्तार भेदसे १०४८५७६ तक भेद होते हैं । ध्वज–प्रथम एक लघु फिर एक गुरुका नाम । थाय–हो । गंडिका–एक वृत्तका नाम । पाय–चरण ।

छंद गीतिका

(स.ज.ज.भ.र.स.ल.ग.) १२,८

करतार भू अधार केसव धार पांण सुधांनखं।
रघुनाथ देव समाथ राजत मां विसार स मांनुखं॥
जळ पाज बंध उतारजै कपि साज सेन सकाजयं।
रसना 'किसन्न'सु जांम-आठ उचार सौ रघुराजयं॥ १५३

छंद गल्लिका (र ज.र.ज.र.ज.ग.ल.)

रांम नांम आठ-जांम गाव रे सुपात एह देह सार।
और धंध फंद सौ अनाख रे न आखरे गणां नकार॥
औध-ईस जेण सीस आच रे थया सकौ सुनाथ थाय।
जेण पाय कंज लीध आसरौ जके जनंम जीत जाय॥ १५४

अथ अकवीस वरण छंद वरणण जात प्रक्रति

दूहौ

मगण रगण भगणह नगण, यगण तीन प्रति पाय।
वीस एक सोभित वरण, सौ स्रगधरा सुभाय॥ १५५

---

१५३. गीतिका—इस छंदके प्रथम चरणकी रचनामें छंद शास्त्रके नियमका निर्वाह नहीं हुआ। सुधांनखं श्रेष्ठ धनुष। समाथ—समर्थ। मां—मत। विसार—विस्मरण कर। स—उसको। मांनुख—मनुष्य। रसना—जीभ। जांम-आठ (अष्ट याम)—आठों पहर। सौ—उस, वह।

१५४. गंडका, गंडिका गल्लिका छंद—रल्यका आदि इस छंदके अन्य नाम हिंदी व राजस्थानी भाषामें मिलते हैं। इसे छंद शास्त्रमें वृत्त भी कहा गया है। प्रथम गुरु फिर लघु इस क्रमसे बीस वर्णका यह वृत्त माना गया है। ऐसा ही लक्षण ग्रंथकर्त्ताने दिया है। आठ-जांम (अष्टयाम)—आठों पहर। सुपात (सुपात्र)—श्रेष्ठ कवि। एह—यह। सार—सारांश, तत्त्व रूप। धंध—धंधा, कार्य, काम। फंद—बंधन, जाल। अनाख (अनाहक)—नाहक, व्यर्थ। औध-ईस—श्री रामचंद्र भगवान। जेण—जिसके। आच—हाथ। थया—हुए। सकौ—सब, वह। पाय—चरण। कंज—कमल। लीध—लिया। आसरौ—सहारा, आश्रय।

१५५. अकवीस वरण छंद—एक विंशत्याक्षरावृत्ति। इक्कीस अक्षरोंके छंदकी संज्ञा प्रकृति कही जाती है जिसमें प्रस्तार भेदसे २०९७१५२ भेद होते हैं।

छंद स्रग्धरा (म.र.भ.न.य.य.य.)

जै राघौ राज राजं अमर नर अहं कीत जे जीह जापै ॥
आचारी झौक लागै छिनक मझ्झ करां लंक सा दांन आपे ॥
धींगां जाड़ा मरोड़ै अडर कर उभै, बांण धांनंख धारै ।
तौनं जीहा रटतां जनम अघ हरै, दास ध्रू जेम तारै ॥१५६

दूहौ

भगण रगण दुजबर नगण, दोय भगण गुरु दोय ।
अहपत खगपतसूं अखै, छंद नरिंद सकोय ॥ १५७

छंद नरिंद

(भ.र. ४ ल.न.भ.भ.ग.ग अथवा भ.र.न.न.ज.ज.य.)१३,८

धारण मांण पांण सर धनखह रांम बडा ब्रद धारै ।
आपण मोख दांन जस जग जिण, आठह-जांम उचारै ॥
सागर रूप सूरपण सरसत च्यार दसा मझ्झ चावौ ।
गौ दुज पाळ तार निज जन जग गैंवर-तारण गावौ ॥ १५८

चौपई

आठ गुरु बारह लघू होय, दीपै जिण अंतै गुरु दोय ।
सौ कह हंसी छंद सकाज, जंपै नाग सुणौ खगराज साखै ॥१५९

---

१५६. जै—जय । अमर—देवता । अहं (अहि)—नाग । कीत—कीर्ति । जीह—जीभ । जापै—जपते हैं । आचारी—उदार, दातार । झौक—धन्य-धन्य । छिनक—क्षण । मझ्झ—मध्य । करां—हाथोंसे । सा—समान । आपे—दे दिया । धींगां—जबरदस्त । जाड़ा—जबाड़ा, जड़ । मरोड़ै—मरोड़ देता है । उभै—दोनों । धांनंख—धनुष । तौनूं—तुझको । जीहा—जीभ । अघ—पाप । दास—भक्त । हरै—मिटाता है । ध—भक्त ध्रुव । जेम—जैसे । तारै—उद्धार करता है ।

१५७. दुजबर—चार लघु मात्राका नाम । अहपत—शेषनाग । खगपत—गरुड़ । अखै—कहता है । नरिंद—नरेंद्र छंद । सकोय—वह ।

१५८. पांण (पाणि)—हाथ । सर—बाण । धनखह—धनुष । आपण—देनेको । मोख—मोक्ष । आठह-जांम (अष्टयाम)—आठों पहर । सूरपण—शौर्य, वीरता । सरसत—सरसाता है । मझ्झ—मध्य । चावौ—प्रसिद्ध, विख्यात । गंवर-तारण—गजका उद्धार करने वाला ।

१५९. दीपै—शोभा देता है । जंपै—कहता है । नाग—शेषनाग । खगराज—गरुड़ ।

छंद हंसी (म.म.त.न.न.न.स.ग.) ८,१४

सारी वातां नीकौ सोहै, रघुबर जस सह जग यम साखै ।
भाळौ रूड़ौ खोजै सेणा, भव ससि निगम अ्रहम रवि भाखै ॥
माधौ राघौ केसौ एहौ, समरण कर छिन-छिन सुख मूळं ।
जाडा पापां दाहै जेही, तिलकण दहण अगण-मण तूळं ॥१६०

दूहौ

सात भगण मदिरा वदै, गुरु सुंदरी कहंत ।
सात भगण दो गुरु मिळै, मत्त गयंद मुणंत ॥ १६१

छंद मदिरा (भ.भ.भ.भ.भ.भ.भ.)

रांम अभंगम सोभत जंग धनू सर हाथ सुधारण ।
रांम समाथ कहै जग गाथ तकौ सर पाथर तारण ॥
रांम दयाळ अनास्रय पाळ अनेक अनाथ उधारण ।
पारस रांम सरै सब कांम चवौ अठ-जांमसु चारण ॥ १६२

---

१६०. नीकौ—उत्तम, श्रेष्ठ । सोहै—शोभा देता है । यम—ऐसे । साखै—साक्षी देता है । रूड़ौ—उत्तम । सेणा—सज्जन । भव—महादेव । ससि—चंद्रमा । निगम—वेद । अ्रहम—ब्रह्मा । रवि—सूर्य । माधौ—माधव । राघौ—राघव, श्रीरामचंद्र । केसौ—केशव । एहौ—ऐसा । छिन-छिन—क्षण-क्षण । जाडा—घना, अधिक । दहण—जलाने वाला । अगण-मण—अगणित मन । तूळं—रूई ।

नोट—हंसी छंदको इक्कीस अक्षरोंके वृत्तोंमें लिखा है परन्तु वास्तवमें यह वृत्त २२ वर्णका होता है ।

१६१. वदै—कहते हैं । मुणंत—कहते हैं ।

१६२. अभंगम—नहीं टूटने वाला । धनू—धनुष । समाथ—समर्थ । गाथ—कथा, वृत्तांत । तकौ—वह, उस । सर—सागर, समुद्र । पाथर—पत्थर । तारण—तारने वाला, तैराने वाला । अनास्रय—जिसका कोई आश्रय न हो । पाळ—पालन करने वाला । उधारण—उद्धार करने वाला । सरै—सफल होते हैं । चवौ—कहो ।

नोट—मदिरा छंद २२ अक्षरका वर्ण वृत्त होता है जिसमें ७ भगणके बाद एक दीर्घ वर्ण होना आवश्यकीय माना गया है परन्तु यहां पर केवल सात भगण ही दिये गये हैं ।

छंद सुंदरी ब्रज भाखा
(भ.भ.भ.भ.भ.भ.भ.ग.)

आसन स्यंघ घटा तन स्यांम, पटंबर पीतसु विद्युत है।
चाप सिलीमुख पांन त्रिमोह सु बांम विभाग सिया जुत है॥
त्यौं अरिहा सुत केकयकौ कर चौंर अनंत विनै क्रत है।
पाय पलौटत वात-तनै यह ध्यांन रघुब्बर राजत है॥१६३

छंद मत्तगयंद (भ.भ.भ.भ.भ.भ.भ.ग.ग.)

गौतम नार सु पाहन तैं रज पाय लगे रघुनायक तारी।
पांमर जात पुलिंद जु बोरसु जेवत स्रीमुख बार न धारी॥
हाथनतैं करि स्राध जटायुसु पायनकी रज़के सहि झारी।
सौ रघुनाथ विसार भजै, अन तौ नर मूरख वात विगारी॥१६४

छंद चकोर लछण
चौपई

सात भगण गुरु लघु जिण अंत, तिणनं चंद चकोर तवंत॥१६५

छंद चकोर (.भ.भ.भ.भ.भ.भ.भ.ग.ल.)

स्रीरघुनाथ अनाथ सिहायक दायक नौ निधि वंछित दांन।
रांवण से खळ घायक संगर माधव है सब लायक मांन॥
पूरण ब्रीहम अखै अज ईस प्रथीप धरै धनु सायक पांन।
सौ सियारांम भज्यौं नहिं नेक जनंम ब्रथा जगमें जिहिं जांन॥१६६

---

१६३. पटंबर–पीत वस्त्र। विद्युत–बिजली। चाप–धनुष। सिलीमुख (शिली-मुख)–बाण, तीर। पांन–हाथ। बांम–बायां। सिया–सीता। जुत–युक्त। त्यौं–ऐसे ही। अरिहा–शत्रुघ्न। वात-तनै (वात तनय)–वायु-पुत्र हनुमान।

१६४. नार–नारी, स्त्री। पाहन–पत्थर। रज–धूलि। पुलिंद–एक प्राचीन असभ्य जाति। बार–देरी, विलंब। विसार–भूल कर। अन–अन्य।

१६६. सिहायक–सहायक। दायक–देने वाला। नौ–नव। वंछित–वांछित, अभीष्ट। घायक–मारने वाला। संगर–युद्ध। अज–ब्रह्मा। ईस–महादेव। प्रथीप–राजा। सायक–बाण, तीर। पांन (पाणि)–हाथ। जिहिं–जिसका।

अथ चौवीस अखिर छंद जात संस्कृति

दूहौ

आठ भगण किरीट कहि, आठ स दुमिळा थात ।
आठ यगण पद परत सौ, महाभुजंगप्रयात ॥ १६७

छंद किरीट (८ भ.)

कौटिक तीरथ धाय करौ,
अरु कौटि करौ व्रत देह बिथा करि ।
कौटिक ज्याग करौ,
असमेध रु कौटि करौ गवदांन दुजेसर ॥
कौटिक जोग-अठंग सधौ,
अरु कौटि तपौ तप नेम धराबर ।
ये 'किसना' सुपने न कहूं,
यक स्री रघुनायक नांम बराबर ॥ १६८

छंद दुमिला (८ स.)

जर नैन दियौ जननी,
जठरा हरि धाय कै आय सिहाय कियौ ।
जनम्यौ जबते जिन पोख,
रख्यौ तन आस्रय तौखते टारि लियौ ॥
तरुनाईमें आपहि ईस भयौ,
जगदीसकूं मूरख भूलि गियौ ।

---

१६७. चौवीस अखिर छंद–चतुर्विंशत्याक्षरावृत्ति । इस वृत्तिका शुद्ध नाम संस्कृति भी है जिसके अंतर्गत १६७७७२१६ वृत्त प्रस्तार-भेदसे बनते हैं। स–सगण । थात–होता है।

१६८. कौटिक–करोड़ । कौटि–करोड़ । बिथा–कष्ट । ज्याग–यज्ञ । असमेध–अश्वमेध । गवदांन–गौ दान । दुजेसर (द्विजेश्वर)–महर्षि, ब्राह्मण । जोग-अठंग (अष्टाङ्ग योग)–अष्टाङ्ग योग । सधौ–साधन करो । यक–एक ।

१६९. जठरा–जठर, गर्भ । पोख–पालन-पोषण । तरुनाई–युवावस्था । ईस–समर्थ ।

'किसना' भजि रांम सियावरकौ,
जिन चांच बनायके चूंन दियौ ॥ १६९

छंद पुनरपि दुमिला (८ स.)

मुख मंगळ नांम उचार सदा तन के अघ ओघन दाघव रे।
हनमंत बिभीखन भांन तनै जिन कीन वडे जन लाघव रे॥
भुजगेस महेस दुजेस रिखी नित पै रज चाहत माधव रे।
तजि आंन उपाय सबै 'किसना' भज राघव राघव राघव रे॥१७०

छंद पुनरपि दुमिला (८ स.)

बयकूंट बिलासनकौ तजि के बध कौन चहैं जमपासनकी।
म्रगराज पळासन त्यागनके चित हूंस धरौ नहि घासनकी॥
कबहू नहि मंगत और पिया तजि संगत गौर व्रखासनकी।
रघुनाथ जु रावरे दासनके चित आसन आंन उपासनकी॥१७१

छंद पुनरपि दुमिला (८ स.)

हम कीन अनेक गुन्हैं हरिजू तुम एक न लेख उतारिएजू।
हम पापि महा जिद काहै करै, व्रिद रावरकी पर पारिएजू॥
करुनामय राघव जांनकीवल्लभ ए विनती उर धारिएजू।
गुन छोडि हमारि ये बावरि बांनकौ रावर ओर निहारिएजू॥१७२

---

१६९. चूंन (चूर्ण)–भोजन।

१७०. बिभीखन–विभीषण। कीन–किया। भुजगेस–शेषनाग। महेस–महादेव। दुजेस (द्विजेश)–महर्षि। रिखी–ऋषि। आंन–अन्य।

१७१. बिलासन–विलास करने वाला। बध–बंधन। म्रगराज (मृगराज)–सिंह। पळासन–आमिषहारी। हूंस–अभिलाषा, इच्छा।

१७२. कीन–किये। गुन्हैं–अपराध। पर–प्रतिज्ञा, मर्यादा। बांन–वाणी। ओर–तरफ। निहारिएजू–देखिए।

छंद महाभुजंगप्रयात (८ य.)

नमौ रांम सीतावरं औधनाथं समाथं महाबीर संसार सारं ।
अनदं अघट्टं अरोड़ं अगंजं अनंमं अछेहं अरेहं उदारं ॥
अनेकं असंकं अलटं अरेसं खगां पांण आजांणबाहू खपावै ।
गहीरं सधीरं रघूराज बीरं गरीबं निवाजं कवी क्यौं न गावै ॥१७३

अथ वरण उपछंद वरणण तत्र आद सालूर छंद तिण लछण वरणण

दूहौ

एक करण दुजबरसु खट, सगण अंत दरसाय ।
पिंगळ मत अहपत पुणै, सौ सालूर कहाय ॥ १७४

छंद सालूर
(ग.ग. २४ ल.स. अथवा त+८न+ल.ग.)

पापोघ हरत अत जन चितवत ।
तिन हरख करत दुख हरत हरी ॥
सीतावर जसधर सुमति सदन सुभ्र ।
कळुख सघन वन दहन करी ॥

---

१७३. **औधनाथ**–अयोध्यानाथ, श्रीरामचंद्र भगवान । **समाथं**–समर्थ । **अनदं**–अनहद । **अघट्टं**–अद्वितीय, अपार । **अरोड़ं**–जबरदस्त । **अगंजं**–अजयी । **अछेहं**–अपार । **अरेहं**–निष्कलंक, पवित्र । **असंकं**–शंका या भयरहित । **अरेसं**–शत्रु । **पांण**–प्रभाव, प्रताप । **आजांणबाहू**–आजानबाहु । **खपावै**–नाश करता है । **गहीरं**–गंभीर । **सधीरं**–धैर्यवान ।

नोट—ग्रंथकर्त्ताने अपने ग्रंथमें माया छंद प्रकरणमें छंद, उपछंद और दण्डका भेद अति संक्षेपमें बतलाया है । वहां पर लिखा है कि २४ मात्राका छंद, २४ से २६ मात्रा तक उपछंद और छंद और उपछंदके मेलसे दण्डक छंद बनता है । यहां पर वर्ण छंदोंमें उदाहरणमें जो उपछंद दिए हैं– वे वास्तवमें दण्डक वृत्तोंके अंतर्गत ही आते हैं । दण्डकवृत्तका लक्षण यही है कि जिस वर्ण वृत्तमें प्रत्येक पदमें २६ वर्णसे अधिक वर्ण हों वह वृत्त दण्डक कहा जायेगा । वे दण्डक वृत्त भी दो प्रकारके माने गये हैं—एक साधारण दण्डक जो गणबद्ध होते हैं, दूसरे मुक्त दण्डक जो गणोंके बंधनसे मुक्त रहते हैं ।

१७४. **करण**–दो दीर्घ मात्राका नाम । **दुजबर**–चार लघु मात्राका नाम । **खट** (षट)–छ । **अहपत** (अहिपति)–शेषनाग । **पुणै**–कहता है ।

१७५. **पापोघ**–पापोंका समूह । **हरत**–मिटाता है । **सदन**–घर । **कळुख** (कलुष)–पाप । **सघन**–घना ।

सारंग समथ सर सभ्रत सुकर जुध ।
असुर दसह-सिर अडर जरी ॥
सौ रांम 'किसन' किव समर समरि ।
जिहिं बिजय जिगन करि सियहिं बरी ॥ १७५

दूहौ

सौळह पनरह अखिर पर, होय जठै विसरांम ।
यकतीसाखिर अंत गुरु, निहचै मनहर नांम ॥ १७६

छंद मनहर
छंद इकतीसौ कवित्त

कपटी कळंकी कूर कातर कुचाळ कोर,
'किसन' कहत कैसौ कळही अकांम हूं ।
बैंडौ हूं बकौरौ हूं बुरौ हूं बेसहूर बादी,
निलज निमोही नाथ निपट निमांम हूं ॥
जसहीन जुलमी जनात जीव जातनाकौ,
जुगति बिनांही भखौ झूठ जांम जांम हूं ।
गरुरके गांमी सुनौ रांमचंद्र सांमी,
गाढौ गरीबी गुनाही तौ हूँ रावरौ गुलांम हूं ॥ १७७

अन्य कवित्त

जांनुकी पुकारै जातुधांनकी बिनास काजैं,
आये बेग जलपै गिरंदनकी पाजकै ।

---

१७५. सारंग-धनुष । समथ-समर्थ । दसह-सिर-रावण । जिगन-यज्ञ । सिय-सीता । बरी-वरण किया, पांणि-ग्रहण किया ।

१७६. अखिर-अक्षर । जठै-जहां । विसरांम-विश्राम । यकतीसाखिर-इकतीस अक्षर । निहचै-निश्चय ।

१७७. कातर-कायर । कुचाळ-बुरी चाल चलने वाला । अकांम-बिना मतलबका, व्यर्थका । बेंडौ-उद्दण्ड । बकौरौ-बातूनी, वाचाल । बादी-जिद्दी । निपट-बहुत । निमांम-मर्यादाहीन । जातना-यातना । गरुर-गरुड़ । सांमी (स्वामी)-मालिक । गाढौ-गहरा । गुनाही-गुनहगार ।

१७८. जांनुकी-सीता । जातुधांन-राक्षस । गिरंदन-पर्वत । पाज-सेतु, पुल ।

टेर प्रह्ळादकी सुनत नरस्यंघ रूप,
प्रगटे असंभ त्यौंही खंभते गराजके ॥
बाहनें तियाग के ऊबाहने पगन धाये,
बाहरकौ जाहर रटत गजराजके ।
'किसन' कहत रघुराज ढील कौंन काज,
मेरी लाज राखिबौ भुजन माहाराजके ॥ १७८

छंद पुनः कवित्त

माया परिहरि रे पकरि रे चरन गुरु,
जर रे कळुख पुंज अक्रत न कर रे ।
अंतकते डर रे न धर रे सुदेह नित,
कर रे सुक्रम सतसंगमें विचर रे ॥
मरत अमर रे सु कौन तुव नर रे,
पै स्रीमतको रर रे सु प्रेम द्रग भर रे ।
तर रे जगत सिंधु पर रे चरन कंज,
धर रे हियेमें ध्यांन राघव समर रे ॥ १७९

छंद पुनः कवित्त

अक्रत करन कौन लावत है बार झूठी,
करत लबार बार बार आठूं-जांममें ।
तन करतारकौ विचार हू न करै नेक,
बांधत कुटंबके बिटंब नेह दांममें ॥

---

१७८. नरस्यंघ–नृसिंहावतार । असंभ–असंभव । खंभ–स्तंभ । गराजके–गर्जना करके । ऊबाहने– नंगे पैर । बाहर–रक्षा । ढील–विलम्ब, देरी ।

१७९. कळुख–(कलुष) पाप । पुंज–समूह । अक्रत–दुष्कर्म, पाप । अंतक–यमराज । सुक्रम–श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कर्म । अमर–देवता । रर रे–स्मरण कर । सिंधु–सागर, समुद्र । कंज–कमल ।

१८०. बार–समय । लबार–असत्यवादी, झूठा । बिटंब–प्रपंच । नेह–स्नेह । दांम–रुपया, पैसा ।

स्वारथके काज जळ घांम सीत सहै,
नित रहत बिलंबी के अनुरूप बांममें।
एरे मन मेरे तेरे हितकी कहत हूं मैं,
तजि रे अन्हेरे कांम देरे द्रग रांममें॥ १८०

छंद पुनः कवित्त

मूत याकौ मूळ च्यार भूतते सथूळ कूंत,
गूंथ दुख सहिके अभूत पूत जायेकौ।
हाडनकी माळा मांस छाळाते लपेटी भरी,
मळके मसाला ताळा पवन लगाये कौ॥
बिटचार आखर बिराज्यौ ऐसे पिंजरामें,
अंत उडि जेहैं पंछी बेद भेद गाय कौ।
पर उपगार केबौ देबौ कछु दांन,
सीताबर भजि लेबौ फळ पैबौ देह पाय कौ॥ १८१

छंद पुनः कवित्त

पाय जुवराज मंद अंध दुरजोधन सौ,
भयौ मतिमंद रिंद फंद कर केतोई।
'किसन' कहत सिर धूंत बिदुर संत,
मुख भयौ बंध द्रोन भीखम सहे तौई॥
पांचूं पूत पंडके पटकि बैठे हिम्मतकौ,
चूकि गौ छभाकौ भवतव्य बस चेतोई।

---

१८०. घांम–गर्मी। सीत–सर्दी। बिलंबी–संलग्न, अनुरूप, अनुकूल, समान, उपयुक्त। बांम–स्त्री। अन्हेरे–अन्य, अनुचित। द्रग–नेत्र, नयन।

१८१. मूत–मूत्र। याकौ–इसका। भूतते–आकाश, पवन, अग्नि, जल, पृथ्वी आदि। सथूळ–स्थूल। कूंत–मान कर, समझ कर। अभूत–अनोखा। छाळा–चमड़ी। बिटचार–ग्राम-शूकर।

१८२. द्रोन–द्रोणाचार्य। भीखम–भीष्मपितामह। पूत–पुत्र। पंड–पांडु। छभा–सभा। भवतव्य–भवितव्य। चेतोई–ज्ञान, चेतना।

द्रौपदीकी लाज ब्रजराज जौं न राखै तौ,
गुलांम दूसासन तौ कलांम छीन लेतोई ॥ १८२

छंद पुनः कवित्त

गंगके सुथांन नख करत प्रकास भांन,
रहत सदीव उर मधि पंचमाथके।
पापहारी प्रगट अहल्याके उधारी सिर,
मंडन सिखारी बनचारिनके साथके॥
कोमळ बिमळ कोकनदसे अरुन जे,
तलासे जुत कुंकम सुगंध रमा हाथके।
अकरम नास मेरे हिये बसिबौ करौ,
वे धरमनिवास ऐसे पद रघुनाथके॥ १८३

दूहौ

सोळह सोळह अखिर पर, है विसरांम हमेस।
अंत लघु घण अखिरी, वरणव छंद विसेस॥ १८४

छंद घणाखिरी ब्रज भाखा कवित्त

केसव कमळ नैन संत सुख देन संभू,
भूमि पार भजतै अनेक भांत टार भय।
निपट अनाथनके नाथ नरस्यंघ नांम,
नरक निवारन नरेस्वर निपुन नय॥

---

१८२. कलांम–वाक्य, वचन।

१८३. सदीव–सदैव। मधि–मध्यमें। पंचमाथ–महादेव, हनुमान। पापहारी–पापको मिटाने वाला। उधारी–उद्धार करने वाला। कोकनद–लाल कमल। अरुन–लाल।

१८४. अखिर–अक्षर। विसरांम–विश्राम। घण अखिरी–घनाक्षरी नामक कवित्त। घणाखिरी–घनाक्षरी।

१८५. भांत– भांति, प्रकार। नरस्यंघ–नृसिंहावतार। निपुन–निपुण, चतुर, दक्ष। नय–नीति।

'किसन' कहत करुनाके निध कौसलेस,
परत सुरेस भुजंगेस औ रिखेस पय।
सियानाथ बखतन काज जन लाज रख,
जग सिरताज माहाराज रघुराज जय॥ १८५

चौपई

तेरै कोड़ बीयाळी लाख, सतरै सहंस सातसै साख।
वळ छावीस कहै विख्यात, जांण छवीस वरण छंद जात॥१८६

अरथ

एक वरणसूं लगाय छाईस वरण छंदरी अतरी जात छै। यथा—१३००००००० तेरै कोड़ ४२०००००० बीयाळीस लाख १७००० सतरै हजार ७०० सातसै २६ छाईस। तेरै करोड़ बीयाळीस लाख सतरै हजार सात सौ छाईस अतरी छवीस वरण छंदकी जात छै।

दूहा

जपिया 'किसने' रांम जस, एम वरण उपछंद।
अघ आंमय करसी अळग, नहचै दसरथ नंद॥ १८७
संमत अठारौ असीयौ, चौथ तिथ सुद माह।
बुधवार जिण दिन जनम, लियौ ग्रंथ सुभ लाह॥ १८८

इति स्री रघुवरजसप्रकास पिंगळ ग्रंथ आढा किसना विरचिते वरण छंद वरण उपछंद नांम· वरण व्रत्ति संपूरण।

---

१८५. सुरेस—इंद्र। भुजंगेस—शेषनाग। रिखेस—महर्षि। पय—चरण, पैर।
१८६. बीयाळी—बयालिस। छावीस—छब्बीस। छवीस—छब्बीस। छाईस—छब्बीस। बीयाळीस—बयालिस।
१८७. आंमय—रोग। नहचै—निश्चय। नंद—पुत्र।
१८८. संमत अठारौ असीयौ—सं० १८८०। चौथ—चतुर्थी। तिथ—तिथि। सुद(सुदि)—शुक्ल। माह—माघ मास। लाह—लाभ।

अथ गीत छंद वरणण

दूहा

हीमत कर भज भज हरी, गांडू मत गींधाय ।
धींग सदा करणौ धणी, संतांतणी सिहाय ॥ १
सुणिया नह तजता स्रवण, भजतानै भगवांन ।
मीरां स्री अंगमें मिळी, मनां रळी धर मांन ॥ २

सोरठौ

पेट हेक कज पात, मेट सोच संसौ म कर ।
रे संभर दिन रात, नांम विसंभर नारियण ॥ ३

अथ गीत लछण

गीत ओटपा घाटरा बांका अनै त्रिबंक ।
गीत अनोखा गोखरा सूधा बणै सणंक ॥
भूप रचेता भींतड़ां ईसर नीमंधी आव ।
गाई तिणसं गीतड़ां, अधक आव अहराव ॥ ४

सोरठौ

कसै पथर कमठांण, एक ठौड़ परठै इळा ।
मुख मुख नीम मंडांण, तिणसं न डगै गीतड़ा ॥ ५

---

१. गांडू–मूर्ख, कायर । गींधाय–मनके बुरे भाव प्रकट कर, बदबू देना । धींग–समर्थ । संतांतणी–संतोंकी । सिहाय–सहायता ।

२. स्रवण (श्रवण)–कान । रळी–आनंद ।

३. हेक–एक । कज–लिए । पात (पात्र)–कवि । सोच–चिंता । संसौ (संशय)–शक, सन्देह । म–मत । संभर–स्मरण कर । विसंभर–विश्वम्भर, ईश्वर । नारियण–नारायण ।

४. ओटपा–अद्भुत, विचित्र । घाट–रचना । बांका–वंक । अनै–और । त्रिबंक–टेढ़ा, कठिन । रचेता–रचने वाला, बनाने वाला । भींतड़ा–भवन । ईसर–ईश्वर । नीमंधी–रची, बनाई । आव–आयु, उम्र । गाई–वर्णनकी । तिणसूं–उससे । गीतड़ां–काव्यों, छंदों । अधक–अधिक । आव–आयु । अहराव–शेषनाग ।

५. कसै–कसे जाते हैं । बंधनसे दृढ़ करनेकी क्रिया । कमठांण–मकान आदि बनानेका बड़ा कार्य । परठै–रचते हैं, बनाते हैं । इळा–पृथ्वी । मंडांण–रचना ।

अथ गीतका अधिकारी कवि

गीतकी भाखा वरणण

दूहौ

अधिकारी गीतां अवस, चारण सुकवि प्रचंड ।
कौड़ प्रकारां गीतकी, मुरधर भाखा मंड ॥ ६

अथ अगण दधखिर दोस हरणं

दूहौ

वैणसगाई वरणियां, अगण दधखर खैर ।
थई सगाई जेण थळ, वळै न रहियौ वैर ॥ ७

अथ गीतांकी नव उक्ति, ग्यारै जथा, ग्यारै दोस ।
दस वैणसगाई नांम लछण उदाहरण वरणण

दूहौ

उकतसु नव ग्यारह जथा, दोख अग्यारह दाख ।
वयणसगाई दसह विध, भांणव रूपग भाख ॥ ८

---

६. अधिकारी–योग्यता या क्षमता रखने वाला, उपयुक्त पात्र । अवस–अवश्य । प्रचंड–महान । मंड–रचना ।

७. अगण–छंद शास्त्रमें चार अशुभ गण जिनके नाम क्रमशः जगण, तगण, रगण और सगण हैं । छंदके आदिमें इनका रखना अमांगलिक माना गया है । दधखिर (दग्धाक्षर)–छंद-रचनामें प्रथम प्रयोग न किए जाने वाले वे अक्षर या वर्ण जिनका छंदोंमें प्रथम उपयोग अमांगलिक माना गया है । वैणसगाई–वर्ण-मैत्री । डिंगल भाषामें गीत छंदोंकी रचनाका एक नियम विशेष जिसमें जिस वर्णसे जो पद (चरण) शुरू होता है वही वर्ण पदकी समाप्ति पर समाप्तिके अन्तिम चार वर्णोंमें कहीं न कहीं अवश्य लाया जाता है । इस प्रकारकी वर्ण-योजनासे छंद शास्त्रमें जो दग्धाक्षर व अशुभ गण माने गए हैं, अगर वे छंद-रचनामे आ जाये तो वैण-सगाई होनेसे उनका दोष नहीं लगता । दधखर–दग्धाक्षर । खैर–कुशल-क्षेम । थई–हुई । सगाई–संबंध, रिश्ता । जेण–जिस । थळ–स्थान । वळै–फिर । वैर–शत्रुता, दुश्मनी ।

८. उकत–डिंगल छंद-रचनाका एक रचना नियम विशेष । जथा–डिंगल गीतोंकी रचनाका एक नियम विशेष जिसमें कहीं तो यह अलंकारके रूपमें प्रयुक्त होता है और कहीं रीतिके रूपमें । दोख (दोष)–काव्यके गुणोंमें कमी लाने वाली साहित्य संबंधी बातें । दाख–कह । भांणव–चारण कवि, कवि । रूपग–डिंगलका गीत छंद । भाख–कह ।

छंद नव उक्ति नांम

कवित्त छप्पै

सनमुख पहली सुद्ध १ दुई गरभित सनमुख दख २ ।
परममुख सुद्ध प्रसिद्ध ३ अनै गरभित परमुख अख ४ ॥
सुद्ध परामुख सरस ५ परामुख गरभित होई ६ ।
सुद्ध स्त्रीमुख सातमी ७ सुकवि स्त्रीमुख संजोई ८ ॥
उचरजै नमी मिस्रित उकति ९ पलटै पयण दवाळ प्रति ।
रघुनाथ सुजस गावण रहस, अखी 'किसन' नव विध उकत ॥ ९

वारता

कैहवा-वाळा प्रसंगीरै सनमुख कवि कहै सौ सुद्ध सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध सनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

दससिर खळ मारण दुसह, हाथी तारण हाथ ।
क्रपा रूप 'किसनौ' कहै, निमौ भूप रघुनाथ ॥ १०

वारता

सनमुख अन्योक्ति कर कहणौ सौ गरभित सनमुख उक्ति कहावै, और ऊपरै कहे नै आपरा मननै समझावजै सौ गरभित सनमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित मनमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

उचरै आळ-जंजाळ औ, व्रथा करै बकवाद ।
निज मन 'किसना' अहनिसा, अवधेसर कर याद ॥ ११

---

९. दुई–द्वितीय, दूसरी । अनै–और । अख–कह । उचरजै–कहिए । वयण–वचन । दवाळ–डिंगल गीतका चार चरणका समूह । रहस–रहस्य । अखी–कही । कैहवा-वाला–कहने वाला । प्रसंगी–वह जिसके विषयमें प्रसंग चले, सम्बन्धी ।

१०. दससिर–रावण । खळ–राक्षस । दुसह–महा भयंकर । उचरै–कहता है, वर्णन करता है । आळ-जंजाळ–व्यर्थका ववंडर । अहनिसा–रात दिन । अवधेसर–श्रीरामचंद्र भगवान ।

दूहौ

साठ सहस सुत सगररा, नह्चै मुवा निकांम ।
तै धन ग्रीध जटाय तं , रिण रहियौ छळ रांम ॥ १२

वारता

जींनै रूपग कहै जींसूं अपूठौ कहीजै सौ सुद्ध पर मुख उक्ति कहावै, औररौ जस और प्रतसूं भाखण करणौ सौ सुद्ध परमुख उक्ति ।

अथ सुध परमुख उक्ति उदाहरण

सोरठौ

जीपे दससिर जंग, समंदां लग दीपै सुजस ।
ऊ रघुनाथ अभंग, जन पाळग समराथ जग ॥ १३

वारता

परमुख उक्तिनै अन्योक्तिरी कर कहणौ सौ गरभित परमुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित परमुख उक्ति उदाहरण

दूहा

हर समरौ होसी हरी, जीते जमरौ जंग ।
कर उदिम रोलंब करै, भमरौ कीटी भ्रंग ॥ १४
जिणनूं जांण अजांणरौ, ईखौ भेद अभंग ।
लाठी खर ऊपर लगत, पूजै जगत पमंग ॥ १५

वारता

कवि विना वरणनीय नै पैलौ पैलानै कहै सौ सुद्ध परामुख उक्ति कहावै ।

---

१२. नह्चै–निश्चय । निकांम–व्यर्थ । रिण–युद्ध । छळ–लिए । जींनै–जिसको । रूपग–गीत छंद । जींसूं–जिससे । अपूठौ–उलटा । और–अन्य, दूसरा । प्रत–प्रति, लिए । भाखण–भाषण ।

१३. जीपे–जीत कर । दससिर–रावण । जंग–युद्ध । लग–पर्यन्त, तक । दीपै–शोभा देता है । पाळग–पालन करने वाला । समराथ–समर्थ ।

१४. जंग–युद्ध । उदिम–उद्यम, उद्योग । रोलंब–भौंरा । भमरौ–भौंरा । कीटी–छोटा कीटाणु । भ्रंग–भौंरा ।

१५. जिणनूं–जिसको । अजांणरौ–अज्ञानका । ईखौ–देखो । खर–गधा । पमंग–घोड़ा ।

अथ सुद्ध परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

समपी लंका सोवनी, दीन भभीखण दांन ।
जेण रांम उज्जळ सुजस, जंपै सकळ जिहांन ॥ १६

वारता

सकळ नांम सिवरौ है सौ सिवप्रत पारबती बचन छै। पैलौ पैलानै कहै सौ परामुख उक्त जिण रांम सौ परमुख उक्त अदभुतरस, पारबतीरौ बयण सौ परामुख उक्त नै सिवप्रत संभाखण ।

वारता

परामुखमें सनमुखरी छाया नीसरै सौ गरभित परामुख उक्ति कहावै ।

अथ गरभित परामुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हर जैरै कच-कूप मह, वसै कौड़ ब्रहमंड ।
केम प्रभू मावै तिके, परगट कीड़ी पिंड ॥ १७

वारता

सातमीं सुद्ध स्त्रीमुख नांम उक्ति जठै परमेस्वरकौ वचन तथा कोई देवताकौ, तथा राजाकौ वचन तथा नाग वचन, सौ सारा रूपगमें एक निव है सौ सुद्ध स्त्रीमुख उक्ति कहावै ।

अथ सुद्ध स्त्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

हूं आखूं नय वयण हिक, सांभळ भरथ सुजांण ।
करणौ तौ मौ अवस कर, पितचौ हुकम प्रमांण ॥ १८

---

१६. समपी–दी । सोवनी–स्वर्णकी । दीन–गरीब । भभीखण–विभीषण । सकळ–समस्त, सब अथवा महादेव, शिव । जेहांन–संसार । पैलौ–पहिला या दूसरा । प्रत–प्रति । संभाखण–संभाषण ।

१७. हर (हरि)–विष्णु । जैरै–जिसके । कच-कूप–रोम-कूप, रोम-छिद्र । मह–में । ब्रहमंड–ब्रह्मांड । केम–कैसे । तिके–वे । परगट–प्रकट । पिंड–शरीर ।

१८. हूं–मैं । आखूं–कहता हूं । नय–नीति । वयण–वचन । हिक–एक । सांभळ–सुन । भरथ–भरत । सुजांण–चतुर । पितचौ–पिताका ।

वारता

आठमी कवि-कल्पित स्त्रीमुख उक्ति कहावै, जिणमें कवियण नै स्त्रीमुखरौ वयण दोनूंई नीसरै ।

वारता

स्त्रीरांमजीरौ बचन लछमणप्रतिनै यूं कहियौ—अवधेस कवियण दोनूं भेळा छै ।

अथ कवि कल्पित स्त्रीमुख उक्ति उदाहरण

दूहौ

कोपै तूं मौ राज कज, सांभळ वायक सेस ।
गरवां मत अहियौ नहीं, यूं कहियौ अवधेस ॥ १९

वारता

नवमी मिस्रत उक्ति जठै गीत कवित्त छंदादिकमें तुक-तुक प्रति तथा दवाळा दवाळा प्रति वचन पलटै, सौ मिस्रित उक्ति कहावै ।

अथ मिस्रित उक्ति उदाहरण

सोरठौ

वांण सराहै वांण, खाग सराहै समर खळ ।
मौज उभ्फळ महरांण, सारा है रघुबर सुकव ॥ २०

इति नव उक्ति निरूपण ।

अथ अग्यारह प्रकार डिंगलकी जथा निरूपण

अथ अग्यारह जथा नांम छंद चंद्रायण

विधांनीक सर सिर फिर वरण वखांणजै ।
अहिगत आदसु अंत सुध पिण आंणजै ॥

---

१८. **कवियण**–कविजन, कवि । **दोनूंई**–दो ही ।

१९. **मौ**–मेरे । **कज**–लिए । **सांभळ**–सुन । **सेस**–लक्ष्मण । **अवधेस**–श्री रामचन्द्र ।

२०. **दवाळा**–गीत छंदके चार चरणका समूह । **वांण**–वाणी । **वांण**–सरस्वती या पंडित । **खाग**–तलवार । **समर**–युद्ध । **खळ**–शत्रु । **मौज**–उदारता, दान । **ऊभ्फळ**–तरंग, लहर । **महरांण** (महार्णव)–सागर । **सारा है**–प्रशंसा करते हैं । **निरूपण**–निर्णय, विचार ।

२१. **ग्यारह जथाओंके नाम**—विधांनीक, सर, सिर, वरण, अहिगत, आद, अंत, सुध, अधिक, न्यून और सम । **पिण**–भी ।

अधिक न्यून सम नांम अग्यारह उच्चरै ।
'किसन' जथा अै डिंगळ कवि आरै करै ॥ २१

वारता

प्रथम तौ विधांनीक जथा कहावै जठै विधांनीक तिसर गीत वणै सौ ।

अथ विधांनीक नांमा जथा उदाहरण

गीत सुपंखरौ

जात विधांनीक तिसर गीत

वंसी ऐराकरां छ-भाख पैराकरां खड़गवाहां ,
जोस मेधा आखरां आसुरां भंज जंग ।
मोड़ाकरां नायबां-वाकरां अरांतोड़ा मनै ,
साकुरां आखरांजोड़ा ठाकुरां स्रीरंग ॥
अछेहां पै धाव सिधां सभाव पटैत अंगां ,
कछ अंबा भांण कुळां अरेहां सकांम ।
दौड़ बाद जीपणां लूणचै काज भंजे देहां ,
रेवंतां नीपणां सूरां रंजै अेहां रांम ॥
तेजरा जळोधां वाक अरोधां विरोधां तीखा ,
तातां पै निघातां जंगी होदां तेग ताव ।

---

२१. **आरै करै**–स्वीकार करते हैं ।

२२. **वंसी**–वंशका । **ऐराकरां**–नस्ल विशेषके घोड़ों । **छ भाख**–छ भाषाओं । **पैराकरां**–पार करने वाले । **खड़गवाहां**–योद्धाओं । **मेधा**–स्मरण रखनेकी शक्ति, धारण शक्ति, धारणा शक्ति । **आसुरां**–शत्रुओंको, राक्षसोंको । **भंज**–संहार करते हैं । **जंग**–युद्ध । **मोड़ाकरां**–नस्ल विशेषके घोड़े । **नायबां-वाकरां**–कवि । **अरांतोड़ा**–शत्रुओंका नाश करने वाले । **साकुरां**–घोड़ा । **आखरांजोड़ा**–कवि । **ठाकुरां**–योद्धाओं । **स्रीरंग** (श्री रंग)–विष्णु, श्री रामचंद्र । **अछेहां**–बहुत । **धाव**–दौड़ । **सिधां**–सिद्धां । **पटैत**–योद्धा । **कछ**–देश विशेष जहांके घोड़े प्रसिद्ध होते हैं । **अंबा**–देवी, शक्ति । **भांण**–सूर्य । **अरेहां**–शत्रुओंको मारने वाले, अथवा निष्कलंक । **दौड**–शीघ्र गमन या गति । **बाद**–शास्त्रार्थ । **जीपणां**–जीतने वाला । **लूणचै**–नमकके । **भंजे**–नाश करते हैं । **रेवंता**–घोड़ों । **नीपणां**–कवियों । **सूरां**–योद्धाओं । **रंजे**–प्रसन्न होता है । **अेहां**–ऐसों पर । **जळोधां** (जलधि)–सागर । **वाक**–वाणी । **तीखा**–तेज । **तातां**–तेज स्वभाव, चंचल । **निघातां**–अति तेज । **जंगी**–बड़ा । **होदां**–हाथीकी पीठ पर रखनेकी अमारी । **तेग**–तलवार । **ताव**–जोश ।

बेग ऐण रोधां बैण सबोधां सक्रोधां बंदै ,
वाजंदां कव्यंदां जोधां इसां औधराव ॥
सींधुरां ढहाड़ सं बां दहाड़ बिभाड़ सत्रां ,
धाव सिघ्र बिरदाई प्रवाड़ धरेस ।
तुरंगां कव्यंदां बांबराड़ भड़ां रांम ताखा ,
निखंगां रीझणा धाड़ जांनकी नरेस ॥ २२

वारता

दूजौ सर नांमा जथा सौ गीतरा दूहांरी तीन तुकमें तौ और वात वरणै नै च्यार ही दूहांरी चौथी तुकमें कहै सौ वात निभी चाहै । आगै सात सांणौरां महैं वेलियौ सांणौर गीत छै जीं महैं चरणारव्यंदांरौ नांम च्यार ही दूहांरी चौथी तुकमें सावत निभ्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ सरजथा उदाहरण

गीत वेलियौ सांणौर

औयण जे रांम सिया नित अरचै ,
सुज चरचै सिव ब्रहम सकाज ।
जग अघहरण सुरसरी जांमी ,
राजतणां चरणां रघुराज ॥ २३

वारता

तीजो सिर नांमा जथा कहावे जठै प्रमांणिक चौसरसूं लगाय नै प्रमांणीक सत सर तांई रूपग लखौ छै सौ अगाड़ी रूपगमें है, सत सर सुधी सांणौर कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

---

२२. बेग–गति । ऐण–हरिण । बैण–वचन । सबोधां–ज्ञान वाला । वाजंदां–घोड़ा । कव्यंदां–कवियों । जोधां–योद्धाओं । औधराव–श्री रामचंद्र भगवान । सींधुरां–हाथियों । ढहाड़–गिराने वाला । सूंबां–कृपणों । दहाड़–गर्जना, घोर ध्वनि । बिभाड़–संहार करने वाले । सत्रां–शत्रुओं । धाव–दौड़ । बिरदाई–बिरुद वाले । प्रवाड़–शाका । धरेस–धारण करने वाले । तुरंगां–घोड़ों । कव्यंदां–कवियों । बांबराड़–जबरदस्त । ताखा–महान, जबरदस्त । निखंग–वह जो किसीका प्रभाव या रौब न मानता हो परन्तु कर्त्तव्यपरायण हो, निशंक । रीझणा–प्रसन्न होने वाले । धाड़–धन्य-धन्य । महैं–में, अंदर । चरणारव्यंदां (चरणारबिंद)–कमल-चरण ।

२३. औयण–चरण । सुज–वह । ब्रहम–ब्रह्मा । सुरसुरी–गंगा । जांमी–पिता, जनक । राजतणां–आपके, श्रीमानके । रूपग–गीत (छंद) ।

अथ सिर नांमा जथा उदाहरण

सुद्ध सांणौर सतसर गीत

अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुत आसती ,
नीम वर कार कळ जोग तप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय यंद बुध नीत थट ,
मेर रवि समंद चंद भव भ्रहम रांम ॥ २४

अथ चौथी वरण नांम जथा कह्यवै ।

वारता

चौथी वरण नांम जथा कहावै, जिण महै नखसूं लगाय सिख तांई, तथा सिखसूं लगाय नख तांई वरणण होवै सौ यण ग्रंथ मधे बावीस जातरा छप्पै वरण्या जठै एक तौ समवळ विधांन छप्पै देख लीज्यौ । दूजौ बावीस छप्पैमें स्त्री प्रतैं विधांनीक छप्पै ।

अथ वरण जथा उदाहरण

समवळ विधांन छप्पै

नयणकंज सम निपट, सुभत आंनन हिमकर सम ॥ २५

इत्यादि दुतीय विधांनीक छप्पै

तुक

सेस इंदु म्रग दीप, जांण कोकिल म्रगपति गज ।
बेणि बदन चख नाक, बोल कटि जंघ चाल सज ॥ २६

वारता

पांचमी अहिगत नांम जथा कहवै, जिण गीतरी आदरी तुकरा आदमें जो पदारथ कहै, जिणरौ संबंध तुकरा अंतमें नीसरै वचै और वात वरणै सापरीगत ज्यूं रूपगरा वरणणरी वक्रगति होय सौ अहिगत नांम जथा कहावै ।

---

२४. अडग—न डिगने वाला, अटल । अणथघ—जिसका थाह न हो, अपार । स्रुत (श्रुति)—वेद । आसती—आस्तिकत्व । कार—मर्यादा, सीमा । कळ—कला (चंद्रकला) । जोग—योग । तप—तपस्या । थिर—स्थिर । प्रभा—कांति । पय—समुद्र । यंद—इन्द्र । बुध—बुद्धि । नीत—नीति । थट—है । मेर—सुमेरु पर्वत । रवि—सूर्य । समंद—समुद्र । भव—महादेव । भ्रहम—ब्रह्मा ।

नोट—सिर जथाके उदाहरणका गीत सतसर अगाड़ी मय अर्थके दिया गया है, उसे पढ़ कर पाठक समझें ।

अथ अहिंगत जथा उदाहरण

साणौर गीत

सिव देवां इंद्र सिध सिध राजां ,
है ग्रह रवि, रिवचो है राज ।
तरसुर सरित गंग तरराजं ,
राजां सह सरहर रघुराज ॥
कनक करग धातां हिम करगां ,
रति-पति गरुड़ खगां सारूप ।
दधां विधाता दुजां खीर-दध ,
भूपां सिधां जांनुकी भूप ॥
गिरां हणू रुद्रां सोव्रनगिर ,
गाथां रुघ वेदां हरि गाथ ।
कोटां गणं गजानन लंका ,
नूपां सिरोमण सीतानाथ ॥
भारथ लखण सेस अह भायां ,
सुकवि दुति धारां सुकवियां डुडंद ।
लिछमीवर भगतां धू लायक ,
नायक जगत दासरथ नंद ॥ २७

वारता

छठी आद जथा कहावै सौ पहलरा दवाळामें कहै सौ सारा दवाळामें कहणौ जिण जायगां थांणा-बंध वेलियौ रूपग गीत वणै सौ इण रूपग माहै अगाड़ी जांगड़ौ प्रहास थांणा-बंध वेलियौ गीत छै सौ देख लीज्यौ । सात सांणौरां महै छे ।

---

२७. तरसुर–कल्प-वृक्ष । सरित (सरिता)–नदी । गंग–गंगा नदी । कनक–सोना, स्वर्ण । धातां–धातुओंमें । हिम–स्वर्ण, सोना । रति-पति–कामदेव । दधां (उदधियों)–समुद्रों । विधाता–ब्रह्मा । दुजां (द्विजों)–ब्राह्मणों । खीर-दध (क्षीर उदधि)–क्षीर-समुद्र । गिरां (गिरियों)–पर्वतों । हणू–हनुमान । सोव्रनगिर–स्वर्णगिरि, सुमेरु पर्वत । गाथां–कथाओं । रुघ–ऋग्वेद । गाथ–कथा । सिरोमण–शिरोमणि । डुडंद–सूर्य, भानु । दवाळा–गीत छंदके चार चरणोंका समूह । जायगां–जगह, स्थान ।

अथ आद जथा उदाहरण

थांणबंध वेलियौ गीतरौ दूहौ छै

गीत

सरण वखांणै जगत चित विखांणै जेम सिंध ,
　　मौज किव वखांणै चंदनांमा ।
बुध गिरा रांम हथवाह रिम वखांणै ,
　　वखांणै काछदढ़पणौ बांमा ॥ २८

वारता

सातमीं अंत नांमा जथा कहावै, जठै चौटीवंध रूपग वणै । जौ रूपग सारामें वरणन करै सौ अंतरा दवाळामें कहणौ, सौ इण ग्रंथरै आद बावीस कवितां मध्ये चौटीबंध कवित छै सौ देख लीज्यौ, यूंहीं गीत जांणज्यौ ।

अथ अंत जथा उदाहरण चौटीबंध

छप्पै

सूरजपणौ सतेज, स्रवण यम्रत हिमकर सम ॥ २९

वारता

आठमीं सुध नांमा जथा कहावै, सौ जठै रूपगरी एक राह निभै, पैहला दूहारी पैहली तुकमें भाव सौ च्यार ही दूहांरी पैहली तुकमें भाव । पैल्हारी दूजी तुकमें भाव सौ सारा दूहांरी दूजी तुकमें भाव । पैलारी तीजी तुकमें भाव सौ सारा दूहांरी तीजी तुकमें भाव । पैलारी चौथी तुकमें भाव सौही दूजा दूहांरी चौथी तुकमें भाव होय सौ सुध जथा कहावै सौ यण रूपगमें आगै घौड़ादमौ गीत छै सौ देख लीज्यौ ।

---

२८. दूहौ–गीत छंदके चार चरणका समूह । वखांणै–वर्णन करते हैं । प्रशंसा करते हैं । सिंध–(सिंधु) समुद्र । मौज–उदारता । चंदनांमा–यश, कीर्ति । बुध–पंडित । गिरा–वाणी । हथवाह–हाथसे किया जाने वाला शस्त्र-प्रहार । रिम–शत्रु । काछ-द्रढ-पणौ जितेन्द्रियता । संयमशीलता । बांमा–स्त्री । यूंही–ऐसे ही ।

२९. स्रवण–श्रवण । यम्रत–अमृत । हिमकर–चंद्रमा । सम–समान । जठै–जहां । रूपग–गीत छंद, काव्य । कहावै–कही जाती है । यण–इस ।

अथ सुद्ध जथा उदाहरण

घोड़ादमौ गीत

राघव गह पला कीर कह पै रज ,
सिला उडी जांणै जुग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौं तौ नाव पधारौ ॥ ३०

वारता

नवमी अधिक नांमा जथा कहावै, जठै रूपगमें अधिकासूंअधिकौ वरणण होवै, एक तौ फलांणासूं फलांणौ अधिकौ यूं होय हर दूजी गणना क्रमसूं होय । एक दोय तीन च्यार पांच इत्यादिक क्रमसूं दो भांतकी अधिक जथा ।

अथ अधिक जथा उदाहरण

सोरठौ

रट नर अधिका राज, राजां अधिका सुर रटै ।
सुरां अधिक सुर राज, अवधेसर सुरपत अधिक ॥ ३१

वारता

दूजी यण ग्रंथरा बावीस छप्पै मध्ये नीसरणीबंध नांम छै. छप्पैमें देख लीज्यौ, अधिक क्रम छै सौ देख लीज्यौ ।

नीसरणीबंध छप्पै कवित्त

एक रमा अहनिसा, दोय रवि चंद त्रिगुण दख ।
च्यार वेद तत पंच, सुरत छह सपत सिंध सख ॥ ३२

---

३०. गह–पकड़ कर । पला–अंचल । कीर–धीवर, नाविक । पै–चरण । जुग–संसार । सारौ–समस्त । दिस–तरफ । अधिकासूं अधिकौ–अत्यधिक । अधिकौ–अधिक । यूं–ऐसे ।

३१. राज–राजा । सुर–देवता । सुरराज–इन्द्र । अवधेसर–श्री रामचंद्र महाराज । सुरपत–इन्द्र । यण–इस ।

३२. सपत–सप्त, सात । सिंध–(सिंधु) समुद्र ।

इत्यादिक अधिक जथा दुविधि

वारता

दसमी सम नांमा जथा कहावै, जिण महै अभेद सम रूपग वरणै, तथा सवि-सय सावयव रूपकालंकार वरणै, तथा वागेटौ, जागेटौ, नागेटौ, वादेटौ, रूपग गीत वणै सौ सम जथा कहावै। इण उदाहरणरा दूहा माफक गीत कवित्त नीसांणी छंद जांण लीज्यौ।

अथ सम जथा उदाहरण

दूहौ

अवधि गगन बाजी अयण, सयण कुमुद सुख साज।
जस कर सिय रोहिणी जुकत, रांमचंद्र महराज॥ ३३

वारता

अठै अधिक न्यूंन ही छै। स्री रांमचंद्रजीनै हर चंद्रमानै समांन वरण्या छै, जींसूं सम जथा जांणज्यौ।

वारता

अग्यारमी न्यूंन नांमा जथा कहावै, सौ आगै सुध नांमा आठमी जथा कही जींनै क्रम भंग कर अस्तव्यस्त कर कहणी सौ न्यूंन जथा जांणज्यौ। पण रूपग मध्ये घड़उथल्ल नांमा गीत छै। पैल्हा दूहारी पैली दोय तुकांरौ धरम तौ तीन दूहांमें नहीं छै, हर पाछला दूहांरौ धरम आगला दूहांमें नहीं जींसूं क्रम भंग छै। अस्तव्यस्त पद छै जींसूं न्यूंन जथा छै।

अथ न्यूंन जथा उदाहरण

घड़उथल्ल गीत

जम लग कठै भै सीस जियां,
तन दासरथी नित वास तियां।
तन दासरथी नह वास तियां,
जम लगसी माथै जोर जियां॥ ३४

इति ग्यारह जथा संपूरण

---

२३. जिण—जिस। महै—में। अभेदसमरूपग—अभेदसम रूपकालंकार। सावयव रूपकालंकार—रूपकालंकारका एक भेद विशेष।

३३. सयण—सज्जन। सिय—सीता। जुकत—युक्त। हर—और। जींसू—जिससे।

३४. कठ—कहां। भै—डर, भय। माथै—ऊपर। जियां—जिनके।

अथ गीतांका एकादस दोख निरूपण

छप्पै कवित्त

उकतसु सनमुख आदि निभै नह जिकौ अंध १ ।
निज वरणै भाख विरोध सही छबकाळ दोख सुज २ ॥
नह व्है जात पित नांम हीण दोखण सौ कहिये ३ ।
वरण होय विसुध निनंग दोखण ते नहियें ४ ॥
पद छंद भंग सौ पांगळौ ५ अधिक ओछ कळ ऊचरै ।
वेलिया खुड़द विच जांगड़ौ वर्णै सजात विरुद्ध रे ६ ॥
अरथ होय आमंझ अपस ७ सौ दोख उचारत ।
जथा निभै नह जेण नाळछेदक निरधारत ॥
तिकौ दोख पख तूट जोड़ कच्ची जिण मांझळ ।
सुभ आखर मुड़ असुभ लखावै वधिर १० जिकौ वळ ॥
यक आद अंत वाळौ अखिर करै अमंगळ सोमकर ।
अगीयार दोख कवि आखिया अे निवार रूपग ऊचर ॥ ३५

अथ अंधादिक एकादस दोख उदाहरण कथन

छप्पै कवित्त

कहियौ मैं के कहूं किसूं अंधौ तैं कहियौ ।
लिता पांन धनंख रांम छबकाळौ लहियौ ॥
अज अजेव जग ईस निमौ तैं हीण दोख निज ।
रत नदीतरत कवंध सार इम चली निनंग सुज ॥

---

३५. निभै–निभता है । जिकौ–वह । अंध–एक साहित्यिक दोषका नाम । भाख–भाषा । छबकाळ–एक साहित्यिक दोषका नाम । सुज–वह । पित–पिता । हीण दोखण–एक साहित्यिक दोषका नाम । निनंग–एक साहित्यिक दोषका नाम । पांगळौ–एक साहित्यिक दोषका नाम । ओछ–कम । कळ–मात्रा । आमूंझ–वह जो कठिनतासे समझमें आवे । अपस–एक साहित्यिक दोषका नाम । नाळछेदक–एक साहित्यिक दोषका नाम । तिकौ–वह । पखतूट–एक साहित्यिक दोषका नाम । जोड़–काव्य-रचना । मांझळ–मध्यमें । वधिर–एक साहित्यिक दोषका नाम । वळ–फिर । अमंगळ–एक साहित्यिक दोषका नाम ।

३६. छबकाळौ–छबकाळ, दोषका एक नाम ।

कवि छंदोभंग पंग कह तुक धुर लछण तोरमें ।
जात विरुध जांगड़ारौ दूहौ वणौ लघू सांणोरमें ॥ ३६

विस्णु नांम कुळ विस्ण विस्णु सुत मित्र अपस वद ।
कच अहिमुख ससि लंक स्यंघ कुच कोक नाळ छिद ॥
मनख्या मत विललाय गाय प्रभुजी पख तूटल ।
रांमण हणियौ रांम गूह खाधौ तारक खळ ॥
यण भांत कहै बहरौ यळा महपतमें पय रांम रे ।
तुक एण अमंगळ आद अंत कवियण विध गुण नह करे ॥ ३७

अथ ग्यारह दोख छप्पै अरथ

कहियौ मैं अती सन्मुखादिक नव उक्ति कही ज्यां महली एक ही उक्तिरौ रूप निभै नहीं, उक्तिरी ठीक पड़े नहीं सौ अंध दोख । कहियौ मैं के कहूं किसूं, अठै कवि वचन छै कै कोई और वचन छै, कै देव नर नाग वचन छै कै मांनसी विचार छै, अठै बचनरी खबर नहीं, संदेह छै, उक्तिरौ रूप रुळियौ छै । सनमुख छै कै परमुख छै, कै परामुख छै, कै स्रीमुख छै, कै गरभित छै, कै मिस्रित छै । अठै कांई निस्चय नहीं जिणसूं अंध दोख छै । १

भाखा विरुद्ध सौ छवकाळ दूखण कहावै । लिता, पांन, धनंख रांम । लिता पंजाबी भाखा छै । पांन ब्रज भाखा छै । रांम देस भाखा । अठै तीन भाखा सांमल, जिणसूं छवकाळ दोख छै । २

जातरौ पितारौ मुदौ जाहर न होवै सौ हीण दोख कहावै । अज अजेव जगईस नमौ । अठै अज सिवनै कह्यौ कै विस्णु नै, दोई अजैव दोई जगतरा ईस छै, यां दोयांईरै जात किसो नै मा बाप किसा, फेर अजन्मारै मा बापरौ लेखौ कांई ठीक नहीं, नांमरी पण ठीक नहीं । जिण ताबै हीण दोख हुवौ । ३

---

३६. पंग—पांगळा नामक एक साहित्यिक दोषका नाम ।

३७. नाळ छिद—नाळ छेद नामक साहित्यिक दोषका नाम । पख-तूटळ—वह जिसका पक्ष खंडित हो—एक साहित्यिक दोषका नाम । खाधौ—ध्वंश किया, मारा । तारक—तारकासुर नामक राक्षस । बहरौ—एक साहित्यिक दोषका नाम ।

१. ज्यां—जिन । महली—अन्दरकी । ठीक—ज्ञान, पता । कै—या, अथवा । मांनसी—मनुष्य सम्बन्धी । रुळियौ—नष्ट हुआ ।

२. दूखण—दोष । सांमल—साथ ।

बिना ठिकांणै विकळ वरणण होय सौ निनंग दोख तथा नग्न दोख । पैली कहवारी वात पछै वरणै, पछै वरणवारी वात पैहली वरणै सौ विकळ वरणण वाजै ज्यूं अठै रत नद तिरत कबंध सार इम चली । पैहली तरवार चालै जद लोही आवै, जद नदी वहै, अठै पैहलो लोहीरी नदी वरणी, फिर कबंध वरण्या, जठा पछै तरवार चली कही, ठिकांणाचूक वरणण छै, जींसूं निनंग दोख हुवौ । ४

छंद भागै सौ छंदभंग, पांगुळौ दोख कहावै । तुक कवि छंदोभंग कह, इण तुकमें एक मात्रा घाट छै । गगा कका विचै ससौ चाहीजै, छप्पैरी नवमी तुकरै तथा पांचमी तुकरै पूरवारधमें पनरै मात्रा चाहीजै सौ अठै चवदै मात्रा छै । एक मात्रा कम छै । छंद भागौ जींसूं छंदभंग पांगळौ दोख हुवौ । ५

जात विरोध सौ लघु सांणौर मही गीत ४ वेलियौ सुहणौ खुड़द भेद भेळा होवै पिण जांगड़ौ भेळौ न हुवै । जांगड़ारौ दूहौ वणै सौ जात विरोध (दोख) हुवौ । ६

जठै अमूभयौ अरथ होय दस्टकूट गूढा ज्यूं क्लिस्टारथ ज्यूं महाकस्टसूं अरथ होय सौ अपस दोख कहावै ज्यूं विस्णु नांम कुळ विस्णु विस्णु सुत मित्र । इति विस्णुकौ नांम हरीनैं हरी नांम सूरजकौ जींसूं सूरजका वंसका रांमचंद्र सूरज छै। फेर विस्णुको हरी नांम नै हरी नांम सूरजको जींसूं सूरजका सुत सुग्रीवका मित्र स्री रांमचंद्र इसी तरै महा कस्टसूं अरथ होय सौ अपस दोख कहावै । ७

जीं रूपगमें विधांनीक आदि नव जथा नहीं निभै सौ नाळ छेद नांम दोख कहावै, कच अहि मुख ससि स्यंघ लंक कुच कोक नाळ छिद, चोटी कही मुख कह्यौ कमर कही नै पछै कुच कह्या, जींसूं क्रम भंग हुवौ, चौथी वरण नांमा जथा जठै सिख नखकै वरणण होय सौ अठै निभी नहीं । जींसूं नाळ छेद दोख हुवौ । ८

जिण रूपगमें पतळी जोड़ होय सौ पख तूट दोख कहावै, मनख्या मत विललाय गाय प्रभूजी पख तूटल । अरथ मनख्या पद कची जोड़ ग्रांमीण विलोवड़ी, विललाय चौपद । गायक चौपद प्रभूजी प्रभूपद ठीक पिण जीकारासूं यौ पण कचौ । इसी कची पतळी जोड़ जीं रूपगमें होय सौ पख तूट दोख कहावै । ९

---

३. मुदौ–ज्ञान । दोयांई–दोनों हीं ।

४. ठिकांणौ–स्थान ।

५. घाट–कम ।

७. अमूझ्यौअरथ–कविता या गद्यका वह अर्थ जो आसानीसे समझमें न आ सके, दृष्टकूट अर्थ । द्रस्टकूट–दृष्टकूट । क्लिस्टारथ–क्लिष्टार्थ ।

८. जीं–जिस । रूपग — गीत छंद या काव्य ।

सुभवायक है, सौ मुड़ नै पाछौ असुभ मालम हुवै सौ बहरौ दोख कहावै। रांमण हणियौ रांम, गूह खाधौ तारक खळ, हणियौ पद रांम रांवण सब्द विचै छै सौ दुवांसूं अरथ लागै छै, रांम हणै या रामण हणै। रांम रांमणनै हण्यौ कै रांमण रांमनै हण्यौ, निरधार नहीं, तारकासुर दैतनै, गूह नांम स्वांमी कारतिकरौ छै सौ तारक खळ दुस्टनै स्वांमी कारतिक खाधौ। जुधमें विनास कियौ अरथ छै, जींकौ सुभपणौ मुड़ै नै असुभ अरथ मालम होवै छै। गूह खाधौ इसौ ग्लांण सब्दारथ असुभ भासै छ जींसूं बहरौ दोख छै, तथा कोई कवि सींगमंड पिण इण दोखनै कहै छै। १०

रूपगरी आदरी तुकरौ आद अखिर नै रूपगसूं पूरण होय जिण अंतरी तुकरौ अंतरौ अखिर मिळायां असुभ अरथ प्रगटै सौ अमंगळ दोख कहावै छै। ज्यूं महपतमें पय रांम रै। अण तुकरौ आदरौ मकार अंतरौ रैकार भेळा कियां मरै। यसौ असुभ सब्द भासै छै जिणसूं अमंगळ नांम दोख हुवौ। ११

इति एकादस प्रकार दोख संपूरण।

अथ नीसांणी त्रिविधि वैण सगाई नांम लछण उदाहरण

दूहौ

वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अंत।
मध्य मेल हरि महमहण, तारण दास अनंत॥ ३८

वारता

दूहारी पैहलीरी दोय तुकांमें तुकरा आद अखिररौ तुकंतरा आद अखिरसूं संबंध जिणसूं वैण सगाई हुई।१। सौ यधक कहीजै। दूहारी तीजी तुकमें मध्य मेळ वयण सगाई हुई सौ समवैण सगाई।२। दूहारी चौथी तुकमें अंत वयण सगाई, सौ न्यून वैण सगाई।३। आदरौ अखिर तुकंतरा अखिर हेठै आवै सौ तौ उतिम वैण सगाई।१। आदरौ अखिर तुकंतरा दोय अखिरां हेठै आवै सौ मध्यम वैण सगाई हुवै।२। आदरौ अखिर तुकंतरा तीन अख्यरां नीचै आवै सौ मध्यम वैण सगाई हुई।३। नै आदरौ अखिर तुकंतरा च्यार अखिरां हेठै आवै सौ अधमाधम वैण सगाई कहीजै।४। अठा सवाय सौ निकमी सिथळ वयण छै।

---

१०. दुवां–दोनों। हण्यौ–मारा, संहार किया। खाधौ–भक्षण किया, ध्वंश किया। निरधार–निश्चय। ग्लांण–ग्लानी।

३८. महमहण (विष्णु)–ईश्वर। यधक–अधिक। अखिर–अक्षर। हेठै–नीचे। उतिम–उत्तम, श्रेष्ठ। वयण–वर्ण मैत्री, वयण सगाई।

अथ उतिम मध्यम अधिम अधमाधम च्यार प्रकार वैण सगाई उदाहरण

सोरठौ

लेणा देणा लंक, भुजडंड राघव भांमणै।
आपायत अणसंक, सूर दता दसरथ तणा ॥ ३९

वारता

पैली तुकमें उतिम ।१। दूजी तुकमें मध्यम ।२। तीजी तुकमें अध्यम ।३। चौथी तुकमें अधमाधम ।४। अै च्यार वैण सगाई। तीन आगै कही इण प्रकार सात वैण सगाई कही। पैला दूहामें आद वैण सगाई कही सौ नै दूजा दूहामें उतिम वैण सगाई कही सौ एक गिणां तौ छ भेद नै जुदी दोय गिणां तौ सात भेद छै। इण प्रकार वैण सगाई समझ लीज्यौ।

अथ सावरणी अखिरांरी अखरोट वैण सगाई वरणण

नीसांणी

आ ई उ ए य व यता मित वरण मुणीजै।
ज झ ब व प फ न ण ग घ बि ब ह अै मित्र अखीजै।
त ट ध ठ द ड च छ सुकवते गत जुगम गिणीजै।
अकाराद जुग जुग अखर अखरोट अखीजै।
अधिक अनै सम न्यून ऐ त्रहुं भेद तवीजै ॥ ४०

उदाहरण

आद अखिर सौ अंतमें खुल अधिक सखीजै।
अधिक खुलै तद बे अधिक सम तिकौ सहीजै।
ज झ ब वाद १ क्रम २ न्यून अै अछरोट कहीजै ॥ ४१

---

३९. भांमणै–बलैया, न्यौछावर। आपायत–शक्तिशाली, समर्थ। अणसंक–निर्भय, निशंक। दता–दातार। तणा (तनय)–पुत्र। तुक–पद्यका चरण।

४०. सावरणी–सवर्ण। अखरोट–राजस्थानी (डिंगल) साहित्यमें वयण सगाईका ही एक भेद जहाँ पर मित्र वर्णसे या जुगम (युग्म) अक्षरका युग्म अक्षरमें यथास्थान मेल हो। अखिरांरी–अक्षरोंकी। यता–इतने। मित–मित्र। वरण (वर्ण)–अक्षर। मुणीजै–कहे जाते हैं। अखीज–कहे जाते हैं। जुगम (युग्म)–दो, जोड़ा। गिणीजै–गिने जाते हैं। जुग (युग)–दो। अखीज–कहे जाते हैं। अनै–और। तवीजै–कहे जाते हैं।

४१. सखीजै–साक्षी दी जाती है। अछरोट–अखरोट।

अथ अकारादिक वकारांत अधिक मित्र अखरोट उदाहरण

दूहौ

अवधि नगरै ईसरा, एहा हाथ उदार ।
यण सरणागत वासतै, दीध लंक सुदतार ।। ४२

सम अखरोट उदाहरण कवित्त

जस कज करै झळूस वाज गजराज वडाळा ।
पह दे पीठ अफेर गहर रघुनाथ सिघाळा ।।
नूपत रूप मघवांण,

अथ न्यून अखरोट ।

तसां वरसण द्रब अट्टळ ।
धमचा कां ढींचाळ डौळ खग झाट लखां दळ ।।
चौरंग उरस चाचर छिबै हर अज पूरण हंूसरौ ।
महाराज रांम सम महपती दांन खाग कुण दूसरौ ।। ४३

अरथ

पैला दूहामें तौ वैंण सगाई । आद मध्य तुकांत तीन कही ज्यांनै हीज अधिक सम न्यूंन जांणजै ।१। दूजा दूहामें उतम मध्यमादिक च्यार प्रकार कही ।२। फेर नीसांणीमें सावरणी अख्यरांरी अखरोट कही सौ पैला दूहामें तौ अकारादि वकारांत कही सौ अधिक । पछै कवितरी पांच तुकांमें जकारादि णकारांत सम अखरोट कही, फेर छप्पैरी च्यार तुकमें तकारादि छकारांत न्यूंन वरण मित्र तथा वैंण सगाई, तथा अखरोट कही सौ समझ लीज्यौ । दस प्रकार छै—आद १ मध्य २ अंत ३ उतिम ४ मध्यम ५ अध्यम ६ अधमाधम ७ अधिक ८ सम ९ न्यूंन १० ।

इति दस वैंण सगाई वरणण ।

---

४३. झळूस—जलसा । वाज—घोड़ा । गजराज—हाथी । वडाळा—बड़ा । पह (प्रभु)—राजा । गहर—गंभीर । सिघाळा—श्रेष्ठ । मघवांण—इन्द्र । तसां—हाथों । वरसण—वर्षा करने वाला, दान देने वाला । अट्टळ—निरंतर । ढींचाळ—हाथी । चौरंग—युद्ध । उरस—आसमान । चाचर—शिर । हर—महादेव । अज—ब्रह्मा । हूंस—अभिलाषा । ज्यांनै—जिनको । हीज—ही ।

अथ गीतांका नांम निरूपण

दूहौ

पढ वसंतरमणी १ प्रथम, मुण जयवंत २ मुणाळ ३ ।
आदगीत त्रय अक्खिया, खगपत अगै फुणाळ ॥ ४४

पुनरपि सात सांणौरका नांम कथन

छप्पै

सुध १ वडौ सांणौर २ समझ दूसरौ प्रहासह ३ ।
वळ तीजौ वेलियौ खुड़द चौथौ सर रासह ५ ॥
सुज पंचम संूहणौ छठौ जांगड़ौ सुछज्जत ६ ।
सोरठियौ सातमौ ७ विहद मुखकत वज्जत ॥
त्रय दुहै मांझ छपय सपत आद गीत अह अखीया ।
अन मिळै गीत यांसुं अवस भांत नदी दध भखीया ॥ ४५

अन्य प्रकार गीत नांम कथन

दूहौ

सांणौरांसूं गीतके, अन छंदां होय ।
बेछंदां मिळ गीतके, वरणूं नांम सकोय ॥ ४६

अथ पुनरपि गीत नांम कथन

छंद बेअख्यरी

स्री गणराज सारदा सुखकर ।
बगसौ सुमत रांम सीताबर ॥

---

४४. निरूपण–निर्णय, विचार । मुण–कह । अक्खिया–कहे । खगपत–गरुड़ । फुणाळ–शेषनाग ।

४५. वळ–फिर । सुज–फिर । सूहणौ–सोहणौ नामक गीत छंद । सुछज्जत–शोभा देता है । अह–शेषनाग । अखीया–कहे । अन–अन्य । यांसूं–इनसे । अवस–अवश्य । दध (उदधि)–समुद्र । भखीया–कहे ।

४६. सकोय–सब ।

४७ गणराज–श्री गणेश । सारदा–सरस्वती । बगसौ–प्रदान करो, दो । सुमत (सुमति)–श्रेष्ठ मति, सुबुद्धि ।

पिंगळ नाग क्रपा जौ पाऊं ।
गीत नांम दीठा जंू गाऊं ॥
गीत अपार अगम जग गावै ।
दीठा जेण जिता दरसावै ॥ ४७

अथ फेर गीतांका नांम कथन

छंद बे अख्यरी

विधांनीक १ पाडगती २ त्रेवड ३ ।
वंकौ ४ त्रबंकड़ौ ५ सुकवी धड़ ॥
चौटी-बंध ६ मुगट ७ दौढौ ८ चव ।
सावझड़ौ ९ हंसावळ १० सूत्रव ११ ॥
गजगत १२ त्रिकुटबंध १३ मुड़ियल १४ गण ।
तिरभंगौ १५ एक अखर १६ भांण १७ तण ॥
भण अड़ीयल १८ झमाळ १९ भुजंगी २० ।
चौसर २१ त्रिसर २२ रेणखर २३ रंगी २४ ॥
अट्ठ २५ दुअट्ठ २६ बंधअहि २७ अक्खव ।
सुपंखरौ २८ सेलार २९ प्रौढ ३० तव ॥
विडकंठ ३१ सीहलोर ३२ सालूरह ३३ ।
भमर-गुंज ३४ पालवणी ३५ भूरह ३६ ॥
घणकंठ ३७ सीह ३८ वगा उमंगह ३९ ।
दूणौगोख ४० गोख ४१ परसंगह ॥
प्रगट दुमेळ ४२ गाहणीं ४३ दीपक ४४ ।
सांणोरह ४५ संगीत ४६ कहै सक ४७ ॥
सीहचलौ ४८ अर अहरनखेड़ी ४९ ।
भणिया नाग गरुड़ सांभेड़ी ॥

---

४७. पिंगळ नाग–शेषनाग । दीठा–देखे । जूं–जैसे । गाऊं–वर्णन करूं ।

ढोलचाळौ ५० धड़उथल ५१ रसखर ५२ ।
चितविलास ५३ कैंवार ५४ सहुचर ॥
हिरणझंप ५५ घोड़ा दम ५६ मुड़ियल ५७ ।
पढ लहचाळ ५८ भाखड़ी ५९ अणपल ॥
वळै हेकरिण ६० धमळ ६१ वखांणां ।
पढ काछौ ६२ गजगत ६३ परमांणां ॥
भाख ६४ गीत फिर अरधभाख ६५ भण ।
मांगण जाळीबंध ६६ रूपक मुण ॥
कहै सवायौ ६७ सालूरह ६८ किव ।
त्रीबंकौ ६९ धमाळ ७० फेर तव ॥
सातखणौ ७१ ऊमंग ७२ इकअखर ७३ ।
यक अमेळ ७४ बे गंजूस ७५ भमर ७६ ॥
कवि चौटियौ ७७ मंदार ७८ लुपतझड़ ७९ ।
त्रीपंखौ ८० व्रध ८१ लघू ८२ सावझड़ ८३ ॥
दुतिय झड़मुकट ८४ दुतिय सेलारह ८५ ।
त्राटकौ ८६ मनमोह ८७ विचारह ॥
ललितमुकट ८८ मुकताग्रह ८९ लेखौ ।
पंखाळौ ९० अै गीत परेखौ ॥
वसंतरमण ९१ आद कव वतावै ।
गीत निनांण नांम गिणावै ॥
सुणिया दीठा जिके सखीजै ।
विण दीठा किण भांत वदीजै ॥
रांम सुजस भणतां रघुराई ।
देसी असुधां सुध दिखाई ॥ ४८

अथ गीत वरण्या तत्रादि वसंतरमणी नांमा गीत लछ्रण

दूहौ

आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखांण ।
अंत भगण जिण गीतनं, वसंतरमणि बखांण ॥ ४९

अथ गीत वसंतरमणी नांम सावझड़ौ उदाहरण

गीत

कर कर आदमें हिक नगण सुभंकर ।
धुर उगणीस मत्त नहचै धर ॥
बे लघु होय तुकंत बराबर ।
सुसबद रांम कहै मझ सुंदर ॥
गीत वसंत रमण किव गावत ।
सोळह पद-प्रत मात सुभावत ॥
पात जकौ जग सोभा पावत ।
रच सावझड़ौ रांम रिझावत ॥
मांझ रदा भासै कौसत-मण ।
भुज आजांन आसुरां भांजण ॥
वण भ्रगु लात उवर विसतीरण ।
तण दासरथ धनौ जन तारण ॥
साझै पय बंदगी सुरेसर ।
जस प्रभणै अह सिंभ दुजेसर ॥

५०. हिक–एक । सुभंकर–श्रेष्ठ । धुर–प्रथम, प्रारम्भमें । मत्त–मात्रा, कला । नहचै–निश्चय । सुसबद–यश, कीर्ति । मझ–मध्य, में । किव–कवि । गावत–वर्णन करता है । पद-प्रत–प्रतिपद, चरण । सुभावत–सुन्दर लगती है । जकौ–वह जो । सोभा–कीर्ति । पावत–प्राप्त करता है । रिझावत–प्रसन्न करता है । कौसत-मण (कौस्तुभमणि)–पुराणानुसार एक रत्न जो समुद्र-मंथनके समय मिला था और जिसको विष्णु अपने वक्ष-स्थल पर धारण करते हैं । आसुर–असुर राक्षस । भांजण–नाश करनेको, नाश करने वाला । तण (तनय)–पुत्र । धनौ–धन्य-धन्य । जन–भक्त । तारण–उद्धार करने वाला । साझै–करते हैं । पय–चरण । बंदगी–सेवा, टहल । सुरेसर–इन्द्र । प्रभणै–वर्णन करते हैं । अह–शेषनाग । सिंभ–शंभु, महादेव । दुजेसर–द्विजेश्वर, महर्षि ।

'किसन' कहै कर जोड़ कवेसर ।
नमौ रांम रघुवंस नरेसर ॥ ५०

अथ मृणाळ नांम गीत सावझड़ौ लछण

दूहौ

आद चरण अट्ठार मत, सोळह अवर सचाळ ।
जांण सगण तुक अंत जिण, मुण सौ गीत मुणाळ ॥ ५१

अथ मुणाल नांम गीत उदाहरण

धैधींगर कदम आवळा धरतौ ।
झड़ वरसात जेम मद झरतौ ॥
सुज आयौ जळ पीवण सरतौ ।
करणी जूथ बीच सुख करतौ ॥
मैंगळ कुटंब सहत उनमतरै ।
आब हिलोळ चोळ की अतरै ॥
धूंम सुणै चख आग धकतरै ।
जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै ॥
चख मिळ बिहूं हुवौ चख-चड़बौ ।
जोम अथाग जाग उर जुड़बौ ॥

---

५०. कवेसर—कवीश्वर ।

५१. आद—आदि, प्रथम । अट्ठार—अठारह । मत—मात्रा । अवर—अपर, अन्य । जिण—जिस । मुण—कह ।

५२. धैधींगर—हाथी । आवळा—विकट । धरतौ—चरण रखता हुआ । झड़—छोटी-छोटी बूंदकी निरंतर होने वाली वर्षा । जेम—जैसे । झरतौ—टपकता हुआ, श्रवता हुआ । सुज—वह । सरतौ (सरिता)—नदी । करणी—हथनी । जूथ—यूथ, झुण्ड । करतौ—करता हुआ । मैंगळ—हाथी । सहत—सहित । उनमत—उन्मत्त, मस्त । आब—जल । हिलोळ—विलोड़ित कर । चोळ—क्रीड़ा । अतरै—इतनेमें । धूम—कोलाहल । चख (चक्षु)—नेत्र । आग—अग्नि । धकतरै—प्रज्वलित होते हैं । जाजुळ—भयंकर । जतरै—जितनेमें । बिहूं—दोनों । चख-चड़बौ—कोपसे लाल नेत्र । जोम—जोश, आवेग । अथाग—अपार । जुड़बौ—भिड़ना, टक्कर लेना ।

बिहुंवां नह सूधौ बाहुड़बौ ।
भारथ हुवौ ग्राह गज भड़बौ ॥
कर प्रब सहंस बरस भारथकौ ।
जोर टूट बीछड़बौ जुथकौ ॥
सुज बळ बध जळ ग्राह समथकौ ।
थळचारी जिण हूं गज विथकौ ॥
चौवळ ग्राह तंत गज चरणां ।
जकड़ डबोवण खंच जबरणां ॥
बे आंगुळ जळ सूंड उबरणा ।
करी करी हरिहूंता करणा ॥
दीन पुकार स्रवण सुण हसती ।
तज कमळा पाळा करत सती ॥
आतुर चक्र ग्राह हण असती ।
हरि ग्रह हाथ तारियौ हसती ॥
असरण दीन दुखित ऊपरौ ।
धू धारण झेलौ गिरधररौ ॥
कीजंतां ऊपर निज कररौ ।
विरद हुवौ जुग जुग रघुबररौ ॥ ५२

---

५२. बिहुवां–दोनों। सूधौ–सीधा। बाहुड़बौ–वापिस मुड़ना, वापिस आना या होना। भारथ–युद्ध। भड़बौ–टक्कर, टक्कर लेना। प्रब– पर्व। बीछड़बौ–दूर होना। जुथ (यूथ)–झुण्ड। समथ–समर्थ। थळचारी–स्थलचारी। जिण–जिस। हूं–से। विथकौ–व्यथा-पूर्ण, पीड़ित, दुखी। चौवळ–चारों ओर। तंत–तंतु। जकड़–बांध कर। डबोवण–डुबानेको। खंच–खींच कर। जबरणां–जबरदस्तीसे, बलात्। बे (द्वे)–दो। आंगुळ–उंगली। उबरणा–बची! करी–हाथी। करी–की। हरिहूंता–ईश्वरसे। करणा (करुणा)–आर्त, पुकार। दीन–आर्त, करुणापूर्ण। स्रवण–कान। हसती–हाथीकी। कमळा–लक्ष्मी। पाळा–पैदल। आतुर–तेज। हण–मार कर। असती–दुष्ट। धू-धारण–निश्चय। झेलौ–सहारा, मदद।

दूहौ

धुर उगणीसह कळहधर, अन तुक सोळह ठाह ।
गण जिण अंतह करण गण, सौ जयवंत सराह ॥ ५३

अथ गीत जयवंत सावझड़ौ उदाहरण

गीत

तीकम पाळगर जन देवतरौ सौ ।
रात दिनां मुख नांम ररौ सौ ॥
समण त्रास कीनास सरौ सौ ।
भारी राघवतणौ भरोसौ ॥
जोय ग्रीध कपि कारजि सारै ।
दे द्रग सबरी गौहद सारै ॥
थं विसवास राख मन थारै ।
सांमळियौ जन नौज विसारै ॥
गाढौ प्रसन रहै जस गायां ।
बाधारै ईजत बिरदायां ॥
ऊगै नहीं अरक दिन आयां ।
सीताबर भूलै सरणायां ॥
पर प्रहळादतणी प्रतपाळी ।
वळ धू अखी कियौ वनमाळी ॥

---

५३. धुर–प्रथम । उगणीसह–उन्नीस । कळह–मात्रा, कला । अन–अन्य, दूसरी । ठाह–रख । करण–दो दीर्घ मात्राका नाम । सराह–प्रशंसा कर ।

५४. तीकम (त्रिविक्रम)–विष्णु, ईश्वर । पाळगर–पालनकर्ता । जन–भक्त । देवतरौ–देवताका । ररौ–र अक्षर जो राम नाममें प्रथम आता है । भारी–बड़ा, महान । राघवतणौ–रामचंद्रका । भरोसौ–विश्वास । सबरी–भिल्लनी । गौहद–गुह नामक निषादराज जो रामका भक्त था । थूं–तू । विसवास–विश्वास । थारै–तेरे । सामळियौ–श्रीकृष्ण । नौज–नहीं । विसारै–भूलता है, विस्मरण करता है । गाढौ–गहरा, पूर्ण । प्रसन–प्रसन्न, खुश । अरक (अर्क)–सूर्य । सीताबर–श्रीरामचंद्र । सरणायां–शरणमें आए हुए, भक्त । पर–प्रण, प्रतिष्ठा, मान, इज्जत । प्रहळादतणी–भक्त प्रह्लादकी । प्रतपाळी–पालनकी, निभाई । वळ–दैत्यराज वलि । धू–भक्त ध्रुव । अखी–अमर । वनमाळी–श्रीकृष्ण ।

तीकम　करै　तीसरी　ताळी ।
वाहर　नाथ　अनाथां　वाळी ॥ ५४

अथ वड़ा सांणौर आद सप्त गीत निरूपण

अथ गीत वड़ा सांणौर लछ्रण

चौपई

धुर तुक कळ तेवीसह धार, विखम वीस सम सतर विचार ।
लघु गुरु मोहर क दु गुरु मिळाय, सौ प्रहास सांणौर सुभाय ॥ ५५
वीस विखम तुक सम दस आठ, पात गुरु लघु मोहरै पाठ ।
समभ्र सुध सांणौर सकोय, जिण मोहरै गुरु लघु कवि जोय ॥ ५६
सुज मिळ सुध प्रहास सुजांण, वडौ जिकौ सांणौर वखांण ॥ ५७

वारता

कठे'क लघु तुकंत दवाळौ कठे'क गुरु तुकत दवाळौ आवै । सुद्ध नै प्रहास सांणोररा दवाळा भेळा आवै सौ वडौ सांणोर कहावै ।

अथ गीत वडौ सांणौर उदाहरण

गीत

करी चूर कुळ सुभावहंूत सादूळ कह ,
विधु नखित्र सोभ भरपूर वरसै ।
कमळ-भवहंूत कहजै दूजां नूर कुळ ,
सूर कुळ दासरथहंूत सरसै ॥

---

५४. तीकम (त्रिविक्रम)–श्रीकृष्ण, विष्णु । वाहर–रक्षा ।

५५. निरूपण–विवेचन, निर्णय, विचार । धुर–प्रथम, पहिले । तुक–पद्यका चरण । कळ–मात्रा । तेवीसह–२३ । धार–रख । विखम–विषम । सतर–सतरह ।

५६. मोहरै–पद्यके द्वितीय और चतुर्थ चरणोंके अंतिम अक्षरोंका मेल ।

५७. सकोय–सब । कठे'क–कहीं ।

५८. करी–हाथी । चूर–ध्वंश, नाश । सार्दूळ (सार्दूल)–सिंह । विधु–चंद्रमा । नखित्र–नक्षत्र । सोभ–कांति, दीप्ति । कमळ-भवहूंत–ब्रह्मासे । दूजां (द्विजां)–ब्राह्मणों । सूर कुळ–सूर्यवंश, वीर पुरुषोंका वंश । दासरथहूंत–श्रीरामचंद्रसे । सरसै–शोभा पाता है ।

सिधां-सुत गंग अणभंग साहसीयां ,
मुज अजन सिधा यर नसियां साथ ।
हर दियै आब थट सिधां आहंसियां ,
निपट रवि-वंसियां आब रघुनाथ ॥
सह तरां रूप कळविरछ अखै सकळ ,
थरू दुत मेर सिखरां अथाघौ ।
नगां आकरतणौ रूपहर मणी निज ,
रूप कुळ दिवाकरतणौ राघौ ॥
सुरा-सुर नाग नर अडग राखण सरण ,
धरण धानंख दुखहरण सुख-धांम ।
सूर कु हेळक दुत करण अचरज किसं ,
राज त्रिभुवण प्रभा करण रघु-रांम ॥ ५८

अथ सुद्ध सांणौर गीत लछण

दूहा

तेवीसह मत पहल तुक, बी अठार ती बीस ।
चौथी तुक अठार चव, लघु गुरु अंत लहीस ॥ ५९
बीस अठारह क्रम अवर, दूहां मांझळ दाख ।
गीत सुध सांणौर गण, सौ अह-पिंगळ साख ॥ ६०

वारता

सुध सांणौररै पैली तुक मात्रा २३, तुक दूजी मात्रा १९, तुक तीजी मात्रा बीस, तुक चौथी मात्रा १८, पछै दूजा साराई दूहांरी पैली तुक मात्रा बीस, दूजी तुक मात्रा १८ होवै ।

---

५८. निपट–बहुत, अधिक । आब–कांति, दीप्ति । सह–सब । तरां–तरुओं, वृक्षों । कळविरछ–कल्पवृक्ष । अखै–कहते हैं । सकळ–सब । मेर–सुमेरु पर्वत । अथाघौ–वह जिसकी सीमाका थाह न हो, बहुत, बहुत ऊंचा । दिवाकरतणौ–सूर्यका, भानुका । राघौ–श्रीरामचंद्र भगवान । अचरज–आश्चर्य । प्रभा–कांति, दीप्ति ।
५९. मत–मात्रा । पहल–प्रथम । बी (द्वि)–दूसरी । ती–तीसरी । चव–कह ।
६०. दूहां–गीत छंदके चार चरणोंका समूह । मांझळ–मध्य, में । दाख–कह । अह-पिंगळ–शेषनाग । साख–साक्षी ।

गीत सुध सांणौर उदाहरण (गीत जात सतसर)

गीत

अडग तेज अणथघ सरद ध्यांन स्रु ति आसती ,
नीम वर कार कळ जोग जप नांम ।
थिर प्रभा नीर पय यंद बुध नीत थट ,
मेर रवि समंद चंद भव ब्रहम रांम ॥
भूमंडळ पाज नभ सिखर पुर उवर भव ,
गुरत दुत गहर मुद कोप छिब गाथ ।
रिख रिखी रिख उदध ब्रिहम कज दासरथ ,
नाग खग दध हरी हर बिरंचनाथ ॥
देव चक्र हंस दध सिद्ध दुज जन अनंद ,
स्रंग ग्रह कंभ गण विप्र अवनीस ।
सद्रढ आतप अथग हेम सिध मेघ सत ,
अद्र हरि सिंध निसय सिव दुहित ईस ॥
विवुध कंज मीन तर भूप जग सेवगा ,
अभै मुद सुख अनंद वर अखय आथ ।
हेम गिर भांण दध चंद स्रब ब्रहम ,
हूं निज जनां पाळगर अधिक रघुनाथ ॥ ६१

अथ अरथ

सुध सांणौर गीतरै आदरी तुक मात्रा २३ तेवीस होवै । तुक दूजी मात्रा १८ अठारै होवै । तुक तीजी मात्रा २० बीस होवै । तुक चौथी मात्रा १८ अठारै होवै । गीतके अंतमें लघु होवै, और दूहां मात्रा पैली तुककी मात्रा २०, तुक दूजी मात्रा १८, तुक तीजी मात्रा २०, तुक चौथी मात्रा १८ ईं प्रकार होवै सौ सुध सांणौर गीत कहीजै । यौ गीतकौ संचौ अब गीतकी सतसर जात छै जींसूं अरथ लखां छां ।

---

६१. सतसर–वड़ौ सांणौर, प्रहास सांणौर आदि गीतोंकी संज्ञा विशेष । हूं–से ।

पहला दूहाकौ अरथ

सुमेर १। सूरच २। समुद्र ३। चंद्रमा ४। सिव ५। ब्रह्मा ६। हर सातमा। श्रीरांमचंद्र १। सुमेरकौ अडगपणौ १। सूरचकौ सतेजपणौ २। समुद्रकौ अथगपणौ ३। चंद्रमाकौ सीतळपणौ ४। सिवकौ ध्यांनपणौ ५। ब्रह्मांकौ वेद-धारणपणौ ६। श्रीरांमचंद्रकौ आस्तीकपणौ ७। १ सुमेरकी नीम द्रढ। सुरजकौ वर द्रढ। समंदकी कार द्रढ। चंद्रमाकी कळा द्रढ। सिवकौ जोग द्रढ। ब्रह्माकौ तप द्रढ। रांमचंद्रकौ नांम नहचळ २। सुमेर २। सुमर थिरपणांनै धारण करै। सूरच प्रभानै धारै। समुद्र जळनै धारै। चंद्रमा अम्रत धारै। सिव चंद्रमा धारै। ब्रह्मां बुध धारै। श्रीरांमचंद्र नीत धारै। ३

दूजा दूहाकौ अरथ

सुमेर जमी पर रहै। सूरच मंडळमें रहै। समंद पाजमें। चंद्रमा आसमांनमें रहै। सिव सिखर कैळास रहै। ब्रह्मा ब्रह्मलोकमें रहै। श्री रांमचंद्र सिवका ह्रदामें रहै।१। सुमेरकी गुरता। सूरजकी दुती। समंदकौ गहरापणौ। चंद्रमाकौ आणंदपणौ। सिवकौ कोप। ब्रह्माकी खिमा। रांमचंद्रजीकी जस गाथा। सुमेरकौ पिता कस्यप रिखी। सूरचकौ पिता कस्यप। समंदकौ पिता कस्यप। चंद्रमाकौ पिता समंद। सिवकौ पिता ब्रह्मा। ब्रह्माकौ पिता कमळ। रांमचंद्रजीकौ पिता राजा दसरथ। ३

तीजा दूहाकौ अरथ

सुमेर देवतांनै सुखदाई। सूरच चकवानै। समंद हंसांनै। चंद्रमा कुंमोदनीनै। सिव सिधांनै। ब्रह्मा ब्राह्मणांनै। स्री रांमचंद्र संतांनै सुखदाई।१। सुमेर परवतांकौ राजा। सूरच ग्रहांकौ राजा। समुद्र जळकौ। चंद्रमा रिखभकहतां तारागण छत्रांकौ। सिव गणांकौ। ब्रह्मा द्विजांकौ। स्री रांमचंद्र राजांकौ राजा।२। सुमेरकौ सुद्रढपणौ। सूरचकौ तप। समुद्रकौ अथगपणौ। चंद्रमाकौ सीतळपणौ। सिवकौ सिद्धपणौ। ब्रह्माकौ मेधावुधपणौ। स्री रांमचंद्रकौ सतपणौ। ३

---

१. ब्रहमा–ब्रह्मा। हर–और। अडगपणौ–स्थिरत्व या अटलत्व। तेजपणौ–तेजत्व। अथगपणौ–असीम, गहराई। सीतळपणौ–शीतलता, शैत्य। आस्तीकपणौ–आस्तिकता। कार–मर्यादा। ब्रहमाकौ–ब्रह्माका। नहचळ–निश्चल, अटल। थिरपणा–स्थिरत्व। नीत–नीति।

२. पाज–मर्यादा, सीमा। ह्रदा–हृदय। गहरापणौ–गहराई। आणंदपणौ–आनंद। खिमा–क्षमा।

३. सुखदाई–सुख देने वाला। ब्रांह्मणांनै–ब्राह्मणोंको।

चौथा दूहाकौ अरथ

सुमेर विबुध देवतांनै अभै दै । सूरज कमळांनै मोद दै । समुद्र मीनांनै सुख दै । चंद्रमा रूंख अठार भार वनास्पतीका रुंखांनै आणंद दै । सिव राजानै बर दै । ब्रहमा जगतनै अखै बर दै । स्री रांमचंद्र संतांनै आथ दै । दोई तुकांकौ अरथ भेळौ ।२। सुमेर १ । सूरज २ । समंद ३ । चंद्रमा ४ । सिव ५ । ब्रहमा ६ । यां छही देवतां दचै स्री रांमचंद्रमें संतांसूं दीनदयाळपणौ सरणाई साधारपणौ अधिक । इति अरथ । ४

अथ गीत दूजा प्रहास सांणौररौ लछण

दूहौ

धुर तुक मत वेवीस धर, सतर बीस सतरास्य ।
वीस सतर गुरु अंत बे, सौ जांणजै प्रहास ॥ ६२

अरथ

पैली तुक मात्रा २३ । दूजी तुक मात्रा १७ । तीजी तुक मात्रा २० । चौथी तुक मात्रा १७ । तुकांत दोय गुरु अखिर आवै, पछै सारा दूहां मात्रा पैली तुक २० । दूजी तुक मात्रा १७ । तीजी तुक मात्रा २० । चौथी तुक मात्रा १७ होवै जिण गीतरौ नांम प्रहास सांणौर कहै छै ।

अथ गीत प्रहास सांणौर उदाहरण

थांणबंध बेलियौ जिणमें आद जथारौ वरण छै।

गीत

सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध ,
मौज किव वखांणै चंदनांमा ।
बुध गिरा राम हथवाह रिम वखांणै ,
वखांणै काछद्रढ़पणौ बांमा ॥

---

४. विवुध–देवता । अभै–अभय, निर्भयता । दै–देता है । मोद–आनंद । मीनां–मच्छियों । अखै–अक्षय । आथ–धन, दौलत । भेळौ–साथ । यां–इन । दचै–अपेक्षा । सरणाई-साधारपणौ–शरणमें आए हुएकी रक्षा करनेका कर्त्तव्य ।

६३. मौज–दान । किव–कवि । चंदनांमा–यश, कीर्ति । बुध–पंडित । गिरा–वाणी । हथवाह–शस्त्र-प्रहार । रिम–शत्रु । वखांणै–प्रशंसा करते हैं । काछदृढ़–जितेन्द्रियता, संयमशीलता । बांमा–स्त्री ।

कोपियां बाळ सुगरीव छंडे कळह ,
घरोघर भटकियौ विपत घायौ ।
पांण ग्रह रांम कहि मित्र अपणावतां ,
पय सरण आवतां राज पायौ ॥
बन पिता हुकम जुत सिया चवदह बरस ,
एक आसण सयन जोग जगीयौ ।
धण बिनां चलै मन रांम सह त्रिया धन ,
द्रढ मदन ताप मन निकूं डिगीयौ ॥
अंजसै कनक भूखण पहर नृप अवर ,
कनकमें विधाता त्रकुट कीधी ।
लहर हिक सरण हित भभीखण रंक लख ,
दांन गढ लंक अणसंक दीधी ॥
स्रुत सम्रत छंद खट पंच नव संपूरण ,
भेदगर च्यार दस बोध भाळी ।
अरथ जुत बोलबौ हेळ बीजा 'अजा' ,
वेळ अम्रततणा उदधवाळी ॥
दासरथ सुजस नव खंड जाहर दुभ्झल ,
करां भुजदंड वाखांण केहा ।

---

६३. बाळ–बालि बंदर । कळह–युद्ध । घरोघर–प्रत्येक घर । भटकियौ–भ्रमण किया । घायौ–पीड़ित, दुखी । पांण–हाथ । अपणावतां–अपना बनाने पर । पय (पाद)–चरण । पायौ–प्राप्त किया । जुत–युक्त । सिया–सीता । सयन–सोना । धण–अर्द्धांगिनी । सह–साथ । त्रिया–स्त्री । मदन–कामदेव । निकूं–नहीं । अंजसै–गर्व करते हैं । कनक–स्वर्ण, सोना । भूखण–आभूषण । अवर–अन्य । विधाता–ब्रह्मा । त्रिकुट–लंका स्थित एक पर्वत अथवा लंकाका एक नाम । कीधी–की, किया । भभीखण–विभीषण । रंक–गरीब । लख–देख कर । अणसंक–निशंक । दीधी–दी । स्रुत (श्रुति)–वेद । सम्रत–स्मृति । भेदगर–भेद जानने वाला, भेदका पता लगाने वाला । बोध–विद्या । भाळी–देखी । वेळ–तरंग, लहर । उदध (उदधि)–सागर । दासरथ–श्रीरामचंद्र भगवान । जाहर–जाहिर । दुभ्झळ–वीर । केहा–कैसा ।

जुधां टंकारिया धनख राघव ज तैं ।
जारिया दुसह दहकंध जेहा ॥
पाय वय जोर बुध रूप नूपता प्रसिध ,
नयण लख छटा नाता अनाता ।
जांनुकी विना तरणी अवर जिकांनं ू,
मुणी बेटी वहन काय माता ॥
देखतां छहं ू बिध 'सगर' 'हरचंद' दुवा ,
सौगुणौ अधिक अहनिस सुभावै ।
रांम असरण सरण भूप गुण राजरां ,
पार सीतारमण कमण पावै ॥ ६३

गीत छोटा सांणौर लछण

दूहा

कहजै गुरु मोहरा कठै, वण कठैक लघुवंत ।
सुज छोटौ सांणौर सौ, कवि मत ग्रंथ कहंत ॥ ६४
भेद च्यार जिणरा भणौ, आद वेलियौ अक्ख ।
कवी सोहणौ २ खुड़द ३ कह, वळ जांगड़ौ ४ विसक्ख॥ ६५

अथ गीत मिस्र वेलिया लछण

दूहौ

समिळ वेलियौ सोहणौ, सझ फिर खुड़द समेळ ।
मिस्र वेलियौ कवि मुणौ, भळ जांगड़ौ न भेळ ॥ ६६

---

६३. टंकारिया–धनुषकी प्रत्यंचा चढ़ाई या प्रत्यंचाकी ध्वनि की। दुसह–शत्रु, दुष्ट । दहकंध–रावण। जेहा–जैसा । छटा–शोभा, सुन्दरता । जांनुकी–जनक पुत्री, सीता । अवर–अन्य, दूसरी । जिकांनूं–जिनको । मुणी–कही । काय–या, अथवा । सगर–सूर्यवंशी राजा सगर । हरचंद–सूर्यवंशी राजा हरिश्चंद्र । दुवा–दूसरा, वंशज । अहनिस–रातदिन । कमण–कौन । पावै–प्राप्त करता है ।

६४. कहजै–कहिए । मोहरा–छंदके द्वितीय तथा चतुर्थ चरणके अन्तिम शब्दों या अक्षरोंका परस्पर मेल, तुकबंदी । कहंत–कहते हैं ।

६५. वळ–फिर, और ।

६६. समिळ–साथ । मुणै–कहता है । भळ–फिर । भेळ–मिला, मिश्रित कर ।

अरथ

वेलियौ १। सोहणौ २। खुड़द ३। तीन ही गीत भेळा वणै जिण गीतरौ नांम मिस्र वेलियौ कहीजै। यां भेळौ जांगड़ारौ दूहो वणै नहीं नै वणै तौ जात-विरोध दोस कहीजै। यूं सारौ समझ लेणौ।

अथ गीत मिस्र वेलियौ उदाहरण

गीत

बूडंतौ सरवर फील उबारे,
गुणतै बेद उचारै गाथ।
धना नांम दे सदना उधारे,
नेक जनां तारे रघुनाथ॥
गणका अजामेळ सवरीगण,
दुख अघ ओघ मिटाय दिया।
किता अनाथ सुनाथ क्रपा कर,
कोसळराज-कुंवार किया॥
सीता हरण भभीखण रिवसुत,
लख जटाय कोसिक मिथळेस।
हेर हेर लज रखी हुलासां,
धणियप कर दासां अवधेस॥
रख जन अभै त्रास जम हरणा,
सुज ऊबरणा जगत सहै।

६७. **बूडंतौ**–डूबता हुआ। **सरवर**–सरोवर, तालाब। **फील** (सं० पील)–हाथी। **उबारे**–बचाया। **धना**–एक हरि-भक्तका नाम। **नांमदे**–एक भक्तका नाम। **सदन**–घर। **गणका**–एक वेश्या जो ईश्वरकी परम भक्त थी। **अजामेळ**–अजामिल नामक एक कन्नौज निवासी ब्राह्मण जिसने आजीवन न तो कोई पुण्य कार्य किया और न ईश्वराधन। इसके पुत्रका नाम नारायण था। कहते हैं कि मृत्युके समय इसने अपने पुत्रको नाम लेकर बुलाया जो कि भगवानके नामका पर्याय था और इसीसे इसकी सद्गति हो गई। **सवरी**–शबरी, भिल्लनी जो राम-भक्त थी। **अघ**–पाप। **ओघ**–समूह। **किता**–कितने। **भभीखण**–विभीषण। **रिवसुत** (रविसुत)–सुग्रीव। **जटाय**–जटायु नामक गिद्ध। **कोसिक**–विश्वामित्र। **मिथळेस**–राजा जनक। **धणियप**–स्वामित्व, कृपा, महरबानी। **त्रास**–भय।

संपी सरम चरण तौ सरणा ,
करणानिध किव 'किसन' कहै ॥ ६७

गीत वेलिया सांणौर लछण

दूहा

मुण धुर तुक अठार मत, बीजी पनरह बेख ।
तीजी सोळह चतुरथी, पनरह मता पेख ॥ ६८
सोळह पनरह अन दुहां, गुरु लघु अंत बखांण ।
कहै ऐम सुकवी सकळ, जिकौ वेलियौ जांण ॥ ६९

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा १८ होय, दूजी तुक मात्रा १५ होय, तीजी तुक मात्रा १६ होय, चौथी तुक मात्रा १५ होय । दूजा सारां दूहां मात्रा १६।१५।१६।१५। तुकके अंत आद गुरु अंत लघु आवै, जिण गीतरौ नांम वेलियौ सांणौर कहीजै ।

अथ गीत वेलिया सांणौररौ उदाहरण

गीत

ओयण जे रांम स्रीया नित अरचै ,
सुज चरणौ सिव ब्रहम सकाज ।
जग अघ हरण सुरसुरी जांमी ,
राज तणा चरणां रघुराज ॥
धाय मुनेस सेस सिर धारै ,
निज सिर जिकां सुरेस नमाय ।

---

६७. करणानिध–करुणानिधि । किव–कवि ।

६८. मुण–कह । धुर–प्रथम । अठार–अठारह । मत–मात्रा । बीजी–दूसरी । बेख–देख । तीजी–तीसरी । चतुरथी–चौथी । मता–मात्रा । पेख–देख ।

६९. अन–अन्य । बखांण–कह ।

७०. ओयण–चरण । स्रीया (श्री)–लक्ष्मी, सीता । अरचै–पूजा करती है । हरण–मिटाने वाला । सुरसुरी–गंगा नदी । जांमी–पिता । मुनेस (मुनीश)–महर्षि । सुरेस–इन्द्र ।

जोतसरुपतणा आगर जस ,
पोत रूप भव सागर पाय ॥
गायब अरच चींतव सुख गेहां ,
मत छोडै नेहा मतमंद ।
जग दुख हरण सरण जग जेहा ,
ऐहा रांम चरण अरव्यंद ॥
नाथ अनाथ दासरथ नंदण ,
स्री रघुनाथ 'किसन' साधार ।
कदम पखी अपखी ज्यां काळा ,
अबखी पुळवाळा आधार ॥ ७०

अथ चौथा सूहणा सांणौरकौ लछण

दूहौ

धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद लघु गुरु मोहर, जांण सोहणौ जेण ॥ ७१

अरथ

धुर कहतां पहली तुक मात्रा १८ अठारै होवै । दूजो तुक मात्रा १४ चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा १६ सोळै होवै । चौथी तुक मात्रा १४ चवदै होवै । पछै दूजा दूहा मात्रा १६ सोळै १४ चवदै ई क्रम होवै जींके आद लघु अंत गुरु तुकांत होवै जीं गीतकौ नांम सोहणौ सांणौर कहै छै ।

---

७०. जोतसरूपतणा–ज्योतिस्वरूपका । आगर–घर । पोत–नौका, नाव । भव–संसार । अरच–पूजा कर । चींतव–स्मरण कर । नेहा–स्नेह । मतमंद (मतिमंद)–मूर्ख । हरण–हरने वाला । जेहा–जैसा । ऐहा–ऐसा । अरव्यंद (अरविंद)–कमल । दासरथ–दसरथ । नंदण–पुत्र । साधार–रक्षक, सहारा । पखी–वह जिसका कोई पक्ष करने वाला हो । अपखी–वह जिसका कोई पक्ष करने वाला न हो । अबखी–विषम, कठिन । पुळ–समय ।

७१. धुर–प्रथम । तुक–पद्यका चरण । मह–में । अठार–अठारह । मत–मात्रा । चवद–चौदह । चवदेण–चौदहसे । मोहर–पद्यके द्वितीय और चतुर्थ चरणका परस्पर मेल । जेण–जिससे । दूजी–दूसरी । तीजी–तीसरी । पछै–पश्चात । दूजा–दूसरा । ई–इस । जींके–जिसके । जीं–जिस ।

अथ सोहणा गीत उदाहरण

गीत

पंचाळी बेर बधायौ पल्लव करतां टेर सिहाय करी ।
समरथ भीखम पैज साहियौ हाथ चरण रथतणौ हरी ।।
तैं मुख कमळ सदांमा तंदुळ पाया बिलकुल भरे पुसी ।
बिदुरतणी भगती हित बाधा खाधा केळा छोत खुसी ।।
गोपी चित रचियौ गोब्यंद ब्रंदावन नाचियौ बळी ।
धरियौ पद चौरस गिरधारी गौरस कारण गळी गळी ।।
समरथ विरुद लोक त्रहुं सांमी पुणां भांमी समथ्थपणौ ।
जन सादवियौ अंतरजांमी घणनांमी आसनौ घणौ ।। ७२

अथ पांचमा गीत पूणिया सांणौर नै जांगड़ा सांणौर लछण

दूहौ

दै मत्ता धुर आठ दस, बार सोळ मत बार ।
गिण तुकंत जिण दोय गुरु, औ जांगड़ौ उचार ।। ७३

अरथ

जिण गीतरै पैहली तुक मात्रा अठारै होय । तुक दूजी मात्रा बारै होय । तुक तीजी मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा बारै होय । पछै दूजा दूहां मात्रा तुक पैहली सोळह । तुक दूजी मात्रा बारै । तुक तीजी मात्रा सोळै । तुक चौथी मात्रा बारै । सोळै बारै ईं क्रमसूं होय । तुकांतमें दोय गुरु आखिर आवै जीं गीतकौ नांम पूणियौ सांणौर कहीजै नै यण पूणियानै जांगड़ौ पण कहै छै ।

---

७२. पंचाळी–द्रोपदी । बेर–समय । बधायौ–वढ़ाया । पल्लव–चीर, अंचल । टेर–पुकार । सिहाय–सहायता । भीखम–भीष्मपितामह । पैंज–प्रण । साहियौ–धारण किया । सदांमा–सुदामा । तंदुळ–चावल । पाया–भोजन किये, खाये । पुसी–पसर । हित–लिये । खाधा–खाये । छोत–छिलका । रचियौ–रंग गया, लीन हुआ । गोब्यंद–गोविंद । बळी–फिर । गोरस–दूध, दही । कारण–लिये । गळी–वीथि । पुणां–कहता हूं । भांमी–न्योछावर, बलैया । समथ्थपणौ–समर्थत्व । सादवियौ–पुकारा, दुखमें याद किया । घणनांमी–जिसके अनेक नाम हों । आसनौ–आश्रय, सहारा । घणौ–वहुत, अधिक ।

७३. दै–देते हैं । मत्ता–मात्रा ! धुर–प्रथम, प्रारंभमें । बार–बारह । सोळ–सोलह । मत–मात्रा । बार–बारह ।

अथ गीत पूणियौ तथा जांगड़ौ सांणौर उदाहरण

गीत

कैटभ मधु कुंभ कबंध कचरिया, संख संभ सारीसै ।
खळ अवगाढ अनेकां खाया, दाढ पीसतौ दीसै ॥
रांमण इंद्रजीत खर दूखर, गंजे कूंण गिणावै ।
खांत लगे केता खळ खाधा, वळै दांत वहजावै ॥
हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा के फिर खासी ।
तोपण भूख न गी तिण ताबौ, बाबौ खाय उबासी ॥
प्रसण मार रख संत सहीपण, राघव जीपण राड़ा ।
निज हेकल धापियौ न दीसै, जे खळ पीसै जाड़ा ॥ ७४

अथ छठौ गीत सोरठियौ सांणौर जींकौ लछण

दूहौ

मत अठार धुर तुक अवर, दस सोळह दस देह ।
सोळह दस अन अंत लघु, जप सोरठियौ जेह ॥ ७५

---

७४. कैटभ–मधु नामक दैत्यका छोटा भाई जिसका विष्णुने संहार किया । मधु–कैटभ नामक दैत्यका अग्रज जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था । कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण । कबंध–एक असुरका नाम जिसका संहार रामचंद्रजीने किया था । कचरिया–ध्वंश किये । संख–एक असुरका नाम । संभ–एक असुरका नाम । सारीसै–समान । अवगाढ–शक्तिशाली । खाया–संहार किये, ध्वंश किये । दाढ पीसतौ–क्रोधमें दांतोंको कटकटाता हुआ, दांत पीसता हुआ । रांमण–रावण । इंद्रजीत–रावणका पुत्र मेघनाद । खर–एक राक्षसका नाम जो रावण तथा सूर्पणखाका भाई कहा जाता है । दूखर–एक राक्षसका नाम । गंजे–नाश किये, पराजित किये । कूंण–कौन । गिणावै–गिना सकता है । खांत–ध्यान । केता–कितने । खाधा–नाश किये, ध्वंश किये । वळै–फिर । दांत वहजावै–दाँतोंको क्रोधमें टकराते हुए ध्वनि करता है, क्रोध प्रकट करता है । हरणकस्यप–हिरण्यकशिपु, एक दैत्यराज जो प्रह्लादका पिता था । हैमुख–हयग्रीव भागवतके अनुसार एक विष्णुके अवतारका नाम, इनका वध विष्णुने मच्छावतार लेकर किया और वेदोंका उद्धार किया । हरणायख–हिरण्याक्षक नामक असुर जो हिरण्यकशिपुका भाई था । के–कई । खासी–ध्वंश करेगा, नाश करेगा । तोपण–तो भी । बाबौ–ईश्वर । उबासी–जंभाई । प्रसण–पिशुन, दुष्ट । रख–ऋषि । संत–साधु । सही–कुशल । जीपण–जीतने वाला । राड़ा–युद्ध । हेकल–एक, अकेला । धापियौ–अघाया । पीसै जाड़ा–क्रोधमें दाँत टकराता है ।

७५. मत–मात्रा । अठार–अठारह । धुर–प्रथम । देह–दे, दीजिए । अन–अन्य । जेह–जिसको ।

अरथ

जिणरै आदरी तुक मात्रा अठारै होय, तुक दूजी मात्रा दस होय। तुक तीजी मात्रा सोळह होय। तुक चौथी मात्रा दस होय। दूजा साराई दूहांमें पैली तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा दस। इण क्रम होवै। तुकंत लघु आखिर होवै जीं गीतकौ नांम सोरठियौ सांणौर कहीजै।

अथ गीत सोरठिया सांणौरकौ उदाहरण

गीत सोरठियौ

आलम हाथरौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक।
दिल गहर दीधी सरण हित दत, लहर हेकण लंक॥
भभीखण सरण आय भूधर, महर कर मनमोट।
धुरधमळ व्रवियौ धनख-धारण, कनकवाळौ कोट॥
भयभीत कंपत सीसदस भय, दीन देख निदांन।
अवधेस दाटक दियौ आचां, दुरंग हाटक दांन॥
निरवहण 'किसना' सरम नहचैं, असुर दहण असेस।
सारवा दासां कांम समरथ, निमौ रांम नरेस॥ ७६

अथ सातमौ गीत खुड़द छोटौ सांणौर लछण

दहौ

धुर मत्तां अठार धर, त्रदस सोळ त्रदसेण।
दु लघु अंत सांणौर लघु, जप खुड़द किव जेण॥ ७७

---

७५. **आदरी**–प्रारम्भकी। **दूजी**–दूसरी। **तीजी**–तीसरी। **दूजा**–दूसरे। **साराई**–सब ही। **दूहां**–द्वालों, गीत छंदके चार चरणके समूहों। **इण**–इस। **आखिर**–अक्षर। **जीं**–जिस।

७६. **आलम**–संसार, ईश्वर। **अचरिज**–आश्चर्य। **गहर**–गंभीर। **दीधी**–दे दी। **हेकण**–एक। **भभीखण**–विभीषण। **भूधर**–ईश्वर। **महर**–कृपा। **मन-मोट**–उदार। **धुर-धमळ**–अग्रगामी। **व्रवियौ**–दान दिया। **धनख-धारण**–धनुषधारी, श्रीरामचंद्र भगवान। **कनक**–सोना। **सीसदस**–रावण। **दाटक**–महान। **आचां**–हाथों। **हाटक**–स्वर्ण, सोना। **सारवा**–सफल करनेको, सिद्ध करनेको। **दासां**–भक्तों।

७७. **मता**–मात्रा। **त्रदस**–तेरह। **सोळ**–सोलह। **त्रदसेण**–तेरह। **किव**–कवि। **जेण**–जिस।

ग्ररथ

जींके ग्राद तुक मात्रा ग्रठारै होय। दूजी तुक मात्रा तेरै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा तेरै होय। पछ‌ळां दूहां पैली सोळै मात्रा। पछै तेरै मात्रा, फेरे सोळै, फेर तेरै ईं क्रमसूं होवै। तुकांत दोय लघु होवै जीं गीतकौं नांम छोटौ सांणौर हंसमग कहीजै।

ग्रथ गीत खुड़द सांणौर हंसमग उदाहरण

गीत खुड़द छोटौ सांणौर

स्रीधर स्रीरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण।
व्रज नायक विसवेस विसंभर, घणनांमी ग्राणंदघण॥
नरहर नागनाथ नारायण, गोब्यंद गौप्रिय गोपवर।
धराधीस धानंख गिरधारी, कमळाकंत सकमळकर॥
विमळानन विबुधेस विहारी, संख चक्र धारी सुमण।
भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण॥
नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सयण।
भगत-विछ‌ळ मन महणसुभायक, निमौ सुधा स्रायक नयण॥ ७८

इति सात सांणौर गीत संपूरण

---

७७. जींके—जिसके। ग्राद—ग्रादि, प्रथम, शुरूका। पछ‌ळां—पश्चातके। पछै—बादमें। ईं—इस। जीं—जिस।

७८. स्रीधर—विष्णु, श्रीरामचंद्र भगवान। स्रीरंग—विष्णु। सियावर—सीतापति। स्रीपत (श्रीपति)—विष्णु। करणाकर—करुणा करने वाला। कारण-करण—कारण ग्रौर करने वाला। विसवेस—विश्वेश। विसंभर—विश्वंभर। ग्राणंदघण—ग्रानन्दघन। नरहर—नृसिंहावतार। नागनाथ—नागको नाथने वाला, श्रीकृष्ण। गोब्यंद—गोविंद। गौप्रिय—गोवल्लभ। गोपवर—गोपीपति। धराधीस—धराका स्वामी। धानंख—धनुषधारी, श्रीरामचंद्र। कमळाकंत—कमलापति, विष्णु। सकमळकर—वह जिसके हाथमें कमल-पुष्प हो, विष्णु। विमळानन—विमल-मुख। विबुधेस—देवताग्रोंके स्वामी, विष्णु, इन्द्र। सुमण—श्रेष्ठ मणि, यहां कौस्तुभमणिसे ग्रर्थ है। भव—संसार। भूधर—ईश्वर। भंजण—नाश करने वाला, मिटाने वाला। हिरणगरभ—हिरण्यगर्भ, वह प्रकाश रूप या ज्योतिर्मय पिंड जिससे ब्रह्मा ग्रौर समस्त सृष्टि प्रकट हुई है। त्रय—तीन। ताप—संकट, कष्ट। हण—मिटाने वाला, नाश करने वाला। नायक—पति। रमा—लक्ष्मी। नयण—नेत्र। कज—कमल। सुखदायक—सुख देने वाला। जन—भक्त। सयण—सज्जन। भगत-विछ‌ळ—भक्तवत्सल। महण (महार्णव)—सागर। सुभायक—सुरुचिकर, सुन्दर। सुधा—ग्रमृत। स्रायक—टपकने या टपकाने वाला, श्रवने वाला।

अथ अन्य प्रकार गीत जात वरणण

वारता

विधांनीक गीत वडौ सांणौर होवै । विधांन कहौ भावै सर कहौ सौ छ सर सत सर तौ लघु सांणौर होवै नहीं । वडौ सांणौर होवै सो ई ग्रंथमें प्रथम सतसर तथा सप्त विधांनीक गीत कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

इति विधांनीक विधि संपूरण ।

अथ पाड़गत, पाड़गती वरणण छंद लछ्ण

दूहा

धुर तुक अखिर अठार धर, चवद सोळ चवदेस ।
सोळ चवद अन अंत लघु, सौ सुपंखरौ सुदेस ॥ ७९
गुणी सुपंखरा गीतमें, वरणण नृत्य वखांण ।
कहियौ धुर पिंगळ सुकव, जिकौ पाड़ गति जांण ॥ ८०

अथ पाड़गती सुपंखरा उदाहरण

गीत

दड़ी पड़ंतां द्रहामें चढे भ्फांकियौ कदंब डाळ ,
नीर थाघे अथाघ चडंतां वाद नार ।
खेल्ह बाळव्रंदरै करंतां लगाड़ियौ खेटौ ,
काळी नाग जगाड़ियौ नंदरै कंवार ॥

---

७८. **भावै**—चाहे । **ई**—इस ।

७९. **पाड़गत, पाड़गती**—सुपंखरा, त्रिवड़ आदि गीतोंकी संज्ञा विशेष । **धुर**—प्रथम । **तुक**—पद्यका चरण । **अखिर**—अक्षर । **अठार**—अठारह । **चवद**—चौदह । **सोळ**—सोलह । **चवदेस**—चौदह । **अन**—अन्य । **सौ**—वह । **सुपंखरौ**—गीत छंदका नाम, कहीं-कहीं सुपखरौ भी लिखा मिलता है ।

८०. **गुणी**—कवि, पंडित ।

८१. **दड़ी**—गेंद । **द्रहामें**—नदीमें, अधिक जल या गहराईके स्थानमें । **भ्फांकियौ**—छलांग भरी, कूदा, उछल कर ऊपरके पदार्थको पकड़ा । **डाळ**—टहनी । **थाघे**—थाह लिया । **अथाघ**—अथाह, अपार । **खेल्ह**—खेल । **बाळव्रंदरै**—बाल-समूहके । **खेटौ**- छलांग । **कंवार**—कुमार ।

फैल क्रोध चसमां कराळां आग-झाळा फुणां ,
ताळा दै भुजाळा त्यूं गुपाळा तीरवांन ।
विरदाळा सिघाळा अड़ाळा जोध चाळाबंध ,
जूटा बिहुं काळा नै बिचाळा जोरवांन ॥
कदंमां करगां घाव दाव व्है अभूतकारा ,
उडै फूतकारा विखां फुणांरा अमाव ।
जंद हरी बंध काळीसं घणा जोड़िया जकै ,
संध संध विछौड़िया नंदरै सुजाव ॥
महा भुजंगेसनाथ समाथ खंडियौ मांण ,
खंभ ठौर भराथ तंडियौ जैत-खंभ ।
दंडियौ अदंड नीर उचाटां मिटाय डहे ,
रंजे मित्र फुणाटां मंडियौ नाटारंभ ॥
घू घू कटां धु कटां धु कटां घू घू कटां धार ,
ता धिंना ता धिंना धिन्ना ता धिन्ना सुताळ ।
ताथेई ताथेई थेई थेई थेई ताता ,
गतां लै अहेस माथा नंदरौ गवाळ ॥

---

८१. **चसमां** (चश्मां)–नेत्र । **कराळां**–भयंकर, भयावह । **आग-झाळा**–अग्निकी लपट । **ताळा**–ताली, करताली । **त्यूं**–तैसे । **गुपाळा**–ग्वाले । **तीरवांन**–तट पर खड़े । **विरदाळा**–विरुदधारी, यशस्वी । **सिघाळा**–श्रेष्ठ । **अडाळा**–अड़ने वाला । **चाळाबंध**–लड़ने वाला, उत्पाती । **जूटा**–भिड़े । **बिहुं**–दोनों । **जोरवांन**–शक्तिशाली । **कदंबां**–चरणों पैरों । **करगां**–हाथों । **घाव**–प्रहार । **दाव**–पेंतरा । **अभूतकारा**–अभूतपूर्व अनोखा । **फूतकारा**–सर्पके मुखकी आवाज । **विखा**–विषों । **अमाव**–अपार । **संध**–संधि । **बिछोड़िया**–दूर किया । **सुजाव**–पुत्र । **भुजंगेसनाथ**–कालीनाग । **समाथ**–समर्थ । **खंडियौ**–खंडित किया, मिटाया । **मांण**–गर्व, मान । **खंभ**–भुजा, बाहुमूलके ऊपरका भाग, कंधा । **ठौर**–ठोक कर । **भराथ**–युद्ध । **तंडियौ**–जोशपूर्ण आवाजकी । **जैत-खंभ**–विजयी, विजयस्तंभ । **अदंड**–जिसे कोई दंड न दे सकता हो । **उचाटां**–चिंता, भय । **रंजै**–प्रसन्न कर । **फुणाटां**–सर्पके फनों । **मंडियौ**-रचा, किया । **नाटारंभ**–नृत्य, नाच । **गतां**–वाद्योंके बजानेकी प्रणाली विशेष या नृत्यकके नृत्यकी गति विशेष । **अहेस**–अहीश, नागराज ।

रंमां-झंमां रंमां झंमां रंमां झंमां झंमां रंमां ,
ठमंकां रमंकां झंका रमंकां ठमंक ।
पाड़गती गीत राधा रंजणा पयंपै प्रथी ,
नाग धू संजणा निमौ संगीत निसंक ॥ ८१

अथ त्रिवड़ तथा हेलौ नांम गीत लछण

दूहा

आठ तीस मत पूबअध, उतरारध अठतीस ।
तुक विहुं वै अघ तेवड़ी, तेवड़ गीत तवीस ॥ ८२
पहली दूजी तुक मिळै, तीजी छठी मिळंत ।
मिळ चौथीसूं पंचमी, जस रघुनाथ जपंत ॥ ८३

अरथ

जीं गीतके अठतीस मात्रा पूरबारध होय अर अठतीस ही मात्रा उतरारध होय । समांन दो ही अरथ होय। तीन तुक पूरबारध होय, तींन तुक उतरारध होय । तेवड़ी तुकां होय । सारा दूहामें तुक छ होय । पैली तुककौ तुकांत तौ दूजी तुकसूं मिळै । तीजी तुक छठी तुकसूं मिळै । चौथी तुक पांचमी तुकसूं मिळै । तेवड़ी तुकां हर तेवड़ौई तुकांतकौ मिळाप जींसूं गीतकौ नांम तिवड़ अंत लघु कहीजै । कोई कवि इण गीतनै हेलौ पिण कहै छै ।

अथ त्रिवड़ तथा हेला नांम गीत उदाहरण

गीत

रांम असरण सरण राजै ।
भेटियां दुखदुंद भाजै ॥

---

८१. **रंमां-झंमां**—चलने या नृत्यके समय आभूषणोंकी होने वाली ध्वनि । **ठमंकां**—चलते समय या नृत्यके समय पैर रखनेका ढंग विशेष । **रंजणा**—प्रसन्न करने वाला । **पयंपै**—कहता है, कहती है । **धू**—शिर, मस्तक । **संजणा**—करने वाला ।

८२. **आठतीस**—अड़तीस । **पूबअध**—पूर्वार्द्ध । **विहुंवै**—दोनोंमें । **तेवड़ी**—तिगुनी, तीन तहका । **तवीस**—कहा जायेगा, कहा जाता है ।

८३. **दूजी**—दूसरी । **मिळंत**—मिलती है । **जपंत**—जपता है, जपा जाता है । **जीं**—जिस । **अर**—और । **मिळाप**—मिलना । **जींसूं**—जिससे । **पिण**—भी ।

८४. **राजै**—शोभा देता है । **भेटियां**—मिलने पर । **दुखदुंद**—दुख-द्वन्द । **भाजै**—मिट जाते है ।

देव दीन दयाळ ।
निरवहै व्रत हेक नारी, धींगपांण धनंखधारी ।
प्रगट संतां पाळ ॥
चुरस मारग नीत चालै, घाघ भागां निकूं घालै ।
समरसूं रस धीर ॥
वीरवर दासरथ-वाळौ, कळह आसुर अंत काळौ ।
बिरद धारण बीर ॥
छत्रपत अनी मांण छंडै, खत्र रख हर चाप खंडे ।
जांनकीवर जेण ॥
राय हर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै ।
मुणै जस प्रथमेण ॥
तोयधी गिरराज तारे, प्रगट कर कपि सेन पारे ।
रची लंका राड़ ॥
दसाणण घणराव दाहे, गहर कुंभ अरोड़ गाहे ।
धींग राघव धाड़ ॥ ८४

---

८४. निरवहै–निभाता है । धींगपांण–समर्थ, शक्तिशाली । धनंखधारी–धनुषको धारण करने वाला । पाळ–पालक, रक्षक । चुरस–श्रेष्ठ । नीत–नीति । घाव–प्रहार, वार । निकूं–नहीं । समरसूं–युद्धसे । दासरथ-वाळौ–दशरथका । छत्रपत–छत्रपति, राजा । अनी–अन्य । मांण–गर्व, मान । छंडै–छोड़ देते हैं । चाप–धनुष । खंडे–खंडित किया । पण–प्रण । सूर–सूर्य । ससि–चंद्रमा । रिख–ऋषि । साखै–साक्षी देते हैं । मुणै–कहते हैं, वर्णन करते हैं । प्रथमेण–पृथ्वी, संसार । तोयधी (तोयधि)–समुद्र, सागर । गिरराज–पर्वतराज । कपि–बंदर । सेन–सेना, फौज । राड़–युद्ध । दसाणण–दसानन, रावण । घणराव–मेघनाद, इन्द्रजीत । दाहे–संहार किया । गहर–महान, गंभीर । कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण । अरोड़–जबरदस्त, शक्तिशाली । गाहे–ध्वंश किया । धींग–समर्थ । धाड़–धन्य ।

अथ वंकगीत वरण छंद लछण

दूहौ

च्यार जगणकी एक तुक, वरण छंद निरधार ।
चौ तुक मोती दांम मिळ, वंक गीत सु विचार ॥ ८५

अरथ

जीं गीतरी एक तुकमें च्यार जगण होय, च्यार ही तुकमें बारै बारै अखिर होय। तुक प्रत च्यार जगण होय। अंत लघु होय। मोतीदांम छंदकी च्यार तुककौ एक दूहौ होय, जींनै वंकनांमा गीत कहीजै ।

अथ बंक गीत उदाहरण

गीत

न रूप न रेख न रंग न राग,
अपार न पार निधार अधार ।
अलेख अदेख अतेख अभेख,
अतारस तार सुसार असार ॥
अरेस असेस दहेस अभंग,
धरेस सुरेस नरेस सधीर ।
अरोड़ अमोड़ अवीह अलार,
निबाह अथाह चढै कुळ नीर ॥
सनीत सकीत सजीत सराह,
समाथ तिराथ गिरंद समंद ।

---

८५. बारै–बारह । अखिर–अक्षर । प्रत–प्रति ।

८६. निधार–आधारहीन । धरेस–शेषनाग, पर्वत । सुरेस–इन्द्र । नरेस–राजा । अरोड़–शक्तिशाली । अमोड़–नहीं मुड़ने वाला । अवीह–निडर, निर्भय । समाथ–समर्थ । गिरंद–पर्वत । समंद–समुद्र ।

दयाळ नूपाळ सिघाळ ब्रदाळ ,
अरेह अनाट अछेह अमंद ॥
रमीस प्रमीस हरौ अघरीस ,
तवै जस आलम जेण तमांम ।
महा बळवांन अभंग महीप ,
रटां जन लाज रखै रघुरांम ॥ ८६

अथ त्रंबकड़ा गीतकौ लछण

दूहौ

धुर मत्ता अठार घर, सोळह तुक सरबेण ।
गिण तिण दोय तुकंत गुर, जप त्रंबकड़ौ जेण ॥ ८७

अरथ

जीं गीतकै पहली तुकमें मात्रा अठारा अर सारी ही तुकां मात्रा सौळा सौळा होय । तुकांत दोय गुरु अखिर होय जीं गीतनै त्रंबकड़ौ कहीजै । पैली तुक अठारै होय अर लारली पनरैई तुकां मात्रा सोळै सोळै होय ।

अथ त्रंबकड़ा गीत उदाहरण

गीत

मुखहूंता भाख 'किसन' महमाहण ,
प्रभु नित भीड़ साच पखा रे ।
ग्राह जिसा अधमां दीन्ही गत ,
तोनूं राघव कांय न तारै ॥

---

८६. सिघाळ–श्रेष्ठ । ब्रदाळ–विरुदधारी । तवै–स्तुति करते हैं, वर्णन करते हैं । आलम–संसार । जेण–जिस ।

८७. धुर–प्रथम । मत्ता–मात्रा । अठार–अठारह । सरबेण–सब, समस्त । लारली–पीछेकी । पनरैई–पनरहही ।

८८. मुखहूंता–मुखसे । भाख–कह । महमाहण–ईश्वर । भीड़–सहायता, मदद । पख–पक्ष । जिसा–जैसा । दीन्ही–दी । गत–मोक्ष । तोनूं–तुझको । कांय न–क्यों नहीं ।

रात दिवस भज रांम नरेसर ,
पात राख नहचौ मन पूरौ ।
धूधारण कारण लख धूरौ ,
उधारणरौ किसौ अणूंरौ ॥
के जम नांम तणौ तन सज कर ,
भै जमहूं डर डर मत भाजै ।
किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां ,
वीठळनाथ अनाथां वाजै ॥
जम दळ वटपाड़ौ वह जासी ,
थासी नहीं विगाड़ौ थारै ।
जगपत निस दिन नांम जपंतां ,
संता सारा काज सुधारै ॥ ८८

अथ गीत चौटियाळ लछण

दूहौ

सुज प्रहास सांणौररै, दस मत अरध सिवाय ।
मेल दोय पूरब उतर, चौटियाळ गुण चाय ॥ ८९

अरथ

चौटियाळ गीत प्रहास सांणौर होवै, जींके आधा गीतके आधा दूहा सिवाय दस मात्राकी एक तुक पूरबारधमें सिवाय होवै । एक तुक उतरारधमें दस मात्राकी सिवाय होवै । पूरबारध अर उतरारधमें दोय मेळ तुकांत होवै । पैली तुकांतकै, अंत दो गुरु होवै । दूजा तुकांतकै अंत रगण होवै । पैली तुक मात्रा २३, तुक दूजी मात्रा १७, तुक तीजी मात्रा १०.तुक चौथी मात्रा २०, तुक पांचमी मात्रा १७, तुक छठी

---

८८. नरेसर–नरेश्वर । नहचौ–धैर्य । पूरौ–पूर्ण, पूरा । किसौ–कौनसा । अणूंरौ–अभाव. कमी । ग्रह–पकड़ कर । केतां–कितनोंको । वीठळनाथ–स्वामी, ईश्वर । वाजै–पुकारा जाता है ।

८९. मत-मात्रा । अरध–आधा । सिवाय–अतिरिक्त, विशेष । गुण–गीत छन्द । चाय–चाह । जींके–जिसके ।

मात्रा १० पछै दूजा सारा दूहां मात्रा वीस, सत्रै, दस, बीस, सत्रै, दस इं तरै तुकां होवै जीं गीतकौ नांम चौटियाळ गीत कहीजै ।

अथ चौटियाळ गीत उदाहरण

गीत

महाराज आजांनभुज रांम रघुवंसमण,
राड़ रिम जूथ अवनाड़ रोहै,
गढां गह गंजणा ।
वार निरधार आधार आधार आलम वणौ,
सरण साधार जिण विरद सोहै,
भिड़े दळ भंजणा ॥
जांनकीनाथ समराथ जाहर जंगत
चुरस धमचक रचण वीरचाळा,
वसे खेत वीरती ।
ताखड़ा जोध आरोड़ दसरथतणा,
कीजिये किसौ नृप जोड़ काळा,
कहै जग कीरती ॥
सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज,
वयण मुख दाखिया अंक वेहा,
दया जन दक्खणा ।

---

८९. सत्रै–सतरह । ईं–इस । तरै–तरह, प्रकार । जीं–जिस ।

९०. आजांन-भुज–आजानुबाहु । रघुवंसमण–रघुवंशमणि । राड़–युद्ध । रिम–शत्रु । जूथ–यूथ, समूह । अवनाड़–जबरदस्त, नहीं मुड़ने वाला । रोहै–ध्वंश करता है, संहार करता है । गह–गर्व । गंजण–जीतने वाला, मिटाने वाला, नाश करने वाला । वार–समय । आलम–संसार, ईश्वर । सरण-साधार–शरणमें आये हुयेकी रक्षा करने वाला । भिड़े–भिड़ कर, युद्ध कर । भंजणा–पराजित करने वाला । समराथ–समर्थ । चुरस–महान । धमचक–युद्ध । वीरचाळा–वीरोंका कार्य, वीरोंका चरित्र । वीरती–शौर्य, वीरता । ताखड़ा–तेज । जोध–योद्धा । किसौ–कौनसा । जोड़–बराबर । काळा–महावीर, योद्धा । कीरती–यश । सूरकुळ–सूर्यवंश । अणघट–अपार । अनट–नहीं नटने वाला । ज –जीभ, जिव्हा । वयण–वचन । दाखिया–कहे । वेहा–विधाता, ब्रह्मा ।

सामरथ भभीखण रंक राखै सरणा,
तसां आपण सुदत लंक तेहा,
रजवट्ट रक्खणा ॥
अवधरा धणी रिण सीह भंजण असह,
लीह संतांतणी निकं लोपै,
भणै किव भेदमें।
तई सामाथ प्रभ बंधु दीनांतणा,
अनाथां नाथ भुज बिरद ओपै,
वणै कथ वेदमें ॥ ९०

अथ गीत लैहचाळ अथवा लहचाळ लछण

चौपई

कळ दस धुर फिर आठ सकांम ।
मझ्झ तुक विखम दोय विसरांम ॥
सम अठ अंत रगण जीकार ।
चतुर गीत लैहचाळ उचार ॥ ९१

अरथ

पैली तुक मात्रा १८ होय। दोय विसरांम पैलौ मात्रा १० दूजौ मात्रा आठ पर, ऊंहीं तुक तीजी विखम मात्रा विसरांम मोहरा होय । गुरु लघुकौ नेम नहीं । तुकांत तुक सम दूजी चौथी जींकै मात्रा पनरह आठ मात्रा पछै रगण पछै जीकार सबद होय। यूं दूजी चौथी तुक होय। यण प्रकार सरव दवाळा होय, जिण गीतरौ नांम लहचाळ कहीजै ।

---

९०. सामरथ–समर्थ । भभीखण–विभीषण । तसां–हाथों । आपण–देने वाला । तेहा–तैसा, वैसा । रजवट्ट–क्षत्रियत्व, शौर्य । रक्खणा–रखने वाला । रिण–रण, युद्ध । भंजण–नाश करने वाला, मिटाने वाला । असह–शत्रु । लीह–रेखा, मर्यादा । संतांतणी–संतोंकी । सामाथ–समर्थ । विरद–विरुद । ओपै–शोभा देता है । कथ–कथा, वृत्तांत ।

९१. मझ्झ–मध्य । विखम–विषम । विसरांम–विश्राम । अठ–आठ । ऊंहीं–ऐसे ही । मोहरा–तुकबंदी । नेम–नियम । यूं–ऐसे ही । यण–इस ।

अथ गीत लैहचाळ उदाहरण

गीत

निरधार निवाजण भै अध भांजण ,
सेवग तार सधीर सौ जी ।
दुख देवां दहण दैत दपट्टण ,
बीर निकौ रघुबीर सौ जी ॥
म्रगनैण सिया मन रूप सुरंजन ,
कौटिक कांम सकांम सौ जी ।
दुनियां बरदायक सेव सिहायक ,
रैण किसौ नूप रांम सौ जी ॥
निज कोसळ नंदण देवत वंदण ,
धारण पांण धनंखरौ जी ।
सभ्भ कुंभ सकारण रांवण मारण ,
लेण भुजां बळ लंकरौ जी ॥
जन सोच बिभंजण प्राचत पंजण ,
दांन अभैवर देणरौ जी ।
'किसना' निसचैं कर राच सियाबर ,
जांण भरोसौ जेणरौ जी ॥ ६२

६२. निरधार–जिसका कोई सहारा या आश्रय न हो । निवाजण–प्रसन्न होने वाला । भै–भय । अघ–पाप । भांजण–नष्ट करने वाला । सधीर–धैर्यवान । दहण–नाश करने वाला । दैत–दैत्य । दपट्टण–ध्वंश करने वाला । सेव–सेवा, सेवक । सिहायक–सहायक । रैण–भूमि । किसौ–कौनसा । नंदण–पुत्र । वंदण–वंदनीय । पांण (पाणि)–हाथ । कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण । विभंजण–मिटाने वाला । प्राचत–पाप । पंजण–नष्ट करने वाला, मिटाने वाला । निसचै–निश्चय । राच–लीन हो जा । सियाबर–श्री रामचन्द्र । भरोसौ–विश्वास । जेण–जिसका ।

अथ गीत गोख लछण

दूहौ

धुर तुक मत तेवीस धर, अवर वीस लघु अंत ।
चौथी तुक बे वीपसा, कवि ते गोख कहंत ॥ ६३

अरथ

चौथी तुकमें दो वीपसा होय । मात्रा प्रमांण कहां छां । आद पैलरी तुक मात्रा तेवीस होय । पाछली पनरैई तुकां मात्रा वीस वीस होय । तुकांत लघु अखिर आवै, अथवा नगण आवै, जीं गीतनै गोख कहीजै । एक सबदनै दोय वार कहै सौ वीपसा कहावै ।

अथ गीत गोख जात सावझड़ाकौ उदाहरण

गीत

तनै कहूं समझाय मतमंद जग फंद तज ।
अरप तन मन सुध न वेग सुणसी अरज ॥
उभै साचा अखर कहै रिख सिंभ अज ।
हरी भज हरी भज हरी भज हरी भज ॥
लछीरा चहन घण वीज वाळी लपट ।
क्रोध ममता नता मूढ तज रे कपट ॥
झौड़ मत कर अवर काळ लेसी झपट ।
रांम रट रांम रट रांम रट रांम रट ॥
काटसी घणा अघ ओघवाळा करम ।
बेध नह सकै जम पहर इसड़ौ वरम ॥

---

६३. धुर–प्रथम । मत–मात्रा । वीपसा (वीप्सा)–एक शब्दालंकार जिसके अर्थ या भाव पर बल या शक्ति लगाने से होने वाली शब्दावृत्ति । कहंत–कहते हैं । पाछली–पीछे की, बाद की । जीं–जिस ।

६४. तनै–तुझको । मतमंद (मतिमंद)–मूर्ख । फंद–जाल । रिख–ऋषि । सिंभ–शंभू, शिव । अज–ब्रह्मा । लछीरा–लक्ष्मीके । चहन–चिन्ह । घण–बादल । वीज–बिजली । लपट–चमक । काळ–यमराज । घणा–बहुत । अघ–पाप । ओघ–समूह । नह–नहीं । जम–यमराज । इसड़ौ–ऐसा । वरम–कवच ।

सही अगुलता उर संूप जिणनै सरम ।
पढ परम पढ परम पढ परम पढ परम ॥
उदर दीधौ जिकौ पूरसी जळ असन ।
वणै छिब घणै पटपीत पहरण बसन ॥
करे चित खांत निस दिवस रट रे 'किसन' ।
सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन ॥ ९४

पण झड़ मुगटनै रुगनाथ रूपग मध्ये गोख नांम लख्यौ छै । कोईक जंघ-खोड़ौ पिण कहै छै ।

अथ गीत चितईलोळ लछण

दूहौ

किव सोरठिया गीतके, अधिक दोय तुक आंण ।
चवद चवद मत दोढसौ, चितईलोळ पहचांण ॥ ९५

अरथ

सोरठिया गीतरै पहली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा अठारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा दस होवै। पछै सारा दूहां मात्रा सोळै दस होवै । जीं सोरठियाकै सिरै जातां चवदै चवदै मात्राकी दोय तुकां सवाय होवै जीं गीतकौ नांम दोढौ कै छै तथा कोई कवि चितईलोळ कै छै । तुकांत लघु होवै । छ तुकां होवै । चौथी तुकरा तुकांतरी आव्रत उलट पढवासूं पांचमी तुक होय । क्यूंक छठीमें पण आभास चौथी तुककौ होय सौ दोढौ ।

अथ गीत चितईलोळकौ उदाहरण

गीत

दीनां पाळगर धन सुतन दसरथ ,
सकज सूर समाथ ।

९४. परम–ईश्वर । उदर–पेट । दीधौ–दिया । जिकौ–वह । असन–भोजन । छिब–शोभा । पटपीत–पीताम्बर । बसन–वस्त्र । खांत–विचार । सी–श्री ।

नोट–मूल प्रतिमें लिखा मिला है कि 'पण-झड़ मुगटनै रुघनाथरूपगमें गोख नांम लिख्यौ छै, कोईक जंगखोड़ौ पिण कै छै' परन्तु यह लिखावट बिलकुल अशुद्ध है, गोख गीतके लक्षण रघुवरजसप्रकास और रघुनाथरूपकमें समान ही हैं ।

९५. किव–कवि । चवद–चौदह । मत–मात्रा । आव्रत–आवृत्ति । क्यूंक–कुछ । पण–भी ।

९६. दीनां–गरीबों । पाळगर–पालनकर्ता । धन–धन्य । सुतन–पुत्र । सूर–वीर । समाथ–समर्थ ।

रिणखेत भंजण सकुळ रांवण,
नेत-बंध रघुनाथ।
तौ रघुनाथ रे रघुनाथ,
रविकुळ आभरण रघुनाथ॥
तन स्यांम सघण सरूप ओपत,
सुपट बीज सकाज।
रिम कोट हण जन ओट रक्खण,
मोट मन महराज।
तौ महराज रे महराज,
माहव मोट मन महराज॥
हक-बगां लाखां असुर हरणौ,
जुधां करणौ जैत।
चाढणौ कुळ जळ दळद चौजां,
बाढणौ बिरदैत।
तौ बिरदैत रे बिरदैत,
बिरदां धारणौ बिरदैत॥
बळ थकां अबखी बखत बेली,
तवै जगत तमांम।

९६. **भंजण**–ध्वंश करनेको। **नेत-बंध**–अपना स्वयंका झंडा रखने वाला। **आभरण**–आभूषण। **सरूप**–स्वरूप। **ओपत**–शोभा देता है। **सुपट**–सुन्दर। **बीज**–बिजली। **रिम**–शत्रु। **कोट**–गढ़ अथवा करोड़। **ओट**–शरण। **मोट मन**–उदार चित्त। **माहव**–माधव, विष्णु, श्रीरामचंद्र। **हक-बगां**–युद्ध होने पर। **हरणौ**–मिटाने वाला ध्वंश करने वाला। **करणौ**–करने वाला। **जैत**–विजय, जीती। **चाढणौ**–चढाने वाला। **जळ**–कांति, दीप्ति। **दळद**–दारिद्रय, कंगाली। **चौजां**–उदारता। **बाढणौ**–काटने वाला। **बिरदैत**–विरुदधारी, यशस्वी। **धारणौ**–धारण करने वाला। **बळ**–शक्ति। **थकां**–थकने पर। **अबखी**–कठिन, दुरूह। **बेली**–सहायक, मित्र। **तवै**–स्तुति करता है, वर्णन करता है। **तमांम**–सम्पूर्ण।

नित 'किसन' क्रिव रट नांम निरभै ,
रसन स्री रघुरांम ।
तौ रघुरांम रे रघुरांम ,
रजवट धारियां रघुरांम ॥ ९६

अथ गीत पालवणी तथा दुमेळ सावझड़ा लछण

दूहौ

ग ल अनियम उगणीस धुर, अन तुक सोळह आंण ।
पालवणी चव तुक मिळै, दुमिल दुमेळ वखांण ॥ ९७

अरथ

पैहली तुक मात्रा उगणीस बाकीरी पनरैई तुकां मात्रा सोळै सोळै होय । तुकांत गुरु लघुरौ नेम नहीं । तुक च्याररा मो'रा मिळै सौ पालवणो कहीजै नै दौ दौ तुकरा मोहरा मिळै सौ दुमेळ सावझड़ौ कहीजै इंकै मध्य अंतमेळ कियां-थकां यौ ही त्रंबकड़ी कहीजै ।

अथ पालवणी उदाहरण

गीत

सिया वाहर समर दसाणण साझा ,
व्रवी उछाहर दीन निवाजा ।
दीठां थाहर कनक दराजा ,
रीझ खीज जाहर रघुराजा ॥
साझण जुधां वीसभुज आसुर ,
दीन निवाजण अनुज सहोदर ।

---

९६. रसन—जिव्हा । रजवट—क्षत्रियत्व, शौर्य ।

९७. ग—गुरु । ल—लघु । उगणीस—उन्नीस । धुर—प्रथम । अन—अन्य । आंण—ला, लाकर । चव—चार । दुमिळ—जहां दो चरण मिलते हों । मो'रा—तुकबंदी । मोहरा—तुकबंदी । इंकै—इसके । कियां-थकां—करने पर । यौ—यह ।

९८. वाहर—रक्षा । समर—युद्ध । दसाणण—रावण । साझा—संहार किया, मारा । व्रवी—दे दी, दान दी । उछाहर—उमंग । निवाजा—प्रसन्न होकर । दीठां—देखने पर । थाहर—गढ़, किला । कनक—स्वर्ण, सोना । दराजा—महान, बड़ा । रीझ—प्रसन्नता । खीज—कोप । जाहर—जाहिर, प्रसिद्ध । साझण—मारनेको, संहार करनेको । वीसभुज—रावण । आसुर—असुर, राक्षस । दीन—गरीब । निवाजण—प्रसन्न होकर । अनुज—छोटा भाई । सहोदर—भाई ।

बोलै साख त्रिकुट लिछमीबर ,
उमंग रीसवाळौ अवधेस्वर ॥
मथ रिण उदध मांण दसमथका ,
आपण सरण भभीखण अथका ।
सोब्रन गढ जस ओप समथका ,
क्रपा कोप आखै दसरथका ॥ ६८

अथ गीत दुमेळ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै ।
थरू आथ घर नवनिध थावै ॥
नांम लियां जम-किंकर नासै ।
सौ राघव संकर उर वासै ॥
बीर जगत अखिया रघुबीरा ।
साचै दिल भखिया सवरीरा ॥
दुल्लभ देव रिखां बिरदाळौ ।
बल्लभ जनां दासरथवाळौ ॥
तिण रघुनाथ वहत मग तारी ।
निज पग रजहूंता रिख नारी ॥

---

६८. साख–साक्षी । त्रिकुट–लंका । लिछमीबर–विष्णु, श्रीरामचंद्र । अवधेस्वर–रामचंद्र । मथ–मंथन कर । रिण–युद्ध । उदध (उदधि)–सागर, समुद्र । मांण–मान, गर्व । दसमथका–रावणका । आपण–देने वाला । भभीखण–विभीषण । अथका–धन-दौलतका । सोब्रन–सुवर्ण, सोना । समथका–समर्थका । आखै–कहते हैं ।

६९. प्राचत–पाप, दुष्कर्म । थरू–अटल, स्थिर । आथ (अर्थ)–धन-दौलत । थावै–होते हैं । जम-किंकर–यमराजका दूत । नासै–भग जाते हैं । वासै–निवास करता है, बसता है । भखिया–खाये, भक्षण किये । सवरीरा–शबरीके, भिल्लनीके । दुल्लभ–दुर्लभ । रिखां–ऋषियों । बिरदाळौ–विरुदधारी । बल्लभ–प्यारा । जनां–भक्तों । दासरथवाळौ–दशरथका पुत्र, श्रीरामचंद्र भगवान । तिण–उस । वहत–चलते हुए । मग–मार्ग । तारी–उद्धार किया । रजहूंता–धूलिसे । रिख–ऋषि ।

भारथ खळ जाड़ा भानंखी ।
धाड़ा एक बीर धानंखी ॥
लंका मार दसाणण लेणौ ।
दांन भभीखण सेवग देणौ ॥
तोटौ केम रहै घर त्यांरै ।
रांम धणी मोटौ सिर ज्यांरै ॥ ९९

अथ गीत सावझ अड़ियळ लछण

दूहौ

सोळह मत्ता वरण दस, पद पद झमक गुरंत ।
'किसन' सुजस पढ स्त्री किसन, अड़ियल गीत अखंत ॥ १००

अरथ

जींके आदकी तथा सारी ही तुकां प्रत मात्रा सोळै होय, तुक प्रत आखिर दस दस होय, तुकांत दोय गुरु होय, अंतमें जमक होय सौ अड़ियल गीत कहीजै । तुक प्रत अख्यर दस छै जिता बे वरण छंद छै । कोइक अण गीतनै सावझ अडल पिण कहै छै । च्यार दूहा होय सौ तौ अड़ियल नै एक दूहौ होय सौ चौसर गाहौ तथा गाथा कहावै ।

अथ अड़ियल गीत उदाहरण

गीत

निज संतां तारै घणनांमी, नहच्यौ ज्यां नैड़ौ घणनांमी ।
निरपखां पखौ घणनांमी, नाथ अनाथांचौ घणनांमी ॥

---

९९. भारथ–युद्ध । खळ–असुर । जाड़ा–जबड़ा । भानंखी–तोड़ने वाला । धाड़ा–आतंक, रौब, धन्य-धन्य । धानंखी–धनुषधारी । दसाणण–रावण । लेणौ–लेने वाला । भभीखण–विभीषण । सेवग–भक्त । देणौ–देने वाला । तोटौ–कमी, अभाव । त्यांरै–उनके । ज्यांरै–जिनके ।

१००. मत्ता–मात्रा । वरण–अक्षर । झमक–झमकाव । गुरंत–जिसके अंतमें गुरु (वर्ण) हो । अखंत–कहते हैं । जींके–जिसके । तुकां-प्रत–प्रति तुक या प्रति चरण । अख्यर–अक्षर । कोइक–कोई । अण–इस । पिण–भी ।

१०१. घणनांमी–ईश्वर । नहच्यौ–धैर्य, निश्चितता । ज्यां–जिन । नैड़ौ–निकट । निरपखां–जिसका कोई पक्ष न हो । पखौ–पक्ष, मदद, सहायता ।

रीझ सदांमासूं गिरधारी, ध्रवी आथ बाथां गिरधारी ।
धारै चक्र भुजां गिरधारी, धायौ गज बाहर गिरधारी ॥
ग्रीध ग्राह तारण गोब्यंदौ, गणका गत देणौ गोब्यंदौ ।
ग्रहीयां जम भीड़ू गोब्यंदौ, गुण गावण जेहौ गोब्यंदौ ॥
सिघां तीन लोकां सांवळियौ, सूर कुळां छोगौ सांवळियौ ।
साहै चाप रांम सांवळियौ, सीतावर सांमी सांवळियौ ॥ १०१

अथ गीत धड़उथल लछण

दूहौ

सोळै मत्ता सरब तुक, अंत एक गुरु होय ।
उलटै पाछौ अरधहूं, कह धड़ उथल सकोय ॥ १०२

अरथ

सोळै ही तुकांमें मात्रा सोळै होय । एक तुकांत गुरु होय । आधासूं तुकां पाछी उलटै तथा पूरबारधसूं उतरारध वणै । लाटानुप्रास अलंकार होय सौ धड़उथल गीत कहीजै । कोइक इणनै कवि ईलोळ पण कहै छै। गीत धड़उथलमें न्यूंन जथा छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ गीत धड़उथल उदाहरण

गीत

जम लगै कठै भै सीस जियां, तन दासरथी नित वास तियां ।
तन दासरथी नह वास तियां, जम लगसी माथै जोर जियां ॥

---

१०१. रीझ–प्रसन्न होकर । ध्रवी–दान दी । आथ (अर्थ)–धन-दौलत । बाथां–दोनों भुजाओंको आपसमें फैला कर मिलानेसे बनने वाला बीचका स्थान या इस स्थानमें समा सके उतना पदार्थ, बाहुपाश । धायौ–दौड़ा । बाहर–रक्षा । गोब्यंदौ–गोविंद । गणका–गनिका । गत–गति, मोक्ष । देणौ–देने वाला । ग्रहीयां–पकड़ने पर । जम–यमराज । भीड़ू–सहायक । गुण–यश । जेहौ–जैसा । सिघां–श्रेष्ठ । सांवळियौ–श्रीकृष्ण । छोगौ–अवतंश । साहै–धारण करता है । सीतावर–सीतापति । सांमी–स्वामी ।

१०२. मत्ता–मात्रा । पाछौ–वापिस । पण–भी ।

१०३. कठै–कहां । भै–भय । सीस–शिर, ऊपर । जियां–जिनको । दासरथी–श्रीरामचंद्र भगवान । तियां–उनमें । नह–नहीं ।

समरै न जिके नर सांमळियौ, क्रत-अंत जिकां सिर काहुळियौ।
क्रत-अंत करै की काहुळियौं, समरंत जिके नर सांमळियौ॥
गज-तार न वाक जिकां गुणियौ, सुत-भांण दियै दुख त्यां सुणियौं।
सुत भांण तिकां दुख नां सुणियौ, गज-तार तिंकां मुखहूं गुणियौ॥
रसना पतसीत नकूं ररियौ, भव डंड जिकां जमरै भरियौ।
रसना पतसीततणौ ररियौ, भव डंड जिकां जम नां भरियौ॥१०३

अथ गीत सीहचला लछण

दूहौ

अंत रगण अठार धुर, दूजी तेरह जांण।
सोळह तेरह तुक सरब, सीह चलौ वाखांण॥ २०४

अरथ

जींके पैली तुक मात्रा उगणीस होय। दूजी तुक मात्रा तेरै होय। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा तेरै होय। तुकांत रगण होय जीं गीतरौ नांम सीहचलौ कहीजै।

अथ गीत सीहचलौ उदाहरण

गीत

सीता सुंदरी अरधंग ससोभत, सेवग मारुत सारखा।
बाळ जिसा बळवंड बिहंडण, पांण भुजाडंड पारखा॥

---

१०३. समरै–स्मरण करते हैं। जिके–जो। सांमळियौ–ईश्वर, श्रीकृष्ण। क्रत अंत–कृतान्त, यमराज। जिकां–जिनके। काहुळियौ–कोप किया। की–क्या। समरंत–स्मरण करते हैं। जिके–जो, वे। गज-तार–गजका उद्धार करने वाला। वाक–वाणी। जिकां–जिन्होंने। गुणियौ–वर्णन किया। सुत-भांण–यमराज। त्यां–उनको। तिकां–उनको। नां–नहीं। मुखहूं–मुखसे। रसना–जिव्हा, जीभ। पतसीत–सीतापति, श्रीरामचंद्र। नकूं–नहीं। ररियौ–रटा। भव-डंड–संसारका दण्ड या साजा। पतसीततणौ–सीतापतिका।

१०५. अरधंग–अर्द्धांगिनी। मारुत–हनुमान। सारखा–समान, सदृश। बाळ–बालिबंदर। बळवंड–शक्तिशाली, जबरदस्त। बिहंडण–ध्वंश करने को, या ध्वंश करने वाला। पांण–शक्ति। भुजाडंड–बली, शक्तिशाली।

कोसिक ज्याग अभंग सिहायक, दांणव घायक दूधरी ।
पाय रजी रघुराय परस्सत, आ त्रीय गौतम उधरी ॥
प्राभ्यौ राख जनकतणौ पण, मौड़ खळां दळ मांनकी ।
धींग भुजां सत खंड करी धनु, जेण बरी प्रिय जांनकी ॥
साल निवार सुरीस कियौ सुख, बीसभुजा हण बंकरौ ।
बेख दियौ रघुराज भुजां बळ, राज भभीखण लंकरौ ॥ १०५

अथ गीत अ्रध चितविलास लछण

दूहा

सभ्भ खट कळ कर वीपसा, विच संबोधन वेस ।
तिण पर चवदह मत तुक, मोहर दुगुरु मिळेस ॥ १०६
गाय अरटिया गीतरौ, यण पर दूहौ अेक ।
प्रथम चरण अध अंत पढ, सुचितविलास विसेक ॥ १०७

अथ गीत अ्रधचितविलास उदाहरण

गीत

गह गंजै रे गह गंजै, भिड़ जंग वडा खळ भंजै ।
ग्रीधां सांमळ दीध पळां गळ, मेंगळ खागति मंजै ॥

---

१०५. कोसिक—विश्वामित्र । ज्याग—यज्ञ । सिहायक—सहायक । दांणव—राक्षस । घायक—संहार करने वाला, नाश करने वाला । पाय—चरण । रजी—धूलि । परस्सत—स्पर्श करते ही ।

१०५. प्राभ्यौ—अटल । जनकतणौ—जनकका । पण—प्रण । धींग—जबरदस्त । जेण—जिस । साल—शल्य, दुख । सुरीस—सुरेश, इन्द्र । बीसभुजा—रावण । बेख—देख ।

१०६. सभ्भ—रख । खट (षट)—छ । कळ—मात्रा । वीपसा (वीप्सा)—एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर जोर देनेके लिये शब्दावृत्ति होती है, दुबारा कहनेकी क्रिया या भाव । तिण—उस । चवदह—चौदह । मत—मात्रा । मोहरा—तुकबन्दी । मिळेस—मिलते हैं ।

१०७. यण—इस । दूहौ—गीत छंदके चार चरणोंका समूह ।

१०८. गह—गर्व । गंजै—नाश करते हैं । भिड़—युद्ध कर । खळ—दुष्ट, राक्षस । भंजै—ध्वंश करते हैं । सांमळ—एक मांसाहरी चीलकी जातिका पक्षी विशेष । पळां—मांसोंका । गळ—पिंड, निवाला । मेंगळ—हाथी । खागति—तलवारसे । भंजै—ध्वंश करते हैं, मारते हैं ।

सूरजवंसतणौ नृप सूरज, पाधर आसुर पंजै ।
रे गह गंजै ॥
जिण जीता रे जिण जीता, भड़ रांवण कुंभ अभीता ।
आस्त्रय राख भभीखण आतुर, लाख मुखां जस लीता ॥
भार ग्रहे घणनाद जिसा भट, चौपट मार अचीता ।
रे जिण जीता ॥
जग जांणै रे जग जांणै, जिण लंक व्रवी जग जांणै ।
स्री-मुख दाख सुकंठ सहोदर, राख प्रभाव घरांणै ॥
कारुणस्यंध किकंध पते कर, बाळ हतै रिण बांणै ।
रे जग जांणै ॥
जस जापै रे जस जापै, ते संत हरे त्रिण तापै ।
संघट तोड़ अघां घण स्रीरंग, कौड़ जमांभय कांपै ॥
आसा राघव पूर अनेकां, थांनक दासां थापै ।
रे जस जापै ॥ १०८

अथ लघु चितविलास लछण

दूहौ

चवद चवद मत च्यार तुक, अठ मत पंचम आंण ।
बि गुरु अंत आवरत तुक, चित विलास पहचांण ॥ १०९

---

१०८. सूरजवंशतणौ–सूर्य वंशका । पाधर–खुला मैदान । आसुर–राक्षस । पंजै–ध्वंश करते हैं । जिण–जिस । भड़–योद्धा । कुंभ–कुंभकर्ण । अभीता–वह जो डरे नहीं, निशंक । आस्त्रय–शरण । भभीखण–विभीषण । आतुर–दुखी । लीता–लिया । घणनाद–मेघनाद, इन्द्रजीत । भट–योद्धा । चौपट– नाश, ध्वंश । अचीता–बिना चिंता । लंक–लंका । व्रीवी–दान दे दी । स्री-मुख–स्वयं, खुद । दाख–कह । सुकंठ–सुग्रीव । सहोदर–भाई । घराणै–वंशका, वंशमें । कारुणस्यंध–करुणासिंधु, कृपासागर । किकंध–किष्किंधा । पते–पति, स्वामी । बाळ–बालि नामक बंदर । हसै–संहार कर । जापै–वर्ण करते हैं, जपते हैं । ते–उस । त्रिण–तीन । तापै–ताप, कष्ट । संघट–दुख । तोड़–मिटा कर, नाश कर । अघां–पापों । घण–बहुत, अधिक । स्रीरंग–विष्णु, श्रीरामचंद्र । जमां–यमराजों । थांनक–स्थान । दास–भक्त । थापै–स्थापन करता है ।

१०९. चवद–चौदह । अठ–आठ । आंण–ला, रख । बि (द्वि)–दो । आवरत–आवर्त्त, आवृत्ति ।

अरथ

पै'ली तथा च्यार ही तुकांमें मात्रा आठ होवै, दोय गुरु अखिर तुकांत होवै। पै'ली तुकरौ आध सौ पांचमी तुक होवै। आवरत पद होवै। आवरत फेर पढणौ कहीजै, जीं गी तकौ नांम लघु चितविलास कहीजै। पै'ली तुकरी छ मात्रा करने वीपसा करणौ, विचै जीकार संबोधन धरणौ।

अथ गीत लघु चितविलास उदाहरण

गीत

घणनांमी जी घणनांमी, निज जोर परां घणनांमी।
भुज लोक त्रिहूंपत भांमी, बिरदैत बहै धुर बांमी।
जी घणनांमी॥
बिरदाळौ जी बिरदाळौ, दुज गाय पखी बिरदाळौ।
सीताचौ सांम सिघाळौ, पौह सेवगरां प्रतपाळौ।
जी बिरदाळौ॥
रघुराजा जी रघुराजा, रणधीर बडौ रघुराजा।
सुज तारण संत समाजा, लह बहियां राखण लाजा।
जी रघुराजा॥
हद हाथां जी हद हाथां, है लंक व्रवी हद हाथां।
सत्र भंज जुधां समराथां, गुण राखण बिसुधा गाथां।
जी हद हाथां॥ ११०

---

१०९. पै'ली–प्रथम। धरणौ–रखना।

११०. घणनांमी–ईश्वर। भांमी–न्यौछावर, बलैया। बिरदैत–विरुदधारी, योद्धा, वीर। धुर–तरफ। बांमी–बायीं। बिरदाळौ–विरुदधारी, यशस्वी। दुज (द्विज)–ब्राह्मण। पखी–पक्षी। सीताचौ–सीताका। सांम–स्वामी, पति। सिघाळौ–श्रेष्ठ। पौह–प्रभु, राजा। सेवगरां–सेवकों। प्रतपाळौ–रक्षक। तारण–उद्धार करने वाला। हद–धन्य, धन्यवाद। लंक–लंका। व्रवी–दे दी, प्रदान की। सत्र–शत्रु। भंज–तोड़ कर। समराथां–समर्थों। गुण–यश। बिसुधा–पृथ्वी। गाथां–कथाओं।

अथ गीत घोड़ादमौ लछण

दूहौ

अठ्ठारह मत पहल अख, सोळ मत्त तुक आंन ।
दाख गीत घोड़ादमौ, दु गुरु अंत तुक दांन ॥ १११

अरथ

जीं गीतकै पै'ली तुक मात्रा अठ्ठारा होय । दूजी सारी ही तुकां मात्रा सोळै होय । तुकांत दोय गुरु अखिर आवै, जिण गीतरौ नांम घोड़ादमौ कहीजै । घोड़ादमा नै त्रबंकड़ौ एक छै । यण गीतमें सुध जथा छै ।

अथ गीत घोड़ादमौ उदाहरण

गीत

राघव गह पला कीर कह पै रज ,
सिला उडी जांणै जग सारौ ।
जीवन जगत कुटंब दिस जोवौ ,
पग धोवौ तौं नाव पधारौ ॥
पदमण रिख असमांन पहूंती ,
पंखां विनां जिहांन पढीजै ।
केवट कुळ प्रतपाळ दयाकर ,
चरण पखाळ जिहाज चढीजै ॥
हिक छिन मांझ सुरगळ अहल्या ,
पूगी है फळ रूप रज पै सौ ।

---

१११. अठ्ठारह–अठारह । मत–मात्रा । पहल–प्रथम । अख–कह । सोळ–सोलह । मत्त–मात्रा । आंन–अन्य । दाख–कह ।

११२. गह–पकड़ कर । पला–अंचल । कीर–मल्लाह । पै–चरण, पांव । दिस–ओर, तरफ । पदमण–पद्मिनी । रिख–ऋषि । पहूंती–पहुँची । केवट–मल्लाह । प्रतपाळ–रक्षा, पालन-पोषण । पखाळ–धो कर । जिहाज–जहाज, नाव, नौका । हिक–एक । छिन क्षण । मांझल–मध्य, में ।

मोहित काळू कहै कमळमुख ,
बौहित बिमळ श्रौण कर बैंसौं ॥
मुळक जांनकी रांम लिच्छंमण ,
भणियौ दुचै स करम न भाई ।
राधव चरण धुवाय क्रपा कर ,
तरण कीर सकुटंब तिराई ॥ ११२

अथ गीत अरटिया लछण

दूहौ

धुर अठार फिर बार धर, सोळ बार गुरु दोय ।
सोळ बार मत तुक सरब, सखै अरटियौ सोय ॥ ११३

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होय। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा बारै होय। पछै दूजां दूहां पै'ली मात्रा सोळै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै। चौथी तुक मात्रा बारै। सोळै, बारै ईं क्रमसूं होय। दोय गुरु तुकांत होय, जीं गीतनै अरटियौ कहीजै।

अथ अरटिया गीत उदाहरण

गीत

दाखां आठरै खट भाख चवदह, पाठ विधांन पिछांणै ।
जिकै अकाथ ग्यांन बिन झूठा, जे रघुनाथ न जांणै ॥
दीनदयाळ बिना गुण दूजा, आळ-जंजाळ अलप्पै ।
'किसनौ' कहै पात जे केहा, जेहा रांम न जंपै ॥

---

११२. बौहित–नाव, नौका। बिमळ–विमल, निर्मल। श्रौण–चरण। बैंसौ–बैठिए। मुळक–हंस कर। लिचछंमण–लक्ष्मण। तरण–नाव, नौका। तिराई–तैरा दी, पार कर दी।

११३. धुर–प्रथम। बार–बारह। सखै–कहते हैं। जीं–जिस।

११४ भाख–भाषा। चवदह–चौदह। जिकै–जो, वे। अकाथ–व्यर्थ। गुण–काव्य-रचना। दूजा–दूसरा। आळजंजाळ–व्यर्थका प्रलाप। अलप्पै–अल्प, तुच्छ। जे–जो। केहा–कैसा। जेहा–जीभ! जंपै–पढ़ते हैं, वर्णन करते हैं।

गिरा प्रसाद भेद बुध गाथां, बातां झूठ बणावै ।
चारण जनम पाय सुध चूका, गिर तारणनह गावै ॥
बूडा जे कर कर जस बूंबां, सूमां ऊमर सारौ ।
बुध सारू गायौ सीताबर, जीता जिकै जमारौ ॥११४

दूहौ

सोळ प्रथम बीजी चवद, मगण यगण पछ दाख ।
सोळ चवद मत क्रम सुकव, भल सेलार सु भाख ॥ ११५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा चवदै । पै'ली, तीजी तुकरै मोहरै मगण होय । दूजी चौथी तुकरै मोहरै यगण होय । तुकांत मगण यगण होय । इं गीतरै सारा दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा चवदै; इं क्रम च्यार ही दूहां मात्रा होय सौ गीत नांम सेलार कहावै । लखपत पिंगळ मध्ये छंद सेलार छै, जिणरै तुक प्रथम प्रतमात्रा तेरै छै । यणरै पै'ली तुकमें मात्रा तीन वधी । दूजी तुकमें मात्रा एक वधी जींसूं गीत सेलार छै । पै'ली तीजी तुकरै अंत मगण होय । दूजी चौथी तुकरै अंत यगण अथवा दुगुरु होय ।

अथ सेलार गीत उदाहरण

गीत

मह ईजत आव अमंपै रे, चढ सीम जिकां कुण चंपै ।
कीनास भये नह कंपै रे, जे राघव राघव जंपै ॥
दिन सोहै आथत दवारे रे, ब्रद ईजल आव बधारै ।
जे नर धन धन जमवारे रे, सीताचौ सांम संभारै ॥

---

११४. गिरा–सरस्वती । प्रसाद–कृपा । बुध–पंडित । सुध–ध्यान । गिरतारण–रामचंद्र भगवान । बूडा–डूब गये । बूंबां–जोरकी आवाज । सूमां–कृपणों । ऊमर–उम्र । सारौ–सब । जमारौ–जीवन ।

११६. मह–महान । आव–आयु, उम्र । चंपै–भयभीत करे । कीनास–यमराज । कंपै–डरे । जंपै–स्मरण करे । सोहै–शोभा देता है । आथ–धन-दौलत । दवारै–द्वार पर । धन-धन–धन्य-धन्य । जमवारै–जीवनमें । सीताचौ–सीताका । सांम–स्वामी, पति । संभारै–स्मरण करते हैं ।

एकौतर बंस उधारै रे, निज लोक उभै निसतारै ।
साराह जिकां जग सारै रे, अवधेसर जीह उचारै ॥
करुणानिध जनहितकारी रे, बांमै अंग सीतबिहारी ।
सारी ज्यां बात सुधारी रे, धरियौ उर धानंखधारी ॥ ११६

अथ गीत झमाळ लछण

दूहा

दूहौ पहलां दाखजै, चंद्रायणौ सुपच्छ ।
दूहा उलटै चवथ तुक, सोय झमाळ सुलच्छ ॥ ११७
दूहौ अर चन्द्रायणौ, विहुंवै मत्ता छंद ।
यां लछण कहिया अगै, पिंगळ मांझ कव्यंद ॥ ११८

अरथ

पै'लां तौ दूहौ होय । पछै चंद्रायणौ होय । दूहारी चौथी तुक दोय बखत पढी जाय सौ झमाळ नांमा गीत कहीजै । दूहौ चंद्रायणौ दोई मात्रा छंद छै सौ यण पिंगळमें लछण दोयांरा कह्या छै, सौ कांम पड़ै तौ देख लीज्यौ । दूहौ पै'ली तुक मात्रा तेरै । तुक दूजी मात्रा इग्यारै । तुक तीजी मात्रा तेरै । तुक चौथी मात्रा इग्यारै । चंद्रायणौ तुक प्रतमात्रा इकीस । अंत रगण सौ चंद्रायणौ । आद दूहौ पछै चंद्रायणौ सौ झमाळ नांमा गीत कहावै ।

अथ झमाळ गीत उदाहरण

गीत

धाड़ा राघव धुर-धमळ, अवनाड़ा अणबीह ।
ऊबेड़ण जाड़ां असह, सुज घांसाड़ा-सीह ॥

---

११६. निसतारै–उद्धार करता है । हितकारी–हित करने वाला । बांमै–बायां । धानंखधारी–धनुषको धारण करने वाला ।

११७. पहलां–प्रथम, पहिले । दाखजै–कहिए । चंद्रायणौ–चंद्रायण नामक मात्रिक छंद । सुपच्छ–पश्चात । चवथ–चतुर्थ ।

११८. अर–और । विहुंवै–दोनों । मत्ता–मात्रिक । यां–इस प्रकार, इनका । लछण–लक्षण । अगै–पहिले, पूर्व । मांझ–मध्य ।

११९. धाड़ा–धन्य-धन्य । धुर-धमळ–अग्रगामी । अवनाड़ा–वीर, योद्धा । अणबीह–निडर, निशंक । ऊबेड़ण–उखेड़ना । जाड़ा–जबड़ा । असह–शत्रु । घांसाड़ा-सीह–सेनाको पीछे हटाने वाला, शक्तिशाली ।

सुज घांसाड़ासीह अबीह अचल्लणा ।
झूसर खाग तियाग भुजाडंड झल्लणा ॥
रहचण दससिर जिसा असह मझ राड़ रे ।
बेढक अंकी बार धनंकी धाड़ रे ॥
रखवाळण जिग रायहर, रजवट पाळण राह ।
दिया लखण रघुनाथ दहुं, नृप रिख साथ निबाह ॥
नृप रिख साथ निबाह नंद रख नाहरां ।
पंथ ताड़का निपात जिका कथ जाहरां ॥
परसुबाह हत सर मारीच अताळियौ ।
जिग कोसिक रिखराज राज रखवाळियौ ॥
रख्ये जिग कोसिक अडुरपुरो, मिथळेस पधार ।
पंथ अहल्या पाय रज, राघव कियौ उधार ॥
राघव कियौ उधार निपट रिख नाररौ ।
बळ धानंख लख घटे नृपां जिण बाररौ ॥
दासरथी बर सीत पराक्रम दक्खियौ ।
राघव भंजै धनंख जनक पण रक्खियौ ॥
आवंतां मारग अवध, डरवध हरख अमाप ।
आय फरस धर आफळण, चाप बैर हर चाप ॥

---

११६. अबीह–निडर, निर्भय । तियाग–त्याग । भुजाडंड–समर्थ, शक्तिशाली । झल्लणा–धारण करने वाला । रहचण–ध्वंश करनेको, संहार करनेको । दससिर–रावण । मझ–मध्य । राड़–युद्ध । बेढक–जबरदस्त । अंकी–अंकित की ! बार–समय । धनंकी–धनुषधारी । धाड़–धन्य-धन्य । जिग–यज्ञ । निपात–संहार कर, मार कर । जाहरां–प्रसिद्ध । परसुबाह–परशुराम । सर–तीर, बाण । अताळियौ–उडाया, दूर फेंका । कोसिक–विश्वामित्र । रिखराज–ऋषिराज । राज–श्रीमान, आप । रखवाळियौ–रक्षा की । मिथळेस–राजा जनक । पाय–चरण । रिख–ऋषि । दासरथी–श्री रामचन्द्र । बर–पाणिग्रहण कर । सीत–सीता । दक्खियौ–प्रकट किया, बतलाया । पण–प्रण । रक्खियौ–रखा । अवध–अयोध्या । हरख–हर्ष । अमाप–अपार ।

चाप बैर हर चाप जाप धक्ख जपिया ।
उभै रांम जुध कारण तांम अड़पिया ॥
लछवर धनंख साथ तेज निज हर लिया ।
रद कर मद दुजराम अवधपुर आविया ॥ ११६

अथ मुड़ैल अठताळौ गीत लछण

दूहा

चवद प्रथम बी ती चवद, चौथी दस मत जांण ।
पंच छठी सप्तम चवद, अष्टम दस मत आंण ॥ १२०
पहल दुती तीजी मिळै, दु गुरु अंत जिण दाख ।
मिळ तुक चौथी आठमी, अंत लघु जिण आख ॥ १२१
पंचम अठमी सातमी, मिळै अंत गुरु दोय ।
मुड़ियल अठताळौ मुणै, किव जिण नांम सकोय ॥ १२२

अरथ

जिणरै पहलै तुक मात्रा चवदै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा चवदै होवै । चौथी तुक मात्रा दस होवै । पांचमी चवदै, छठी चवदै, सातमी चवदै, मात्रा चवदै चवदै होवै । तुक आठमी मात्रा दस होवै । पै'ली दूजी तीजी तुकां मिळै । तुकांत दोय गुरु होय । चौथी तुक आठमी तुकसूं मिळै । तुकांत लघु होय । पांचमी, छठी, सातमी तुक मिळै । तुकांत दोय गुरु होय, जिण गीतनै मुड़ैलअठताळौ कहीजै । अठताळौ ग्रंथांतरसूं पिण लछण सुध छै । हमीरपिंगळमें मुड़ैलअठताळौ कहै छै नै रुगनाथरूपगमें अठताळौ हीज कहै छै ।

अथ मुड़ैलअठताळौ गीत उदाहरण

गीत

सुख दियण दुख गमण स्वांमी, नाथ त्रिभुवन आपनांमी ,
भंज दससिर भुजां भांमी, रांम भूप अरेह ।

---

११६. मद–गर्व । दुजरांम–द्विज-राम, परशुराम ।
१२०. बी (द्वी)–दूसरी । ती (तृतीय)–तीसरी । चवद–चौदह । मत–मात्रा ।
१२१. दुती (द्वितीय)–दूसरी । दु–दो । दाख–कह । आख–कह ।
१२२. मुणै–कहते हैं । किव–कवि । सकोय–सब ।
१२३. दियण–देने वाला । गमण–गमाने या मिटाने वाला । आपनांमी–अपने नामसे प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला । भांमी–बलैया । अरेह–निष्कलंक ।

चुरस चित ब्रत नीतचारी, निरवहे ब्रत हेक नारी ,
धींग पांण धनंखधारी, निपट संतां नेह ॥
असीचौ-लख जीव एता, जपै तौ प्रभ जीह जेता ,
भजै जटधर निगम भेता, नंद दसरथ नांम ।
गरुड़ध्वज रिममांणगाळा, वैर वाहर सीत वाळा ,
कहां भौक अनूप काळा, रूप भूपां रांम ॥
विसू रक्खण सुजस वातां, इंद्र कौसळ आखियातां ,
देव वंछित दांन दाता, दुझल दीन दयाळ ।
गाव दससिर बांण गंजे, प्रगट खळ जन भूप भंजे ,
जनक पण रख चाप भंजे, भले अवध भुवाळ ॥
गरब आसुर समर गाहे, सधर भुज खित्रवाट साहे ,
रटे जग जग सीस राहे, गहर कीरत गाथ ।
तेण सर गिरराज तारे, महा खळ दहकंध मारे ,
अडर उरबी भर उतारे, नमौ स्री रघुनाथ ॥१२३

अथ गीत हिरणझंप लछण

दूहौ

धुर सोळह दूजी चवद, ती चौवीस तवंत ।
चौथी पंचम मत चवद, छठ चौवीस छजंत ॥ १२४

---

१२३. चुरस–श्रेष्ठ । नीतचारी–नीति पर चलने वाला । निरवहे–निभाया । हेक–एक । धींग–जबरदस्त । धनंखधारी–धनुषधारी । निपट–बहुत । असीचौ-लख–चौरासी लाख । एता–इतने । तौ–तुझको । प्रभ–प्रभु । जीह–जीभ । जेता–जितने । जटधर–शिव । निगम–वेद, वेद-मार्ग । नंद–पुत्र । गरुड़ध्वज–विष्णु श्रीरामचन्द्र । रिम-मांण-गाळा–शत्रुओंका गर्व गंजन करने वाला । वाहर–रक्षा । सीत–सीता । भौक–धन्य-धन्य । अनूप–अनोखा । काळा–वीर । विसू (वसु)–पृथ्वी । आखियातां–अद्भुत । दुझल–वीर । चाप–धनुष । अवध–अयोध्या । भुवाळ–राजा । आसुर–राक्षस । समर–युद्ध । गाहे–नष्ट किया । खित्रवाट–क्षत्रियत्व । साहे–धारण किया । गाथ–गाथा, कथा । तेण–उस । सर–समुद्र । गिरराज–पर्वत । खळ–असुर, राक्षस । दहकंध–रावण । उरबी–भूमि । भर–भार ।

१२४. धुर–प्रथम । दूजी–दूसरी । चवद–चौदह । ती–तीसरी । तवंत–कहते हैं । छजंत–शोभा देता है, शोभा देती है ।

पहली दूजी मेळ पढ, तीजी छठी मिळाप ।
मेळ चवथी पंचमी, जपै वडा किव जाप ॥ १२५
धुर बी चौथी पंचमी, भगण नगण यां अंत ।
तीजी छठी अंत तुक, जगण अहेस जपंत ॥ १२६

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै, तुक दूजी मात्रा चवदै, तुक तीजी मात्रा चवदै, तुक चौथी मात्रा चवदै, तुक पांचमी मात्रा चवदै, तुक छठी मात्रा चौवीस होवै। पै'ली दूजी रै पछै नगण। चौथी, पांचमी तुकरै अंत भगण तथा अंत लघु होवै। तीजी छठी तुकरै अंत जगण होवै। दूजा दूहां—पै'ली, दूजी, चौथी, पांचमी तुकां मात्रा चवदै होवै। तीजो छठी तुक मात्रा चौबीस होवै, जीं गीतरौ नांम हिरणझंप कहीजै।

अथ गीत हिरणझंप उदाहरण

गीत

निज आठ जोग अभ्यास अहनिस,
सधै सुर घर जुगम रवि सस,
करै रेचक पूरक कुंभक, वहै दम सिर ठांम ।
असी च्यार सुधार आसण,
धौत बसती नीत धारण,
करौ अेता कठिण विधक्रम, न सम राघव नांम ।

---

१२५. **चवथी**—चतुर्थ ।

१२६. **बी** (द्वि)—दूसरी । **यां**—इन । **अहेस** (अहीश)—शेष-नाग ।

१२७. **आठ-जोग**—अष्टांग योग । **अहनिस**—रात-दिन । **सुर** (स्वर)—नाकसे निकलने वाली वायु । **जुगम** (युग्म)—दो । **रवि**—सूर्य । **सस** (शशि)—चन्द्रमा । **रेचक**—प्राणायामकी एक क्रिया विशेष जिससे खींचे हुए सांसको विधिपूर्वक बाहर निकाला जाता है । **पूरक**—प्राणायामकी प्रथम क्रिया या विधि जिसमें सांसको भीतरकी ओर बलपूर्वक खींचते हैं । **कुंभक**—प्राणायामकी एक विधि जिसमें सांसकी वायुको भीतर ही रोक रखते हैं । **दम**—सांस । **धौत**—शरीर-शुद्धिकी योगकी एक क्रिया, धौति । **बसती** (वस्ति)—योगकी एक क्रिया विशेष । **नीत**—कपड़ेकी एक पतली धज्जीको गलेसे पेटमें डाल कर आंतोंको शुद्ध करनेकी हठयोगकी एक क्रिया—(**सम**—बराबर, समान)

बंकनाळ समीर वासय,
चक्रखट तत पंच भिद चय,
सुचित मधुकर वसै संतत, जळज भ्रकुटी मझार।
भूम खेचर चाचरी भण,
मुनीउन आ गोचरी मुण,
निवह मुद्रा तपण नाहि, मीढ रेफ मकार।
अधोमुख उध पाय आसण,
धूम्रपांन सदीव धारण,
महा अै विध कठिण मांनव, करौ लाख करोड़।
तप क्रिया व्रत होम तीरथ,
अवर परबी दांन हिम अथ,
निपट अै विध कदे नावै, जाप राघव जोड़।
तरुण गणिका नांम जै तर,
पेख सवरी जात पांमर,
बार अबखी देख बारण, पेख कीध पुकार।
अजामेळ सरीख आधम,
बाळमीक पुलिंद बेखम,
'क्रिसन' हेकण छिनक कीधौ, यतां नांम उधार॥ १२७

---

१२७. बंकनाळ—योगियोंकी बोलचालमें सुषुम्ना नामक नाड़ीका एक नाम। समीर—हवा। चक्रखट (षट-चक्र)—योगके शरीरस्थ छ चक्र। तत—तत्त्व। पंच—पांच। मधुकर—भौंरा। संतत—सदैव, निरन्तर। जळज—कमल। मझार—मध्य। खेचर—खेचरी-मुद्रा। चरचरी (चर्चरी)—योगकी एक मुद्रा। मुनीउन (उनमुनी)—हठ योगकी एक मुद्रा। मुण—कह। मीढ—समान, बराबर। रेफ— र अक्षर। मकार—म अक्षर। अधोमुख—औंधा मुख। उध—ऊपर। पाय—चरण। सदीव—नित्य। हिम—स्वर्ण, सोना। कदे—कभी। जाप—जप। जोड़—समान, बराबर। पांमर—नीच। बार—वेला, समय। अबखी—कठिन। बारण—हाथी। कीध—की। सरीख—समान। आधम-नीच। पुलिंद—एक प्राचीन असभ्य जाति। हेकण—एक। छिनक—क्षण, थोडा। कीधौ—किया। यतां—इतने।

अथ गीत कैवार लछण

दूहौ

धुर अठार बी नव धरौ, ती सोळह नव वेद ।
दु गुरु अंत चौथी दुती, भण कैवार सुभेद ॥ १२८

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होवै । तुक दूजी मात्रा नव होवै । तुक तीजी मात्रा सोळै होवै । तुक चौथी मात्रा नव होवै । पछै सोळै नै नव ईं क्रम होवै । दूजी चौथी तुकरै अंत दोय गुरु होवै, तीं गीतरौ नांम कैवार कहीजै ।

अथ कैवार उदाहरण

गीत

कीजै वारणौ छिब कांम कौटिक, दीन दुख दाघौ ।
साभाव सरण-सधार स्रीवर, राजरौ राघौ ॥
धानंखधारी विरद धारण, तोय गिरतारी ।
राजवाळौ नंद दसरथ, भरोसौ भारी ॥
भव चाप भंज जनंक भूपत, राज पण रक्खै ।
सुज पूर खित्रवट वरी सीता, सूर सिस सक्खै ॥
रघुनाथ संत समाथ तारण, नाथ बोहौ नांमी ।
दसमाथ भंज प्रचंड दाटक, भुजाडंड भांमी ॥ १२९

---

१२८. **बि (द्वि)**–दो, दूसरी । **ती**–तीसरी । **तीं**–उस ।

१२९. **बारणै**-न्यौछावर । **छिब**–शोभा । **कौटिक**–करोड़ । **दाघौ**–दग्ध, जला हुआ । **साभाव**–स्वभाव । **सरण-सधार**–शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । **स्रीवर (श्रीवर)**–विष्णु । **राजरौ**–श्रीमानका । **राघौ**–राघव, रामचन्द्र भगवान । **तोय**–पानी । **गिरतारी**–पर्वतोंको तैराने वाला । **राजवाळौ**–श्रीमानका, आपका । **नंद**–पुत्र । **भव**–महादेव, शिव । **चाप**–धनुष । **पूर**–पूर्ण । **खित्रवट**–क्षत्रियत्व । **सूर**–सूर्य । **सिस (शशि)**–चन्द्रमा । **सक्खै**–साक्षी है । **समाथ**–समर्थ । **बोहौ**–बहुनामी । **दसमाथ**–रावण । **भंज**–नाश कर । **दाटक**–जबरदस्त, शक्तिशाली । **भुजाडंड**–जबरदस्त । **भांमी**–बलैया, न्यौछावर ।

अथ गीत दोढा लछण

दूहा

धुर बी ती चवदह धरौ, चौथी बार चवंत ।
पंच छठी सप्तम चवद, अठमी बार अखंत ॥ १३०
पहली बीजी तीसरी, मेळ रगण पछ होय ।
मिळ चौथीसूं आठमी, जै तुकांत लघु जोय ॥ १३१
पंचम छठी सातमी, मेळ रगण पय छेह ।
भाख रांम गुण 'किसन' भल, आखत दोढौ अेह ॥ १३२

अरथ

दोढा गीतरै पै'ली दूजी तीजी तुक मात्रा चवदै होय। चौथी आठमी तुक मात्रा बारै होय। पांचमी छठी सातमी तुक मात्रा चवदै होय। पै'ली दूजी तीजी तुकां मिळै, अंत रगण होय। चौथी आठमी तुक मिळै, अंत लघु होय। पांचमी छठी सातमी तुक मिळै, अंत रगण होय, जीं गीतकौ नांम दोढौ कहीजै।

अथ गीत दोढा उदाहरण

गीत

भड़ असुर आहव भंजिया, गह कुंभ सरखा गंजिया ।
रघुराज संतां रंजिया, वडवार कीरत ब्यंद ॥
आजांनभुज बळ अंगरौ, जैतार दससिर जंगरौ ।
अख रूप कौट अनंगरौ, बिबुधेस नीत पय बंद ॥

---

१३०. धुर–प्रथम। बी–दूसरी। ती–तीसरी। चवदह–चौदह। बार–बारह। चवंत–कहते हैं। चवद–चौदह। अखंत–कहते हैं।

१३१. पछ–बादमें, पश्चात।

१३२. पय–चरण। छेह–अंत। भल–ठीक। आखत–कहते हैं। ऐह–यह। चवदै–चौदह। बारै–बारह। जीं–जिस।

१३३. भड़–योद्धा। असुर–राक्षस। आहव–युद्ध। भंजिया–ध्वंश किये। गह–गंभीर, महान। कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण। सरखा–समान। गंजिया–ध्वंश किये। रंजिया–प्रसन्न किये अथवा प्रसन्न हुए। बार–समय। कीरत–कीर्ति। ब्यंद–बंदन। आजांनभुज–आजानबाहु। जैतार–जीतने वाला, जीत कर उद्धार करने वाला। दससिर–रावण। अख–कह। कौट–करोड़। अनंगरौ–कामदेवका। बिबुधेस–इन्द्र। पय–चरण। बंद–वंदन करता है।

कौटे'क अघदळ काटणौ, असुरेस मूळ उपाटणौ ।
थिर संत थांनक थाटणौ, अभनिमौ सगर अरोड़ ॥
सुज तेज कौटक सूररौ, रज कौट इंद्र जहूररौ ।
निज समुख रजवट नूररौ, महराज रवि कुळ मोड़ ॥
बांनैत भूपत बंकड़ा, घण भंज रिण असुरां घड़ा ।
सुज दास टाळण संकड़ा, लहरेक आपण लंक ॥
भूपाळ सिघ धन भूपती, रिझवार कीरत बड रती ।
अंग लियां पौरस आसती, अवधेस जुध अणसंक ॥
सुज भ्रात जेठी सेसरा, दइवांण वंस दनेसरा ।
हृद कंज मधुप महेसरा, मन महण रूप समाथ ॥
हृद भाळ सुसबद भळहळा, निज कदंम समहर नहचला ।
साधार सेवग सांवाळ, नूपराज दसरथ नंद ॥ १३३

अथ गीत हंसावळौ सांणौर लछण

दूहौ

धुर अठार फिर पनर धर, सोळ पनर सरवेण ।
लछण औ है अंत लघु, जपै वेलियौ जेण ॥ १३४

---

१३३. अघ–पाप । दळ–समूह । काटणौ–काटने वाला । असुरेस–रावण । मूळ–जड़, वंश । उपाटणौ–मिटाने वाला । थिर–स्थिर । थांनक–स्थान । थाटणौ–शोभा बढ़ाने वाला, वैभव बढ़ाने वाला । अभनिमौ–वंशज । सगर–एक सूर्यवंशी राजाका नाम । अरोड़–जबरदस्त । सुज–वह । कौटक–करोड़ । सूररौ–सूर्यका । रज–वैभव । जहूर (ज़ुहूर)–प्रकाशन, प्रकट । रजवट–क्षत्रियत्व, शौर्य । नूर–कांति, दीप्ति, सुन्दरता । रवि–सूर्य । बांनैत–वीर । भूपत–भूपति. राजा । बंकड़ा–बंकुरा । घण–वहुत, अधिक । रिण–युद्ध । असुरां–राक्षसों । घड़ा (घटा)–सेना । दास–भक्त । टाळण–मिटानेको, दूर करने को । संकड़ा–संकुचित, संकट । आपण–देने वाला । लंक–लंका । सिघ–श्रेष्ठ । धन–धन्य । रिझवार–प्रसन्न होने वाला । बड–महान, वड़ी । रती–कांति, दीप्ति । आसती–महान, प्रबल । अणसंक–निडर, निर्भय । भ्रात–भाई । जेठी (जेष्ट)–वड़ा । सेसरा–लक्ष्मणका । दइवांण–महान, जबरदस्त । दनेसरा (दिनेशका)–सूर्यका । हृद–हृदय । कंज–कमल । मधुप–भौंरा । महेसरा–महादेवका । महण (महार्णव)–समुद्र । समाथ–समर्थ । सुसबद–कीर्ति, यश । कदंम (कदम)–चरण । समहर–युद्ध । साधार–रक्षक, सहायक । सेवग–भक्त । सांवळा–श्रीकृष्ण, श्रीराम । नंद–पुत्र ।

१३४. धुर–प्रथम । अठार–अठारह । पनर–पनरह । सोळ–सोलह । सरवेण–सबमें ।

तुक प्रत बे बे कंठ तव, रा रा सबद सरास ।
कहै नांम जिण गीतकौ, हंसावळी सहास ॥ १३५

अरथ

वेलिया सांणौर गीतरै तुकप्रत बे बे अनुप्रास एक सरीखा होवै । सोळै तुकांमें बतीस कंठ होवै सौ गीत हंसावळी सांणौर कहावै ।

अथ गीत हंसावळारौ उदाहरण

गीत

सतरा हरचंद सुमतरा सागर, चितरा विलंद सुदतरा चाव ।
वतरा व्रवण प्रभतरा वाधण, नतरा तार सुक्रतरा नाव ॥
वनरा वांस सुमनरा काज वस, पुनरा निध तनरा आपांण ।
भय मेटण जनरा भन भनरा, महदनरा मनरा महरांण ॥
रिखरा निज मखरा रखवाळण, दुखरा तन लखरा जन दाह ।
धखरा खळ मुखरादस धड़चण, नरपखरा पखरा निरबाह ॥
सुखकररा थिररा वासी सुज, संकररा उररा सामाथ ।
वररा सीत तार गिरवररा, हररा अघ रघुबररा हाथ ॥१३६

---

१३५. कंठ–अनुप्रास । सरास–रसपूर्ण । सहास–आनंदपूर्वक, हर्षपूर्वक ।

१३६. सतरा–सत्यका । हरचंद–राजा हरिश्चंद्र । सुमतरा–सुमतिका । चितरा–चितके । विलंद–महान, बड़ा । सुदतरा–श्रेष्ठ दानका । चाव–उमंग । वतरा–धनका । व्रवण–देने वाला । प्रभतरा–यशका, कीर्तिका । वाधण–बढ़ाने वाला । नतरा–नहीं तैर सकने वाला पापी, पर्वतादि । तार–तैराने या उद्धार करने वाला । सुक्रतरा–श्रेष्ठ कार्यका । सुमनरा–देवताओंका । काज–काम । पुनरा–पुण्यका । निध (निधि)–खजाना । तनरा–शरीरका । आपांण–शक्ति, बल । महरांण (महार्णव)–समुद्र । रिखरा–ऋषिका । मखरा–यज्ञका । रखवाळण–रक्षा करने वाला । लखरा–लाखोंका । धखरा–द्वेषका, कोपका । खळ–राक्षस । मुखरादस–रावण । धड़चण–मारने वाला, काटने वाला । नरपखरा– जसका कोई पक्ष या सहायक न हो । पखरा–पक्षका । निरबाह–निभाने वाला । थररा–पृथ्वीका । सामाथ–समर्थ । तार–तैराने वाला । गिरवररा–पर्वतोंका । अघ–पाप ।

अथ गीत रसखरा लछण

दूहा

धुर सोळह बी ती चवद, चौथी दस मत चाह ।
पंच छठी सप्तम चवद, दस आठमी सराह ॥ १३७
धुर बी ती पंचम छठी, सप्तम खट तुक मेळ ।
मिळ चौथीसूं आठमी, भल तुकंत लघु भेळ ॥ १३८
नगणक भगण तुकंत खट, तगण जगण चव आठ ।
सुकव रसखरौ गीत सौ, पढ जस राघव पाठ ॥ १३९

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजी तुक मात्रा चवदै होवै । चौथी तुक मात्रा दस होवै । पांचमी तुक मात्रा चवदै होवै । छठी तुक मात्रा चवदै होवै । सातमी तुक मात्रा चवदै होवै । आठमी तुक मात्रा दस होवै । पै'ली, दूजी, तीजी, पांचमी, छठी, सातमी अै तुकां मिळै । यां छ ही तुकांरै अंतमें नगण तथा भगण तुकांतमें आवै अर चौथी तुक आठमी तुकसूं मिळै । ज्यां दोयांरै तुकांत नगण तथा जगण होवै, जीं गीतरौ नांम रसखरौ कहीजै । गुरुवंत छै । हिरणझंप रसखरारौ अेक लछण छै ।

अथ गीत रसखरारौ उदाहरण

गीत

सुज रूप भूप अनूप स्यांमळ, जेम बरसण घटा छिब जळ ।
वणै अंबर पीत वीजळ, सुकव क्रीत सराह ॥

---

१३७. धुर–प्रथम । बी–दूसरी । ती–तीसरी । चवद–चौदह । मत–मात्रा ।

१३८. खट–छ ।

१३९. नगणक–नगण । चव–कह । सुकव–श्रेष्ठ कवि । यां–इन । ज्यां–जिन । दोयांरै–दोनोंके । जीं–जिस । गुरुवंत–वह जिसके अन्तमें गुरु हो ।

नोट—मूल प्रतिमें गुरुवंत शब्द लिखा मिला । यहां पर लघ्वांत होता तो ठीक रहता क्योंकि रसखरा गीतमें सर्वत्र-अन्त लघु वर्ण ही होता है ।

१४०. स्यांमळ–श्याम, कृष्ण । बरसण–वर्षा । छिब–कांति । अंबर–वस्त्र, आकाश । पीत–पीला । वीजळ–विजली, विद्युत । सराह–प्रशंसा ।

कंज सरभर समुख कोमळ, कांन झगमग हरि कुंडळ ।
नयण परसत पत्र निरमळ, दूठ रांम दुबाह ॥
भुजा बळ खळ भंज भारथ, अथघ अपहड़ व्रवण किव अथ ।
सरब बातां वणै समरथ, धार बांण धनंख ॥
कहै मुख मुख जगत जस कथ, असुर समहर नाथ ऊनथ ।
दुझल राघव सुतण दसरथ, लियण भुजबळ लंक ॥
घड़ण नोखा घाट अणघट, वणै लंगर पाय रिणवट ।
घणूं व्यापक ईस घट घट, संत कारज सार ॥
मेल दळ घण रीछ मरकट, पाज बंध समंद जळ पट ।
खळां सबळां भंज खळ खट, विजै कर रणवार ॥
बिहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर ।
थरर लंका जिसा थाहर, विसर त्रंबक वाज ॥
नेतबंध रघुनंद नाहर, छत्री सरण हित ऊछाहर ।
भभीखण कर लंक स्रीवर, मौज की महराज ॥१४०

अथ गीत भाखड़ी लछण

दूहा

एक दवाळौ आंकणी, औ पै'ला कर अेम ।
ग्यार मत्त धुर नव दुती, निज ग्यारह नव नेम ॥ १४१
अवर दवाळां वीस खट, तुक प्रत मत्त तवंत ।
मिळै च्यार तुक अंत लघु, किव भाखड़ी कहंत ॥ १४२

---

१४०. कंज–कमल । सरभर–समान । झगमग–दमक-चमक । हीर–हीरा । दूठ–जबरदस्त । दुबाह–वीर । भंज–नाश कर । भारथ–युद्ध । अथघ–अपार । अपहड़–दानवीर, दातार । व्रवण–दान देने वाला । किव–कवि । अथ (अर्थ)–धन-दौलत । नाथ–नाथना, वशमें करना । ऊनथ–वह जो बन्धनमें न हो, उद्दण्ड । दुझल–वीर । सुतण–पुत्र । लियण–लेने वाला ।

१४१. दवाळौ–गीत छंदके चार चरणका समूह । ग्यार–ग्यारह । मत्त–मात्रा ।

अरथ

भाखड़ीनांमा गीतकै पै'ली तौ आंकणीकौ एक दवाळौ होय, सौ दवाळौ भाखड़ीका सारा दवाळांकै आगै पढचौ जाय, जीं आंकणीका दवाळाकी पै'ली तुक मात्रा इग्यारै, चौथी तुक मात्रा नव होय और गुरु अंत होय और भाखड़ीका दवाळाकी सारी तुकां प्रत मात्रा छाईस होय। अंत लघु होय, जीं गीतकौ नांम भाखड़ी कहीजै। मात्रा उपछंद छै।

अथ गीत भाखड़ी उदाहरण

गीत

खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
रिणवटां राघव खळां रहचण भुजबळां अणभंग।
सुज पळां प्रघळां दियण समळां, गळां ग्रीध सुचंग॥
चळवळां जोगण खपर चढवै, सिंभ कमळां स्रंग।
जग गीत चिहूंवै-वळां जाहर, सुजस हुवै सुढंग॥
खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां॥
भड़भड़ै के लड़थड़ै भारथ, अड़ै के अखड़ैत।
वड़वड़ै के हड़हड़ै वीजळ, जड़ै के जरदैत॥
अड़वड़ै के धड़हड़ै आतस, जुड़ै के कज जैत।
विच समर हेकण धड़ै राघव, बडै रंग बिरदैत॥

---

१४३. खग–तलवार। दत–दान। खटां–प्राप्त करें। रजवटां–क्षत्रियत्व। थूरण–ध्वंश करना, नाश करना, संहार करना। खळ–शत्रु। थटां–दल। रिणवटां–युद्धों। रहचण–संहार करनेको। अणभंग–नहीं भगने वाला वीर। पळां–मांस। प्रघळां–बहुत। दियण–देने वाला। समळां–मांसाहारी पक्षी विशेष। गळां–मांस-पिंडों। चळवळ–रक्त, खून। जोगण–योगिनी, चंडी। सिंभ–शंभु, महादेव। कमळां–मस्तकों। स्रंग (शृक)–माला। चहूंवैवळां–चारों ओर। सुढंग–श्रेष्ठ। भड़–योद्धा। भड़ै–भिड़ते हैं, युद्ध करते हैं। लड़थडै–लड़खड़ाते हैं। भारथ (भारत)–युद्ध। अड़ै–अड़ते हैं, भिड़ते हैं। के–कई। अखड़ैत–योद्धा। वड़वड़ै–भिड़ते हैं। हड़हड़ै–हंसते हैं। वीजळ–तलवार। जड़ै–प्रहार करते हैं। जरदैत–कवचधारी योद्धा। अड़वड़ै–हड़बड़ाते हैं। धड़हड़ै–तोपोंकी ध्वनि होती है। जुड़ै–भिड़ते हैं। कज–लिये। जैत–विजय। विच–बीचमें। समर–युद्ध। हेकण–एक। धड़ै–तरफ, ओर, दलमें। बिरदैत–बिरुदधारी, वीर।

खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥
पह बीरहाक पनाक पणचां, बाज डाक त्रबाक ।
असनाक पर ग्रीधाक आवध, करग बाज कजाक ॥
चठ्ठा करत खप्पराक चंडी, राग बज अयराक ।
रिणछाक चढ़ रिव ताक राघव, लखण सहित लड़ाक ॥
खग दत ब्रद खटांजी राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥
पाराथ सेवग आथ आपण करण सिध मन काथ ।
दसदूण हाथ समाथ दाटक, मार खळ दसमाथ ॥
जुड़हाथ माथ नमाय जंपै, गुणां 'किसनौ' गाथ ।
सरणाय लंक समाथ समपण, निमौ स्री रघुनाथ ॥
खग दत ब्रद खटांजी, राखण रजवटां ।
थूरण खळ थटांजी, राघव रिणवटां ॥ १४३

अथ अन्य विधि गीत भाखड़ो लछण

दूहौ

धुर नव मत जीकार फिर, चवद गुरू लघु अंत ।
एम च्यार तुक आंकणी, किव भाखड़ी कहंत ॥ १४४

---

१४३. बीरहाक–वीर-ध्वनि । पनाक–धनुष । पणचां–प्रत्यंचाओं । डाक–डंका । त्रबाक–नगाड़ा । चठ्ठा–द्रव पदार्थको जीभसे खींच कर पीनेसे होने वाली ध्वनि । अयराक–तेज, भयंकर । रिणछाक–युद्धोन्मत्तता । रिव (रवि)–सूर्य । लखण–लक्ष्मण । लड़ाक–योद्धा । पाराथ–प्रार्थना । सेवग–भक्त । आथ–धन-दौलत । आपण–देनेको । काथ–कथा । दसदूण–बीस । समाथ–समर्थ । दाटक–जबरदस्त, महान । खळ–राक्षस । दसमाथ–रावण । जुड़हाथ–कर-बद्ध होकर । माथ–मस्तक । नमाय–नमा कर, झुका कर । जंपै–कहता है । गुणां–यश, कीर्ति । गाथ–कथा, गाथा । सरणाय–शरणमें आया हुआ । समाथ–समर्थ । समपण–समर्पण करनेको, समर्पण करने वाला ।

१४४. धुर–प्रथम । मत–मात्रा । चवद–चौदह । कहंत–कहते हैं ।

अथ गीत दुतीय भाखड़ी उदाहरण

गीत

सीवर सारणौ जी, केतां निबळ संतां कांम ।
महपत मारणौ जी, मह जुध फरसधरसां मांम ॥
धजबंध धारणौ जी, बंका बरद भुज बरियांम ।
सरण-सधारणौ जी, रविकुळ आभरण रघुरांम ॥
रघुरांम भूपत आभरण, रविवंस अडर अरेह ।
भुज धरण बंका बिरद अणभंग, तीख खित्रवट तेह ॥
दिल गहर ओपत सुतण दसरथ, बोल मुख लख बेह ।
सुत पूर आसां सरब समरथ, निपट दासां नेह ॥ १४५

अथ गीत अरधभाखड़ी तृतीय लछण

दूहौ

अरध दवाळौ आंकणी, बीजौ अरध वखांण ।
अरधभाखड़ी कवि अखै, जुगत त्रिहूं विध जांण ॥ १४६

अथ गीत अरधभाखड़ी उदाहरण

गीत

आरख अंगरा जी दुती भळळाट रवि दरसेण ।
रूप अनंगरा जी जोयां हुवै रद छबि जेण ॥

---

१४५. सीवर (श्रीवर)–विष्णु, श्री रामचन्द्र । सारणौ–सिद्ध करने वाला, सफल करने वाला । केतां–कितने । निबळ–निर्बल । महपत (महिपति)–राजा । मारणौ–मारने वाला । फरसधरसां–परशुरामजीसे । मांम–गर्व, प्रतिष्ठा । धजबंध–वीर । धारणौ–धारण करने वाला । बंका–बांकुरे । बरद–विरुद । बरियांम–श्रेष्ठ । सरण-सधारणौ शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । आभरण–आभूषण । रविवंस (रविवंश)–सूर्यवंश । तीख–विशेषता । खित्रवट–क्षत्रियत्व, वीरता । गहर–गंभीर । ओपत–शोभा देता है । सुतण–पुत्र । बोल–यश, शब्द । निपट–बहुत । दासां–भक्तों । नेह–स्नेह ।

१४६. दवाळौ–गीत छंदके चार चरणका समूह । बीजौ–दूसरा । अखै–कहते हैं । जुगत–युक्ति । त्रिहूं–तीनों । विध–विधि, प्रकार, तरह । जांण–समझ ।

१४७. आरख–चिन्ह, लक्षण । दुति (द्युति)–कांति, दीप्ति । भळळाट–चमक, दमक । रवि–सूर्य । दरसेण–दर्शनसे । अनंगरा–कामदेवका । जोयां–देखने पर । रद–खराब, निकम्मा, रद्द । छबि–शोभा । जेण–जिससे ।

जिण जोय रद छबि हुवै जाहर कौट कांम कांम ।
सुत भूप दसरथ नूप सोभा रूप रविकुळ रांम ॥ १४७

अरथ

यण तरै च्यार दवाळा तथा यधक दवाळांई होय, तिणनूं अरधभाखड़ी कहीजै । तुक दो आंकणीरी हुवै ।

अथ गोखौ गीत लछण

दूहौ

बारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसा अंत ।
छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखौ आखंत ॥ १४८

अरथ

ग्रध गोखा गीतरै तुक आठ होवै । तुक अेक प्रत मात्रा बारै होवै नै आठमी तुकमें वीपसा होवै, जिकौ गोखौ सावझड़ौ गीत कहीजै ।

अथ गीत गोखा उदाहरण

गीत

साझीके बखत सांम, बेल संत बारियांम ।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप आप नांम ॥
धार चाप तेज धांम, वांम अंग रमा बांम ।
किता सार संत कांम, सिया रांम सिया रांम ॥ १४९

अथ दुतीय गोखौ गीत लछण

दूहौ

मझ खट तुक बारह मता, बेद अठम नव जांण ।
कळ नेऊ लघु अंत कह, इक गोखौ इम आंण ॥ १५०

---

१४७. जोय–देख कर । कौट–करोड़ । नूप (अनूप)–अद्भुत । यण–इस । तरै–तरह, प्रकार । यधक–अधिक । तिणनूं–उसको । हुवै–होती है ।

१४८. मत–मात्रा । प्रत–प्रति । आख–कह । वीपसा (वीप्सा)–एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर बल देनेके लिए शब्दावृत्ति होती है । दवाळ–गीत छंदके चार चरणोंका समूह । यूं–ऐसे । आखंत–कहते हैं ।

१४९. बेल–मदद । बारियांम–श्रेष्ठ । तमांम–सब । धार–धारण कर ! चाप–धनुष । वांम–बायां । रमा–लक्ष्मी, सीता । किता–कितने । सार–सफल कर ।

१५०. मझ–मध्य । खट–छ । मता–मात्रा । बेद–चतुर्थ, चौथी । अठम–आठमी । कळ–मात्रा । नेऊ–नब्बे । इक–एक । इम–ऐसे । आंण–ला, रच ।

अरथ

दूजा गोखारै तुक तीन, पै'ली दूजी तीजी मात्रा बारै होय। तुक चौथी मात्रा नव होय। तुक पांचमो, छठी, सातमी मात्रा बारै-बारै होय। तुक आठमो मात्रा नव होय। कुल मात्रा एक दवाळामें नवे होय। गुरु लघु तुकंत पै'ली दूजो तीजी मिळै। चौथी आठमी मिळै। पांचमी छठी सातमी मिळै। कोई कवि यूं पिण गोखौ कहै छै तोई सावझड़ौ छै।

अथ दुतीय गोखा गीत उदाहरण

गीत

साझीके बखत सांम, बेल संत बारीयांम।
ते कहै प्रथी तमांम, नमौ आप नांम॥
धार चाप तेज धांम, बांम अंग रमा बांम।
किता तार संत कांम, रांम रांम रांम॥
सझै बंदगी सुरीस, देव तौ जपै दनीस।
लाख...... लछीस, नांमणौ नरीस॥
बाढ जंग भुजावीस, रीझियां लँका वरीस।
कियौ जे सखा कपीस, ईस ईस ईस॥
भेत गुणां गाथ भेव, आभड़ै न अहंमेव।
ईंदसा सुरा अजेव, साझ तास सेव॥
कीरति वांणी कहेव, दिलां धरै संभदेव।
वाह जेण चेत वेव, देव देव देव॥

---

१५०. यूं–ऐसे। पिण–भी। तोई–तव भी।

१५१. सझै–करता है। बंदगी–टहल, सेवा। सुरीस (सुरेश)–इन्द्र। तौ–तुझे। दनीस (दिनेश)–सूर्य। लछीस (लक्ष्मी+ईश)–विष्णु, श्री रामचन्द्र। नांमणौ–नमाने वाला, झुकाने वाला। नरीस (नरेश)–राजा। बाढ–काट कर। जंग–युद्ध। भुजा-बीस–रावण। रीझियां–प्रसन्न होने पर। लंका-वरीस–लंकाका दान देने वाला। सखा–मित्र। कपीस–सुग्रीव। भेव–भेद। आभड़ै–स्पर्श करता है। अहंमेव–अभिमान, गर्व। ईंदसा–इन्द्रके समान। सुरा–देवता। साझ–करते हैं। तास–उस। सेव–सेवा। वांणी–सरस्वती। कहेव–कहती है। संभ (शंभू)–शिव।

नरेस अनाथ नाथ, अनाथियां घरे आथ ।
करै तूं सुधारे काथ, रटां सांमराथ ॥
भंज के खळां भराथ, गुणां वेद ब्रंह्म गाथ ।
मुणै तौ नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ॥ १५१

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ-सावझड़ौ लछण

दूहौ

धुर बी ती तुक सोळ मत, चौथी मत्त अढार ।
सावझड़ौ तुक अंत लघु, ढोलहरौ निरधार ॥ १५२

अरथ

जिण गीतरै पै'ली, दूजी, तीजी तुक मात्रा सोळै होय । तुक चौथी मात्रा अढारै होय । पण लघु कर पढचा चाहै तौ सोळै ही पढी जाय, सावझड़ौ होय । कदा'क पै'ली, दूजी, तीजी, तुकांमें मात्रा सोळै सूं अधिक होय तौ अटकाव नहीं । पण सोळै सूं घटती तौ नहीं संभवै । जूंनौ गीत देख कीदौ छै ।

अथ गीत ढोलचलौ तथा ढोलहरौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

पेख बणै जिण बाह परध्धर, धींग भुजां निज चाप सरध्धर ।
जेण भजै रिखी ब्रह्म जट धर, गावबे गावबे गाव गिरधर ॥
तौ चित चाह उधार सुतंनह, सेवत तौ दसरथ सुतंनह ।
रात दिनां कर खांत रसंनह, बोलबे बोलबे बोल विसंनह ॥

---

१५१. अनाथियां–गरीबों । आथ–धन-दौलत । काथ–कार्य, काम । सांमराथ–समर्थ । भराथ–युद्ध । मुणै–कहते हैं । तौ–तुझको । नमाय–नमा कर । माथ–मस्तक ।

१५२. धुर–प्रथम । बी–दूसरी । ती–तीसरी । सोळ–सोलह । मत–मात्रा । मत्त–मात्रा । अढार–अठारह । निरधार–निश्चय । पण–परन्तु । कदा'क–कदाचित् । अटकाव–अड़चन । कीदौ–किया ।

१५३. पेख–देख कर । बणै–बनता है । धींग–जबरदस्त । चाप–धनुष । सरध्धर–बाण धारण करता है । जेण–जिसको । रिख–ऋषि । ब्रह्म–ब्रह्मा । जटधर–शिव । गिरधर–गिरधारी । तौ–तेरे । चाह–इच्छा । सुतंनह–पुत्र । खांत–विचार । रसंनह–जीभ । विसंनह–विष्णु ।

बेढबखौ यम ऊंबर सौ बित, आळ-जंजाळ विसार अलच्छत ।
सांन विमास विसास धरेसत, पढबे बढबे पढ्ढ रघ्घुपत ॥
कारुणचौ निध जांनुकीकंतह, स्यांम सुनाथ करै घण संतह ।
तूं 'किसना' चित रक्ख नच्यंतह, अखबे अखबे अक्ख अनंतह ॥१५३

अथ गीत त्रकुटबंध लछण

दूहा

धुर चवदह चवदह दुती, तीजी मत छाईस ।
चवदह चौथी पंचमी, इम तुक पंच कहीस ॥ १५४
आठ तुकां फिर कंठकी, पै'ली सोळह मत्त ।
चवद चवद कळ आठ तुक, नवमी दसह निरत्त ॥ १५५
पै'ली दूजीसूं मिळै, तिणरै गुरु तुकंत ।
तीजी दूहा अंतरी, उभै मिळै लघु अंत ॥ १५६
मिळै चवथी पंचमी, जिकां अंत गुरु जांण ।
अनुप्रासकी आठ तुक, मिळै अंत लघुमांण ॥ १५७
त्रकुटबंध तिण गीतनै, कहै सरब कवियांण ।
राघव जस जिण मझ रटै, वळै सतारथ वांण ॥ १५८

---

१५३. बेढ–लड़ाई । बखौ–कष्ट, दुःख । ऊंबर (उम्र)–आयु । आळजंजाळ–व्यर्थका प्रपंच । विसार–भूल जा । सांन–बुद्धि । विमास–विचार कर । विसास–विश्वास । कारुणचौ निध–करुणाका खजाना । जांनुकीकंतह–जानकीका पति, श्री रामचंद्र । स्यांम–स्वामी । घण–बहुत । नच्यंतह–निश्चित । अखबे–कह रे । अक्ख–कह । अनंतह–विष्णु, श्री रामचंद्र ।

१५४. चवदह–चौदह । दुती–दूसरी । मत–मात्रा । छाईस–छब्बीस । कहीस–कह, कही जाती है ।

१५५. कंठ–अनुप्रास । चवद–चौदह ।

१५७. चवथी–चौथी । लघुमांण–लघु ।

१५८. कवियांण–कविजन । राघव–श्री रामचन्द्र भगवान । मझ–मध्य । वळै–फिर । सतारथ (सत्यार्थ)–सत्य । वांण–वाणी, वचन ।

अरथ

त्रकुटबंध गीतरै पै'ली तुक मात्रा चवदै। दूजी तुक मात्रा चवदै। तीजी तुक मात्रा छाईस। पै'ली दूजीसूं मिळै तुकंत गुरु। तीजी सारा ही दूहांरी अंतरी तुकसूं मिळै। तीजीरै नै अंतरीरै अंत लघु। विचली अनुप्रासांरी तुक आठ, ज्यांमें पै'लीरी तुक तौ मात्रा सोळै और सात ही तुकां प्रत मात्रा चवदै चवदै होय। अनुप्रासांरी आठ ही तुकांरा मोहरा मिळै नै तुकंत लघु होय। यण प्रकारसूं गीत त्रकुटबंध कहीजै। अनुप्रासांरी तुक आठ ज्यांमेंसूं च्यार घटती कहै जींनै मुगटबंध कहीजै। अतरौ त्रकुटबंध मुकटबंधरै भेद छै। दूजू दोनूंई एक छै, कांई तफावद नहीं।

अथ गीत त्रकुटबंध उदाहरण

गीत

अवधेस लंका ऊपरै, धर कुरख धंखा जुध धरै।
अठ्ठार पदम कपेस अणघट, मेळ दळ महराज॥
गत विसर त्रंबक गड़गड़ै।
भारथ कपी आसुर भड़ै।
भड़ अनड़ बडबड अमुड़ जुध भड़।
दुजड़ पड़ झड़ बड़ड़ खित झड़।
दड़ड़ रत पड़ अगुट दड़दड़।
चड़ड़ ऊधड़ प्रगड चख म्रड।
खड़ड़ नरहड खपर खड़खड़।

---

१५८. चवदै—चौदह। बिचली—बीचमें, मध्यकी। ज्यांमें—जिनमें। यण—इस। तफावत, तफावद—फर्क, अन्तर।

१५९. कुरख—कोप। धंखा—इच्छा। पदम—गणितमें सोलहवें स्थानकी संख्या। कपेस—बानर। अणघट—अपार। गत—प्रकार, तरह। विसर—भयंकर, भयावह। त्रंबक—नगाड़ा। गड़गड़ै—बजते हैं। भारथ—युद्ध। कपी—वानर। आसुर—राक्षस। भिड़ै—युद्ध करते हैं। भड़—योद्धा। अनड़—स्वतंत्र। बडबड—बड़े-बड़े। अमुड़—नहीं मुड़ने वाले। दुजड़—तलवार। झड़—प्रहार। बड़ड़—ध्वनि विशेष। खित—पृथ्वी। झड़—कट कर। दड़ड़—द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या ध्वनि। रत—रक्त, खून। अगुट—शिर। दड़दड़—ध्वनि विशेष। खड़ड़—ध्वनि विशेष। खड़खड़—ध्वनि विशेष।

हड़ड़ नारद बीर हड़हड़ ।
धड़ड़ आतस सिखर धड़हड़ ।
गहड़ बिखम त्रबंक गड़गड़, गड़ड़ घर नभ गाज ॥
पड़ मार तरवर पाथरां, रिण विकट कपी रघुनाथरां ।
दससीस दळ भुजबळां, द्रहवट कीध अडर सकोप ॥
नभ खंचरथ अवनाड़रा ।
खिलकत कौतूक राड़रा ।
दळ प्रबळ चौवळ कळळ दमंगळ ।
भळळ बीजळ सेल भळहळ ।
अहप सिर लळ अचळ चळ यळ ।
वाज हूंकळ कळळ वळवळ ।
खळळ चळवळ सरित खळहळ ।
समळ पळगळ लीध सांमिळ ।
मिळ कमळ स्रगनेत मंगळ ।
जुध वयळ कुळ नूमळ चढ जळ, अचळ राघव ओप ॥
धख हणू भुजव्रद धारखा, सूग्रीव अंगद सारखा ।
नळ नील दध-मुख पणास नाहर, बिहद जंबूवांन ॥

---

१५९. हड़ड़–हंसनेकी ध्वनि । हड़हड़–हंसनेकी ध्वनि । धड़ड़–तोपोंकी ध्वनि । बिखम–विषम । गड़गड़–नगारेकी ध्वनि, नगाड़ा बजना । गड़ड़–ध्वनि विशेष । नभ–आकाश । तरंवर–वृक्ष । पाथरां–पत्थरों । रिण–युद्ध । विकट–भयंकर । दससीस–रावण । दळ–सेना । भजबळां–भुजाबलसे । द्रहवट–ध्वंश, नाश । अवनाड़रा–सूर्यका । राड़रा–युद्धका । चौवळ–चारों ओर । कळळ–कोलाहल । दमंगळ–युद्ध । भळळ–चमक, दमक । बीजळ–तलवार । सेल–भाला । भळहळ–चमक, दमक । अहप–शेषनाग । लळ–झुक जाते हैं, झुक गये । अचळ–पर्वत । चळ–चलायमान । यळ (यला)–पृथ्वी । वाज–घोड़ा । हूंकळ–घोड़ोंकी हिनहिनाहटकी ध्वनि । कळळ–कोलाहल । वळवळ–चारों ओर । खळळ–द्रव पदार्थके बहनेकी ध्वनि । चळवळ–रक्त, खून । सरित–नदी । खळहळ–बहने लगी । समळ–मांसाहारी पक्षी विशेष । पळ–मांस । गळ–पिंड, कौर । वयळ–सूर्य । नूमळ–निर्मल । जळ–कांति, दीप्ति । अत्रळ–अटल । ओप–कांति । हणू–हनुमान । सारखा–समान । जंबूवांन–जामवन्त ।

जग वय मयंद गवाखसा ।
लड़ हेक भंजण लाखसा ।
इर अतर लसकर समर ओर ।
सधर घण सुर कंवर दससिर ।
सुकर धर सर बजर ससतर ।
गहर हर वह पथर तर गिर ।
वहर सिर कर देह वाखर ।
पहर चौसर सुवर अपछर ।
सधर रघुबर दुछर वह सर ।
असुर दससिर दुसर छिद उर, मछर भंज अमांन ॥

क्रोधाळ लिछमण कांमरौ, रिण लड़ै बंधव रांमरौ ।
तिण मेघनाद विभाड़ ताखै, पाड़ असहां पूज ॥

कूंभेण दससिर क्रांमती ।
पह भंज हेकल रघुपती ।
रिण कुंभ सुरघण मार रांवण ।
कठण खळ जण कीध कणकण ।
विभीखण जग चरण वासण ।
सरणहित तिण लंक समपण ।
ऊछव घण सिय तरण आंणण ।
प्रसण हण मन महण द्रढ पण ।

---

१५६. चौसर–पुष्पहार । अपछर–अप्सरा । दछर–वीर । मछर–गर्व । क्रोधाळ–क्रुद्ध । लिछमण–लक्ष्मण । बंधव–भाई । विभाड़–संहार कर, मार कर । ताखै–वीर । असहां–शत्रुओं । पूज–समूह । पह (प्रभु)–योद्धा, राजा । कणकण–तितर-बितर । ऊछव–उमंग । घण–बहुत । सिय–सीता । आंणण (आनन)–मुख । प्रसण–शत्रु । महण (महार्णव)–समुद्र ।

सयण हुलसण दुयण सकुचण ।
ग्रहण मोखण धरण सुरगण ।
जपण कविजण सुजस जणजण, जैत रांम अंगज ॥ १५९

अथ गीत द्रुतीय त्रकुटबंध

चौपई

जांण उभय तुक भंवर गुंजार, सोळह प्रथम चवद बी सार ।
ती चवदह दस गुरु लघुवंत, यण मुहमेळ चवदमो अंत ॥१६०
चवद मत तुक दोय चवंत, रटजै मूहमेळ रगणंत ।
अनुप्रासरी तुक रच आठ, पढ धुर सोळह चवद अन पाठ ॥१६१
प्रत तुक कंठ च्यार प्रमांण, उभै कंठ घट तुक यां आंण ।
तुक आठूं ही होय लघुंत, नवमी दस मत गुरु लघु अंत ॥१६२
दूहा अेक प्रत यम तुक होय, साखै बियौ त्रकुटबंध सोय ॥१६३

अथ द्रुतीय गीत त्रकुटबंध उदाहरण

गीत

जांनकी नायक जगत जाहर, वीर संतां करण वाहर ।
वहत कथ सुज वेद दुजबर, धनौ करुणाधांम ॥

---

१५९. **सयण**–सज्जन । **हुलसण**–हर्ष, प्रसन्नता । **दुयण** (दुर्जन)– शत्रु, दुष्ट । **मोखण**–छोड़ना । **सुरगण**–देवता । **जपण**–जपने को । **कविजण**–कविजन । **जणजण**–प्रत्येक व्यक्ति । **जैत**–विजय । **अगंज**–जो जीता न जा सके ।

१६०. **उभय**–दोनों । **चवद**–चौदह । **बी**–दूसरी । **ती**–तीसरी । **लघुवंत**–जिसके अन्तमें लघु हो । **यण**–इस । **मुहमेळ, मूहमेळ**–तुकवंदी । **चवदमी**–चौदहवीं ।

१६१. **चवंत**–कहते हैं । **रगणंत**–जिसके अंतमें रगण हो । **अन**–अन्य ।

१६२. **कंठ**–अनुप्रास । **लघुंत**–जिसके अंतमें लघु हो ।

१६३. **प्रत**–प्रति । **यम**–इस प्रकार । **साखै**–कहते हैं, साक्षी देते हैं । **बियौ**–दूसरा । **सोय**–वह ।

१६४. **वाहर**–रक्षा । **वहत**–चलता है । **कथ**–आज्ञा । **दुजबर**–ब्राह्मण । **धनौ**–धन्य–धन्य । **करुणाधांम**–करुणासागर ।

यभ दास तारण वासतै ।
पोह छंड कमाळा पासतै ।
सुर अतुर गिर कर स्रवण स्रीवर ।
तळप परहर अतुर चढ तुर ।
चक्रधर मग सधर संचर ।
सिथळ पर घर जांण ईसर ।
छांड नगधर धरण दूछर ।
मकर यर सर चकर मोख'र ।
फंद हर पग सथर कर फिर ।
वळ सुकर गह सुकर रघुबर, तार सिंधुर तांम ॥ १६४

अरथ

ईं प्रकारसूं च्यार ही दूहां दूसरौ त्रकुटबंध जांणज्यौ ।

अथ गीत सुपंखरौ वरण छंद लछण

दूहौ

धुर तुक अखर अठार धर, चवद सोळ चवदेण ।
सोळ चवद क्रम अंत लघु, जपै सुपंखरौ जेण ॥ १६५

अरथ

सुपंखरौ गीत वरण छंद तिणरै मात्रा गिणती नहीं । अखिर गिणती होय । जींरै पहली तुकरा आखर अठारै होय । दूजी तुक आखर चवदै होय । तीजी तुक आखर सोळै होय । चौथी तुक आखर चवदै होय । पाछला दूहांरी पैं'ली तुक हर तीजी तुक आखर सोळै होय । दूजी, चौथी तुक आखर चवदै होय । तुकांत लघु होय । जीं गीतनै सुपंखरौ कहीजै ।

---

१६४. यभ (इभ)–हाथी । दास–भक्त । वासतै–लिए । पोह–प्रभू । छंड–छोड़ कर । कमळा–लक्ष्मी । पासतै–पास से । तळप (तल्प)–शय्या, पलंग । परहर–छोड़ कर । चकरधर–विष्णु । मग–मार्ग । सधर–सधैर्य । संचर–गमन । सिथळ–मंद । जांण–समझ कर, जान कर । छांड–छोड़ कर । नगधर–गरुड़ । दूछर–वीर । मकर–ग्राह । यर–शत्रु । चकर–चक्र । मोख'र–छोड़ कर । फंद–बंधन, जाल । हर–मिटा कर । सथर–स्थिर, अटल । वळ–फिर । सुकर–हाथ । गह–पकड़ कर । सिंधुर–हाथी, गज ।

अथ गीत सुपंखरौ उदाहरण

गीत

पैंडां नीतरा चलाक धू छ-च्यार भंज पलीतरा ।
सूर धीर चीतरा अछेह ओप संस ॥
धीतरा कीतरा रिखी सुकंठ मीतरा धनौ ।
वाहरू सीतरा रांम अदीतरा वंस ॥
वंदनीक पायरा गायरा दुजां विसावीस ।
आसुरां भंजणा आडे घायरा अमाव ॥
अडोळ पायरा सीह सुभायरा आसतीक ।
सिहायरा जनां औधरायरा सुजाव ॥
खेस जंद द्वंद रांम दंधरा सिंघार खरा ।
दहै बाळरा स्रीनंदरा भांण दात ॥
दासरथी सिधरा अबंधरा बंधरा देण ।
पंच दूण कंधरा कबंधरा निपात ॥
हणू जिसा किंकरा पधोर के वंकरा हल्लां ।
जूधां जीत अनंकरा रोड़णा जोधार ॥

---

१६६. पैंडां–कदमों । नीतरा–नीतिके । चलाक–चलने वाला । धू–शिर । छ-च्यार–दस । पलीतरा–असुरके । अछेह–अपार । रिखी–ऋषि । सुकंठ–सुग्रीव । मीतरा–मित्रके । धनौ–धन्य । वाहरू–रक्षक । सीतरा–सीताके । अदीतरा–सूर्यके । वंदनीक–वंदनीय । पायरा–चरणोंके । दुजां–ब्राह्मणों । विसावीस–पूर्ण । आसुरां–राक्षसों । भंजण–संहार करने वाला । आडे–विरुद्ध । घायरा–प्रहारका । अमाप–अपार । अडोल–दृढ़, अटल । पायरा–चरणका । सीह–सिंह । सुभायरा–स्वभावका । आसतीक–समर्थ, शक्तिशाली, आस्तिक । सिहायरा–सहायताके । जनां–भक्तों । औधरायरा–राजा दशरथके । सुजाव–पुत्र । खेस–असुर । जंद–असुर । द्वंद–युद्ध । सिंघार–विध्वंश । दासरथी–श्री रामचन्द्र । सिधरा–समुद्र । अबंध–बंधनरहित । बंधरा–बंधनका । देण–देने वाला । हणूं–हनुमान । जिसा–जैसा । किंकरा–सेवक । पधोर–सीधा करने वाला । वंक–वक्र । अनंकरा–नगाड़ाके । रोड़णा–बजाने वाला । जोधार–योद्धा, वीर ।

रोळै लेण लंकरा निसंकरा विभाड़ रांम ।
हाथां भ्फौक रंकरा लंकरा देणहार ॥ १६६

अथ गीत हेकलवयण तथा मात्रारहित हंसगमण लछण

दूहा

धुर अठार उगणीस मत, त्रदस सोळ त्रदसेण ।
दु लघु अंत सांणौर लघु, जपै खुड़द कवि जेण ॥ १६७
जिण छोटा सांणोरमें, गुरु अखिर नह होय ।
सरब लघु सोळह तुकां, हेकल वयण स कोय ॥ १६८

अरथ

खुड़द लघु सांणोर तथा वेलिया सांणोर गीतरी सोळै ही तुकांमें गुरु अखिर अेक ही न होय । सोळै ही तुकांमें सरब लघु अखिर होय, जीं गीतरौ नांम हेकल-वयण कहीजै तथा मात्रारहित कहीजै । कठे'क दवाळा एकरा तुकांत प्रत गुरु अेक होय । इणनै धणकंठ सांणोर पिण कहीजै ।

अथ गीत हेकलवयण उदाहरण

गीत

जग जनक धनक हर हरण करण जय ।
चत नरमळ नहचळ चरण ॥
अकरण करण समरण अघ अणघट ।
सक रघुबर असरण सरण ॥
लछवर सधर अमर नर रख लज ।
महपत समरत हरत मळ ॥

---

१६६. रोळै–युद्धमें । विभाड़–वीर । भ्फौक–धन्य । रंकरा–गरीबका । देणहार–देने वाला ।

१६७. उगणीस–उन्नीस । मत–मात्रा । त्रदस–तेरह ।

१६८. सोळ–सोलह । त्रदसेण–तेरहसे । दु–दो । जेण–जिसको । अखिर–अक्षर । सकोय–वह । कठे'क–कहीं पर । पिण–भी ।

१६९. जनक–पिता । धनक–धनुष । हर–महादेव । हरण–तोड़ने वाला । चत–चित्त । नरमळ–निर्मल । नहचळ–निश्चल, अटल । अघ–पाप । अणघट–अपार, नहीं मिटने वाला । लछ (लक्ष्मीवर)–विष्णु, श्री रामचन्द्र । सधर–दृढ़ । लज–लज्जा । महपत (महिपति)–राजा । समरत–स्मरण करते हैं । मळ–पाप, मैल ।

छजत बयरा पय सरस मयरा छब।
कमळ नयरा रव तरा कळ॥
सकर धनख सरस रस सदन सख।
नरख बदन जग भय नसत॥
तन मन बय सम स जन सहज तूय।
लछरा भरथ अरिघरा लसत॥
तन घरा बररा धररा दसरथ तरा।
सदय समन गरवत सहज॥
तज तज अवर 'कसन' कव नत-प्रत।
धर मन नहचळ गरड़-धज॥ १६९

अथ गीत भुजंगी लछण

दूहौ

बारा अखिर तुक अेक प्रत, यगरा चार गुरु अंत ।
गीत भुजंगी तास गरा, वररा छंद बुधवंत ॥ १७०

अरथ

जा गीतरै तुक अेक प्रत च्यार यगण होय। अंत गुरु होय, वरण छंद छै। मात्रा गिणती नहीं। जिण गीतनै भुजंगी कहै छै।

अथ गीत भुजंगी उदाहरण

गीत

महाराज औधेस आधार संतां, वार खारी रखै लाज बेखौ।
हरी काज पै आसरा दीह हेके, लछीनाथ दी सेवगां लंक लेखौ॥

---

१६९. छजत–शोभा देता है। बयण–वचन। मयण–कामदेव। छब–कांति, दीप्ति। रव–सूर्य। तरण–तरुण। धनख–धनुष। सदन–घर। नरख–देख कर। बदन–मुख। नसत–नाश होता है। लछण–लक्ष्मण। अरिघण–शत्रुघ्न। लसत–शोभा देते हैं। घण–बादल। धरण–धारण करने वाला। तण (तनय)–पुत्र। नत-प्रत–सदैव। नहचळ–निश्चल। गरड़-धज–गरुड़ध्वज, विष्णु।

१७०. बारा–बारह। तास–उस। गण–समझ। बुधवंत-बुद्धिमान। गिणती–गिनती, संख्या।

१७१. औधेस (अवधेश)–दशरथ, श्री रामचन्द्र। खारी–भयंकर। बेखौ–देखो। लछीनाथ (लक्ष्मीनाथ)–विष्णु।

तवै भू अहल्या गणंका तिराई, रटां बोर भीलीतणा खाय रीधौ ।
सरां ताड़का मार ऊधार सांमी, करां ग्रीधवाळौ वळे स्राध कीधौ ॥
रदा सिंभ वांमे सदा अेकरंगी, गवै जास पंगी नरां बेद गाथां ।
तनां खीणहूंतौ मुणै भ्रात तोनूं, हणै बाळ सुग्रीव दे राज हाथां ॥
कसौ जोड़ भूमंड तै अोर कीजै, भुजाडंड मोटा ब्रदां जोग भाळौ ।
अठूंजांम जीहां 'किसनेस' आखै, वडौ आसरौ रांम पै कंज वाळौ ॥१७१

अथ गीत वडौ सांणोर अहरणखेड़ी लछण

दूहा

तेवीसह मत पहली तुक, बी अठार ती बीस ।
चौथी तुक अठार चव, लघु तुक अंत लहीस ॥ १७२
वडा जेण सांणोर बिच, पवरग ऊ न पयंप ।
अहरणखेड़ी नांम उण, जस राघव मझ जंप ॥ १७३

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा तेवीस । दूजी तुक मात्रा अठारै । तीजी तुक मात्रा बीस । चौथी तुक मात्रा अठारै होय सौ गीत वडौ साणोर कहावै । अंत लघु होय । जीं बडा सांणोरमें पवरगरा पांच आखर प फ ब भ म अर ऊ व, अे सात आखर सारा गीतमें न होय अर गीत पढतां होठ मिळै नहीं, जीं गीतरौ नाम अहरणखेड़ी कहीजै । अहर=होठ न खेड़ी कहतां खड़ै नहीं, हालै नहीं यौ अरथ छै ।

---

१७१. तवै–स्तुति करते हैं। भू–संसार। भीली–भिल्लनी। वळै–फिर। कीधौ–किया। रदा–हृदय। सिंभ–शंभू, शिव। गवै–गाया जाता है। जास–जिसका। पंगी–कीर्ति, यश। मुणै–कहता है। तोनूं–तुझको। बाळ–बालि वानर। कसौ–कौनसा। जोड़–बराबर, समान। भूमंड–भूमंडल। भुजाडंड–शक्तिशाली, समर्थ। जोग–योग्य। भाळौ–देखो। अठूंजांम–अष्टयाम। जीहा–जीभ। आखै–कहता है। आसरौ–सहारा। पै–चरण। कंज–कमल।

१७२. मत–मात्रा। बी–दूसरी। ती–तीसरी। चव–कह। लहीस–लेगा।

१७३. पयंप–कह। मझ–मध्य। जंप–कह। सौ–वह। यौ–यह।

अथ गीत अहरण(न)खेड़ी उदाहरण

गीत

करां धाड़ लागै रघौराज दत कीजतां ।
सरसतां रीझतां संत सुख साज ॥
लीजतां नखत्र-डर सरण हेकण लहर ।
रीझतां दियौ लंका जिसौ राज ॥
सर धनंख धरण कर दहण दैतां सधर ।
दुख नरक त्रास हण जनां जगदीस ॥
हरख रिण इंद्रतण नास कीधौ हठी ।
अरकतण कियौ केकंध गढ ईस ॥
तिकां सिर दया रुख होय हरि तौ तणी ।
किणी दिन न लागै जिकां आतंक ॥
घणाघण छटा तन क्रंत धरियां घणी ।
सह जनां संकट हरण धणी निरसंक ॥
चरण असरण सरण कहै आंणणचतुर ।
अहोनिस संत जण करण आणंद ॥
दूणदसहाथ हण गाथ रावण दूनी ।
नाथ 'किसनेस' कौसळतणा नंद ॥ १७४

---

१७४. करां–हाथों । धाड़–धन्य । रघौराज–श्री रामचन्द्र । दत–दान । नखत्र–डर–(नखत्र–भै + डर–भीखण–भभीखण)–विभीषण । जिसौ–जैसा । दहण–नाश । सधर–दृढ़ । त्रास–भय, आतंक । जनां–भक्तों । हरख–हर्ष । रिण–युद्ध । इंद्रतण (इन्द्रतनय)–बालि वानर । कीधौ–किया । हठी–हठ करने वाला, जिद्दी । अरकतण (अर्कतनय)–सुग्रीव । कियौ–किया । केकंध–किष्किंधा । ईस–राजा । तिकां–उन, जिन । रुख–इच्छा । तौ तणी–तेरी । किणी–किसी । आतंक–डर, भय । घणाघण–बादल । छटा–कांति, दीप्ति, बिजली । क्रंत–कांति, दीप्ति । धरियां–धारण किये हुए । घणी–बहुत । धणी–स्वामी । निरसंक–निशंक, निर्भय । आंणणचतुर (चतुरानन)–ब्रह्मा । दूणदसहाथ–रावण । हण–मार कर । गाथ–कीर्ति, यश । दुनी–दुनियाँ, संसार । नंद–पुत्र ।

अथ गीत विडकंठ तथा वीरकंठ लछण

दूहा

धुर तुक मत चौवीस धर, वळ दूजी अकवीस ।
ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस ॥ १७५
दख यम मता चव दूहां, अंत लघू तुक अेक ।
सोळ चवद अखिर सुक्रम, कह विडकंठ विमेक ॥ १७६

अरथ

पै'ली तुक मात्रा चौवीस होय । दूजी तुक मात्रा अकवीस होय । तीजी तुक मात्रा चौवीस होय । चौथी तुक मात्रा अकवीस होय । यण क्रमसूं च्यार ही दूहां मात्रा होय । अंत तुकरै अेक लघु होय । इण लेखे तौ विडकंठ गीत मात्रा छंद छै नै पै'ली तुक आखर सोळै । दूजी तुक आखर चवदै । तीजी तुक आखर सोळै अर चौथी तुक आखर चवदै होय । यौ क्रम च्यार ही दवाळां होय । आखर गिणतीके लेखे विडकंठ वरणछंद छै । इण प्रकार विडकंठ गीत कहीजै । गणांकौ क्रम गीतकौ तुकांसूं देख लीज्यौ । लछणका दूहा घणा होय जिणसूं न कह्या छै । कोई इण गीतरौ नांम वीरकंठ पिण कहै छै ।

अथ गीत विडकंठ तथा वीरकंठ उदाहरण

गीत

जै नरेस राघवेस आसुरेस जुधां जेस ।
के कवेस देस देस कीरती कहंत ॥
स्रीधराज राख लाज कीध काज संत साज ।
हेल सिंध रूप इंद विरदां वहंत ॥

---

१७५. वळ–फिर । अकवीस–इक्कीस । ती–तीसरी । चतुरथी (चतुर्थी)–चौथी । कळ–मात्रा । कवीस–महाकवि, कवि ।

१७६. दख–कह । यम–ऐसे । चव–चार । सोळ–सोलह । चवद–चौदह । अखिर–अक्षर । विमेक–विवेक । यौ–यह ।

१७७. जै–जय । नरेस–राजा । राघवेस–श्री रामचन्द्र भगवान । आसुरेस–राक्षस, रावण । के–कई । कवेस (कवीस)–महाकवि । कीरती (कीर्ति)–यश । कहंत–कहते हैं । स्रीधराज–श्री विष्णु, श्री रामचन्द्र । कीध–किया । हेल–लहर । सिंध–समुद्र । इंद–इन्द्र । विरदां–विरुदों । वहंत–धारण करते हैं ।

साज पांण चाप बांण खळां खांण घमंसांण ।
सुरांरांण भुजांपांण जै कियौ असंक ॥
ताप खाय दितांराय बंद आय पाय तास ।
लखै रंक ही अवंक मेट दीध लंक ॥
ओप अंग स्यांम रंगते सुचंग जै अनं··· ।
पीतरंग नी···सारंग भंग कौड़ पाप ॥
सूरवीर जनां भीर गज्जगीर पै सधीर ।
जळै पाप अणमाप जेण नांम जाप ॥
दुनी पाळ इंद्र ढाल बिरदाळ जै दयाळ ।
गुणी साथ सांमराथ रटै कीत गाथ ॥
नांम जेस करे खेस पढै सेस 'किसनेस' ।
निराधार ज्यां अधार निमौ औधनाथ ॥ १७७

अथ गीत अट्ठा लछण

दूहौ

छंद अरध नाराजरी, चौ तुक दूहां सचीत ।
लघु गुरु क्रम तुक बरण अठ, गिण तिण अट्ठौ गीत ॥ १७८

अरथ

वरण छंद छै अठौ गीत । जिणमें अरधनाराच छंदरी तुक च्यारसूं अेक दूहौ होय। पै'ली लघु पछै गुरु, इण क्रमसूं तुक अेक प्रत आखर आठ होय। जिणरै च्यार ही तुकांरौ तुकांत अेक होय। सावझड़ौ होय, जिणनै अट्ठौ गीत कहीजै।

---

१७७. साज–धारण कर. सज कर। पांण–हाथ। चाप–धनुष। खळां–राक्षसों। खांण–नाश कर, नाश करनेको, नाश करने वाला। घमंसांण–युद्ध। सुरांरांण–इन्द्र। भुजांपांण–भुजाके प्रभावसे। जे–जिस। असक–निर्भय। ताप–भय, आतंक। दितांराय–दैत्यराज। पाय–चरण। तास–उसके। दीध–दी, दिया। पीतरंग–पीला रंग। जनां–भक्तों। भीर–मदद, सहायता। गज्जगीर–युद्ध। पै–चरण। सधीर–धैर्य-युक्त, अटल। अणमाप–अपार, असीम। जेण–जिस। दुनी–संसार। पाळ–पालक। ढाल–रक्षक। बिरदाळ–विरुदधारी। गुणी–कवि। साथ–समूह। सांमराथ–समर्थ। औधनाथ–श्रीरामचन्द्र भगवान।

१७८. चौ–चार।

अथ गीत अट्ठौ वरण छंद उदाहरण

गीत

दखै 'किसन्नदास' रे, तवूं विरूद तास रे।
सदा वसां हुलास रे, अभंग रांम आस रे॥
सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध सिंध पाज रे।
जनां निबाह लाज रे, रहूं अधार राज रे॥
पटैंत रूप पांणरा, खळां भराथ खांणरा।
सुखी रहूं सुजांणरा, भरोस वंस भांणरा॥
प्रसन्न दास प्रीतरा, बियार अत्थबीतरा।
जुधां दयंत जीतरा, सरंम नाथसीतरा॥ १७९

अथ गीत दूणौ अट्ठौ वरण छंद लछण

दूहौ

छंद व्रधनाराचरी, चौ तुक हेक दवाळ।
वरण छंद सौ गीत वद, दूणौ अठौ दिखाळ॥ १८०

अरथ

व्रधनाराचरी च्यार तुकांरौ अेक दवाळौ होय सौ सावझड़ौ गीत दूणौ अट्ठौ कहावै। लघु गुरु ईं क्रमसूं तुक अेक प्रत अखिर सोळह होय। इण प्रकार सोळै ही तुकां होय सौ दूणौ अट्ठौ गीत तुकंत गुरु वरण छंद छै।

अथ गीत दूणौ अट्ठौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

विभाड़ पंचदूणमाथ आथ देण वेस रे।
मझार ध्यांन कंज सौ वसै रदा महेसरे॥

१७९. दखै–कहता है। तवूं–स्तुति करता हूं, वर्णन करता हूं। तास–तेरे। हुलास–आनन्द, हर्ष। अभंग–नहीं भागने वाला, वीर। आसरे–आश्रय में। सिंध–समुद्र। पाज–सेतु, पुल। निबाह–निभाने वाला। राजरे–श्रीमानके, आपके। पटैंत–वीर, योद्धा। पांणरा–शक्तिका। भराथ–युद्ध। खांणरा–ध्वंश करने वाला, नाश करने वाला। भरोस–विश्वास, भरोसा। भांण–सूर्य। दयंत–देने वाला अथवा दैत्य। नाथसीतरा–सीतानाथके।

१८०. दवाळ–गीत छंदके चार चरणोंका समूह। दिखाळ–दिखला दे, दिखला।

१८१. विभाड़–ध्वंश कर, संहार कर। पंचदूणमाथ–रावण। आथ–धन, द्रव्य। मझार–मध्य। कंज–ब्रह्मा। रदा–हृदय। महेसरे–महादेवके।

सदा नमंत औधराय पाय धू सुरेस रे ।
वदां नरेस आंन कूण जोड़ राघवेस रे ॥
निबाह सीतनाथ वाह संतचा नेहड़ा ।
अमोघ बांण चाप पांण वांण जे अछेहड़ा ॥
जुधां निपात सांमराथ लंकनाथ जेहड़ा ।
कहां नरिंद दासरथ्थनंद जोट केहड़ा ॥
अपार तेज अंगधार धार तेज आक्रती ।
कपै अमाप पाप ताप नांम जाप क्रांमती ॥
जुधां जयंत सेवमें रहै अनंत साजती ।
भणा किसौ समांन आंन कौसळेस भूपती ॥
महामदंध आसुरां सुरंद चाड मारणा ।
त्रिलोकनाथ गोह ग्राह ग्रीध आद तारणा ॥
'किसन्न' पात व्है दयाळ पाळ सिध कारणा ।
धनौ नरेस राघवेस चीत नीत धारणा ॥ १८१

अथ भांण गीत मात्रा वरण प्रमांण लछण

दूहा

धुर बीजी मत बार धर, वद तीजी बावीस ।
बारह चौथी पंचमी, वळ छठी बावीस ॥ १८२

---

१८१. औधराय–श्री रामचन्द्र भगवान। पाय–चरण। धू–शिर, ध्रुव। सुरेस–इन्द्र। वदां–कहे। नरेस–राजा। आंन–अन्य। कूण–कौन। जोड़–बराबर, समान। राघवेस–श्री रामचन्द्र भगवान। नेहड़ा–स्नेह। अमोघ–नहीं चूकने वाला, अव्यर्थ, अचूक। निपात–गिराना। सांमराथ–समर्थ। लंकनाथ–रावण। जेहड़ा–जैसा। नरिंद–राजा। दासरथ्थ–राजा दशरथ। नंद–पुत्र। जोट–जोड़ी। केहड़ा–कैसा। कपै–काटते हैं। अमाप–अपार। ताप–आतंक, भय। जयंत–जीतना। सेवमें–सेवामें। अनंत–लक्ष्मण। जती–जितेन्द्रिय, यती। किसौ–कौनसा। आंन–अन्य। आसुरां–राक्षसों। सुरंद–इन्द्र। चाड–पुकार। मारणा–मारने वाला। गोह–गुह नामक निषाधराज। आद–आदि। तारणा–तारने वाला। पात–कवि। पाळ–रक्षा। सिध–सिंधुर, गज। कारण–कारण, करने वाला। धनौ–धन्य। चीत–चित्त। नीत–नीति। धारणा–धारण करने वाला।

१८२. धुर–प्रथम। बीजी–दूसरी। मत–मात्रा। बार–बारह। वद–कह। वळ–फिर।

पहली दूजीसूं मिळै, तीजी छठी समेळ ।
मिळै चवथ्थी पंचमी, भल तुकंत लघु भेळ ॥ १८३

आठ वरण धुर दूसरी, तीजी पनर तुकंत ।
पुण अठ चौथी पंचमी, छठी पनर छजंत ॥ १८४

विध इण मत्ता वरणरौ, परगट जांण प्रमांण ।
भांण-गीत जिण नांम भल, भण जस रघुकुळ भांण ॥ १८५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा बारै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा बावीस । चौथी तुक मात्रा बारै । पांचमी तुक मात्रा बारै, । छठी तुक मात्रा बावीस होय । तुकांत लघु होय । पै'ली दूजी तुक मिळै । तीजी छठी तुक मिळै । चौथी पांचमी तुक मिळै अथवा च्यार तुक कीजै तौ पैली तुक मात्रा चौबीस । तुक दूजी मात्रा बावीस । तुक तीजी मात्रा चौबीस । तुक चौथी मात्रा बावीस । यूं तौ भांण गीत मात्रा छंद होय । अखर गिणती कीजै तौ तुक पै'ली दूजीरा आखर आठ होय । तीजी छठीरा आखर पनरै पनरै होय । चौथी पांचमीरा आखर आठ होय तथा च्यार तुकां कीजै तौ पै'ली तीजी तुकरा आखर सोळै होय । दूजी चौथी तुकरा आखर पनरै पनरै होय । तुकांत लघु । ईं तरै भांण गीत वरण छंद होय ।

अथ भांण गीत उदाहरण

गीत

नरेस रांम नंमळां, उरां सभाव ऊजळा ।
अरेस भंज आदवां, करेस देव काज ॥
सपांणचाप सायकं, घड़ा अरेस घायकं ।
चवंत सिद्ध चारणां, प्रसिद्ध सिंघ पाज ॥

---

१८३. चवथ्थी–चतुर्थ, चौथी । भल–ठीक ।

१८४. पुण–कह । अठ–आठ । पनर–पनरह । छजंत–शोभा देता है ।

१८५. विध–प्रकार, तरह । मत्ता–मात्रिक । भण–कह । बारै–बारह । यूं–ऐसे । अखर–अक्षर । ईं–इस । तरै–तरह ।

१८६. नंमळां–निर्मल । उरां–उर, हृदय । ऊजळा–उज्ज्वल । अरेस–शत्रु । सपांणचाप–हाथमें धनुष सहित । सायकं–तीर । घड़ा–सेना । घायकं– संहार करने वाला । चवंत–कहते हैं । सिंध–समुद्र ।

गरब सत्रां गंजणा, रमा सुचित रंजणा ।
भुजां सजोर भंजणा, चढाय सिंभ चाप ॥
गळे दुजेस गांवरा, सधीर जे सभावरा ।
अभंग हेम अद्रसा, अडोळ नंग आप ॥
अनेक संत आसरे, वसै सहीव वासरे ।
प्रथीप रांम पोखणा, अमी सुदीठ अंग ॥
सधीर भ्रात सेससा, मनां रटै महेससा ।
खळां अनेक खेसणा, जपां अपीठ जंग ॥
दितेस सेन दाहणा, रघूस क्रीत राहणा ।
करी ऊधार कारणा, हरी विलंद हाथ ॥
नमे सुरेससा नगां, सधार दीन सेवगां ।
'किसन' पातसूं कहै, नमौ अनाथ नाथ ॥ १८६

अथ गीत दुमेळ लछण

दूहौ

तुक धुर तीजी सोळ मत, दोय मेळ दाखंत ।
दूजी चौथी मत दस, अख दुमेळ लघु अंत ॥ १८७

अरथ

धुर कहतां पै'ली तुक मात्रा सोळै होय । पै'ली दूजी तुकमें दोय मेळ आवै जींसूं गीतरौ नांम दुमेळ कहावै । दूजी तुक मात्रा दस होय । चौथी तुक मात्रा दस होय । दूजी चौथी तुकरै तुकांत लघु होय। जिण गीतकौ नांम दुमेळ कहावै ।

---

१८६. गरब–गर्व, अभिमान । गंजणा–मिटाने वाला । रमा–लक्ष्मी । रंजणा–प्रसन्न करने वाला । सजोर–शक्तिशाली । भंजणा–नाश करने वाला । सिंभ–शंभु, शिव । दुजेस–द्विजेश, महर्षि, परशुराम । सभावरा–स्वभावका । अभंग–दृढ़, अटल । हेम अद्रसा–हिमालय पर्वतके समान । नंग–पैर, चरण । प्रथीप–राजा । पोखणा–पोषण करने वाला । अमी–अमृत । सुदीठ–सुदृष्टि । खेसणा–नाश करने वाला । अपीठ जंग–वह जो युद्धमें अपनी पीठ शत्रुको न दिखाता हो । दितेस–असुरेश, रावणादि । दाहणा–ध्वंश करने वाला । रघूस–रघुवंश । क्रीत–कीर्ति । राहणा–रखने वाला । नगां–पैरों । सधार–रक्षक ।

अथ गीत दुमेळ उदाहरण

गीत

भूपाळां भांमी नेक नांमी, सेव पाय सुरेस ।
सुज दया सिंधू दीनबंधू, अखै कीत अहेस ॥
बटपंच बास सत्रनासे, राज कज सुरराज ।
खर खेत खंडे थूर थंडे, सूर कुळ सिरताज ॥
भुजवीस भंजे गाव गंजे, स्रोण भुंजे सार ।
सरणा सधारे बिरदधारे, तोय पाथर तार ॥
निरबळां नेकां कीध केकां, साहि हाथ सुनाथ ।
गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ ॥ १८८

अथ गीत उवंग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सगण सोळ मत प्रथम तुक, दो गुर अंत दिपंत ।
आंन च··वद··अख, उभै वीपसा अंत ॥ १८९

अरथ

पै'ली तुकरै आद तौ सगण नै सोळै मात्रा होय । और साराई गीतरी पनरै ही तुकां मात्रा चवदै होय । तुकांत दोय गुरु अखिर होय जिण सावझड़ा गीतनै उमंग कहीजै तथा कोई कवि उवंग पण कहै छै । चौथी तुकमें दोय वीपसा आवै छै ।

---

१८८. भांमी–न्योछावर, वलैया । सेव–सेवा करता है । पाय–चरण । सुरेस–इन्द्र । सिंधू–समुद्र । अखै–कहता है, वर्णन करता है । अहेस–शेषनाग । बटपंच–पंचवटी । सत्र–शत्रु । नासै–नाश किये । कज–लिये । सुरराज–इन्द्र । भुजवीस–रावण । भंजे–नाश किया । गाव–गर्व । गंजे–मिटाया, नाश किया । स्रोण (शोणित)–खून, रक्त । भुंजे–भक्षण किया । सार–तलवार । सरणा–शरणागत । सधारे–रक्षा की । तोय–पानी । पाथर–पत्थर । कीध–किया किये । केकां–कई । गुण–यश, कीर्ति । प्रसिध–कीर्ति, प्रसिद्धि । आथ–धन, दौलत ।

अथ गीत उवंग सावझड़ौ उदाहरण

गीत

जगनाथ अंतरतणौ जांमी, गाहणौ खळ गुरड़ गांमी।
साच वायक सिया सांमी, भुजां भांमी भुजां भांमी ॥
थूरण रिण दैतां थोका, लाज रक्खण संत लोका।
रांम रिण दसमाथ रोका, करां झौका करां झौका ॥
देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कवंध घाता।
बिसू रखण क्रीत वातां, हद्द हातां हद्द हातां ॥
मीढ ना अज इस माधौ, थाह दिल नावै अथाधौ।
देव दीनां कसट दाधौ, रंग राघौ रंग राघौ ॥ १६०

अथ गीत अरधगोखौ सावझड़ौ वरण छंद लछण

दूहौ

रगण जगण गुरु लघु हुवै, जिणरै तीन तुकंत।
होय वीपसा चवथ तुक, अरध गोख आखंत ॥ १६१

अरथ

जिण गीतरै पै'ली दूजी तीजी तीनां तुकां तौ पै'ली रगण गण। पछै जगण गण। पछै गुरु लघु। ईं क्रमसूं आठ अखर तीन तुकां होय। चौथी तुक पै'ली रगण। पछै जगण छ अखिर होय। ईं क्रमसूं च्यार तुकां होय सौ अरधगोख वरण छंद सावझड़ौ कहीजै नै जींके ईं क्रमसूं आठ तुकां होय जिणनै व्रधगोख कहीजै, सौ व्रधगोख तौ आगै कह्यौ ईज छै सौ देख लीज्यौ।

---

१६०. **अंतरतणौ**–भीतर का, अन्दर का। **जांमी**–पिता। **गाहणौ**–नष्ट करने वाला। **खळ**–राक्षस। **वायक**–वाक्य, वचन। **सिया**–सीता। **भांमी**–बलैया, न्यौछावर। **थूरण** नाश करना, ध्वंश करना। **दैतां**–दैत्यों। **थोका**–समूह। **दसमाथ**–रावण। **झौका**–धन्य-धन्य। **घातां**–नाश। **विसू**–पृथ्वी, संसार। **क्रीत**–कीर्ति। **मीढ**–समान, सदृश्य। **अज**–ब्रह्मा। **ईस**–शिव। **माधौ**–माधव। **थाह**–गहराई, गंभीरता। **अथाधौ**–अपार, असीम। **दाधौ**–जलाने वाला। **रंग**–धन्य-धन्य। **राघौ**–श्री रामचन्द्र।

अथ गीत अरधगोखौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

बंद पाय राघवेस, जोध मेघनाद जेस ।
बंध वांमणी विसेस, सेस सेस सेस ॥
पाड़िया जुधां बिपच्छ, रांम पाय सेव रच्छ ।
ओर मेर रूप अच्छ, लच्छ लच्छ लच्छ ॥
सूर धीर तास संत, मांण पांण तेज मंत ।
दाहणौं जुधां दयंत, नंत नंत नंत ॥
चीत प्रीत क्रीत चाह, दैत राज सेस दाह ।
लेण रांम सेव लाह, वाह वाह वाह ॥ १९२

अथ गीत धमळ तथा रिणधमळ, सम तथा असम चरण लछण

दूहा

धुर तुक मत छाईस धर, छै बीजी छाईस ।
तीस मत तुक तीसरी, चौथी मात्र चौवीस ॥ १९३
अवर दवाळा अवर विध, नहीं मत्त निरबाह ।
ईसर बारठ अक्खियौ, असम चरण यणराह ॥ १९४

अथ धमळ गीत अन्य विध लछण

दूहा

वदिया लछण अवर विध, खट तुक होय विसक्ख ।
चवद प्रथम दूजी चवद, अठाईस त्रिय अक्ख ॥ १९५

---

१९२. बंद–नमस्कार कर । पाय–चरण । राघवेस–श्री रामचन्द्र । जोध–योद्धा । मेघनाद–इन्द्रजीत । जेस–जैसा । पाड़िया–मारे । बिपच्छ–विपक्षी, शत्रु । दाहणौ–मारने वाला, ध्वंश करने वाला । दयंत–दैत्य । सेव–सेवा । लाह–लाभ । वाह-वाह–धन्य.धन्य ।

१९३. धुर–प्रथम । तुक–पद्यका चरण । मत–मात्रा । छाईस–छब्बीस । छै–है । बीजी–दूसरी । मझ–मध्य, में । दवाळा–गीत छंदके चार चरणका समूह ।

१९४. अवर–अन्य । निरवाह–निर्वाह । अक्खियौ–कहा । यणराह–इसके ।

१९५. वदिया–कहे । लछण–लक्षण । विसक्ख–विशेष । चवद–चौदह । दूजी–दूसरी । त्रिय–तीसरा । अक्ख–कह ।

चवदह चौथी पांचमी, छट्ठी वीस विचार ।
असम चरण तौपण अवस, वद यम धमळ विचार ॥ १६६
त्रकुटबंधरी आद तुक, पांच देख परमांण ।
उभै तुकां मिळ अंतरी, जुगत धमळ यम जांण ॥ १६७

अरथ

धमळ गीतकै मात्रा वरण प्रमांण नहीं जिणसूं असम चरण छै। पै'लो तुक मात्रा छाईस होय । दूजी तुक मात्र छाईस होय । तीजी तुक मात्रा तीस होय । चौथी तुक मात्रा चौबीस होय । बाकीरा औौर दूहां ईं प्रकार तथा औौर ही तरै मात्रा होय पण सम मात्राकौ निरवाह नहीं । आगै बारठजी स्री ईसरदासजी क्रत गीत धमळ स्री परमेसरमें छै सौ पण इण तरै छै जींनै देख नै मैं कह्यौ छै तथा औौर लछण करनै मात्राकौ निरूपण करां तौ पण असम चरण छै। औौर विध मात्रा प्रमांण करां छां । छ तुक करनै सौ कवेसर देख विचार लीज्यो ।

गीत रणधमळकै छ तुकां हुवै छै । पै'ली तुक मात्रा चवदै । दूजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा अठावीस । चौथी तुक मात्रा चवदै । पांचमी तुक मात्रा चवदै । छठी तुक मात्रा चौबीस । अंत लघु तौ पिण रणधमळ असम चरण छंद छै औौर सुगम लछण कहां छां । गीत त्रकुटबंधरी पांच तुकां तौ आदरी नै दोय तुकां दूहारै अंतरी, अेक कंठरी नै अेक दूजी यां दोयांरी अेक तुक करणी । यां छ हो तुकांनै भेळी कर पढजै, सौही धमळ जांणणौ । सोई ग्रंथमें पण त्रकुटबंध कह्यौ छै सौ देख लीज्यो । इति रणधमळ गीत लछण निरूपण समापत । इण गीतरौ नांम धमळ कह्यौ छै ।

अथ गीत धमळ उदाहरण

गीत

सांमाथ तूं सुरनाथ तूं, रिमघात तूं रघुनाथ ।
रघूनाथ तूं दसमाथ रांमण, भांजवा भाराथ ॥

---

१६६. तौ पण–तो भी । अवस–अवश्य । वद–कह । यम–इस प्रकार । आद (आदि)–प्रथम । उभै–दो, दोनों । जुगत–युक्ति । पण–परन्तु । पण–भी । निरूपण–विचार, निर्णय । कवेसर–कवीश्वर ।

१६७. अठावीस–अठाईस । आदरी–आदि की । कंठ–अनुप्रास । यां–इन । दोयांरी–दोनोंकी । भेळी–साथ ।

१६८ सांमाथ–समर्थ । सुरनाथ–देवताओंका स्वामी । रिमघात–शत्रुओंका विध्वंशक या संहारक । दसमाथ–दस शिर । भांजवा–नाश करनेको । भाराथ–युद्ध ।

अणबीह तूं नरसीह ओपै, लीह संतां नकूं लोपै ।
ईस वात अघात हाथां, व्रवण रंकां आथ ॥
लंकाळ सेवग तूझ लांगौ, भ्रात लिछमण खळां-भांगौ ।
पती-कुळ स्वारथो पांगौ, करण असह निकंद ॥
जांनकी नायक जंगमें, रोसेल बीरत रंगमें ।
बिरदैत जस रथ धमळ बंका, निमौ दसरथनंद ॥
जुध दुसह दससिर जारणा, मह कूंभसा खळ मारणा ।
धनुबांण धारण पांण धजबंध, जबर जोम जिहाज ॥
जटजूट सिर बन पट झलैं, अंग अघट रजवट ऊझळै ।
अणभंग जैतां जंग आसुर, रंग कोसळराज ॥
रख पय भभीखण रंकरा, लहरे'क आपण लंकरा ।
काकुसथ खळदळ भसम कर, साधार-सरण सभेव ॥
निज बिरद नाथ अनाथरा, सुज धरण भुजां समाथरा ।
कित्र 'किसन' बेग सुनाथ कीजै, दीनबंधव देव ॥१९८

अथ गीत त्रिभंगी लछण

दूहौ

धुर अठार बी बार धर, ती सोळह चव बार ।
बि गुरु अंत सौ पूणियौ, सोय त्रिभंगी सार ॥ १९९

---

१९८. अणबीह–निभंय, निडर । लीह–रेखा, मर्यादा । नकूं–नहीं । लोपै–उलंघन करता हूँ । व्रवण–देने को, देने वाला । रंकां–गरीबों । आथ–धन । लंकाळ–वीर, श्री रामचन्द्र भगवान । तूझ–तेरा । लांगौ–हनुमान । लिछमण–लक्ष्मण । खळां-भांगौ–राक्षसोंका नाश करने वाला । पांगौ–पंगु । असह–शत्रु । निकंद–नाश । रोसेल–जोशीला । बीरत–वीरत्व । बिरदैत–विरुद धारणकरने वाला । पांण (पाणि)–हाथ । धजबंध–अपनी ध्वजा या झंडा रखने वाला वीर । जबर–जबरदस्त । जोम–जोश । जिहाज–जहाज । जटजूट–जटाजूट । अघट–अपार । रजवट–क्षत्रियत्व । ऊझळै–उमड़ता है । आपण–देने वाला । साधार-सरण–शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । कित्र–कवि । बेग–शीघ्र ।

१९९. बी–दूसरी । बार–बारह । ती–तीन, तीसरी । चव–चार, चौथी । बि–दूसरी । सोय–वह, वही ।

अरथ

त्रिभंगी गीतरै पै'ली तुक मात्रा अठारै। दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पछै सारा ही दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । ईं प्रमांणै होय सौ गीत त्रिभंगी कहावै नै सोई पूणियौ सांणोर कहावै । नांम दोय छै । लछण दोय नहीं जींसूं पूणियौ सांणोर आगै पहली कह दीधौ छै जींसूं नहीं कह्यौ छै । कांम पड़ै तौ सात सांणोरां मांय देख लीज्यौ ।

अथ गीत सीहलोर लछण

दूहौ

सीहलोर पिरा पूरिगयौ, सुध लछरगां सुभाय ।
अठ दस बारह सोळ अख, बार बि गुरु पछ पाय ॥ २००

अरथ

सीहलोर पिण पूणियौ सांणोर छै । इणमें कोई भेद नहीं । पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा बारै। तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै। तुकांत दोय गुरु । पछला दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा बारै । ईं क्रम होय । त्रिभंगी सीहलोर अे दोई पूणिया गीत छै। नांमकौ भेद, लछण भेद नहीं जींसूं आगै पूणियौ कह दीधौ छै सौ फेर नहीं कह्यौ । इति सीहलोर लछण निरूपण ।

अथ गीत सारसंगीत लछण

दूहौ

गीत बडा सांरगोर गरग, सकौ सार संगीत ।
तेवीसह अट्ठार मत, वीस अठार प्रवीत ॥ २०१

अरथ

सार संगीत गीतनै बडौ सांणोर गीत एक छै । नांम दोय छै । लछण एक । पै'ली तुक मात्रा तेवीस । दूजी तुक मात्रा अठारै । तीजी तुक मात्रा वीस । चौथी

---

१९९. अठारै–अठारह । बारै–बारह । ईं–इस । दीधौ–दिया । जींसू–जिससे । कह्यौ–कहा ।
२०० पिण–भी, परन्तु । अख–कह । बार–बारह । बि–दो, दूसरी । पछ–पश्चात, बाद । पाछला–पश्चातका, बादका । दीधौ–दिया ।
२०१. सकौ–वही, वह । अट्ठार–अठारह । मत–मात्रा ।

तुक मात्रा अठारै अंत लघु । सौ बडौ सांणोर सोई सारसंगीत कहावै । सौ आदमें सुध सांणोर सतसर कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ । इति गीत सारसंगीत निरूपण ।

अथ गीत सीहवग सांणोर लछण

दूहौ

धुर अठार चवदह धरौ, सोळ चवद गुरु अंत ।
वेखह सोई सीहवगौ, किव सांणोर कहंत ॥ २०२

अरथ

जिण गीतरै पै'ली तुक मात्रा अठारै होवै । दूजी तुक मात्रा चवदै होवै । तीजो तुक मात्रा सोळै होवै । चौथी तुक मात्रा चवदै आवै सौ सीहणौ सांणौर, सोई सीहवग कहीजै । नांम भेद छै, लछण भेद नहीं । पै'ली सांणोर कह्यौ छै सो देख लीज्यौ । इति सीहवग गीत निरूपण ।

अथ गीत अहिगन सांणोर लछण

दूहौ

धुर अठार मत्त सुधर, पनर सोळ पनरेण ।
अंत लघु सौ अहिगन, जपै वेलियौ जेण ॥ २०३

अरथ

गीत अहिगन नै वेलियौ सांणोर अेक छै । नांममें भेद छै, लछणमें भेद नहीं । पै'ली तुक मात्रा उगणीस तथा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा पनरै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा पनरै होय। तुकांत लघु होय । पछै मात्रा सोळै, पनरै होय । ईं क्रमसूं होय सौ वेलियौ सांणोर, सोई अहिगन सांणोर, पै'ली आगे सांणोरांमें कह्यौ छै सो देख लीज्यौ । इति अहिगन गीत निरूपण ।

अथ गीत रेणखरौ लछण

दूहौ

रटां गीत रेणखरौ, सौ जांणजै प्रहास ।
तिल भर भेदन तेणमें, सुध लछण सर रास ॥ २०४

---

२०२. सोळ–सोलह । चवद–चौदह । वेखह–देख । कहंत–कहते हैं । सोई–वही ।

२०३. पनर–पनरह । पनरेण–पनरहसे । जेण–जिसको । सोळै–सोलह । पछै–पश्चात, बादमें । सोई–वही ।

२०४. तेणमें–उसमें । अगाड़ी–पहिले । ज्यां–जिन । हर–अर, और । सोई–वह, वही ।

अरथ

रेणखरौ गीत नै प्रहाससांणोर दोन्यूं गीत अेक छै। नांम दोय छै। लछण एक छै। पैं'ली तुक मात्रा तेवीस। दूजी तुक मात्रा सतरै। तीजी तुक मात्रा बीस। चौथी तुक मात्रा सतरै होय। अंत दोय गुरु पछै बीस सतरै इण क्रमसूं मांत्रा होवै छै। आगै सांणोरमें प्रहास कह्यौ छै सो देख लीज्यौ। इति रेणखरा गीत निरूपण।

अथ गीत मुड़ियल सावझड़ौ लछण

दूहौ

मुड़ियल सावझड़ौ हुवै, पालवणीस दुमेळ।
सावझड़ौ जयवंत सौ, सुध लछणां समेळ ॥ २०५

अरथ

मुड़ियल गीत सावझड़ौ दुमेळ तथा पालवणी तथा जयवंत नांम सावझड़ौ। अगाड़ी पैं'ली प्रथम तीन सावझड़ा कह्या ज्यां मध्ये जयवंत सावझड़ौ जिणनै दुमेळ कर पढणौ। सोई पालवणी, हर सोई मुड़ियल कहावै। मात्रा प्रमांण। पैं'ली तुक मात्रा उगणीस तथा मात्रा अठारै होय और पनरै ही तुकां मात्रा सोळै सोळैरी होय। तुकांत दोय गुरु अखिर आवै सौ मुड़ेल (मुड़ियल) सावझड़ौ तथा पालवणी दुमेळ जयवंत अेक छै। आगै जयवंत पालवणी कह्या छै सौ कांम पड़ै तौ देख लीज्यौ। इति मुड़ियल गीत निरूपण।

अथ गीत प्रौढ सांणोर निरूपण लछण

दूहौ

सोरठिया हर प्रोढ मझ, भेद रती नह भाळ।
सोरठियौ यण ग्रंथ मझ, दीधौ प्रथम दिखाळ ॥ २०६

अरथ

प्रोढ सांणोर हर सोरठियौ सांणोर अेक छै। यांरा लछण अेक छै। रती भेद नहीं। नांम दोय छै। मात्रा प्रमांण पैं'लो तुक मात्रा उगणीस तथा सोळै। बीजी तुक मात्रा दस। तीजी तुक मात्रा सोळै होय। चौथी तुक मात्रा दस होय। तुकांत लघु होय। पछै मात्रा इग्यारै, दस, सौळै दस ई क्रमसूं होय। आगै इण ग्रंथमें कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ। इति गीत प्रोढ निरूपण।

---

२०६. हर—अर, और। मझ—मध्य। भेद—फरक। नह—नहीं। भाळ—देख। यण—इस। दीधौ—दिया। दिखाळ—दिखलाई। यांरा—इनके। पछै—बादमें। ई—इस।

अथ गीत दीपक वेलियौ सांणोर लछण

दूहा

दीपक सोही वेलियौ, भेद अधिक तुक हेक ।
तीजी तुक व्है बेवड़ी, वद तुक पंच विवेक ॥ २०७
धुर उगणीस अठार धर, पनरह दुती पढंत ।
त्रती चवथी सोळ मत, पंच पनर पुणंत ॥ २०८

अरथ

गीत दीपक नै गीत वेलियौ सांणोर अेक हौवै छै। यणांमें इतरौ भेद छै। वेलियासांणोररै तुक च्यार होवै छै। पै'ली तुक मात्रा अठारै तथा उगणीस होवै। दूजी तुक मात्रा पनरै होवै। तीजी तुक मात्रा सोळै होवै। चौथी तुक मात्रा सोळै होवै। पांचमी तुक मात्रा पनरै होवै। इण भांत दीपकरै पांच तुकां दूहा एक प्रत होवै। दूजा दूहां मात्रा सोळै पनरै सोळै सोळै पनरै ईं प्रमांण होय। तुकांत लघु होय सौ गीत दीपक। वेलियारै च्यार तुक यौई फरक। इति दीपक लछण।

अथ गीत दीपक उदाहरण

गीत

सुंदर तन स्यांम स्यांम वारद सम, कौटक भा रद कांम सकांम ।
नायक सिया दासरथ नंदण, विमळ पाय सुरराजा वंदण ।
रीझवजै महराजा रांम ॥
कमर निखंग पांण धनु सायक, सुखदायक संतां साधार ।
कीधां कहर माथदस कापे, अेकण लहर लंक गढ आपे ।
आठ पहर जिण नांम उचार ॥

---

२०७. सोही–वही। बेवड़ी–दोहरी। वद–कह। पंच–पांच।

२०८ दूती–दूसरी। पढंत–पढ़ते हैं। त्रती–तीसरी। चवथी–चौथो। पुणंत–कहते हैं। पण–परन्तु। इण भांत–इस प्रकार। योई–यही।

२०९. वारद–बादल। सम–समान। कौटक–करोड़। भा–हुए। दासरथ–दसरथ। नंदण–पुत्र। विमळ–पवित्र। पाय–चरण। सुरराजा–इन्द्र। रीझवजै–प्रसन्न कीजिए। निखंग–तर्कश। पांण–हाथ। धनु–धनुष। सायक–तीर, बांण। सुखदायक–सुख देने वाला। साधार–रक्षक। कीधां–करने पर। कहर–कोप। माथदस–रावण। कापे–काट दिये, मारा। आपे–दे दिया।

ते रज पाय तरी रिख तरणी, मझ वेदां बरणी ब्रहमेण।
डहिया विरद वडा भुजडंडे, तीख करे मिथळापुर तंडे।
जटधर चाप विहंडे जेण॥
जनक सुता मनरंजण जगपत, भंजण खळ रांवण भाराथ।
सरणसधार काज जन सारण, 'किसन' अहौनिस गाव सकारण।
नूप रघुनाथ अनाथां नाथ॥२०९

अथ गीत अहिबंध बरण छंद लछण

दूहा

रगण सगण अंतह गुरू, तुक खट यण बिध कीन ।
यगण रगण अंतह लघु, चौथी आठम चीन ॥ २१०
अठाईस पूरब अरध, ऊतर अठाईस ।
अेम गीत अहिबंध अख, बरण छंद बरणीस ॥ २११

अरथ

अहिबंध गीत बरण छंद छै, मात्रा छंद नहीं। तिणरै गण तथा तुक प्रत अखिरांरी गिणती छै। दूहा अेक प्रत तुक आठ आठ होवै। तुक अेक प्रत अखर सात सात होवै। दूहा एक प्रत आखर छपन होवै। सारा गीतरा दूहा च्यार आखर दोयसौ चौवीस होवै। पै'ली तुक दूजी तीजी तुक रगण सगण अेक गुरु सवाय होवै। यूंही तुक पांचमी छठी सातमी तुक रगण सगण अेक गुरु होवै। तुक चौथी अौर आठमी यगण रगण अेक लघु सवाय होवै। आठ ही तुकां प्रत आखर सात सात होवै। तुक पै'ली दूजी तीजीरा तुकांत मिळै। तुक चौथी तुक आठमीसूं मिळै। यण प्रकार गीत अहिबंध कहीजै। जूं बंध हुवौ थकौ साप

---

२०९. ते–उस। रज–धूलि। रिख–ऋषि। तरणी (तरुणी)–स्त्री। ब्रहमेण–ब्रह्मासे। डहिया–धारण किये। तीख–विशेपता। तंडे–जोशपूर्ण आवाज की। जटधर–महादेव। विहंडे–नाश किया। मनरंजण–मनको प्रसन्न करने वाला। जगपत (जगतपति)–ईश्वर, श्री रामचन्द्र। भंजण–नाश करने वाला। खळ–राक्षस। भाराथ–युद्ध। सरणसधार–शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला। काज–कार्य। जन–भक्त। सारण–सफल करने वाला। अहौनिस–रात-दिन। गाव–स्मरण कर, गुणगान कर।

२१०. यण–इस। विध–प्रकार। कीन–की, रची।

२११. अख–कह। यूंही–ऐसे ही।

संकड़तौ चालै जूं तुकां ठसती संकड़ती चालै, जीं तावै गीतरौ नाम अहिवंध छै। गीत अड़बड़ाटसूं पढचौ जावै, जीं तावै नांमरौ यौ लछण लख्यौ छै।

अथ गीत अहिवंध उदाहरण

गीत

रांम नांम रसा रे, जाप संभ जसा रे।
बोल तू म बिसा रे, पहारै कौड़ पाप ॥
सेस भ्रात सही रे, कंज जात कही रे।
दैत थाट दही रे, चहीरै बांण चाप ॥
तेण संत तराया, गाथ बेदस गाया।
लेख हाथ लगाया, दळां आसंख दाट ॥
तार बांम रखीते, सू चंदर सखीते।
पाळ दीन पखीते, कळेसां सत्र काट ॥
कोसकेस कंजारां, लीध वंस लजारां।
हांण दैत हजारां, धजारां ब्रद धार ॥
ग्राह गोह गयंदां, देख ब्याध मदंधां।
पेख ग्रीध पुलिंदां, पयोध नध पार ॥
आच साह अनेकां, कीध वार वसेकां।
मांण राख वमेकां, करे के संत कांम ॥
हेळ पाप हताजे, जमंवार जीताजे।
माह ऊंच मताजे, ... ॥२१२

---

२११. जूं–जैसे। संकड़तौ–संकुचित होता हुआ।

२१२. जाप–जप कर। संभ (शम्भु)–महादेव। जसा–जैसा। म–मत, नहीं। बिसारे–भूलना। पहारै–मिटाता है। सेस–लक्ष्मण। कंज जात–ब्रह्मा। दैत–दैत्य। थाट–दल, समूह। दही रे–नाश किया। गाथ–कथा। बांम–स्त्री। रखी–ऋषि। सूर–सूर्य। चंद–चंद्रमा। सखी ते–साक्षी दी। पाळ–पालक। पखी ते–पक्ष करने वाला। हांण–हानि। धजांरां–ध्वजा, ऊंचा। गोह–गुह नामक निषादराज। गयंदां–गज, हाथी। पुलिंदां–एक प्राचीन पिछड़ी जाति। पयोध (पयोधि)–समुद्र।

अथ गीत अरट मात्रा छंद लछण

दूहौ

धुर अठार ग्यारह दुती, सोळ त्रती चव ग्यार ।
सोळै ग्यार क्रम अंत लघु, अरट गीत उचार ॥ २१३

अरथ

अरट गीत सांणोर गीत छै पण सात सांणोर गीतांसूं भिन्न छै । दूजी चौथी तुक ग्यारै मात्रा, यौ भेद छै जींसूं जुदौ कही दिखायौ छै । पै'ली तुक मात्रा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा ग्यारै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा ग्यारै होय । पछै सोळै ग्यारै ई क्रमसूं पाछली तीन ही दूहां मात्रा होय । दूजी चौथी तुकरै तुकांत लघु होय, जीं गीतनै अरट नांम सांणोर कहीजै । कोई ईनै उमंख नांम गीत पिण कहै छै । त्राटकौ पण योही कहीजै, जींसूं त्राटकौ पण जुदौ नहीं कह्यौ छै ।

अथ गीत अरट सांणोर उदाहरण

गीत

धन राघव हाथ अभंग धुरंधर, आथवरीस असंक ।
दीध भभीखण आस्रय देख कर, लीध बिना दत लंक ॥
बाळ महाबळ घायक भूबळ, सारंग सायक संठ ।
भ्रात कहेस किकंधपुरी भल, कीध नरेस सुकंठ ॥
संत अनाथ......दस सायक, ध्रू पहळाद उधार ।
कांम उबारण आय सकारण, बारण तारण बार ॥

---

२१३. ग्यार–ग्यारह । दुती–दूसरी । सोळ–सोलह । त्रती (तृतीय)–तीसरी । चव–चौथी, चतुर्थ । पण–परन्तु । यौ–यह । जुदौ–पृथक, अलग । पछै–पश्चात । पाछली–पीछेकी । पिण–भी । पण–भी । योही–यही ।

नोट—रघुनाथरूपकमें जो त्राटका गीत है वह गीत इस गीतसे भिन्न है ।

२१४. आथवरीस–रुपयोंका दान देने वाला । दीध–दिया । भभीखण–विभीषण । लीध–लिया, ली । दत–दान । बाळ–बालि वानर । घायक–संहारक । सारंग–धनुष । सायक–तीर, बाण । संठ–मजबूत, दृढ़, जबरदस्त । किकंधपुरी–किष्किंधापुरी । भल–ठीक । कीध–किया । नरेश–राजा । सुकंठ–सुग्रीव । ध्रू–भक्त ध्रुव । पहलाद–भक्त प्रह्लाद । बारण–गज ।

कोट गयंद सतौल निधे कर, तोलण हेक तराज ।
पात 'क्रिसन' अडोल रघुपत, बोल गरीबनवाज ॥ २१४

अथ गीत अठताळौ लछण

दूहौ

ले धुरसूं तुक सोळ लग, चवद चवद मत चीत ।
अंत गुरु जस नांम अख, गण अठताळौ गीत ॥ २१५

अरथ

जिण गीतरै पै'ली तुकसूं लगाय नै च्यार ही दूहांरी सोळै ही तुकांमें चवदै-चवदै प्रत तुक मात्रा होय । अंत गुरु होय । सावझड़ौ होय, जिण गीतनै अठताळौ कहीजै ।

अथ गीत अठताळौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

अंग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा ।
विसतार जस चहूंवैवळा, साधार सेवग सांवळा ॥
सिर-जोर खग दत संजणा, पह रोर आंमय पंजणा ।
भड़ जुध असंतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा ॥
विपळ सत सघण नवीनरा, अत गाय दुज आधीनरा ।
भुज दहण खळ जस भीनरा, दिल महण बंधव दीनरा ॥
मह सीत वर महराज रे, लख जनां राखण लाज रे ।
कित्र 'किसन' वसै सकाज रे, रघु चरण सरणे राज रै ॥ २१६

---

२१४. तराज—समान, तुल्य ।

२१५. सोळ—सोलह । लग—तक । चवद—चौदह । मत—मात्रा । चीत—विचार कर । अख—कह ।

२१६. आरख—चिन्ह, लक्षण । चहूंवैवळा—चारों ओर । साधार—रक्षक । रोर—निर्धनता । आंमय- रोग । पंजणा—मिटाने वाला । भंजणा—नाश करने वाला । रंजणा—प्रसन्न करने वाला । दुज (द्विज)—ब्राह्मण । महण (महार्णव)—सागर । सीत—सीता । लेख—देवता ।

अथ गीत काछौ मात्रा समचरण छंद लछण

दूहा

धुर-अठार चवदह दुती, बारह तीजी बेस ।
तीन कंठ धुरतुकतणा, मत चौमाळ मुणेस ॥ २१७
मुण बी तुक छाबीस मत, तीन कंठ तिण माह ।
पूरब अरध तुकंतरै, अंत लघु आ राह ॥ २१८
तुक तीजी अठवीस मत, बेद छबीस बिचार ।
त्रण त्रण कंठ तुकंत लघु, चौथीतणै उचार ॥ २१९
अन दूहां धुर तुकतणै, मत चाळीस मंडांण ।
छावी बीजी चतुरथी, ती अठवीस प्रमांण ॥ २२०
अनुप्रास गुरु अंत अख, भण तुकंत लघु भाय ।
जपियां आछौ रांम जस, काछौ गीत कहाय ॥ २२१

अरथ

काछा गीतरै तुकां च्यार दूहा प्रत जिणरै मात्रा प्रमांण । पै'ली तुक मात्रा चौमाळीस । कंठ तीन पै'ली तुकमें होय । पहलौ कंठ तौ मात्रा अठारै ऊपर होवै । दूजौ अनुप्रास मात्रा चवदै पर होवै । तीजौ अनुप्रास मात्रा बारै पर होवै । यूं पै'ली तुक तीन अनुप्रास गुरुवंत होवै । मात्रा चौमाळीस होवै । तुक दूजी मात्रा छाईस होवै । अनुप्रास तीन । पै'ली कंठ मात्रा नव पर । दूजी कंठ मात्रा सात पर । तीजी कंठ मात्रा दस पर । तीसरौ पूरवारध नै उतरारध दोनोंही लघु अंत होय । तुक तीजी मात्रा अठावीस (अठाईस) तीन कंठ होय । चौथो तुक मात्रा छाईस

---

२१७. दुती–दूसरी । कंठ–अनुप्रास । धुरतुकतणा–प्रथम चरणके । मत–मात्रा । चौमाळ–चवालीस । मुणेस–कह ।

२१८. मुण–कह । बी–दूसरी । छाबीस–छब्बीस । तिण–उस । माह–में ।

२१९. अठवीस–अठाईस । वेद–चार, चतुर्थ । छबीस–छब्बीस । त्रण–तीन । चौथीतणै–चौथीके ।

२२०. अन–अन्य । दूहां–गीत छंदके चार चरणोंके समूहका नाम । धुरतुकतणै–प्रथम चरणके । मंडांण–रख । छावी–छब्बीस । बीजी–दूसरी । ती–तीसरी । अठवीस–अठाईस ।

२२१. अख–कह । यूं–ऐसे । गुरुवंत–जिसके अन्तमें गुरु वर्ण हो । छाईस–छब्बीस ।

तीन कंठ होय । यूंही सारा गीतरी अेक तुक प्रत कंठ तीन तीन गुरु कंठ होय । दूहारै तुकंत लघु होय । अोर सारा ही गीतरा दूहां प्रत मात्रा प्रमांण कहां छां । पै'ली तुक मात्रा चाळीस होवै । दूजी तुक मात्रा छावीस होवै । तीजी तुक मात्रा अठावीस होवै । चौथी तुक मात्रा छावीस होवै । यूं तीन ही लारला दवाळां मात्रा होवै, जिण गीतनै काछौ कहीजै । चार ही तुकां मात्रा सम नहीं, जोसूं असम चरण छंद छै ।

अथ गीत काछौ उदाहरण

गीत

पहपत रघुपती दत भ्तौक पांणां ।
वदत सुज कथ वेद-वांणां सधर पांणां साहणौ ।
सारंग बांणां, जुध सभ्तांणौ पण मुड़ांणां पूठ ॥
सुखवर सुरांणां, गौ दुजांणां माघवांणां सुख मिळै ।
मह जिग मंडांणां थांणथांणां दैत घांणां दूठ ॥
धनक सायक भुजाधारी, तेण रज रिख नार तारी ,
पायचारी पंथमें ।
मिथळाविहारी स्रीमुरारी रमां नारी रंज ॥
पह छत्रधारी मिळ अपारी मांण हारी मंडळी ।
धनु जेणवारी रांवणारी जटाधारी भंज ॥

---

२२१. यूंही—ऐसे ही ।

२२२. पहपत (पृथ्वीपति)—राजा । दत—दान । भ्तौक—धन्य-धन्य । पांणां—हाथों । वदत—कहता है । सुज—वह । कथ—कथा । वेद-वांणां—वेदवाणी । सधर—दृढ़ । साहणौ—धारण करने वाला । सारंग—विष्णुके धनुषका नाम । वांणां—तीरों, बाणों । सुरांणां—देवताओं । दुजांणां—ब्राह्मणों । माघवांणां—इन्द्र । मह—पृथ्वी, महान । जिग—यज्ञ । मंडांणां—रचा गया । थांणथांणां—स्थानों-स्थानों । दैत—दैत्य । घांणां—नाश । दूठ—दुष्ट । धनक—धनुष । सायक—बाण, तीर । तेण—उस । रज—धूलि । रिख—ऋषि । पायचारी—पदचारी । पंथमें—मार्गमें । रमां—शत्रुओं । रंज—दुख । पह—योद्धा । छत्रधारी—राजा । अपारी—असीम । मांण—मान, गर्व । मंडळी—समूह । धनु—धनुष । जेणवारी—जिस समय । जटाधारी—महादेव । भंज—तोड़ दिया ।

पित आय सचित प्रकासे, वीर वट-पंच वासे ,
असुर नासे आहवां ।
भय मेट दासे विरद भासे, खळां त्रासे खूर ॥
पड़ लंक पासे जंग जासे, अत प्रकासे आवधां ।
ग्रीधां ढीगासे मांस ग्रासे, सुज हुलासे सूर ॥
करण भूपत देव काजा, मांण रख गौ दुज समाजा ,
क्रीत पाजा दध कहै ।
ते सुकव ताजा ब्रवण बाजा, गजां राजा गांम ॥
छज ऊंच छाजा दिलदराजा, जेत वाजा जंगियं ।
लख राख लाजा संत साजा, महाराजा रांम ॥ २२२

अथ गीत सवैयौ वरण छंद लछण

दूहौ

दोय सगण पद च्यार दख, पंचम चव सगणांण ।
सावझड़ौ कह चरण व्रती, जिकौ सवायौ जांण ॥ २२३

अरथ

सवायौ गीत वरण छंद होय जिणरै तुक पांच, दूहा अेक प्रत होय । तुक अेक प्रत सगण दोय आवै । अखिर छ आवै । इसी तुक च्यार होय । पांचमी तुकमें च्यार सगण गण पड़ै । अखिर बारा होय । पांच ही तुकांरा मोहरा मिळै, जिणसूं सावझड़ौ सवायौ गीत जांणजै ।

अथ गीत सवैयौ उदाहरण

गीत

थिर बूध थटौ क्रतहीण कटौ, दुख ओघ दटौ मह पाप मटौ ।
रिववंसतणौ रिव रांम रटौ ॥

---

२२२. वट-पंच—पंचवटी । वासे—निवास किया । नासे—नाश किया । आहवां—युद्धों । खळां—राक्षसों । खूर—समूह । ढीगासे—ढेर, समूह । ग्रासे—भक्षण किया । हुलासे—प्रसन्न हुए । सूर—सूर्य । दुज—ब्राह्मण । क्रीत—कीर्ति । पाजा—पुल । दध—समुद्र, सागर । ब्रवण—देने को । बाजा—घोड़े । छज—शोभा । ऊंच—ऊंची । छाजा—शोभा देती है । दिलदराजा—उदार दिल, दातार ।

२२३. दख—कह । चव—कह । सगणांण—सगण गण । अखिर—अक्षर ।

२२४. थिर—स्थिर, अटल । बूध—वृद्धि । थटौ—धारण करो । क्रतहीण—पाप । कटौ—काट डालो । ओघ—समूह । दटौ—नाश कर दो । मह—महान । मटौ—मिटा दो । रिववंसतणौ—सूर्यवंशका । रिव—सूर्य ।

तन खेत तजौ मत सुद्ध मजौ, सुभ रीत सजौ वड संत वजौ ।
भव तारण कौसळनंद भजौ ॥
हिय लोभ हरौ धख पुन्य धरौ, क्रत ऊंच करौ सुरराज सरौ ।
रघुनायक दायक मोख ररौ ॥
मन भाव मढौ दुज सेव दढौ, गुरु वेण गढौ चित रंग चढौ ।
पतसीत सप्रवीत सप्रवीत पढौ ॥ २२४

अथ गीत सालूर लछण

दूहौ

धुर अठार वारह दुती, सोळै त्रति चव बार ।
आद वेद मिळ बी त्रती, यूं सालूर उचार ॥ २२५

अरथ

पै'ली तुक मात्रा अठारै होय । दूजी तुक मात्रा बारै होय । तीजी तुक मात्रा सोळै होय । चौथी तुक मात्रा बारै होय । पै'ली तुक नै चौथी तुक मिळै दु गुरु तुकंत होय । बीजी तुक नै तीजी तुक मिळै । लघु तुकंत होय सौ सालूर गीत कहीजै ।

अथ गीत सालूर लछण

गीत

सुज बीजै नर पकां मनह सीधौ ।
जनक तांम मुख जापत, आ जौ महमा काळ अमापत ।
क्रत पण खंडत कीधौ ॥

---

२२४. खेत-क्षेत्र । तजौ-छोड़ दो । वजौ-कहे जाओ, प्रसिद्ध हो । भव-जन्म संसार । कौसळनंद-श्री रामचंद्र भगवान । धख-इच्छा । क्रत ऊंच-उत्तम कार्य । सुरराज-इन्द्र । दुज-ब्राह्मण । दढौ-दृढ़ करो । पतसीत-श्री रामचन्द्र । सप्रवीत-पवित्र ।

२२५. दुती-दूसरी । त्रति-तीसरी । चव-चार । बार-बारह । वेद-चौथी । बी-दूसरी । त्रती-तीसरी । यूं-ऐसे ।

२२६. महमा-महिमा । अमापत-अपार । खंडत-खंडित । कीधौ-किया ।

तायक लखण पयंपै तेथी ।
वायक रोस विरुता, हैं नर बीर जनक मुखहूंता ।
जंप न राघव जेथी ॥
मुनि मित्त आयस राघव मंगे ।
छक घण रोम ऊछाजै, बूठै खित्रवट नूर विराजै ।
ऊठै सूर उमंगे ॥
चाप उठाय नमाय चहोड़ै ।
तोड़ै खळां अतंका, बरी सिया दासरथी बंका ।
राघव डंका रोड़ै ॥ २२६

अथ गीत त्रिबंकौ लछण

दूहौ

सोळ कळा धुर सोळ बी, ती बतीस गुरवंत ।
त्रि बखत उलटै तुक त्रती, कविस त्रिबंक कहंत ॥ २२७

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै होय । दूजी तुक मात्रा सोळै होय । तीजी तुक मात्रा बतीस होय । जिण तीजी तुकरै दोय मात्रा तौ आद नै पछै दोय चौकळ गण ज्यांनै तीन बखत पढणा उलट-पलट करनै, जठा पछै छ मात्रा फेर हुवै, तुक तीनका मोहरा मिळै । एक दोय गुरुकौ तौ नेम ही नहीं पिण तुकंत गुरु होवै सो त्रबंकौ गीत कहीजै ।

अथ गीत त्रबंक उदाहरण

गीत

रे राखै ऊजळ भाव रदा, गहिया कज नीरज चक्र गदा ।
सुज रे मन राघव रे मन राघव, रे मन राघव जाप सदा ॥

---

२२६. लखण–लक्ष्मण । पयंपै–कहता है । तेथी–वहां । विरुता–पूर्ण । मुखहूंता–मुखसे । जंप–कह । राघव–रामचन्द्र भगवान । जेथी–जहां । छक–जोश । चहौड़ै–चढ़ाते हैं । अतंका–आतंक ।

२२७ सोळ–सोलह । कळा–मात्रा । बी–दूसरी । ती–तीसरी । त्रती–तीसरी । कहंत–कहते हैं । जठा पछै–जिसके बाद ।

२२८. भाव–विचार । रदा–हृदय । कज–कमल । नीरज–शंख । जाप–जप, स्मरण कर ।

गजग्राहै जाहर ग्राहांणी, जिण वाहर कीधी जग जांणी ।
मह माधव केसव केसव माधव, माधव केसव पढ प्रांणी ॥
लंका हण रांवण जुध लीजै, दत दीन भभीखणनूं दीजै ।
रे कौसळनंदण नंदण कौसळ, कौसळनंदण समरीजै ॥
पैं रज रिखघरणी गति पाई, वळ तरणी भीवर तिरवाई ।
भण सीता रघुबर रघुबर सीता, सीता रघुबर भण भाई ॥२२८

अथ गीत धमाळ लछण

दूहौ

पूरबारध मत भाख पढ, ऊपर नव मत अक्ख ।
है तुकंत लघु गुरु हरख, सौ धमाळ विसक्ख ॥ २२९

अरथ

भाख गीत सावभड़ा गीतरो तुक मात्रा चवदैरी होवै सौ भाख गीतरी तुक सवाय मात्रा नव होवै । लघु गुरु तुकंत होवै । च्यार ही मोहरा मिळै सौ धमाळ गीत कहावै ।

अथ गीत धमाळ उदाहरण

गीत

कवसळ सुता राजकंवार, क्रत जन काजरा ।
दरसै चखां दत खग दोय लंगर लाजरा ॥

---

२२८. जिण–जिस । वाहर–रक्षा । कीधी–की । माधव–विष्णु । दत–दान । दीन–गरीब । भभीखणनूं–विभीषणको । नंदण–पुत्र । समरीजै–स्मरण कीजिए । पैं–चरण । रज–धूलि । रिख–ऋषि । घरणी–गृहिणी । गति–मोक्ष । वळ–फिर । तरणी–नौका । भीवर–मल्लाह । भण–कह ।

नोट—त्रिबंक गीतके लक्षण रघुनाथरूपकमें अधिक स्पष्ट हैं । यहाँ पर उसकी नकल दी जाती है । त्रिबंक गीतमें प्रत्येक पदमें सोलह मात्राएँ होती हैं । प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पदके तुकांत मिलाये जाते हैं । तीसरे पदमें आदिमें दो मात्राएँ मध्यमें दो चौकल और अंतमें एक षटकल रखना चाहिए । तीसरे पदमें जो चौकल आवे वह पलट कर चौथे पदमें भी आनी चाहिए । उदाहरण देखनेसे स्पष्ट हो जायेगा ।

२२९. मत–मात्रा । भाख-एक गीत छंदका नाम । अक्ख–कह । विसक्ख–विशेष ।

२३०. क्रत–काम । चखां (चक्षु)–नेत्र, नयन । दत–दांन । खग–तलवार । लंगर–पैरोंको बांधनेका बंधन विशेष, पैरों का एक आभूषण ।

जपां कमण नूप ता जोड़ अधपत आजरा ।
बंदां मघादिक सुर ब्रंद रघुबर राजरा ॥
छत्रवट तूझ दसरथ नंद ओप अच्छेहड़ा ।
बाढे खगां रिण दसमाथ कर धड़ बेहड़ा ॥
वळसुखहूंत निकसै वैण आखर वेहड़ा ।
जुग पद वसै मुगट सहीव सुरपत जेहड़ा ॥
वेढक फरसधर विकराळ बंक त्रबंकसा ।
सुज जिण कीधा रांम नरेस सूधसणंकसा ॥
लहरे हेक दीधी लछीस थांनक लंकसा ।
सुज पय नमै अविरळ सीस सुरप असंकसा ॥
दखूं किसूं हे महाराज दासां दास रे ।
वरणूं जीभहूं बुध जोग नित जसवास रे ॥
हिरदै वसौ ध्यांन हमेस रूप हूलास रे ।
जपै 'किसन' रख रघुराज, औ पण आस रे ॥ २३०

अथ गीत रसावळ लछण

दूहौ

प्रथम तीन तुक चवद मत, मोहरे रगण मिळाय ।
चवथ ग्यार मत सगण मुख, रसावळौ खगराय ॥ २३१

---

२३०. कमण–कौन । ता–उस । जोड़–समान, बराबर । अवधपत–श्रीरामचंद्र भगवान । मघादिक–इंद्र आदि । सुर–देवता । ब्रंद–समूह । छत्रवट–क्षत्रियत्व । तूझ–तेरा । नंद–पुत्र । अच्छेहड़ा–अपार । बाढे–काट डाले । रिण–युद्ध । दसमाथ–रावण । धड़–शरीर । वेहड़ा–एक के ऊपर एक रखनेकी क्रिया या ढंग, तह । वैण–वचन । वेहड़ा–विधाताके । जुग–दो । पद–चरण । सुरपत–इन्द्र । जेहड़ा–जैसा । वेढक–वीर । फरसधर–परशुराम । कीधा–किया । सूधसणंकसा–बिलकुल सीधा । लहरे–तरंगमें, उमंगमें । दीध–दे दी, दे दिया । लछीस–लक्ष्मीपति । थांनक–गढ़ । लंकसा–लंकाके समान । पय–चरण । अविरळ–निरंतर । सुरप–इन्द्र । दखूं–कहूं । दासांदास–भक्तोंका दास । बुध–बुद्धि । जोग–योग्य । जसवास–यश, कीर्ति । हिरदै–हृदयमें ।

२३१. मोहरे–तुकबंदी । चवथ–चौथी । खगराय–गरुड़ । नाग–शेषनाग । खगराज–गरुड़ ।

अरथ

जिण गीतरै प्रथमरी तीन ही तुकां मात्रा चवदै चवदै होय । मोहरे रगण गण होय । तुक पै'ली मात्रा चवदै, तुकांत रगण होय । तुक दूजी मात्रा चवदै, तुकांत रगण होय । तुक तीजी मात्रा चवदै, तुकांत रगण होय । तुक चौथी मात्रा अग्यारै, तुकांत मोहरे सगण होय सौ गीत नाग कहै छै । हे खगराज गरुड़ सौ गीत रसावळौ कहावै छै ।

अथ गीत रसावळौ उदाहरण

गीत

सझ भुजां निज धानंख सरा, मझ अड़ै भूहां मौसरा ।
रिण रांम नूप दसमाथरा, खित वेध लगा खरा ॥
उण दसा राखस आहुड़ै, भड़ भाल कपि यण दस भड़ै ।
लूथबथ अह घणसुर लड़ै, गज धरा नभ गड़ड़ै ॥
कोमंड कीधां कुंडळां, वरसाळ सर दुत वीजळा ।
खळ कुंभ राघव खंडळा, झड़ नयण आग झळा ॥
भड़ रांम दससिर भंजिया, दत लंक सरणागत दिया ।
विभ अवध सिय ले आविया, कळ चंदनांम किया ॥२३२

अथ गीत सतखणा लछण

दूहा

लघु सांणोर क पूणियौ, धुर अठार बी बार ।
सोळ बार क्रम मत सरब, दु गुरु तुकंत बिचार ॥ २३३

---

२३२. धानंख–धनुष । सरां–बाण, तीर । मझ–मध्य । मोसरा–श्मश्रु, मूंछें । दसमाथरा–रावणका । खित–पृथ्वी । वेध–युद्ध । दसा–ओर, तरफ । राखस–राक्षस । आहुड़ै–भिड़े । भड़–योद्धा । भाल–रीछ । कपि–बंदर । यण–इस । दस–तरफ, ओर । लूथबथ–परस्पर भिड़नेकी क्रिया, द्वन्दयुद्ध । अह–लक्ष्मण । घणसुर–मेघनाद । गड़ड़ै–गुंजायमान हुए । कोमंड–धनुष । वरसाळ–वर्षा । सर–तीर, बाण । दुत–द्युति । वीजळा–बिजली, तलवार । दससिर–रावण । दत–दान । विभ–वैभव । अवध–अयोध्या । सिय–सीता । कळ–युद्ध । चंदनामा–यश ।

२३३. बी–दूसरी । बार–बारह । सोळ–सोलह । मत–मात्रा । दु–दो ।

सोळ मत तुक पंचमी, संबोधन धुर मध ।
तुक छठी मझ नव कळा, सौ सतखणौ प्रसिध ॥ २३४

अरथ

गीत छोटौ सांणोर तथा पूणियौ सांणोर पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै होय नै बीच संबोधन रेकार शब्द पांचमी तुकरै आद मध्य आवै नै तुक छठी मात्रा नव होवै जिणनै गीत सतखणौ कहीजै ।

अथ गीत सतखणौ उदाहरण

गीत

प्रांणी सौ झूट कपट चित परहर, गुण हर काय न गावै ।
जमदळ आय फिरेलौ जाडौ, आडौ कोय न आवै ।
रे दिन जावै रे दिन जावै, लाहौ लीजियै ॥
बेखै मात पिता त्रिय बंधव, कुळ धन धंधव काचौ ।
चौरंग मझ जमहूँत बचायव, साहिब राघव साचौ ।
रे जग काचौ रे जग काचौ, लाहौ लीजियै ॥
अंत दिनां आडौ खम आसी, साचौ जनां संबंधौ ।
डिग चित अवरां दिसी म डोलै, बोलै लिछमण बंधौ ।
रे जग धंधौ रे जग धंधौ, लाहौ लीजियै ॥
धू पहळाद भभीखण सिंधुर, अपणाया सुख आपे ।
पीतंबर काटै दुख पासां, थिरके दासां थापे ।
रे हरि जापै रे हरि जापै, लाहौ लीजियै ॥२३५

---

२३४. मध–मध्य । मझ–मध्यमें । कळा–मात्रा ।

२३५. परहर–छोड़ दे । गुण–यश । काय न–क्यों नहीं । जाडौ–बहुत, घना । कोय न–कोई नहीं । लाहौ–लाभ । बेखै–देखते हैं । त्रिय–स्त्री । बंधव–भाई । धंधव–धंधा, काम । चौरंग–आवागमनका बंधन युद्ध । मझ–मध्यमें । जमहूँत–यमराजसे । साहिब–स्वामी । जनां–भक्तों । संबंधौ–संबंध । अवरां–अन्यों । दिसी–ओर, तरफ । म–मत । लिछमण–लक्ष्मण । बंधौ–भाई, बंधु । धू–ध्रुव भक्त । पहळाद–प्रहलाद । सिंधुर–गज । पीतंबर–पीताम्बर वस्त्र धारण करने वाला विष्णु । जापै–जप, स्मरण कर ।

अथ गीत उमंग सावझड़ौ लछण

दूहौ

सोळह मत तुक प्रत सरब, मोहरा च्यारूं मेळ ।
सावझड़ौ सगणंत सख, सोय उमंग सचेळ ॥ २३६

अरथ

घड़ उथलरै पण तुक प्रत मात्रा सोळै होय । अंत गुरु होय नै यूंही उमंगरै तुक प्रत सोळै मात्रा नै अंत गुरु होय पिण अतरौ भेद छै सौ घड़उथल तौ आधासूं उलटै नै उमंग सावझड़ौ च्यारूं तुकां मिळै नै उलटै नहीं यौ भेद छै ।

अथ गीत उमंग सावझड़ौ उदाहरण

गीत

नर नाग सुरा सुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी ।
मुर कीटमधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी ॥
के नाथ अनाथ सुनाथ किया, सुज जेण वेरी दळ चाप सिया ।
वळ रांवण कुंभ जिसा वहिया, है कांम भलौ भज राम हिया ॥
मह पाळ सिवां कुळ मित्तारौ, पह पाळक संतां पीसारौ ।
जग जाय जमारौ जीतारौ, सुज संभर सायब सीतारौ ॥
वाराधिप सेतां बंधणारौ, कुळ राखस जूथ निकंदणारौ ।
दिल तूं 'किसना' जग बंदणारौ, नहचौ रख कौसळ नंदणारौ ॥२३७

---

२३६. सगणंत–जिसके अन्तमें सगण हो । सख–कह ।

२३७. जोड़–बराबर, समान । नथी–नहीं । कथ–कथा । दुजांण (द्विज)–महर्षि, मुनि । कथी–कही । मुर–एक असुरका नाम । कीटमधु–मधुकैटभ । सिंध–समुद्र । वळ–तोड़ कर । चाप–धनुष । सिया–सीता । वहिया–चले गये । भलौ–उत्तम, ठीक । महपाळ–(महिपाल) राजा । सिवां–श्रेष्ठ । कुळ मीत्तारौ–सूर्य का वंश । संभर–स्मरण कर । सायब–(साहिब) स्वामी । वाराधिप–समुद्र । जूथ–समूह । निकंदणरौ–नाश करने वाले का । नहचौ–विश्वास, धैर्य । नंदणरौ–पुत्रका ।

अथ गीत यकखरौ (इकखरौ) लछण

सरलोकौ

मात्रा चवदै तुक हेकण मांहै ।
आंणै सोळै तुक यण विध ऊछाहै ॥
कायब साव्रभड़ौ रगणांत कीजै ।
मोहरा सोळै हीरै रे मेलीजै ॥
गीत यकखरौ यण विध कवि गावै ।
राघव राजानै जसकर रीझावै ॥
चवजै बीसू मत पद हेकण चोखौ ।
लीजौ वरतारौ समझे सरलोकौ ॥ २३८

अरथ

यकखरा गीतरै सोळै ही तुकां प्रत चवदै मात्रा आवै । तुकंत रगण आवै । सारी ही तुकां प्रतरै यसौ संबोधनरौ एक अखर आवै । मोहरै सौ यकखरौ गीत कहावै । यणरा लछणांरौ छंद सरलोकौ छै । वांणिया, जती तथा भोजक बोहोत पढै छै ।

अथ गीत यकखरौ उदाहरण

गीत

कौसिक रिख जग काज रे, जाचिया स्री रघुराज रे ।
सुज विदा दसरथ साज रे, मेल्हिया स्री महराज रे ॥
गत पंथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे ।
हरण खंड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे ॥

---

२३८. हेकण–एक । मांहै–में । आंणै–रखे, ले आये । यण–इस । विध–प्रकार, तरह । ऊछाहै–उमंगमें, जोशमें । कायब–काव्य, कविता । रगणांत–वह छंद जिसके अंतमें रगण हो । कीजै–करिये । मेलीजै–रखिए । रीझावै–प्रसन्न करे । चवजै–कहिए । बीसू–बीस । मत–मात्रा । पद–चरण, तुक । चोखौ–उत्तम । वरतारौ–वह छद या गद्य परिभाषा जिसमें छंद विशेषके रचनाके नियम व मात्रा वर्ण आदि दिए हुए हों । सरलोकौ–राजस्थानीका एक मात्रिक छंद विशेष । यसौ–ऐसा । अखर–अक्षर । यण–इस । लछण–लक्षण । बोहोत–बहुत ।

२३९. कौसिक–विश्वामित्र । रिख–ऋषि । जिग–यज्ञ । काज–लिए । जाचिया–याचना की । खंड–नाश, ध्वंश । कीध–किया । नख–डाल दिया । दध–समुद्र । मांह–में ।

जिग जनक आरंभ रांम रे, कर रिखी गवण सकांम रे ।
भव सिला गौतम भांम रे, रज पाय तारी रांम रे ॥
दस कमळ बळ सुत दैत रे, नूप अवर मांण नमैत रे ।
जिग धनंख हण की जैत रे, बर स्रीया जद बांनैत रे ॥२३६

अथ गीत अमेळ लछण

दूहौ

सरस वेलिया सूहणा, सांमिळ तुकां सभाय ।
मोहरा अंत मिळै नहीं, सौ अमेळ सुभाय ॥ २४०

अरथ

वेलिया गीतरो नै सोहणा तथा खुड़दरी तुकां सांमिळ होय । अंत मोहरा मिळै नहीं, जिणनूं अमेळ सांणोर कहीजै । यणहीज तरै सुपंखरौ पिण अमेळ वणै छै ।

अथ गीत अमेळ सांणोर उदाहरण

गीत

दसरथरा नंद मुकतरा दाता, असुर जुधां घाता असेस ।
निज कुळ मुकट जांनकीनायक, सुखदायक सेवगां सही ॥
उर भ्रगु लात सुहात अनूपम, जग जाहर विक्रम राजेस ।
किती बार महराज त्रविक्रम, राजहूंत तन लाज रही ॥
बाढ सुबाह जिगन रखवाळे, महण बीच डाले मारीच ।
ताई विमद करे नूप ताखा, विरदाई जांनकी वरी ॥

---

२३६. रिखी—ऋषि । गवण—गमन । भांम—भामिनी, स्त्री । पाय—चरण । दसकमळ—रावण । अवर—अन्य । मांण—गर्व । हण—नाश कर । बांनैत—वीर ।

२४०. सूहणा—सोहणा नाम गीत छंद । सांमिळ—साथ, शामिल । सभाय—सज कर, रख कर । जिणनूं—जिसको । पिण—भी ।

२४१. नंद—पुत्र । मुकतरा—मुक्तिके । दाता—देने वाला । घाता—संहारक । असेस—अपार । अनूपम—अद्भुत । लात—पद-प्रहार । सुहात—शोभा देता है । विक्रम—वीरता । किती—कितनी । त्रविक्रम—त्रिविक्रम । राजहूंत—श्रीमानसे । बाढ—काट कर, मार कर । जिगन—यज्ञ । महण—समुद्र । ताई—शत्रु । विमद—गर्वरहित । ताखा—वीर । विरदाई—विरुदधारी ।

फसण अरस कर आडौ फिरियौ, हुवौ फरसधर तेजविहण ।
जग मझ रांम न कौ तौ जेहौ, केहौ भूपत मीढ करां ॥२४१

अथ गीत भंवरगुंजार लछण

दूहा

सोळ प्रथम चवदह दुती, ज्यांरै लघू तुकंत ।
ती चवदह नव चतुरथी, अख बी गुरु जिण अंत ॥ २४२
यण हीज विध उत्तर अरध, चतुर सुकवि विचार ।
भण जस रस रघुवर भंवर, गीत भंवर गुंजार ॥ २४३

अरथ

भंवरगुंजार गीतरै तुक आठ मात्रा प्रमांण कहां छां । तुक पै'ली मात्रा सोळै । तुक बीजी मात्रा चवदै । तुक तीजी मात्रा चवदै । तुक चौथी मात्रा नव । तुक पांचमी मात्रा सोळै । तुक छठी मात्रा सोळै । तुक सातमी मात्रा चवदै । तुक आठमी मात्रा नव होय । पै'ली बीजी तुकरा मोहरा मिळै । तुकंत लघु होय । तीजी चौथीसूं भेळी पढी जाय । आठमी तुकरा मोहरा मिळनै तुकांत दोय गुरु होय । पांचमी छठी तुकरा मोहरा मिळनै तुकांत लघु होय । सातमी आठमी तुक भेळी पढ़ी जाय । यण प्रकार च्यार ही दूहां प्रत मात्रा होय, जिण गीतरौ नांम भंवरगुंजार कहीजै ।

अथ गीत भंवरगुंजार उदाहरण

गीत

रे अधम नर समर रघुबर,
सिया नायक दया सागर ।
कड़े दध जिण सुजस कहजै भिड़ै खळ भंजे ॥
जंपै सिव रिव सेस जाहर,
वेख की प्रहळाद वाहर ।
रूप नाहर धार राघौ गाव रिम गंजे ॥

---

२४१. फसण–लड़नेको । अरस–कोप । फरसधर–परशुराम । तेजविहीण–कांतिहीन । मझ–मध्य । कौ–कोई, कौन । तौ–तेरे । जेहौ–जैसा । केहौ–कौनसा । मीढ–समान, तुल्य ।

२४२ दुती–दूसरी । त्यांरै–उनके । ती–तीसरी । चतुरथी–चौथी । अख–कह । बी–दो ।

२४३. यण–इस ।

२४४. कड़े–तट पर । दध–समुद्र । खळ–असुर । रिव (रवि)–सूर्य । वेख–देख । वाहर–रक्षा । नाहर–नृसिंहावतार । राघौ–श्रीरामचन्द्र । रिम–शत्रु । गंजे–नाश किये ।

बळ थियौ दित हरणाद्य अप्रबळ ,
तेज मीहर धर रसातळ तांम ।
ब्रहम पुकार रघुपत करण मुख कहै ॥
गरुड़धुज विप धांम···गिड़ ,
प्रळय जळ मग गंध सुध पड़ ।
आंण घर घर देत अणघट, विकट अर वहै ॥
तन मछ जोजन स्रंग लख तण ,
रेण जन सत वरत रखण ।
समंद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वांणी ॥
बळ चवद रतन उधार हित वप ,
कठण पिठ धारी मंद्र कछप ।
उदध कर मंथांण अणघट, प्रगट कंज पांणी ॥
बळ छळण तन धरि हास बावन ,
पुरंदर द्रढ कर सपावन ।
फरसधर विप धार हरि फिर, खत्र खळ खंड ॥
रच रांम तन यर रहच रांमण ,
हुवा हळधर बुध दित हण ।
बळै की वंकी होण राघव, मही सत्त मंड ॥ २४४

अथ गीत दूजौ भंवरगुंजार लछण

दूहौ

चवद प्रथम दूजी चवद, सोळ त्रती नव च्यार ।
पूब उतर सम अंत गुरु, जुगम भंवर गुंजार ॥ २४५

---

२४४. बळ–फिर । थियौ–हुआ । दिन–दैत्य । हरणाक्ष्य–हिरण्याक्ष । अप्रबळ–अत्यन्त बलशाली । मीहर–सूर्य । अणघट–अपार । मछ–मत्स्य । जोजन–योजन । पिठ–पीठ । मंद्र–मंद्राचल पर्वत । उदध–समुद्र । कंज–कमल । पांणि–हाथ । बळ–राजा बलि । पुरंदर–इन्द्र । सपावन–पवित्र । फरसधर–परशुराम । खत्र–क्षत्रियत्व । रहच–मार कर ।

२४५. त्रती–तीसरी । जुगम (युग्म)–दो, दूसरा । भेळी–साथ ।

अरथ

बीजा भंमरगुंजाररै पै'ली तुक मात्रा चवदै । बीजी तुक मात्रा चवदै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा नव । यूंही उतरारधरो च्यार तुकां होय । पै'ली दूजीरा मोहरा मिळै । अंत गुरु होय । तीजी चौथी भेळी पढ़ी जाय । चौथी आठमीरा मोहरा मिळै । अंत गुरु होय । पांचमी छठीरा मोहरा मिळै । गुरु अंत होय । पूरबारध उतरारध समांन मात्रा होय । यूं च्यार ही दूहा होय सौ बीजौ भंमरगुंजार गीत कहावै ।

अथ गीत बीजौ भंमरगुंजार उदाहरण

गीत

सुभ देह नीरद सुंदरं, साधार सेवग स्त्रीवरं ।
रघुनाथ नाथ अनाथ रहे, हेल अघ हरणं ॥
धर सुकर सायक धानुखं, लड़ समर रहचण लखं ।
दुज राज गरब विभंज दस्सत, सरब जग सरणं ॥ २४६

अथ गीत चौटियौ लछण

दूहौ

प्रगट जांगड़ा गीत पर, अधिक मत्त उगणीस ।
अंत दु गुरु तुक आंणजै, कवि चौटियौ कहीस ॥ २४७

अरथ

वैलियौ, सूहणौ, खुड़द, जांगड़ौ, यां च्यार ही गीतां छोटा सांणोरां मेहलौ । जांगड़ौ गीत पै'ली तुक मात्रा अठारै । बीजी तुक मात्रा बारै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा बारै होय । दो गुरु तुकंत होय, पछै सोळै बारै ईं क्रम होय, जीं जांगड़ा गीतरा दूहारै पांचमी तुक एक मात्रा उगणीसरी अधिक होय । दो गुरु तुकंत होय । इण प्रकारसूं च्यार ही दूहा होय, जिणनै चौटियौ गीत कहीजै ।

---

२४६. नीरद–बादल । साधार–सहायक, रक्षक । सुकर–श्रेष्ठ हाथ । सायक–तीर । धांनुखं–धनुष ।

२४७. मत–मात्रा । उगणीस–उन्नीस । कहीस–कहेगा । बीजी–द्वितीय, दूसरी । बारै–बारह । ईं–इस ।

अथ गीत चौटियौ उदाहरण

गीत

जांमी अघ भांन सुरसरी जेथी, ध्यांन मुनीसां धायौ ।
वरणै वेद यसा नग राघव, आं सरणै हूं आयौ ।
केसव रावळौ निज दास कहायौ ॥
त्रिभुवण मांझ नहीं त्यां तोलै, ओळै सुतअरव्यंदौ ।
म्है कवि 'किसन' हुलासे चितमें, आसे लियौ अमंदौ ।
बर-सी राजरै चोटीकट बंदौ ॥
रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूंस मघवांणौ ।
क्रत दत कौट कियां हूं यधकौ, हरि नग ओट रहांणौ ।
कुळमें धन्य हूं किंकर कहांणौं ॥
भण चौरासी घेर उदध-भव, नरपत फेर नह नाचूं ।
कौसळनंद अडग 'किसनौ' कह, जुग जुग याही जाचूं ।
राघव रावळा चरणां नित राचूं ॥२४८

अथ गीत मंदार लछण

दूहा

तुक धुर बी सोळह मता, मोहरा मेळ गुरंत ।
ती अठार चौथी त्रिदस, तेरै कह रगणांत ॥ २४९

---

२४८. जांमी–पिता । अघ–पाप । सुरसरी–गंगा नदी । जेथी–जहां । धायौ–स्मरण किया, भजन किया । यसा–ऐसा । नग–चरण । आं–उन । हूं–मैं । रावळौ–श्रीमानका, आपका । त्रिभुवण–तीन लोक । मांझ–में, मध्य । तोलै–समान । सुत अरव्यंदौ–ब्रह्मा । बर-सी–सीतावर, श्रीरामचंद्र भगवान । राजरै–आपके, श्रीमानके । बंदौ–सेवक, अनुचर । रज–धूलि । परसण–स्पर्शन । उदमाद–इच्छा । रिख–ऋषि । हूंस–अभिलाषा । मघवांणौ–इंद्र । क्रत–कार्य, काम । दत–दान । यधकौ–अधिक । ओट–आड़, शरण । रहांणौ–रह गया हूँ । हूं–मैं । किंकर–दास, भक्त । कहांणौ–कहा गया । रावळा–आपके ।

२४९. धुर–प्रथम । बी–दूसरी । मता–मात्रा । ज्यांरै–जिनके । गुरंत–जिस शब्दके अंतमें गुरु वर्ण हो । रगणंत–जिसके अंतमें रगण हो ।

अध पूरब जिम उतर अध, समझौ कवि सुविचार ।
क्रीत जेण बिच रांम कह, दाख गीत मंदार ॥ २५०

अरथ

पैं'ली तुक मात्रा सोळै । बीजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा अठारै । चौथी तुक मात्रा तेरै होय । पैं'ली बीजी तुक मिळै ज्यांरै गुरंत होय । पूरबारध उतरारध समांन होय । पांचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा अठारै और आठमी तुक मात्रा तेरै होय । आठमीके रगणांत होय सो मंदार नांम गीत कहीजै ।

अथ गीत मंदार उदाहरण

गीत

पण-राखण दास गदापांणी, मझ सौ कथ जाहर भूमांणी ।
अपखी प्रहळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथसूं ॥
जे जुध हरणाकुसनूं जरियौ, धड़ नाहर मांनवचौ धरियौ ।
जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथसूं ॥
पित मात दसा तजया लंकनूं, बित जे चित हूं धू बाळकनूं ।
बन जाय करे तप हेत विसंभर, अेक पया दळ ऊपरी ॥
घण साधै जोग सधीर घणौ, सुर राजा कांपै बात सुणौ ।
निरधार अधार पधार नरायण, भूप कियौ द्रढ भूपरी ॥
दुरवासा डारण स्राप दियौ, लखजे अंबरीख उबार लियौ ।
बिच पेट परीछत मीच बचाय'र, थेट हरी जन थापिया ॥

---

२५१. गदापांणी–विष्णु । भूमांणी–संसार, भूमंडल । अपखी–वह जिसका कोई पक्ष न करता हो । संग्रहिया–अपनाया, रक्षा की । जे–जिसने । हरणकुसनूं–हिरण्यकशिपुको । जरियौ–संहार किया । धड़–शरीर । नाहर–सिंह । मांनवचौ–मनुष्यका । धरियौ–धारण किया । दितेस–दैत्य, दैत्येश । दुजेसर–द्विजेश्वर, महर्षि । विसंभर–ईश्वर । पया–पैर । दुरवासा–एक ऋषिका नाम । डारण–जबरदस्त । स्राप–शाप । परीछत–परीक्षित । मीच–मृत्यु ।

बळमीक पुळिंद रिखी बागौ, कीधौ गुरु सुकनाधिप कागौ ।
भख अेंठित बोर करां कर भीलण, अेम घणां पद अप्पिया ॥
निरधारां ओठम घणनांमी, भुज दीन सीहाय ब्रद भांमी ।
नह विसार संभार अहोनिस, जैनूं आठूं जांममें ॥
दिल ऊजळ ठाकर दासरथी, कथजे गुण आकर वेद कथी ।
कर तूं अभिलाख रदा 'किसना' किव, राख सदा चित रांममें ॥२५१

अथ गीत झड़लुपत सावझड़ौ लछण

दूहौ

सावझड़ौ रमणी वसंत, तुक धुर बी मिळ बेद ।
मोहरौ तुक तीजी अमिळ, सौ झड़लुपत सुभेद ॥ २५२

अरथ

गीतांरा प्रकरणमें पै'ली तीन सावझड़ा कह्या । अेक वसंतरमणी, बीजौ जयवंत नै तीजौ मुणाळ, ज्यांमें पै'लौ वसंतरमणी नांम सावझड़ौ, जिणरै पै'ली तुक मात्रा अठारै होय नै और सारा ही गीतरी सारी ही तुकांमें सोळै सोळै मात्रा होय । तुकंत भगण होय सौ तौ वसंतरमणी सावझड़ौ, जिणरी च्यार ही तुकां मिळै नै झड़लुपतरी पै'ली तुक दूजी तुक चौथी तुक मोहरा मिळै नै तीजी तुक मोहरौ मिळै नहीं, जिणनूं झड़लुपत कहीजै तथा कोई कवि यणने त्रिमेळ पालवणी पण कहै छै सौ पण सत्य छै ।

अथ गीत त्रिमेळ पालवणी तथा झड़लुपत सावझड़ौ उदाहरण

गीत

दत किरमर जोड़ नकौ विरदायक ।
घण दळ रोड़ कौड़ खळ घायक ॥

---

२५१. बळमीक–वाल्मीकि ऋषि । पुळिंद–एक प्राचीन कालकी पिछड़ी जाति । रिखी–ऋषि । कीधौ–किया । सुकनाधिप–गरुड़ । कागौ–काकभुशुण्डि । अेंठित–उच्छिष्ठ । ओठम–शरण, सहारा । घणनांमी–ईश्वर । ब्रद–विरुद । भामी–बलैया । जैनूं–जिसका । आठूं जांममें–अष्ठ याममें । दासरथी–श्रीरामचंद्र भगवान ।

२५२. धुर–प्रथम । बी–द्वितीय । वेद–चतुर्थ, चौथी । मोहरौ–तुकबंदी । अमिळ–नहीं मिलने वाली । ज्यांमें–जिनमें । यण–इस । पण–भी ।

२५३. दत–दान । किरमर–तलवार । जोड़–समान । नकौ–कोई नहीं । विरदायक–विरुद-धारी, यशस्वी । घण–बहुत । दळ–सेना, फौज । रोड़–रोक कर । खळ–शत्रु । घायक–संहार करने वाला ।

अघ तम दळद तोड़ दुत आसत ।
निज कुळ मौड़ जांनकी नायक ॥
जुध आचार भार भुज जोंपत ।
रिमहर मार धजा जय रोपत ॥
वदै तमांम वेद मूनीवर ।
औ रवि वंस रांम रवि ओपत ॥
नूप खग दांन लियां मुख नूर ज ।
प्रसणां भांन खित्रीवट पूरज ॥
बळबळ प्रथी सुजस सद बोलत ।
सूरज तड़ दासरथी सूरज ॥
सदन सुकंठ भभीखण सांमंत ।
निरख कंठदस भांज अनांमत ॥
रे कुळभांण भांण नूप राघव ।
कौड़'क भांण लियां मुख क्रांमत ॥ २५३

अथ गीत त्रिपंखौ लछण

दूहौ

धुर बी तुक मत सोळ धर, ती तुक बीस मताय ।
गळ अनियम मिळबौ, अेक त्रिपंखौ गाय ॥ २५४

---

२५३. अघ–पाप । तम–अंधेरा । दळद–दारिद्रय, कंगाली । दुत–द्युति । आसत–शक्ति । आचार–दान । जोपत–जोशमें होता है । रिमहर–शत्रु । रोपत–रोपता है । तमांम–सब । रविवंस–सूर्य वंश । रवि–सूर्य । ओपत–शोभा देता है । नूप–राजा । नूर–कांति, दीप्ति । ज–ही । प्रसणां–शत्रुओं । भांन–नाश कर । खित्रीवट–क्षत्रियत्व । पूरज–पूर्ण । बळबळ–चारों ओर । सद–शब्द । बोलत–बोलता है । तड़–दल । दासरथी–श्री रामचन्द्र । सदन–भवन । सुकंठ–सुग्रीव । भभीखण–विभीषण । सांमंत–योद्धा । निरख–देख, देख कर । कंठदस–रावण । भांज–नाश कर । अनांमत–जो नहीं झुकता या नमता था । कुळभांण–सूर्य वंश । भांण–सूर्य । कौड़'क–करोड़ों । क्रांमत–कांति, दीप्ति ।

२५४. बी–दूसरी । मत–मात्रा । ती–तीसरी । मताय–मात्रा । गळ–अनुप्रास, तुकबंदी ।

अरथ

पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजो तुक मात्रा सोळै होय । पै'ली ही दूजी तुकांरा मोहरा मिळै । तुकांत लघु गुरुरौ नेम नहीं । कठे'क गुरु मोहरा, कठे'क लघु मोहरा होय । तुक तीजी मात्रा बीस होय । मोहरौ मिळै नहीं । गुरु लघु तुकांत नेम नहीं । यण रीतसूं च्यार ही दवाळा होय जिण गीतनूं त्रिपंखौ गीत कहै छै ।

अथ गीत त्रिपंखौ उदाहरण

गीत

सारंग हण आया अवधेसर, सेसहूंता पूछै राजेस्वर ।
किण-विध न दीसै सीत सूनी कुटी ॥
काहिल बांण कूक म्रग कीधी, दौड़ लछण अग्या मौ दीधी ।
भूप म्हैं नटै जद कटुक कथ भाखिया ॥
अह वायक सुण रांम उचारै, वनिता वयण पुरख न विचारै ।
करी वन त्री ढली जका भोळप करी ॥
अेह कथ सुण बंधव आगी, जंपै सेस ज्वाळा तन जागी ।
सत्र कर भंज हूं आंण बंधव सिया ॥
भ्राता कंठ लगाड़ै भाई, स्रीबर सुर कज बात सुणाई ।
त्रिलोकीराव नर भाव तन विसतारे ॥२५५

---

२५५. सारंग–हरिण । हण–मार कर । अवधेसर–श्री रामचंद्र भगवान । सेसहूंता–लक्ष्मणसे । राजेस्वर–राजेश्वर । किण-विध–किस प्रकार । दीसै–दिखाई देता है । सीत–सीता । काहिल–घायल । कूक–पुकार । कीधी–की । लछण–लक्ष्मण । अग्या–आज्ञा । मौ–मुझको । दीधी–दी । जद–जब । कटुक–कटु, कठोर । कथ–वचन । भाखिया–कहे । अह–लक्ष्मण । वायक–वचन । वनिता–स्त्री । वयण–वचन । पुरख–पुरुष । त्री–स्त्री । ढली–छोड़ी । जका–जो । भोळप–भूल । अेह–यह । कथ–वचन । बंधव–भाई । आगी–अगाड़ी । जंपै–कहता है । सेस–लक्ष्मण । ज्वाळा–कोपाग्नि । तन–शरीर । सत्र–शत्रु । भंज–संहार, ध्वंश । हूं–मैं । आंण–ले आऊं । बंधव–भाई । सिया–सीता । स्रीबर (श्रीवर)–विष्णु, श्री रामचंद्र । सुर–देवता । कज–लिए । त्रिलोकीराव–श्री रामचंद्र ।

वारता

गीत पालवणी १, गीत झड़लुपत २, गीत दुमेळ ३, गीत त्रवंकड़ौ ४ नै सावक अडल, अे पांच छोटै सांणोररी विखम तुक पै'ली, तुक तीजी अे विखम तुक त्यांरा वणै नै यतरा गीतांरै तुक प्रत सोळै मात्रा हुवै नै मोहरामें तफावत होय। कठै'क गुरु तुकांत कठै'क लघु तुकांत होवै नै यतरा गीत बडा सांणोररी विखम तुकांरा वणै, सावझड़ौ अरध सावझड़ौ आद। तुक प्रत मात्रा बीस होय। पै'ली तुक मात्रा तेवीस होय।

अथ गीत वडा सावझड़ा तथा अरध सावझड़ा लछण

दूहौ

मुण धुर तुक तेवीस मत, अवर बीस रगणंत।
मिळ चव तुक वड सावझड़ौ, दुमिळ अरध दाखंत ॥ २५६

अरथ

गीत बडौ सावझड़ौ नै अरध सावझड़ौ दोन्यूंई वडा सांणोररी विखम तुक पै'ली तीजोरा हुवै। पै'ली तुक मात्रा तेवीस। बीजी तुक मात्रा बीस और सारा ही तुकां मात्रा बीस होय। तुकांत रगण आवै नै च्यारूं तुकांरा मोहरा मिळै सौ वडौ सावझड़ौ नै अरध सावझड़ारै दोय तुकांत मिळै नै कठै'क रगण तुकांत आवै, कठै'क गुरु करणगण तुकांत आवै औ भेद सौ अरध सावझड़ौ कहावै।

अथ गीत वडौ सावझड़ौ उदाहरण

गीत

लछण कसीसै भुजां धांनंख दध लाजरा।
गोम नभ धड़ड़ आनंक जय गाजरा ॥
सझण पारंभ किय उछव सांमाजरा।
रे असुर देख आरंभ रघुराजरा ॥

---

२५६. मुण–कह। अवर–अन्य। रगणंत–जिस पद्यके चरणके अंतमें रगण हो। चव–चार। दाखंत–कहते हैं। नै–और। दोन्यूंई–दो ही, दोनों ही। बीजी–दूसरी। कठै'क–कहीं पर। करणगण–दो दीर्घ मात्रा का नाम।

२५७. लछण–लक्ष्मण। कसीसै–धनुषकी प्रत्यंचा चढ़ाता है। धांनंख–धनुष। दध–(उदधि) सागर। गोम–पृथ्वी। धड़ड़–ध्वनि हो कर, गर्ज कर। आनंक–नगाड़ा। पारंभ–तैयारी। आरंभ–तैयारी।

रारियां सुभट तूटै दमंग रीसरा ।
त्रिलोचरण जिसा खूटै नयरण तीसरा ॥
सिर कसै ऊकसै लसै भुजगीसरा ।
जोय दंससीस थट कीस जगदीसरा ॥
दहल पुर नयर पूगी महळ दोयणां ।
भय रहित किया सुर नाग नर-भोयणां ॥
उमंग जुध करग चंचळ अचळ औयणां ।
लेख लंकेस अवधेस दळ लोयणां ॥
मांन पीव वच……सूंप ससमाथनै ।
हर चरण जाह जुड़ दूणदसहाथनै ॥
कुळ अनेक करै निज सुधारै काथनै ।
नांम तौ माथ दसमाथ रघुनाथनै ॥ २५७

अथ गीत अरध सावझड़ौ उदाहरण

[ऊपरला सावझड़ा गीतनै दुमेळ कर पढणौ तथा दरसावां छां]

गीत

कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां ।
सुकर खग दांन जेहांन ऊंचासरा ॥

---

२५७. रारियां–नेत्रों । दमंग–अग्निकरण । त्रिलोचण–शिव । खूटै–खुलते हैं । भुजगीसरा–शेषनागके । जोय–देख कर । दससीस–रावण । थट–समूह, दल । कीस–वानर । दहल–धाक, रौब । नयर–नगर । पूगी–पहुंच गई । दोयणां–शत्रुओं । सुर–देवता । नर-भोयणां–नर लोक, संसार । करग–हाथ । औयणां–चरणों, पैरों । लेख–देख कर, समझ कर । लंकेस–रावण । अवधेस–श्रीरामचन्द्र भगवान । दळ–सेना । लोयणां–नेत्रों, लोचनों । पीव–पति । वच–वचन । ससमाथ–समर्थ, शिव । दूणदसहाथ–रावण । काथनै–वैभवको । नांम–झुका दे । तौ–तेरा । माथ–मस्तक । दसमाथ–रावण । ऊपरला–उपर्युक्त, ऊपरका । दुमेळ–वह छंद या पद्य जिसके प्रथम दो चरणोंकी तुकबंदी हो ।

२५८. तूण–तर्कश । सारंग–धनुष । गहियां–पकड़े हुए । करां–हाथों । जेहांन–संसार । ऊंचासरा–श्रेष्ठ ।

सुचित धंका जनां निवारण सांकड़ा ।
वाह रघुनाथ लंका लियण बांकड़ा ॥ २५८

अथ दुतीय गीत झड़मुकट लछण

दूहौ

खुड़दतणौ तुक अग्ग पछ, देह झमक दरसाय ।
जिणनूं दूजौ झड़ मुकट, रटै वडा कविराय ॥ २५९

अरथ

खुड़द गीत छोटौ सांणोर होय। पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजो तुक मात्रा तेरै । तीजी तुक मात्रा सोळै नै चौथी तुक मात्रा तेरै होय । तुकांत दोय लघु होय सौ खुड़द गीत कहावै । जीं खुड़द गीतरी सोळै ई प्रत तुकरै आद अंत जमक होय सौ गीत बीजौ झड़मुकट कहावै । अंक आगै कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ । सावझड़ौ छै ।

अथ गीत झड़मुकट उदाहरण

गीत

रेणायर मथण मथण रेणा यर, भर धर टाळण समर भर ।
कर जन साता जगत अभै कर, वरदाता जांनकीवर ॥
सारंग पांण बांण तन सारंग, धरणसुता धव खग धरण ।
वारण जम भै तारण वारण, करण प्रसुण अध सुख करण ॥
धर ध्रम चाळण धरम धुरंधर, कमळ पांण मुख चख कमळ ।
नायक अकह जांनुकी नायक, अचळ तार दध जुध अचळ ॥

---

२५८. धंका–इच्छा बांकड़ा–वाँकुरा ।

२५९. जीं–जिस । झमक–यमकानुप्रास । बीजौ–दूसरा ।

२६०. रेणायर–समुद्र । मथण–मंथन । रेणा–पृथ्वी । यर–शत्रु । भर–बोझ । धर–पृथ्वी । टाळण–दूर करने वाला । समर–युद्ध । साता–कुशल । वरदाता–वरदान देने वाला । जांनकीवर–सीतापति, श्रीरामचंद्र भगवान । सारंग–धनुष । बांण–तीर । सारंग–बादल, मेघ । धरण-सुता–सीता । धव–पति । खग–तलवार । वारण–मिटाने वाला । जम–यमराज । भै–भय । तारण–तारने वाला । वारण–हाथी । पांण–हाथ । चख–चक्षु, नेत्र । अचळ–पर्वत । दध–उदधि, समुद्र । अचळ–दृढ़, अटल ।

धन अन विलस जनम मांनव धन, म कर ईरखा तन मकर ।
सर पर कियौ चहै व्है जग सिर, धर निज मन रघुवर सधर ॥२६०

अथ गीत दुतीय सेलार लछण

दूहौ

धुर अठार सोळह सरब, सावझड़ौ अध सोय ।
अलंकार विध चतुर तुक, सख सेलारह सोय ॥ २६१

अरथ

अेक सेलार गीत तौ पै'ली कह्यौ अर दूजारौ यौ लछण छै। पै'ली तुक मात्रा अठारै और सारी तुकां मात्रा सोळै सोळै होय । गुरु लघु तुकंतरौ नेम नहीं पण गुरु तुकंत बोहोत होय । चौथी तुकमें कह्यौ सब्दारथ फेर कहणौ विध-अलंकार होय, जीं गीतनै दुतीय सेलार गीत कहीजै ।

अथ गीत सेलार उदाहरण

गीत

चित करणी अखा दिसी नह चाहै, आप विरदचा पखा उमाहै ।
पतित खीण कुळहीण अपारै, तारै रे सीतावर तारै ॥
कळिया दुख सागर जन काढै, विपत रोग अघ आगर बाढै ।
नातौ दीनदयाळ निहाळै, पाळै रे संतां हरि पाळै ॥
अजामेळ सा घोर अधम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी ।
असरण दीन अनाथ अथाहै, साहै रे माधौ कर साहै ॥

---

२६०. धन–धन्य । म–नहीं । ईरखा–ईर्ष्या ।

२६१. अध–आधा, अर्द्ध । सोय–वह, उस । सख–कह । सारी–सब । बोहोत–बहुत । जीं–जिस । दुतीय–द्वितीय ।

२६२. अखा (मृषा)–असत्य, व्यर्थ । खीण–क्षीण । अपारै–अपार । सीतावर–श्रीरामचंद्र । कळिया–डूबा हुआ, मग्न । जन–भक्त । काढै–निकालते हैं । अघ–पाप । आगर–समूह । बाढै–काटते हैं । नातौ–संबंध, रिश्ता । निहाळै–देखते हैं । पाळै–पालन-पोषण करते हैं । अधम्मी–अधर्मी । निकम्मी–बेकार, नीच । साहै–उद्धार करते हैं । माधौ–माधव, विष्णु ।

गाफिल आळ जंजाळ न गावै, भुज सांमळियौ सरम भळावै ।
'किसन' कह जमहूंत म कंपै, जंपै रे मन राघव जंपै ॥ २६२

अथ गीत त्राटकौ लछण

दूहा

धुर अठार सोळह दुती, ती सोळह मिळतेह ।
बेद अग्यार तुकंत बळ, अख गुरु लघु अच्छेह ॥ २६३
मिळै तीन तुक आदरी, त्रिण तुक अंत मिळंत ।
मिळै चवथी आठमीं, किव त्राटकौ कहंत ॥ २६४

अरथ

त्राटकरै पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा अग्यारै । गुरु लघु तुकंत होय । पांचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा सोळै होय । आठमी तुक मात्रा अग्यारै होय । गुरु लघु तुकंत होय । पछै सारा दूहां पै'ली तुक सोळै । दूजी तुक मात्रा सोळै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक मात्रा अग्यारै । पांचमी तुक मात्रा सोळै । छठी तुक मात्रा सोळै । सातमी तुक मात्रा सोळै । आठमी तुक मात्रा अग्यारै । पै'ली दूजी तीजीरा मोहरा मिळै । पांचमी छठी सातमीरा मोहरा मिळै । यण रीत होय सौ गीत त्राटकौ कहावै ।

अथ गीत त्राटकौ उदाहरण

गीत

भज रे मन रांम सियावर भूपत, अंग घणाघण सोभ अनूप ।
नीरज जात सुगाथ निरूपित, कौटिक कांम सकांम ॥

---

२६२. सांमळियौ–श्रीकृष्ण, श्रीराम । भळावै–सौंप देता है । जमहूंत–यमराजसे । कंपै–डरना ।

२६३. दुती–दूसरी । ती–तीसरी । बेद–चौथी, चतुर्थ । अग्यार–ग्यारह । बळ–फिर । अख–कह । अच्छेह–अंतमें ।

२६४. तिण–तीन । चवथी–चौथी । किव–कवि । कहंत–कहते हैं । पछै–बादमें, पश्चात । मोहरा–तुकबंदी ।

२६५. सियावर–सीतापति, श्रीरामचंद्र । घणाघण–बादल । सोभ–कांति, दीप्ति । अनूप–अद्भुत । नीरज–कमल । सुगाथ–सुन्दर शरीर । कौटिक–करोड़ ।

पीत दूकूळ कटी लपटांणौ, बीर अभंग निखंग बंधांणौ ।
अंस अजेव धनू उरमांणौ, रूप यसै नूप रांम ॥
सोहत बांम दिसा निज सीता, बादळ बीज प्रभाव वनीता ।
पाय खळांहळ गंग पुनीता, की तावै अघ कोड़े ॥
लोभत कंज सरभ्र लोयण, भाळ सखी नहचै नर-भोयण ।
आहव खंभ विजै जिम औयण, मांणस दोयण मोड़े ॥
जै रघुराज जपै जगजाहर, है उर मांझ निवास सदा हर ।
सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईखण जे अभिलाख ॥
माथ पगां सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै ।
पार गुणां करतार न पावै, सौ स्रु ति संप्रत साख ॥
मारुति जेण कियौ अजरामर, केकंध भूप सुकंठ दियौ कर ।
रीझ भभीखण लंक नरेसुर, की जन सारै काज ॥
ऊ करसी चित सोच असंन्नह, सास उसास संभार रसंन्नह ।
कीरत स्रीवर भाख 'किसन्नह', राख रिदे रघुराज ॥२६५

अथ गीत मनमोह लछण

दूहौ

कह दूहौ पहला सुकव, कड़खा ता पर कथ्थ ।
पंथ प्रगट कड़खौ दुहौ, सौ मनमोह समथ्थ ॥ २६६

---

२६५. पीत–पीला । दूकूळ–वस्त्र । लपटांणौ–आवेष्ठित । निखंग–तर्कश । धनू–धनुष । सोहत–शोभा देती है । बांम–बायां । दिसा–तरफ, ओर । बीज–बिजली । वनीता–स्त्री । पाय–चरण । खळांहळ–जलप्रवाहकी ध्वनि । गंग–गंगा नदी । पुनीता–पवित्र । लोभत–लोभायमान होते हैं । कंज–कमल । लोयण–लोचन, नेत्र । भाळ–देख । नहचै–निश्चय । नर-भोयण–नर लोक । आहव–युद्ध । औयण–चरण । मांणस–मनुष्य । दोयण–शत्रु । मांझ–मध्य । हर–महादेव । धनेस–कुबेर । दिनेस–सूर्य । सुर–देवता । ईखण–देखनेकी । अभिलाख–अभिलाषा, इच्छा । माथ–मस्तक । पगां–चरणों । सुरनाथ–इन्द्र । गौरव–यश । सारद–सरस्वती । मारुति–हनुमान । जेण–जिस । अजरामर–वह जो न तो वृद्ध हो और न मरे, अमर । केकंध–किष्किधा । सुकंठ–सुग्रीव । रीझ–दान । भभीखण–विभीषण । ऊ–वह । असंन्नह–भोजन । रसंन्नह–जीभ । भाख–कह । रिदे–हृदय ।

२६६. ता–उस । कथ्थ–कह ।

अरथ

पै'लां तौ अेक दूहौ कहीजै। पछै दूहा ऊपर कड़खा छंदरी च्यार तुकां कहीजै। यण तरै अेक अेक दूहौ वणै। यसा च्यार दूहा होवै जिण गीतरौ नांम मनमोह कहीजै। दूहारी तुक प्रत मात्रा तेरै। ग्यारै, तेरै, ग्यारै कड़खारी तुक प्रत मात्रा सैंतीस होय। दूहा कड़खारौ लच्छण यण ग्रंथमें प्रसिध छै सौ देख लीज्यौ।

अथ गीत मनमोह उदाहरण

गीत

तारै दासां त्रिकमाह, भय वारै जम भूप।
हूं बळिहारी स्रीहरी, रै थांने निज रूप॥

रूप थारौ हरि हरि भूप त्रयलोकरा।
मांझ अनूप त्रैभू न मावै॥
नाग नर देव भूपाय आहुट नथो।
गणो बळदाब तळ वेद गावै॥
दास तन भजन विन तौ सबी दासरथ।
थिरू बस कौड़ बाते न थावै॥
देवपत रूप वैराट थारौ दुगम।
अणु मन सेवगां सुगम आवै॥

आवै तूं ऊतावळौ, पावै दास पुकार।
धारण गिर ज्यूं धांमियौ, बारण तारण बार॥

वार वारण तिरण करण कारण विसन।
घरण तज तरण ब्रद चीत घालै॥

---

२६७. त्रिकमाह (त्रिविक्रम)–विष्णुका एक नाम। वारै–दूर करता है। मांझ–मध्य, में। त्रैभू–तीन भवन, त्रिभुवन। देवपत–विष्णु। वैराट–महान, बड़ा। दुगम–दुर्गम। सुगम–सरलता से। ऊतावळौ–शीघ्रतासे। पावै–प्राप्त करता है। बारण–हाथी। बार–अवसर, समय। विसन–विष्णु। घरण–गृहिणी, स्त्री।

मंद लख वाह सुपरण तजे मागमें ।
चरण ऊबांहणौ धरण चाले ॥
हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोली ।
पाय तंता गरण छिद अपाळै ॥
खंड जळचार गिरधार आरत खटक ।
झटक करतार करतार झाले ॥
झाले भुजडंड झूसरी, मार झुंड यर मांण ।
भांज रांम कोडंड भव, प्रचंड खित्रीवट पांण ॥
पांण खित्रीवट अघट मित्र जग पाळियौ ।
रिख त्रिया तिरी रिखदेव रंजे ॥
जांनकी व्याह ऊछाह पण धनुख जिग ।
सुज नूपत अनग आरंभ संजे ॥
लसै बळ भूप अन जनक मन दुमन लख ।
भुजां बळ दासरथ चाप भंजे ॥
बांण दसमाथ भ्रगुनाथ दे आद बोह ।
गाव रघुनाथ खळ साथ गंजे ॥
गंजे रिम केतां गरब, धार सरब व्रद धेठ ।
दे कौड़ां दुजबर दरब, जीत परब जग-जेठ ॥

---

२६७. वाह–गति, चाल, वाहन । सुपरण–गरुड़ । मागमें–मार्गमें । ऊबांहणै–बिना वाहन या बिना पैरोंमें जूती पहने हुए । धरण–भूमि । हरण–मिटाने को । नक्रण–मगर, घड़ियाल । सुदरसण–सुदर्शन चक्र । हरोली–अग्र, अगाड़ी । झटक–शीघ्र । भांज–तोड़ कर । कोडंड–धनुष । भव–महादेव । खित्रीवट–क्षत्रियत्व । पांण–बाहु, भुजा, हाथ । अघट–अपार । मित्र–विश्वामित्र । जग–यज्ञ । पाळियौ–रक्षा की । रिख–ऋषि । त्रिया–स्त्री । रंजे–प्रसन्न हुए । व्याह–विवाह । पण–भी, परन्तु । धनख–धनुष । जिग–यज्ञ । लसै–शोभा देते हैं । अन–अन्य । दुमन–खिन्न, उदासीन । लख–देख कर । दासरथ–श्रीरामचंद्र भगवान । चाप–धनुष । बांण–बाणासुर राक्षस । दसमाथ–रावण । भ्रगुनाथ–परशुराम । आद–आदि । बोह–बहुत । खळ–असुर । साथ–समूह । गंजे–नाश किया, मिटाया । रिम–शत्रु । केतां–कितनोंका । गरब–गर्व । व्रद–विरुद । धेठ–जबरदस्त । कौड़ां–करोड़ों । दुजबर–ब्राह्मण । दरब–धन, द्रव्य । परब–उत्सव, यज्ञ । जग-जेठ–ईश्वर, श्रीरामचंद्र भगवान ।

जेठरा भांण सम असह बरफांण जम ।
मांण दुजरांण असहांण मारे ॥
किता जुध जीत अग जीत नहचळ कदम ।
सेवगां प्रीत कर काज सारे ॥
रोपियां दास यर जास कीधा सरद ।
धींग रविवंस भुज बिरद धारे ॥
रटै कवि 'किसन' महराज तन लाज रख ।
तेण रघुराज के संत तारे ॥ २६७

दूजा दूहारौ अरथ

वांणी धारी आरतरी जिण खटक क्रोध पर जळचर ग्राहनै खंडचौ नै करतार कर झाले हाथ पकड़नै कर हाथीनै तारचौ झटक सताबीसूं—इति अरथ ।

अथ गीत ललितमुकट लछण

दूहौ

प्रथम दूहौ कर तास पर, दाख त्रिभंगी छंद ।
ललित मुकट जिम सीहलख, कह जस रांम कव्यंद ॥ २६८

अरथ

पै'ली दूहौ कहीजै । जठाउपरांत दूहा पर त्रिभंगी छंदरी तुक च्यार कहीजै । यण तरै च्यार ही दूहा होय । सिंघावलोकण तरै तुक होय जिण गीतरौ नांम ललितमुकट कहीजै । दूहारौ नै त्रिभंगी छंदरौ लछण यण ग्रंथमें प्रसिद्ध छै जिणसूं अठै दूहारौ नै त्रिभंगीरौ लछण न कह्यौ छै ।

---

२६७. जेठरा—जेष्ठ मासका । भांण—सूर्य । सम—बराबर, समान । असह—शत्रु । बरफांण—बर्फ, हिम । जम—एकत्रित । मांण—गर्व । दुजरांण—परशुराम । असहांण—शत्रु, शत्रु राजा । अगजीत—विजयी । नहचळ—निश्चल, अटल । कदम—चरण । सेवगां—भक्तों । प्रीत—प्रीति, प्रेम । काज—कार्य । सारे—सफल किये । यर—शत्रु । कीधा—किये । सरद—पराजित । धींग—जबरदस्त, समर्थ । तेण—उस । के—कई । तारे—उद्धार किये । वांणी—पुकार । आरतरी—दुखीकी । खटक—क्रोध । खंडचौ—मारा । सताबी—शीघ्र ।

२६८. तास—उस । दाख—कह । सीहलख—सिंहावलोकन । कव्यंद (कवीन्द्र)—महाकवि । जठाउपरांत—तत्पश्चात । यण—इस । तरै—तरह, प्रकार ।

अथ गीत ललित मुकट उदाहरण

गीत

वडा भाग ज्यांरी विसू, लछबर चरणां लाग ।
पाव रांम गुण प्रीतसूं, आठ पहर अनुराग ॥
राघव अनुरागी भव बडभागी मति सुभ लागी पंथमही ।
हरि संत कहांही जम भय नांही स्यंध तिरांही सुभ वसही ॥
कहि सिव सनकादं धू प्रहळांद अहपत आद जेण जपै ।
सुक नारद व्यासं जल कहि जासं थिर कर तासं दास थपै ॥
थपे दास कर सथर, रघुबर किता अरोड़ ।
बिरद पीत 'सागर' बिये, मीततणैंकुळ मौड़ ॥
मौड़ कुळमीता जुध अरि जीता, लख जस लीता अवन अखै ।
अत दास उधारे सरण-सधारे रांमण मारे सुमन सखै ॥
सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा भूपत निवाजा भ्रात भणै ।
भुरजास भभीखण क्रत दत कंचण साख पुरांणण वेद सुणै ॥
सुणे छकोटा तन सुजस, रिम दोटा सुर रंज ।
धन राघव मोटा धणी, भव जन तोटा भंज ॥

---

२६६. ज्यांरी—जिनकी । विसू—भूमि । लछबर—लक्ष्मीपति । गुण—यश । अनुराग—प्रेम । अनुरागी—प्रेमी । भव—संसार, जन्म । बडभागी—बड़ा भाग्यशाली । मति—बुद्धि । जम—यमराज । स्यंध (सिंधु)—समुद्र । धू—भक्त ध्रुव । अहपत—शेषनाग । आद—आदि । जेण—जिसको । जासं—जिसका । थिर—स्थिर, दृढ़ । तासं—उसको । दास—भक्त । थपै—स्थापित करता है । थपे—स्थापित किये । सथर (स्थिर)—अटल । किता—कितने । अरोड़—जबरदस्त । सागर—सूर्यवंशी एक राजाका नाम । बिये—वंशज, दूसरा । मीततणैंकुळ—सूर्यके वंशका । मौड़—श्रेष्ठ । कुळमीता—सूर्यवंश । अवन—पृथ्वी, संसार । अखै—कहता है । अत—बहुत । सरण-सधारे—शरणमें आए हुएकी रक्षा की । सुमन—देवता । सखै—साक्षी देते हैं । क्रत—किया । दत—दान । कंचण—सुवर्ण, सोना । छकोटा—समूह, पुंज । रिम—शत्रु । दोटा—नाश । सुर—देवता । रंज—प्रसन्न कर । भव—संसार, जन्म । तोटा—कमी, अभाव, हानि । भंज—नाश ।

तूं भंजण तोटा अनम अंगोटा जुध यर जोटा जै वाणं।
रिख गोतम नारी उपळ उधारी देह सुधारी देवांणं॥
पय मिथुला पथ्थं साभ्भ समथ्थं हण धनु हथ्थं पह पांणे।
सिय परण सिधाये दुजपत आये गरब गमाये जग जांणे॥
जग जांणै बळ जगतपत, कुळ हांणे दसकंध।
सुख गिरबांण समपिया, आंणे सिया उकंध॥
आंणे सिय उकंध जीपण जंगं रूप अभंगं दासरथी।
आकाय अनंतं तारण संतं क्रीत सुमंतं वेद कथी॥
न भजै रघुनंदं दयासमंदं जे मतमंदं जांण जडा।
गुण राघव गाणै 'किसन' कहांणै विच प्रथमांणे भाग वडा॥२६९

अथ गीत मुकताग्रह लछण

दूहौ

कह प्रहास सांणोर किव, अंत विखम सम आद।
तुक सिंघाविलोकण तिम, मुकताग्रह मुरजाद॥ २७०

अरथ

प्रहास सांणोर कहौ तथा गरभित सांणोर कहौ जिण प्रहास सांणोररी

---

२६९. भंजण–नाश करने वाला। अनम–नहीं नमने या मुड़नेका भाव। अंगोटा–अंगुष्ठ। यर–शत्रु। जोटा–समूह। उपळ–पत्थर। उधारी–उद्धार किया। देवांणं–देवता। पय–चरण। पथ्थं–मार्ग। समथ्थं–समर्थ। हण–नाश कर। धनु–धनुष। हथ्थं–हाथ। पह–प्रभु। पांणे–शक्तिसे, वलसे। परण–विवाह कर। सिधाये–प्रस्थान किया। दुजपत–परशुराम। गरब–गर्व। गमाये–नाश किया। जग–संसार। बळ–शक्ति। जगतपत–ईश्वर, श्रीरामचंद्र भगवान। हांणे–नाश किया। दसकंध–रावण। गिरबांण–देवताओंको। समपिया–दिया। उकंध–उद्धरस्कंध। जीपण–जीतनेको। जंगं–युद्ध। दासरथी–श्रीरामचन्द्र भगवान। आकाय–शक्ति, वल। अनंतं–अपार, ईश्वर, श्रीरामचंद्र। क्रीत–कीर्ति। रघुनंदं–श्रीरामचंद्र। दयासमंदं–दयासागर। जे–वे, जो। मतमंदं–मतिमंद, मूर्ख। विच–बीच। प्रथमांणे–पृथ्वीमें, संसारमें।

२७०. किव–कवि। मुरजाद–मर्यादा।

विखम तुक कहनां पै'ली तीजी नै सम तुक कहतां दूजी चौथो पै'लो तुकरौ अंत नै सम तुकरौ आद होय जठे स्यंघाविलोकण तरै होय, जिणनै मुकताग्रह गीत कहीजै ।

अथ गीत मुकताग्रह उदाहरण

गीत

सुतण दासरथ रूप लसवांन कौटक समर ।
समर जसवांन नृप सियासांमी ॥
तवंतां नांम नसवांन अघ भवतणा ।
भवतणा हिया वसवांन भांमी ॥
चीत ऊदार दत कनक आपण चुरस ।
चुरस निज जनक कुळ आब चाड़ा ॥
धड़च दससीस खळ रहण हिकधारणा ।
धारणा धनख सर भुजा धाड़ा ॥
लोभियां कीत कज गंज समपण लछी ।
लछीवर सराहे त्रिहूं लोका ॥
खेध अह पूंज विमुहा खड़ै झाट खग ।
झाट खग थाट यर भंज झोका ॥

---

२७०. जठे–जहां । स्यंघाविलोकण–सिंहावलोकन । तरै–तरह ।

२७१. सुतण–पुत्र । लसवांन–शोभायमान । कौटक–करोड़ों । समर–कामदेव । समर–युद्ध । जसवांन–यशपूर्ण, यशस्वी । सियासांमी–श्रीरामचंद्र । तवंतां–कहने पर । नसवांन–नाश । अघ–पाप । भवतणा–जन्मके, संसारके । भवतणा–महादेवके । हिया–हृदय । वसवांन–निवास करने वाला । भांमी–न्योछावर, बलैया । चीत ऊदार–चित्त उदार, दातार । दत–दान । कनक–सुवर्ण, सोना । आपण–देनेको, देने वाला । चुरस–चाहसे, इच्छासे, हर्ष, प्रसन्नता । चुरस–श्रेष्ठ । जनक–पिता । आब–कांति, दीप्ति । चाड़ा–चढ़ाने वाला । धड़च–संहार कर, मार कर । दससीस–रावण । हिकधारणा–एक ही तरह । धारणा–धारण करने वाला । धनख–धनुष । सर–तीर, बाण । धाड़ा–धन्य-धन्य । लोभियां–लोभ करने वाले । कज–लिये । गंज–पुंज, समूह । समपण–देने को । लछी–लक्ष्मी । लछीवर–लक्ष्मीपति, विष्णु । सराहे–प्रशंसा करते हैं । खेध–द्वेष । अह–नाग, हाथी । पूंज–समूह । विमुहा–विमुख । झाट–प्रहार । खग–तलवार । थाट–समूह, दल । यर–शत्रु । झोका–धन्य-धन्य ।

संत जण तरण चख क्रपा रुख साहरै ।
साह रे विरद भुजडंड सिघाळा ॥
वीस भुज भांजणा समर हथवाह रे ।
वाह रे रांम अवधेस वाळा ॥ २७१

अथ गीत पंखाळौ लछण

दूहौ

छोटा वडा सांणोर रौ, नेम नहीं नहचेण ।
निमंधे त्रिण दूहा निपट, तवै पंखाळौ तेण ॥ २७२

अथ गीत पंखाळौ उदाहरण

गीत

दसरथ नूप नंदण हर दुख दाळद, मिटण फंद जांमण-मरण ।
कर आणंद वंद नित 'किसना', चंद रांम वाळा चरण ॥
दीनानाथ अभै पद दानंख, भांनख अंतक समर भर ।
मांनख जनम सफळ कर मांगण, धांनखधर पद सीसधर ॥
सुरसर सुजळ नूमळ संजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दंद ।
साझ कमळ पद रांम असोगी, मन अलियळ भोगी मकरंद ॥२७३

अथ दुतीय वरण उपछंद गीत सालूर लछण

दूहा

धुर बे गुरु चौवीस लघु, अंत सगण तुक अेक ।
सावझड़ौ यम च्यार तुक, विध सालूर विवेक ॥ २७४

---

२७१. जण–भक्त । चख–नेत्र । साह–आपके । साह–धारण करता है । सिघाळा–वीर । बीस-भुज–रावण । भांजणा–संहार करने वाला । समर–युद्ध । हथवाह–प्रहार । वाह रे–धन्य है ।

२७२. नेम–नियम । नहचेण–निश्चय । निमंधे–रचे, बनाये । त्रिण–तीन । तवै–कहते हैं ।

२७३. नंदण–पुत्र । हर–मिटा । दाळद–कंगाली । फंद–बंधन, जाल । जांमण–जन्म । मरण–मृत्यु । मांनख–मनुष्य । मांगण–याचक । धांनखधर–धनुषधारी । सुरसर–गंगा नदी । नूमळ–निर्मल । अघ–पाप । ओघी–समूह । अलियळ–भौंरा । भोगी–भोग करने वाला, रसास्वादन करने वाला । मकरंद–फूलोंका रस ।

२७४. यम–ऐसे । विध–प्रकार, तरह ।

यक तुक गुणतीसह अखिर, जांण वरण उपछंद ।
वरण व्रतरा अंत विच, कहियौ अगर कविंद ॥ २७५

अरथ

सालूर गीत वरण उपछंद छै । तुक अेक प्रत गुणतीस अखिर होवै । पै'ली दोय गुरु होवै । पछै चौबीस लघु होवै । पछै अेक सगण होवै । यौ ई गीतकौ संचौ छै । ऽऽ ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।।। ।।ऽ अेक करण, छ दुजबर, अेक सगण, यौ अेक तुक प्रमांण, यूं पनरै तुकां होवै । अेक दूहा प्रत तुक च्यारका मोहरा मिळै, सावभ्कड़ा छै । यौ गीत वरण व्रतमें वरण छंदांमें सालूर छंद कह्यौ छै सौ देख लीज्यौ ।

अथ गीत सालूर उदाहरण

गीत

माया मत भिद सम हण भव दुसतर ।
तरण मनव सुण सर समभ्कौ ॥
सीतापत समर सुज अहनिस ।
सुतन लहण फळ सुमन सभ्कौ ॥
लाखां छळ कपट भ्कपट अणघट ।
लख ललच मुचत लत करण लजौ ॥
भूपाळ धनखधर म धर अडर जग ।
अवर करत तज सु हर भजौ ॥ २७६

ई प्रकार दुतीय सालूररा च्यार ही दूहा जांणणा

अथ गीत भाख मात्रा छंद लच्छण

दूहौ

ले धुरहूं तुक सोळ लग, चवदह मत्त सवाय ।
सावभ्कड़ौ तुक अंत लघु, भाख गीत यण भाय ॥ २७७

---

२७५. यक–एक । अगर–अगाड़ी, पहिले । कविंद–कवि । यौ–यह । ई–इस । संचौ–छंद रचनाका नियम । करण–दो गुरु मात्राका नाम । दुजबर–चार लघु मात्राका नाम ।
२७६. अहनिस–रातदिन । सुमन–देवता, श्रेष्ठ मन । अणघट–अपार ।
२७७. लग–तक, पर्यन्त । मत्त–मात्रा । यण–इस । भाय–तरह, प्रकार ।

अरथ

पै'ली तुकसूं लगायनै सोळै ही तुकां तांई तुक अेक प्रत मात्रा चवदै होय। अंत लघु होय। च्यार तुकांरा मोहरा मिळै, सावझड़ौ, जिण गीतरौ नांम भाख कहीजै। इति भाख नांम गीत निरूपण। भाख गीतरी दोय तुकांरा मोहरा मिळै सौ अरधभाख कहीजै—यणनै गजल पिण कहै छै।

अथ गीत भाख उदाहरण

गीत

सुंदर सोभत घणस्यांम, तड़िता पट-पीत छिब तांम।
वांमे अंग सीता वांम, रूप अनंग कौटिग रांम॥
निज कटि सुघट तट तूनीर, सर धनु सुकर धार सधीर।
भंजण कौड़ संतां भीर, रे मन गाव स्री रघुबीर॥
विध त्रिपुरार रिख पाय बंद, सरणसधार करणसमंद।
कह गुण गाथ 'किसन' किवंद, नाथ अनाथ दसरथनंद॥
कवसळ सुता राजकुमार, अबखी बखत सुजन अधार।
सुसबद कियौ तिण मत विसार, जीता जिके नर जमवार॥२७८

अथ गीत अरधभाख लछण

दूहौ

भाख गीत तुक कवि भणौ, मोहरा दोय मिळंत।
अरध भाख जिणनूं अखै, कोइक गजल कहंत॥२७९

२७७. तांई—तक, पर्यन्त। तुक प्रत—प्रत्येक। मोहरा—तुकबंदी। निरूपण—निर्णय। पिण—भी।

२७८. तड़िता—बिजली। पट-पीत—पीताम्बर। छिब—शोभा, कांति। वांमे—बायां। वाम—स्त्री। अनंग—कामदेव। कौटिग—करोड़। कटि—कमर। सुघट—सुंदर। तूनीर—तर्कश। सर—बाण, तीर। धनु—धनुष। सुकर—श्रेष्ठ हाथ। भंजण—मिटाने वाला। भीर—संकट, कष्ट। विध (विधि)—ब्रह्मा। त्रिपुरार—त्रिपुरारि, शिव। रिख—ऋषि। पाय—चरण। बंद—वंदन करते हैं। सरणसधार—शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला। करणसमंद—करुणासागर। गाथ—कथा, वर्णन। किवंद—कवींद्र, कवि। अबखी—कष्टप्रद, भयावह, संकटका। बखत—समय। सुजन (स्वजन)—भक्त। अधार—सहारा, आश्रय। सुसबद—यश। तिण—उस, जिस। मत—बुद्धि। जमवार—जीवन, जिंदगी, यमराजका प्रहार या वार।

अथ गीत अरधभाख उदाहरण

गीत

पर हर अवर धंध अपार, भज नित जांनुकी भरतार ।
करमत कलपना मन कोय, हरि बिण बिये मुकत न होय ॥२८०

अरथ

लखपतपिंगळ मध्ये छंद उधोर जींरी च्यार तुकांरी अेक दूहौ सोही गीत भाख । इति अरथ ।

अथ गीत जाळीबंध वेलियौ सांणोर लछण

दूहा

आद अठारै पनर फिर, सोळ पनर क्रम जेण ।
अंत लघु सांणोर कहि, तवै वेलियौ तेण ॥ २८१
नव कोठां मझ अेक तुक, लखजै चित्त लगाय ।
उरध अधबिचलौ आखर, दौवड़ वंच दिखाय ॥ २८२
लखियां दीसै नव अखिर, ऊचरियां अगीयार ।
जाळीबंध जिण गीतरौ, नांम सुकव निरधार ॥ २८३

अरथ

जाळीबंध गीत वेलियौ सांणोर होवै । जिणरै पै'ली तुक मात्रा अठारै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळै । चौथी तुक कहौ अथवा पाछली तुक मात्रा पनरै होवै । पाछला तीन ही दूहां पै'ली तुक मात्रा सोळै । दूजी तुक मात्रा पनरै । तीजी तुक मात्रा सोळै अर चौथी तुक मात्रा पनरै होवै । ईं क्रमसूं होवै । अंत लघु होवै सौ वेलियौ सांणोर जींकौ जाळीबंध वणै । जाळीबंधरै

२८०. अवर(अपर)–अन्य । धंध–धंधा, कार्य । कलपना–विचार । बिये–दूसरेसे । मुकत–मुक्ति, मोक्ष ।

२८१. अठारै–अठारह । पनर–पनरह । सोळ–सोलह । जेण–जिस । तवै–कहते हैं । तेण–उसको ।

२८२. कोठां–कोष्ठकों । मझ–मध्य । उरध–ऊपर । अधबिचलौ–मध्यका, बीचका । दौवड़–दोनों ओर । वंच–पढ़नेकी क्रिया ।

२८३. ऊचरियां–उच्चारण करने पर । अगीयार–ग्यारह । निरधार–निश्चय । ईं क्रमसूं–इस क्रमसे ।

तुक एक प्रत कोठा नव होवै । लिखतां आखर कोठामें न दीसै । सूधी ओळां आखर लेखैतौ अग्यारै होवै । नव कोठांरै मांहै ऊपरलौ नै हेठलौ विचाळा दोय कोठांरा दोई आखर दोय वेळां वंचै सौ गीत जाळीबंध सांणोर चित्रकाव्य कहीजै ।

अथ जाळीबंध गीत वेलियौ सांणोर उदाहरण

गीत

साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकांम ।
साच तकौ कज साधां सारत, राच महीप सु रांमण रांम ॥
दासरथी सुखदाई सुंदर, नमै पगां सुर नर आनूप ।
नरकां मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप ॥
पती-सीत भूतप परकासी, वासी सिव उर वास विसेस ।
आपी तसां लंक आसत अत, नरा सत्र हण नमौ नरेस ॥
कळ नावै नेड़ौ कह 'किसन, आव थरु सुख आसत आथ ।
दख नांके जैरै दन अदना, नाथ थयां समना रघुनाथ ॥२८४

---

२८३. सूधी—सीधी । ओळां—पंक्तियों । लेखै—नियमसे, हिसावसे । अग्यारै—ग्यारह । ऊपरलौ—उपर्युक्त, ऊपरका । हेठलौ—नीचेका । बिचला—मध्यका । वंचै—पढ़े जांय ।

२८४. साखी—साक्षी । भांण—सूर्य । नसापत—चंद्रमा । कीध—किया । तकौ—वह । कज—काम । सारत—सफल करता है । राच—लीन हो । महीप—राजा । दासरथी—श्रीरामचंद्र भगवान । सुखदाई—सुख देने वाला । सुर—देवता । नकौ—कोई नहीं । भाख—कह । पयोध—समुद्र । प्रभाकर—सूर्य, चन्द्रमा । पत-सीत (सीतापति)-श्रीरामचंद्र भगवान । वासी—निवास करने वाला । सिव (शिव)—महादेव । आपी—दी, प्रदानकी । तसां—हाथों । लंक—लंका । आसत—शक्ति, बल । अत—अति । सत्र—शत्रु । हण—नाश करने वाला । कळ—पाप, कलयुग । नेड़ौ—निकट । आथ—धन-दौलत । दख—दुख । जैरै—नाश करे । दन—दिन । अदना—बुरा, खराब । थयां—होने पर । समना—अनुकूल, प्रसन्न ।

दवाळा १	न	सा	प	ध	की	त	ज	सा	धां	सु	रा	म
	ण	खी	त	जु	ध	स	क	च	सा	प	च	ण
	भां	रैः	सा	हा	मः	कां	कौ	तः	र	ही	मः	रां
दवाळा २	ख	दा	ई	र	न	र	ज	न	ता	प्र	भा	क
	सु	स	सूं	सु	मैं	आ	ट	र	रे	ध	ख	र
	थीं	रः	द	गां	पः	नू	मि	कांः	नै	यां	पः	भू
दवाळा ३	त	प	प	र	वा	स	क	आ	स	ण	न	मो
	भू	ती	र	ऊ	सी	वि	लं	पी	त	ह	रा	न
	त	सीः	का	व	सः	से	सां	तः	अ	त्र	सः	रे
दवाळा ४	ड़ौ	क	ह	ख	आ	स	रै	द	न	म	ना	र
	नै	ळ	कि	सु	व	त	जै	ख	अ	स	थ	घु
	वै	नाः	स	रु	थः	आ	कौ	नांः	द	यां	थः	ना

अथ गीत गहांणी वेलियौ सांणोर लछण

दूहा

गाहा लछण ग्रंथरै, वदियौ आद विचार ।
सुज बेलियौ सांणोररौ, लिखियौ लछण लार ॥ २८५

पहली गाहौ पर वजै, गीत दूहौ यक पच्छ ।
फिर गाहौ दूहौ सुफिर, गीततणौ दख दच्छ ॥ २८६

च्यारूं गाथा गीतरा, च्यार दूहां धुर तथ्थ ।
गाहा सामिळ गीत जिण, नांम गहांणी कथ्थ ॥ २८७

---

२८५. लछण–लक्षण । वदियौ–कहा । आद–आदि, शुरूआतमें । सुज–और । लार–पीछे ।

२८६. यक–एक । पच्छ–पश्चात । गीततणौ–गीतका । दख–कह ।

नोट— :–प्राचीन राजस्थानीमें पूर्ण विराम का चिन्ह ।

अरथ

वेलिया सांणोर गीतरा दूहा दूहा प्रत आद गाथौ होय। च्यार ही गीतरा दूहांरै आद च्यार गाथा होय। क्यूंक गाथारी चौथी तुकरा अखिरांरौ आभास गीतरी पै'ली तुकमें होय। गाथौ नै गीत सांमिळ छै जिणसूं गीतरौ नांम गहांणी छै। मात्रा दंडक छंद छै। गहांणी तथा गाथारौ लछण पै'ली ग्रंथमें कह्यौ छै नै वेलिया सांणोर गीतरौ पण लछण कह्यौ छै जिणसूं अठै लछण न कह्यौ छै।

अथ गीत गहांणो उदाहरण

गीत

नर नह ले हरि नांम, जड़िया जंजीर कौड़ अघ जीहा।
नर ले राघव नांम, ज्यां सिर रांम अनुग्रह जांणै॥
सिर ज्यांरै जांण अनुग्रह स्रीवर, चरणकमळ चींतवण सचेत।
पातक दहणतणौ गह पैंडौ, हरिहर कहणतणौ मन हेत॥
सह पढियौ गुण सार न, नह पढियौ हेक नांम रघुनायक।
पढ पसु नांम प्रकार, पेखौ जे मांनवी पायौ॥
पढ खट भाख संसक्रत पिंगळ, सुकवी वगौ समझ गुण सांम।
प्रांणी रांम नांम विण पढियां, निज पढ पसु धरायौ नांम॥
सुरसरी राघव सुजस, मंजण जिण कीध सुध चित मांनव।
तीरथ अड़सठ तेण, बोलै स्रुत लाभ ग्रह बासत॥
बोलै बेद लाभ ग्रह बासत, तीरथ अड़सठ सुफळ तयार।
निज मन हुलस सांपड़ै जे नर, जस रघुबर सुरसरी मझार॥
वदन सुरस ना वांणी, सिर लोयण उदर हाथ पग सहता।
जस तिलक लख पै जळ, जुइ फिर रांम पवितर जेण॥

---

२८८. जड़िया—जटित किये। अघ—पाप। जीहा—जीभ। अनुग्रह—कृपा, दया। स्रीवर—(श्रीवर) विष्णु, श्रीरामचंद्र। पातक—पाप। दहणतणौ—जलाने वालेका। गह—पकड़। पैंडौ—मार्ग, पीछा। कहणतणौ—कहनेका। पेखौ—देखो, देखिए। सुरसरी—गंगा नदी। मंजण—स्नान। हुलस—प्रसन्न होकर, हर्षपूर्वक। सांपड़ै—स्नान करते हैं। जे—जो, अगर, यदि। मझार—मध्य। लोयण—नेत्र। सहता—सहित। पै—चरण। पवितर—पवित्र। जेण—जिस।

दीध प्रदछ्णा हाथ जोड़ न हरि, चरणाम्रत दरस निहार ।
करै तिलक राघव जस किता, जीता 'क्रिसन' जिके जमवार ॥२८८

अथ गीत घणकंठ सुपंखरौ लछण

दूहा

पहल अठारह बी चव्वद, सोळ चव्वद लघु अंत ।
आद अंत गिणती अखर, गुण सुपंखरौ गिणंत ॥ २८९
कंठ सुपंखरा बीच कह, आठ प्रथम बी सात ।
आठ सात क्रम यण अधिक, नावै कंठ निघात ॥ २९०
आद कंठ चव अक्खिरां, अंत दोय ठहराव ।
यौ सुबंध घट अक्खियां, बिगड़ै कंठ वणाव ॥ २९१

अरथ

सुपंखरौ गीत वरण छंद छै जिकै तुक प्रत आखिर गिणती । पै'ली तुक वरण अठारै । दूजी तुक वरण चवदै । तीजी तुक वरण सोळै । चौथी तुक वरण चवदै होवै । पाछला दूहांरा वरण सोळै चवदै सोळै चवदै ईं क्रमसूं होवै, जींसूं सुपंखरा गीतमें कंठकी हद कहै छै । पै'ली तुकमें कंठ आठ होय । दूजी तुकमें कंठ सात होय । तीजी तुकमें कंठ आठ होय । चौथी तुकमें कंठ सात होय । अठा आगै कंठ न होय । च्यार ही आखरांरौ कंठ तौ उरलौ होय । अठा सवाय आखर आयां कंठ सिथळ होय । दोय अखिरसूं कंठ घटतौ न होय । दोय अखिरसूं कंठकी हद छै सो दरसाई छै । पछै पाछला दूहां में कंठ घाट-बाध छै । घणा कंठांमें कारण कारज सारथक आवै नहीं । थोड़ा कंठांमें कारण कारज सारथक आवै । घणा कंठांसूं तुक आछी वणै नहीं । समभाव कंठसूं तुक रूप पावै ।

---

२८८. दीध–दी । प्रदछ्ण–प्रदक्षिणा । दरस–दर्शन । निहार–देख कर । किता–कितने । जमवार–जीवन, यमराज का प्रहार ।

२८९ बी–दूसरी । चवद–चौदह । सोळ–सोलह । गुण–काव्य, कविता, गीत । गिणंत–गिनते हैं, समझते हैं ।

२९०. कंठ–अनुप्रास । निघात–अधिक ।

२९१ चव–चार । अक्खिरां–अक्षरों । घट–कम । वणाव–रचना, बनावट । पाछला–पीछेके । हद–सीमा । अठा आगै–इससे अगाड़ी । उरलौ–चौड़ा, विस्तारपूर्ण । घटतौ–कम । घाट-बाद–कम-अधिक । पावै–प्राप्त करे ।

अथ गीत घणकंठ सुपंखरौ उदाहरण

गीत

कार कार खार बार धार सुरार संघार कार ।
प्यार राख मार छार कार बार पार ।।
डार गार लार लार चार हार भार डार ।
बार नार तार सार धार बार बार ।।
सुराळ नराळ व्याळ आळ पाळ ढाळ सक्र ।
सिघाळ अकाळ काळ टाळ वेद साख ।।
आळ पाळ बंधमां विसार रे जंजाळ आळ ।
दयाळ विसाळ भाळ विरदाळ दाख ।।
भांम गांम धांम ठांम ठहांम नकूं आंम ।
तमांम निहार सांम ले अरांम तांम ।।
दांम दांम विसार निकांम झौड़ ह्वै उदांम ।
नरां जांम जांममें उचार रांम नांम ।।
पनंगेस धरेस सुरेस तेस सझै पेस ।
भूतेस विसेस चिंतवेस ध्यांन भेस ।।
जीतेस अरेस बंध सेस कीत जपौ जेस ।
'किसनेस' कवेस नरेस कौसळेस ।। २९२

---

२९२. कार–सीमा, मर्यादा । खार बार धार– समुद्र । सुरार–राक्षस । संघार–संहार । कार–करने वाला । मार छार कार–महादेव, शिव । डार–समूह । लार लार–पीछे-पीछे । बार नार–गणिका । बार नार तार–वेश्याको तारने वाला, ईश्वर । सुराळ–देवता । व्याळ–सर्प । सक्र–इन्द्र । सिघाळ–श्रेष्ठ । काळ–मौत । साख–साक्षी । जंजाळ आळ–संसारका प्रपंच । दयाळ–दया करने वाला । विरदाळ–विरुदधारी । दाख–कह । भांम–स्त्री । तमांम–सब । विसार–भूल जा । निकांम–व्यर्थ । झौड़–टंटा, कळह । जांम जांममें–याम याममें । पनंगेस–शेषनाग । धरेस–सुमेरु पर्वत, राजा । सुरेस–इन्द्र । भूतेस–महादेव, शिव । चिंतवेस–चिंतन करते हैं । जीतेस–जीतने वाला । अरेस–शत्रु । सेस–लक्ष्मण । कवेस–कवीश, महाकवि । नरेस–राजा । कौसळेस–श्रीरामचंद्र भगवान ।

अरथ

कंठ सांकड़ा छै। गीतरा पहला दूहारा जीं तावै पहला दूहारौ अरथ लिखां छां। तुक पै'ली अरथ स्रीरांमचंद्र किसाक छै। अरथ अन्वयसूं लागसी। खार वार धार कैतां—खार = समुद्र जींकै कार कार कैतां मजादाकौ करणहार, दरियावके पाज नहीं, मजादकी पाज कीधी इसौ स्रीरांमचंद्र फेर सुरार राखस ज्यांकौ सिंहारकार कैतां सिंघारकरता इसौ रांम ॥१

तुक दूजी अरथ—जीं रांमचंद्रजीसूं मार छार कार कैतां कांमदेवका बाळण-हार सिवकौ प्यार छै, हर फेर रांम नांम तथा जस महातमका सिव समुद्र छै, इसौ रांम जींनै हे प्रांणी तूं भज।

तुक तीजीरौ अरथ—हे प्रांणी, तूं मार कैतां मारियां·····स जींकौ डार समूह मांनवी छै जींका लार लार कैतां पाछै पाछै चार कैतां चालणौ, माटी का मनखांरी लार लार फिरवासूं हार कैतां हठ मती। फिरै भार डार कैतां संसारकी कांमनाकौ भार बोझ सौ डार कैतां पटक दै, अळगौ मेल।

तुक चौथीरौ अरथ—हे प्रांणी, तूं तरबौ चाहै छै तौ बार नार तार कैतां बेस्या गणकाकौ तारणहार स्री रांमचंद्र सार छै, सत्य छै, जींनै तूं हरदामें बार बार धारण कर। जीभसूं तौ रांम नांम लै, हर ध्यांन कर, सौ गणका नीच जातनै अजांणसूं सुवौ पढ़ावतां तारी इसौ स्री रांमचंद्र दयाळ छै तौ तीनै सुध मन भजतां तारै ही तारै। ईमें संदेह नहीं। यौ पै'ला दूहारौ अरथ छै। कठण जिणसूं लख्यौ छै। बाकीरा तीन ही दूहांरौ अरथ सुगम छै जींसूं नहीं लख्यौ छै। यूं कोई कवि घणकंठ गीत वणावौ सौ देख विचार लीज्यौ। म्हैंतौ म्हारी बुध माफक गैलौ बताय दीधौ छै। कोई वात सुध असुध होवै तौ वडा कवि तगसीर खिमा कीज्यौ। म्हैंतौ स्री रांम-जस कीधौ छै सौ सीतारांमजीनै सरम छै।

अथ गीत सुपंखरौ उरला कंठां तावै तथा सांकळिया कंठां तावै अरथरा कारण कारज सहेत स्री हणूंमांनजीरौ किसना क्रत।

---

२९२. कंठ—अनुप्रास। सांकड़ा—पास-पास, संकुचित। किसाक—कैसा। कीधी—की। सुरार (सुरारि)—राक्षस। राखस—राक्षस। हर—और। पाछै पाछै—पीछे पीछे। सुवौ—तोता। सुगम—सरल।

गीत

महीं राखण गाथरा आखियातरा गातरा मेर ।
दैण सत्रां दाथरा हाथरा घाव दाव ॥
साथरै माथरा भंज क्रोधवांन समाथरा ।
स्रीनाथरा जोध झोका वातरा-सुजाव ॥
धांनमाळी पछाड़ा हुकमां चाड़ा सीस धणी ।
रोखंगी ऊपाड़ा द्रोण भुजां राह दूत ॥
बैरियां ऊबेड़ जाड़ा धंखी माह बांबराड़ा ।
दुबाह अखाड़ाजीत धाड़ा रांमदूत ॥
तैंही लंक सांगा सौ जोजनां गिणै तूछरेल ।
मूछरेल अढांगा अयारां मेल मीच ॥
डरावणे रूपरा दयंतां भांगा दूछरेल ।
भांमणै रांमरा लांगा पूंछरेल भीच ॥
संतां अभैदांनकी उछाह रे अरोड़ा सदा ।
बिजै रोड़ा आंनकी जाहरे बार बार ॥

---

२९३. गाथरा–यशका । आखियातरा–अद्भुत, विचित्र, अमर । गातरा–शरीरका । मेर–सुमेरु पर्वत । दैण–देनेको । सत्रां–शत्रुओ । दाथरा–संहारका । माथरा–मस्तकका । भंज–नाश । समाथरा–समर्थके । स्रीनाथरा–विष्णुका । जोध (योद्धा)–वीर । झोका–धन्य-धन्य । वातरा-सुजाव–वायु-पुत्र, हनुमान । धांनमाळी–एक असुरका नाम । पछाड़ा–मारने वाला, गिराने वाला । चाड़ा–चढ़ाने वाला । सीस–शिर । धणी–मालिक । रोखंगी–जोश वाला, रोष वाला । ऊपाड़ा–उठाने वाला । द्रोण–द्रोणाचल पर्वत । ऊबेड़–उन्मूलन कर, उखाड़ कर । जाड़ा–जबड़ा । धंखी–जोश वाला, उमंग वाला, द्वेष वाला । बांबराड़ा–जबरदस्त । दुबाह–वीर, योद्धा । अखाड़ा-जीत–युद्ध विजयी । धाड़ा–धन्य-धन्य, शाबास । जोजनां–योजनों । तूछरेल–वीर । मूछरेल–मूछों वाला, वीर । अढ़ांगा–महान, विकट । अयारां–शत्रुओं । मीच–मृत्यु, मौत । डरावणे–भयप्रद, भयावह । दयंतां–दैत्यों । भांगा–नाश करने वाला, वीर । दूछरेल–वीर, योद्धा । भांमणै–न्यौछावर, बलैया । लांगा–हनुमान । पूंछरेल–पूंछधारी । भीच–योद्धा । उछाह–उमंग, जोश । अरोड़ा–जबरदस्त । बिजै–विजय । रोड़ा–बजाने वाला, बजवाने वाला । आंनकी–नगाड़ा । जाहरे-प्रसिद्ध ।

मोड़ा जातधानंकी ग्रीवरा हरणू उमाहरे ।
जांनकी पावराखोड़ा वाहरे जोधार ॥ २६३

अथ गीत दूजौ स्री हरणूंमांनजीरौ
गीत जयवंत सावझड़ौ

ओपत तन तेल सिंदूरां आंगा, आच गदाधर रूप अढंगा ।
भारथ थोक सबळ खळ भांगा, लागै झौका महाबळ लांगा ॥
खळ दसखंध उपाड़रण खूंटा, कीरत भुज जाहर चिहूं कूंटा ।
लखरण काज आंणण गिर लूंठा, टेक निवाह वाह किप-टूंटा ॥
दायक खबर रांम सिय दौड़ा, तोयक काळ नेस सिर तोड़ा ।
राड़ फतै पायक आरोड़ा खायक असुर धाड़ भड़ खोड़ा ॥
जै नांमी गढ़ लंक जयंता, सिव एका दसमा निज संता ।
कीधौ अमर जांनुकी कंता, हुकमी दास जांण हरणमंता ॥२६४

दूहौ

किया निरूपरण 'किसन' कित्र, गुरण हर विध विध गीत ।
जड़ता दाघव कविजनां, जस राघव जग जीत ॥२६५

---

२६३. मोड़ा—मोड़ने वाला. पीछे हटाने वाला । जातधांनकी (यातुधान)—राक्षस । हणू—हनुमान । जांनकी—सीता । पावराखोड़ा—लंगड़ा । वाहरे—धन्य-धन्य । जोधार—योद्धा, वीर ।

२६४. आंगा—पहनावा । आच—हाथ । गदा—एक प्रकारका शस्त्र विशेष । अढंगा—अद्भुत । भारथ—युद्ध । थोक—समूह । भांगा—तोड़ने वाला, नाश करने वाला । झौका—धन्यवाद । लांगा—हनुमान । खळ—राक्षस । दसकंध—रावरण । उपाड़ण—उखड़ने वाला । खूंटा—जड़ । चिहूं कूंटा—चारों दिशाओं । आंणण—लाने वाला । गिर—द्रोणाचल पर्वत । लूंठा—जबरदस्त । टेक—प्रण, मान । निवाह—निभाने वाला । वाह—शाबास । किप-टूंटा—हनुमान । दायक—देने वाला । दौड़ा—दौड़ने वाला, सेवक । तोयक—दुष्ट । नेस—घर । सिर तोड़ा—शिरको तोड़ने वाला । राड़—युद्ध । पायक—प्राप्त करने वाला । आरोड़ा—जबरदस्त । खायक—नाश करने वाला, ध्वंश करने वाला । धाड़—शाबास, धन्य । भड़—योद्धा । खोड़ा—हनुमान । जयंता—जीतने वाला । कीधौ—किया । जांनुकी—सीता । कंता—पति । हुकमी—हुक्म मानने वाला । हणमंता—हनुमान ।

२६५. निरूपण—वर्णन । गुण—यश । हर—हरि, विष्णु, श्रीरामचंद्र । विध विध—तरह-तरहके । जड़ता—अज्ञान । दाघव—जलानेको ।

अथ गीत रूपग तथा दुतीय गजगत लछ्रण

गीत

च्यार दूहांके च्यार ही, धुर आंकणी दवाळ।
ग्यार मत धुर नव दुती, ग्यारह नव क्रम भाळ॥ २६६
अठाईस मत अंत गुरु, आंन दवाळा होय।
रूपग जस रघुनाथ रट, समझौ गज गत सोय॥ २६७
बीस छ मता अंत लघु, छजै भाखड़ी छंद।
आठ वीस मत अंत गुरु, गजगत अे प्रबंध॥ २६८

अरथ

आंकणीरौ दवाळौ भाखड़ीरै तौ दवाळां सारां प्रत अेक ही होय। हर गजगतरै दवाळा दवाळा प्रत आंकणीरौ दवाळौ नवीन नवीन होय। अेक तौ गजगत नै भाखड़ीरौ यौ भेद होय। दूजौ भेद भाखड़ीरै दूजा भाखड़ीरा दवाळां मात्रा छाईस अंत लघु होय। गजगतरै दूजा दवाळांरी तुक अेक प्रत मात्रा अठाईस नै अंत गुरु होय। अतरौ भेद होय। दूजां गजगत भाखड़ी अेक तरैरा रूपग छै। आंकणीरी मात्रा नव नव होय। सवाय रैकार तथा जीकार अंत होयं। तुक पै'ली तीजीरै प्रमांण पै'ली तुक मात्रा अग्यारै, दूजी तुक मात्रा नव, तीजी तुक मात्रा अग्यारै, चौथी तुक मात्रा नव, अंत गुरु होय। दूजा दवाळां प्रत तुक मात्रा अठावीस सारी तुकां होय। अंत गुरु होय। ईं प्रकार रूपग गजगत कहीजै। आगै गजगत गीत न कह्यौ छै, भूल गया जींसूं पछै कह्यौ छै। गीत गजगतरी आंकणी तौ भाखड़ीरीज होवै। भाखड़ीरै तुक अेक प्रत मात्रा छवीस होग। अंत लघु होय। गजगतरै तुक अेक प्रत मात्रा अठावीस होय, अंत गुरु होय तथा भाखड़ीरी तुकरै अंत अेक स ना य गुरु अखर धरजै सोई गीत गजगत रूपग छै।

---

२६६. धुर—प्रथम। दवाळ—गीत छंदके चार चरणोंका समूह। दुती—दूसरी।

२६७. आंन—दूसरा। सोय—वह।

२६८. यौ—यह। रे कार—रे तू शब्द कह कर पुकारनेका शब्द। लघु रूपसे पुकारने का शब्द, संबोधन शब्द। जीकार—जी, सम्मानपूर्वक पुकारनेका शब्द।

अथ गीत रूपग गजगत उदाहरण

गीत

रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूपरा, प्रगट अनूपरा रे ,
भुज रघु भूप ।
भूपरा रघु भुजदंड भास तरह चयर सगरांमरा ।
नव खंड भूम अरोड़ नांमण कौट मंड सकांमरा ।
ध्रुज धरम सर कोदंड धारण मेर ओपत मांमरा ।
आनूप भुज परचंड आहव रूप रविकुळ रांमरा ।

सुज व्रद साहणौ रे निबळ निबाहणौ चित जिस चाहणौ रे ,
गज थट गाहणौ ॥
गाहणौ गज थट अघट गाढंम प्रगट रजवट पेखजै ।
लंकाळ घट छट अलल लाटण तीख कुळवट तेखजै ।
जिण कीध वटपट निपट जळधर अद्र तार ऊभेखजै ।
सिर मुगट जग रट अघट स्रीवर विरद धार विसेखजै ।

मह जस मंडियौ रे बाळ बिहंडियो ते रण तंडियौ रे ,
खळदळ खंडियौ ॥
खळदळां कंकळ सबळ खंड वीर तंडै भुजबळी ।
सुज गळां समपै ग्रीध समळां पळां भोजन परघळी ।

---

२६८. समथ–समर्थ । भूम–भूमि । अरोड़–जबरदस्त । नांमण–नमाने वाला । सर–बाण । कोदंड–धनुष । मेर–समेरू । मांमरा–दृढ़ता का । आहव–युद्ध । साहणौ–धारण करने वाला । निबाहणौ–निभाने वाला । चाहणौ–चाहने वाला । थट–दल, समूह । गाहणौ–ध्वंश करने वाला । गाढंम–शक्ति । रजवट–क्षत्रियत्व । लंकाळ–वीर । तीख–विशेषता । जळधर–समुद्र । अद्र–पर्वत । बाळ–बालि वानर । विहंडियौ–ध्वंश किया, मारा । रण–युद्ध । तंडियौ–दहाड़ा, जोशपूर्ण शब्द किया । खंडियौ–संहार किया । कंकळ–युद्ध । खंडे–संहार किये । भुजबळी–शक्तिशाली । गळां–मांस-पिंड । समळां–मांसाहारी पक्षी विशेष । पळां–मांस । परघळी–पूर्ण, अपार ।

खळहळां खत चळवळां खापर वीसहथ भर विळकुळी ।
मह वळां चव रघुनाथ अमलां मंड सुसबद मंडळी ।
संत सधारिया रे जुध रिम जारिया भुज व्रद भारिया रे ,
अवन उचारिया ॥
ऊचरै अवनी विरद अहनिस करण सिध सुरकाजरा ।
दस माथ दुसह सिंघार दारुण सूर कुळ सिरताजरा ।
कर तेण गजगत किसन कवि कह लखां जन रख लाजरा ।
साधार संत अपार स्रीवर रांम सुसबद राजरा ॥२६६

+++++++++

२६६. चळवळां–रक्त, खून । खापर–खप्पर । वीसहथ–देवी, दुर्गा, रणचंडी । विळकुळी–मस्त हुई, प्रसन्न हुई । सुसबद–यश, कीर्ति । सधारिया–रक्षा की । रिम–शत्रु । जारिया–संहार किया । अवन–पृथ्वी, अवनी । अहनिस–रात-दिन । दसमाथ–रावण । दुसह–भयंकर, जबरदस्त । सिंघार–संहार कर । सूर कुळ–सूर्य वंश । सिरताजरा–श्रेष्ठका शिरोमणिका । राजरा–श्रीमानके, आपके ।

अथ निसांणी छंद वरणण

अथ निसांणी लछण

दूहौ

छै नीसांणी छंदरै, मत तेवीस मुकांम ।
मांझ अेक तुक त्रदस दस, वदै दोय विसरांम ॥ १

अरथ

निसांणी छंदरै अेक तुक प्रत मात्रा तेवीस आवै । इण लेखे तौ निसांणी मात्रा छंद छै नै अेक तुकरा विभाग तथा विस्रांम दोय छै । अेक पहली विस्रांम तौ मात्रा तेरैं ऊपर होवै । दूजौ विस्रांम मात्रा दस पर होवै यौ लछण छै । पै'ली मात्रा असम चरण छंद कह्या जठे छंद निस्रेणिका कह्यौ, सोई निसांणी छंद जांणणौ । जिके च्यार प्रकाररा छै सौ फेर कहां छां ।

दूहा

रे नीसांणी छंदरा, पढ़िया च्यार प्रकार ।
तिण लछण निरणै तिकौ, वरणै सुकव विचार ॥ २
अेकण दु लघु तुकंत अख, बीजी गुरु लघु अंत ।
अंत तीसरी लघु गुरु, चौथी बि गुरु तुकंत ॥ ३

अरथ

निसांणी छंद एक तुक प्रत मात्रा तेवीस होवै । जिणरा च्यार प्रकार । अेकरै तौ तुकंत दोय लघु अखर होवै । दूजीरै तुकंत आद गुरु अंत लघु होवै । तीजीरै तुकंत आद लघु अंत गुरु होवै । चौथीरै तुकंत दोय गुरु करण-गण होवै । अै च्यार प्रकाररी निसांणी छै ।

अथ प्रथम लघु तुकंत गरभितनांमा निसांणी जांगड़ी उदाहरण

निसांणी

गह भर राघव तारिया, दरियाव विच गैंवर ।
किया स्राध जटायका, निज हत्थ नरेसर ॥

---

१. मुकांम–विश्राम । मांझ–मध्य । त्रदस–तेरह । वदै–कहते हैं । विसरांम–विश्राम । यौ–यह । जठे–जहां पर ।

२. तिण–उस ।

३. अख–कह । करण-गण–दो दीर्घ मात्राका नाम ऽऽ ।

४. गह–गर्व । तारिया–उद्धार किये । दरियाव–समुद्र, सागर । विच–बीच, मध्य । गैंवर–हाथी । स्राध–श्राद्ध । जटायका–जटायुके । हत्थ–हाथ । नरेसर–नरेश्वर, राजा ।

मन रुच खाया बेर फळ, जिण सबरी पांमर ।
ते कदमूं रज आभड़े, अवरत गौतम तर ॥
तोते कीन्ह सहाय हत, यळ गणका उद्धर ।
परचौं नांम तिराइया, पांणी सिर पाथर ॥
जेण उधारे अवधपुर, जग सारे जाहर ।
नांम ब्रह्म सिव आद ले, प्रभणै अह सुर नर ॥
.... ।
वे जिन्हां जीता जमार, गाया सीताबर ॥ ४

अथ निसांणी दुमळा नांम जांगड़ी (आद गुरु अंत लघु तुकंत) उदाहरण

निसांणी

विप आनूप सरूप स्यांम, घट बरसण वार ।
कसियौ कट तट कोमळा, चपळा पट-चार ॥
भुज-आजांन विसाळ भाळ, कट संघ प्रकार ।
नयण भ्रूंह नासिका कमळ, धनु सुक निरधार ॥
परम जोंत दसरथ प्रथीप, ते ग्रह अवतार ।
जंग अडोळ अबोळ नाट, दससिर खळ जार ॥
सोवन्न लंक भभीखणह, दी सरणसधार ।
औ जगनायक रांमचंद, निरधार अधार ॥ ५

४. सबरी–भिल्लनी । पांमर–नीच । ते–तेरी । कदमूं–चरण । रज–धूलि । आभड़े–स्पर्श की । अवरत–औरत । तोते–तोता, शुक । कीन्ह–की । यळ–पृथ्वी । परचौं–चमत्कार । सिर–ऊपर । पाथर–पत्थर । जग–संसार । सारे–सब । जाहर–प्रसिद्ध । प्रभणै–वर्णन करते हैं, स्मरण करते हैं । अह–नाग । जमार–जन्म, जीवन । गाया–वर्णन किया । सीतावर–श्रीरामचंद्र ।

५. विप–शरीर । आनूप–अनुपम । कट–कटि, कमर । कोमळा–कोमल । चपळा–बिजली । पट-चार–वस्त्र । भुज-आजांन–आजानबाहु । भाळ–ललाट । कट–कमर, कटि । संघ–सिंह । नासिका–नाक । सुक–तोता । जोत–प्रकाश । प्रथीप–राजा । ते–उसके । ग्रह–घर । जंग–युद्ध । अडोळ–दृढ़ । नाट–निषेधात्मक शब्द । दससिर–रावण । खळ–राक्षस । जार–ध्वंश, संहार । सोवन्न–सुवर्ण, सोना । सरणसधार–शरणमें आए हुएकी रक्षा करने वाला । निरधार–जिसका कोई आश्रय या सहारा न हो ।

नोट–उपर्युक्त दुमिळा निसांणी छंदका लक्षण ग्रंथमें स्पष्ट नहीं है । इस दुमिळा निसांणी छंदके प्रत्येक चरणमें चौदह और नव पर विश्राम सहित कुल २३ मात्राएँ हैं तथा अंतमें गुरु लघु होते हैं ।

अथ दुतिया दुमिळा निसांणी छंद लछण

दूहौ

धुर चवदह नव फेर धर, अंत गुरु लघु अक्ख ।
यक तुक मिळ मोहरा उभै, सौ दुमिळा कवि सक्ख ॥ ६

अथ दुतिय दुमिळा निसांणी उदाहरण

निसांणी

अह नर सुर कह कवण ओड़, जै दत खग जोड़ ।
चक्रवत कर सुधा नीचोड़, मद वंका मौड़ ॥
वहिया मख रिख ठोड़ ठोड़, काटे भय कौड़ ।
तेगां खळ दसमाथ तोड़, रघुनाथ अरोड़ ॥ ७

अथ सुद्ध निसांणी जांगड़ी (तीजो तुकांत लघु गुरु) उदाहरण

निसांणी

तैं रघुनाथ विसारिया, त्रिहु ताप तपणा ।
छूटा गरभ ग्रभवासमैं, बह बार छपांणा ॥
धर धर तन असीचियार, लख जोणां धपणा ।
खिण खिण आव संसारह, बुदबुद ज्यूं खपणा ॥
कर कर पर उपकार पुन, तन प्राचत कपणा ।
संसारी दा भगळखेल, जांणै जिम सपणा ॥

---

६. धुर–प्रथम । अक्ख–कह । यक–एक । मोहरा–तुकबंदी । उभै–दो । सक्ख–कह, साक्षी दे ।

७. अह–नाग । कवण–कौन । ओड़–समान । जै–जीत । दत–दान । जोड़–समानता । चक्रवत–राजा, चक्रवर्ती राजा । सुधा–सीधा । मद–गर्व । वंका–बाँकुरा । मौड़–श्रेष्ठ । मख–यज्ञ । रिख–ऋषि । तेगां–तलवारों । खळ–राक्षस । दसमाथ–रावण । तोड़–संहार कर, काट कर । अरोड़–जबरदस्त ।

८. तैं–तूने । विसारिया–विस्मरण किया । त्रिहुं–तीन । ताप–तप, तपस्या । तपणा–तप करने वाला । गरभ–गर्व । ग्रभवासमें–गर्भवासमें । बह–बहुत । छपांणा–गुप्त रहा । असीचियार–चौरासी । जोणां–योनियों । खिण–क्षण । बुदबुद (बुद्ध बुद्ध)–पानीका बुल्ला बुल्ला, जलका फफोला । खपणा–नाश होना । संसारीदा–संसारका । भगळखेल–इन्द्रजाल, मायावी, धोखा । सपणा–स्वप्न ।

आखर-दिन अवधेस विण, नह कोई अपणा ।
जिण कज हे मन रांम रांम, जीहा नित जपणा ॥ ८

अथ सुद्ध निसांणी जांगड़ी चौथी तुकांत दौ गुरु उदाहरण

निसांणी

कदम सुभंदा मेरगिर, नहचळ मझ्झ कंका ।
सुज तर बंक पघोर कीध, के सूध-सणंका ॥
बहिया बाळ मुकाळ बुळ, हीया ब्रद बंका ।
डारण सज्झे दहकमळ, वज्जे जस डंका ॥
रिम सबळ मारण सुभाव, साधारण रंका ।
धू-धारण कारण जनां, कज सारण धंका ॥
आचां झौक रांमचंद, सुदतार असंका ।
लिन्हां-विण जिण दिन्हियां, सरणायत लंका ॥ ९

अथ निसांणी मारू लछ्रण

दूहौ

मत सोळह फिर बार मुण, दख मोहरे गुरु दोय ।
मारू नीसांणी मुणौ, सुकव महा मत सोय ॥ १०

---

८. आखर-दिन—मृत्यु-समय । कज—लिए । जीहा—जीभ ।

९. कदम—चरण । सुभंदा—शोभा देते हैं । मेरगिर—सुमेरुगिरि । नहचळ—अटल, निश्चल । मझ्झ—मध्य, में । कंका—युद्ध । कीध—किये, किया । सूध-सणंका—बिलकुल सीधा । डारण—जबरदस्त । सज्झे—संहार किया, मारा । दहकमळ—रावण । जस—यश, जिसका । रिम—शत्रु । साधारण—उद्धार करने वाला, रक्षा करने वाला । रंका—गरीब । धू-धारण—निश्चय । कज—कार्य, लिए । सारण—सफल करने को । धंका—इच्छा । आचां—हाथों । झौक—धन्य-धन्य । असंका—निर्भय, निशंक । लिन्हां-विण—विना लिए ही । जिण—जिस । दिन्हियां—दे दी । सरणायत—शरणागत ।

१०. मत—मात्रा । बार—बारह । मुण—कह । दख—कह । मत—बुद्धि । सोय—वह ।

अथ मारू निसांणी उदाहरण

निसांणी

कांम क्रोध मद लोभ मोह कर, अवस रहे अडगांणे ।
लाह नह रख न सोच अलाभे, मन संतोख समांणे ॥
सत्र मित्र पर भाव अेक सम, पत्थ रहेम प्रमांणे ।
धरमें 'किसन' कहै ते नर धन, जे मन राघव जांणे ॥ ११

अथ निसांणी वार लछण

दूहौ

मुण तुक प्रत जिण तीस मत, मगण क र तुकंत ।
वार निसांणी 'किसन' कवि, मत उपछंद मुणंत ॥ १२

अरथ

तुक अेक प्रत मात्रा तीस होय, तुकंत मगण अथवा रगण होय सौ निसांणी वार नांमा मात्रा उपछंद छै ।

अथ वार नांमा निसांणी उदाहरण

निसांणी

बंध ग्राह दरीयाव बीच, पड़ संघट फील पुकारियां ।
ईस ऊबाहण-पाय आय, धर हत्थूं सूंड उधारियां ॥
धू भजीया हरी धूधड़ै, कर नहचळ तै सुखकारियां ।
सत-ब्रत भगती सज्झीयां, ते प्रळय पयोनिध तारियां ॥

---

११. अवस—अवश्य अडगांणे—अटल, निश्चल । लाह—लाभ । संतोख—संतोष । समांणे—समा गया, समाया हुआ । सत्र—शत्रु । पत्थ—मार्ग । रहेम—ईश्वर । धर—पृथ्वी । धन—धन्य ।

१२. मुण—कह । तुक प्रत—प्रति चरण । जिण—जिस । मत—मात्रा । क—या, अथवा । र—रगण गण । मुणंत—कहता है ।

१३. दरीयाव—सागर । संघट (संकट)—दुख । फील—हाथी । पुकारिया—पुकार करने पर । ऊबाहण-पाय—नंगे पैर । धर—पकड़ कर । हत्थूं—हाथसे । उधारियां—उद्धार किया । धू—भक्त ध्रुव । धूधड़ै—निशंक, निर्भय । नहचळ—निश्चल । सत-ब्रत (सत्यव्रत)—सातवें मनुका नाम, इक्ष्वाकुवंशी हरिश्चंद्रके पिताका नाम । सज्झीयां—साधन किया । ते—वे । पयोनिध—समुद्र, सागर ।

बेख दास प्रहळाद बारह, बिप नरहर धार उबारियां।
सत्य बळ दे सोह जग सखै, हरि तन सभ्भ मंगणाहारियां॥
गोह अहल्या सवरी गीध, बळ व्याध कमंध बिचारियां।
भी सुग्रीव भभीखणांह, ब्रजराज सतोल बधारियां॥
निबळ अनाथ निधार नेक हरि, सबळां कीन्ह निहारीयां।
सीताबर संत सधारियां, सीताबर संत सधारीयां॥ १३

अथ मात्रा उपछंद निसांणी हंसगत तथा रूपमाळा लछण

दूहौ

मुण तुक प्रत बत्तीस मत, अंत भगण गण आंण।
गण निसांणी हंसगत, वरणत रांम बखांण॥ १४

अरथ

तुक अेक प्रत बतीस मात्रा होय। तुकके अंत भगण गण होय, सौ निसांणी हंसगत कहीजै तथा बेअखरी छंदरी दोय तुकांसूं अेक तुक वणै सौ हंसगत निसांणी। हंसगत निसांणीरै नै बेअखरी छंदरै अतरौ तफावत छै सौ कहां छां। बेअखरी छंदरै तौ तुकरै अंत गुरु लघुरौ नीयम नहीं छै। कठैक तुकंत गुरु, कठैक तुकंत लघु होय नै हंसगतरै तुकंत भगणहीज आवै सौ लघु तुकंतरौ नेम छै। यतरौ भेद छै। यणनै कोई रूपमाळा पिण कहै छै।

अथ हंसगत निसांणी उदाहरण

निसांणी

स्रीरघुनाथ अनाथ नाथ सुज, बेढ सत्र दसमाथ विहंडण।
जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मंडण॥

---

१३. बेख–देख कर। बिप (वपु)–शरीर। नरहर–नृसिंहावतार। उबारियां–रक्षा की। तन–शरीर। सभ्भ–धारण कर। गोह–गुहनामभक्त, निषादराज जो रामका परम भक्त था। बळ–राजा बलि। सधारीयां–रक्षा की, रक्षा करने पर।

१४. मुण–कह। तुक प्रत–प्रति चरण। मत–मात्रा। बखांण–यश। अतरौ–इतना। तफावत–भेद, फर्क। कठैक–कहीं पर। नेम–नियम। यतरौ–इतना। यणनै–इसको। पिण–भी।

१५. बेढ–युद्ध। सत्र–शत्रु। दसमाथ–रावण। विहंडण–संहार करने को। जाहर–जाहिर, प्रसिद्ध। मही–पृथ्वी। जहूर–प्रकाशन। सुजस–सुयश। महपत–राजा। नूर–कांति, दीप्ति। सूरकुळ–सूर्य वंश। मंडण–आभूषण।

झूठ अवाच अपूठ महाजुध, दूठ सरूठ अदंडांदंडण।
भुज परचंड मंड जय भासत, खंडपरस कोदंड बिखंडण॥
दसरथनंद निकंद पाप दळ, घणनांमी आणंदतणौ घण।
संतां काज सकाज सुधारण, महाराज सुरराज सिरोमण॥
दीनदयाळ पाळकर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरंजण।
जाप 'किसन' मा बाप रांम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भंजण॥ १५

अथ निसांणी झींगर लछण

दूहौ

धुर अठार फिर चवद धर, मोहरे मगण मिळंत।
झींगर निसांणी जिकाह, 'किसन' कवेस कहंत॥ १६

अथ झींगर निसांणी उदाहरण

निसांणी

जिण कीड़ी कुंजर जीव दुनीदा, रूप चराचर रच्चा है।
रक्ख हत्थूं डोर लख चौरासी, नाच नच्चाय नच्चा है॥
तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है।
बोलै स्रुत संम्रत स्यंभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है॥१७

---

१५. अवाच–नहीं कहना। अपूठ–पीठ फेरनेकी क्रिया। दूठ–जबरदस्त। सरूठ–क्रोध करने पर। अदंडांदंडण–जो किसीसे दंडित न किया जाय ऐसे समर्थको अथवा जो कुटिल हो उसको भी दंड देने वाला। खंडपरस–महादेव। कोदंड–धनुष। बिखंडण–तोड़ने वाला। निकंद–नाश करने वाला; नाश। सुरराज–इन्द्र। सिरोमण–शिरोमणि, श्रेष्ठ। पाळकर–पालन करने वाला। गौ–गाय। दुज (द्विज)–ब्राह्मण। सिया–सीता। मनरंजण–प्रसन्न करने वाला। जाप–जप कर, भजन कर। भव–संसार। त्रय–तीन। ताप–दुख। दळ–समूह। भंजण–मिटाने वाला।

१६. मोहरे–तुकबंदीमें। मिळंत–मिलता है। कवेस (कवीश)–महाकवि। कहंत–कहता है, कहते हैं।

१७. कीड़ी–चिउंटी। कुंजर–हाथी। दुनीदा–संसारका। रच्चा है–रचा है, बनाया है। हत्थूं–हाथ। चौरासी–चौरासी लाख जीव योनि। तिणदी–उसकी। स्रुत–श्रुति। संम्रत–स्मृति। स्यंभ–शंभु, शिव। अज–ब्रह्मा। वायक–वाक्य, वचन। सीतानायक–सीतापति, श्रीरामचंद्र। सच्चा है–सत्य है।

अथ निसांणी सीहटप लछण

दूहौ

तुक प्रत मत छबीस तव, तगण क जगण तुकंत ।
सौ निसांणी सीहटप, हणु आंकणी कहंत ॥ १८

अरथ

प्रत तुक मात्रा छावीस होय । तुकंतमें जगण बोहत होय। कठैक तगण गण पण तुकंतमें होय । दोय तुकांरे पछै हणु इसा सबदरी आंकणी होय सौ निसांणी सीहटप पण कहीजै ।

अथ सीहटप निसांणी उदाहरण

निसांणी

यक आद-पुरुख अनादसूं दख भ्रहम माया दोख ।
त्रय भ्रहम विसन महेस त्रे गुण हुवा जिण जग होय ॥
हणु हुवा जिण जग होय हरखित चाह बेद चियार ।
तत पंच कर खट तरक तैं दरियाव सात उदार ॥
हणु सात दध दस आठ सर जे नवे ग्रह नर नाह ।
अवतार दस कर रुद्र ग्यारह बारह मेघ दुबाह ॥
हणु बारह मेघ नीर विरचित मास तेरह मंड ।
दस च्यार विद्या रतन दाखव पनर तिथि परचंड ॥
हणु पंच दस तिथ सोळ कळ पढ सरस नार सिंगार ।
साहंस सतरह खंड गूजर थाप ग्रांम बिथार ॥
हणु थाप गांम बिथार भार अठार वन कर भेद ।
उगणीस वरसे भोम जोबन विसावीस अखेद ॥

---

१८. तुक प्रत–प्रति चरण । मत–मात्रा । छबीस–छब्बीस । तव–कह । क–या, अथवा । कठैक–कहीं पर ।

१९. यक–एक । आद-पुरुख–आदि पुरुष । दख–कह । भ्रहम–ब्रह्मा । विसन–विष्णु । महेस–महादेव । दध (उदधि) सागर, समुद्र । दाखव–कह । तिथ–तिथि, तारीख । सोळ–सोलह । बुध–पंडित । खंड–देस । विसावीस–पूर्ण, पूरा ।

हणू विसावीस अखेद विचार बुध यण कीध मंड अनेक ।
सौ आदपुरख उचार 'किसना' अचळ राघव अेक ॥

अथ अन्यविधि निसांणी सोहटप तथा सीहचली लछण

चौपई

सोळह दस मत यक पद साज, गीत प्रोढ गुरु लघू गाय ।
सीहचली तुक उलट सकाय, ... ॥ २०

अथ दुतीय सीहचली निसांणी उदाहरण

निसांणी

तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता, वसन पीत विचार ।
वासन्न पीत विचार सरवर, धनुख सायक धार ॥
धानंख सायक धर धरम धर, भुजां झल्लण भार ।
जुध जार दससिर कुंभ जेहा, सकळ कांम सुधार ॥
सह कांम दास सुधार समरथ, अेक रांम उदार ॥ २१

अथ निसांणी सिरखुली लछण

दूहौ

मध्य मेळ मत बार पर, नव मत सीस खुलाय ।
तुक प्रत मत यकवीस तव, सिर खुल्ली कह साय ॥ २२

अरथ

जिण निसांणीरै तुक अेक प्रत मात्रा यकवीस होय । तुक अेकका दोय विभाग होय । पै'ला विभागरी मात्रा बारै होय जठे मध्य मेळ निसांणीरौ तुकंत, दूजौ विभाग मात्रा नवरौ होय जठे सिरखुली कहीजै ।

---

२०. मत–मात्रा । यक–एक ।

२१. अंबुद–बादल । तड़िता–बिजली । वसन–वस्त्र । पीत–पीला । वासन्न–वस्त्र । धनुख–धनुष । सायक–बाण, तीर । झल्लण–धारण करने वाला । जार–संहार कर, मार कर, व्यभिचारी पुरुष । कुंभ–रावणका भाई कुंभकर्ण । जेहा–जैसा । सह–सब ।

२२. बार–बारह । यकवीस–इक्कीस । तव–कह ।

अथ सिरखुली निसांणी उदाहरण

निसांणी

राघव सिफत बखांणी, सच्चे सायरां ।
आफताब दुनियांणी, दीद नगाहए ॥
जिन्हां तज जुलमांणी, हक्क सराहियां ।
रुख चुगलक ब......जांनी, सिरदह सझियां ॥
परस लिया मद पांनी, दार जुनारदा ।
बभ्भीछण बगसांणी, लंक पनाहियां ॥
खळक तमांम रचांनी, छिनमें खानी खालकां ।
जपै सुकर जबांनी, कुदरत कौनदी ॥
बंदु परवर सांनी, सीतासांइयां ॥ २३

अथ घग्घर निसांणो लछण

दूहौ

लछण संजुत आठ तुक, जोड़ त्रिभंगी छंद ।
अंत जगण बत्तीस मत, घग्घर अेह प्रबंध ॥ २४

अरथ

त्रिभंगी छंदरौ लछण सोई घग्घर निसांणीरौ लछण छै । त्रिभंगी छंदरी आठ तुक सोई घग्घर निसांणी । तुक अेक प्रत मात्रा बतीस । च्यार विस्रांम । पै'लौ विस्रांम दस पर होवै । दूजौ विस्रांम मात्रा आठ पर होवै । तीजौ विस्रांम मात्रा आठ पर होवै । चौथौ विस्रांम मात्रा छै पर होवै । अंत जगण होवै । सोई त्रिभंगी छंद, सोई घग्घर निसांणी । त्रिभंगीकी तुकांत और अखिर ऊपर मिळै । घग्घर निसांणीका तुकांत अेक अखिर ऊपर मिळै सौ भेद छै ।

---

२३. **सिफत**–विशेषता, गुण । **सायरां**–कवियों । **आफताब**–सूर्य । **दुनियांणी**–संसारका । **दीद**–देखादेखी, दर्शन । **नगाहए** (निगाह)–दृष्टि, नजर, कृपा, मेहरबानी । **जिन्हां**–(जिना) परस्त्रीगमन । **जुलमांणी**–जुल्म, अत्याचार, हक्क, कर्त्तव्य । **सराहियां**–सराहना कीजिए । **बभ्भीछण**–विभीषण । **बगसांणी**–प्रदान कर दी । दे दी । **पनाहियां**–शरणमें आने वाले, पनाह लेने वाले । **खलक** (खल्क)-मानव जाति, सब मनुष्य । **खालकां**–ईश्वर । **जपै**–प्रार्थना करते हैं । **सुकर** (शुक्र)–कृतज्ञता । **परवर**–पालन करने वाला । पालक, ईश्वर । **सांनी**–जोड़का, समान, दूसरा । **सीतासांइयां**–श्रीरामचंद्र भगवान ।

२४. **लछण**–लक्षण । **संजुत**–संयुक्त । **मत**–मात्रा । **अेह**–यह । **सोई**–वही ।

अथ मात्रा उपछंद घग्घर निसांणी उदाहरण

निसांणी

पोह क्रत कविराजं हरख उछाजं सुजस समाजं दध पाजं।
रिखब्रर मुनिराजं सिवसिध राजं स्तुति दुजराजं नित साजं॥
मुख सहस समाजं जपि अहिराजं रटत सकाजं सुर राजं।
मुख जोतिस काजं कबि ग्रहराजं जांन सुभाजं खगराजं॥
कज संख गदाजं चक्र उछाजं आयुध साजं भुज भ्राजं।
मह गौ दुजमानं रिखि नर राजं सुचित दराजं दत साजं।
रघुकुळ सिरताजं जन रखि लाजं जय महाराजं रघुराजं॥२५

अथ दुतीय घग्घर निसांणी लछ्रण

दूहौ

दस अठ मत विसरांम दौ, चवद तियौ विसरांम।
अंत मगण जिणनूं घग्घर, कौ कवि कहै सकांम॥ २६

अथ दुतीय घग्घर निसांणी उदाहरण

निसांणी

हिरणायख हांणे संख सभ्भांणे हयग्रीवा खळ हंता है।
हरणाकुस हत्ते महणसु मथ्थे छितले बळि छळंता है॥
यमराज उधारे रांमण मारे ते हण कंस अमंता है।
कह बुद्ध किलंकी ईस असंकी कळ पूरण सीकंता है॥ २७

---

२५. दध–समुद्र। पाजं–पुल, सेतु। अहिराजं–शेषनाग। सुरराजं–इन्द्र। जोतिस–ज्योति, प्रकाश। ग्रहराजं–सूर्य। जांन (यान)–वाहन। खगराजं–गरुड़। कज–कमल। आयुध–शस्त्र। भ्राजं–शोभा देता है। जन–भक्त।

२६. चवद–चौदह। तियौ–तीसरा। विसरांम–विश्राम।

२७. हिरणायख–हिरण्याक्ष नामक राक्षस। हांणे–मारा। संख–एक असुरका नाम। सभ्भांणे–संहार किया। हयग्रीवा–एक राक्षसका नाम। हंता है–मारने वाला है। हरणाकुस–हिरण्यकशिपु। हत्ते–संहार किया। महणसु–समुद्र। मथ्थे–मंथन किया। छित–पृथ्वी। सीकंता–श्रीकंत, विष्णु, श्रीरामचंद्र भगवान।

अथ पैड़ी निसांणी लछण

दूहौ

ठार सोळ सोळह चवद, तुक प्रत मत चवसाठ ।
नीसांणी मगणंत निज, पैड़ी यण विध पाठ ॥ २८

अरथ

पैड़ी निसांणीरै तुक अेक प्रत मात्रा चौसठ होय । तुकांत गुरु होय तथा मगण होय । तुक अेकमें विसरांम च्यार होय । पै'लौ विसरांम मात्रा अठारै पर होय । दूजौ विसरांम मात्रा सोळै पर होय । तीजौ विसरांम मात्रा सोळै पर होय । चौथौ विसरांम मात्रा चवदै पर होय । ईं प्रकार च्यार विसरांम होय । तुक अेक प्रत मात्रा चौसठ होय, सौ पैड़ी नांम निसांणी कहीजै ।

अथ पैड़ी निसांणी उदाहरण

निसांणी

भारा आक्रांत हुवंदी भूम्मी, वरतंदी सुरवार विक्खम्मी ।
अमरूं कथ अ्रहमांण अखंम्मी, थंदे उथ्थल थांनूंदा ॥
आदम अरु बंभदेव मिळियंदे, आए सब दरियाखीरंदे ।
काहल दस्तबंध कुवरंदे, गिरीअरि गुजरांनूंदा ॥
अरजी सुण कर दरियाफत अल्ला, बरदे महरबांन के बुल्ला ।
हूं दे तुम कज जंगूं हमल्ला, यळ अवतार असांनूंदा ॥
संभूमन नूप दसरथ्थ समथ्थी, कोसळ्या सत रूपा कथ्थी ।
जाहर पूत च्यार जग जथ्थी, जांमण सेर जवांनूदा ॥

---

२८. ठार–अठारह । सोळ–सोलह । चवद–चौदह । चवसाठ–चौसठ । यण–इस । विसरांम–विश्राम ।

२९. भारा–भार, वजन । आक्रांत–घिरा हुआ, आवृत । हुवंदी–होती । भूम्मी (भूमि)–पृथ्वी । वरतंदी–हो रही हो । सुरवार–देवताओं का समय । विक्खम्मी–विषम । अमरूं–देवता । कथ–कथा । अ्रहमांण–ब्रह्मा । अखंम्मी–कही । उथ्थल–उलटा । थांनूंदा–स्थान । आदम–ईश्वर, शिव । बंभदेव–ब्रह्मा । मिळियंदे–मिले । दरियाखीरंदे–क्षीर-सागर पर । काहल–व्याकुल । दस्तबंध–कर-बद्ध । गिरीअरि (गिरिअरि)–इन्द्र । अल्ला–ईश्वर । हूं दे–मैं । कज–लिये । यळ–भूमि । असांनूंदा–मेरा, हमारा । संभूमन–स्वायंभू मनु ।

कौसिकदे जिग परबरसी किता, पै रज करी सिला परविता ।
भंजे चाप अमाप अभित्ता, सीता व्याह सुमांनूंदा ॥
ते तेज हरा दुजरांम अताई, पितदे हुकम रिखी ब्रत पाई ।
मारे व्याध कबंध अमाई, वाटीपंच वमांनूंदा ॥
रांमण तद हरी जांनुकी रांणी, भीली बेर भखांनूंदा ॥
मिळ कपि हणुमंत सुकंठी म्यंता, चौपट मारे बाळ अचंता ।
दांन भभीखण लंक दीयंता, बध पाज जळवांनूंदा ॥
.... ।
बंबी जद घोर जंगदा बग्गा, लड़ण मेघनाद रिण लग्गा ।
भिड़ तिण सेस भुजूं बळ भग्गा, मिटा सोच मघवांनूंदा ॥
जोधा रिण कुंभ दसानन जुट्टे, कोपे रांम बिहूं सिर कट्टे ।
आंण सिया दुख देव अहुट्टे, जंपै कीत जिहांनूंदा ॥ २९

अथ मछटथळ तथा सोहणी नांम निसांणी लछण

दहौ

तेर प्रथम सोळह दुती, मभ्क तुक बे बिसरांम ।
गुणति मत अंते बे गुरु, निमंध मछटथळ नांम ॥ ३०

अरथ

मछटथळ नांम निसांणीरै तुक प्रत मात्रा गुणतीस होय । तुकरै अंत दोय गुरु अखिर होय । तुक अेक प्रत मात्रा गुणतीस होय, जींरा दोय विसरांम होय ।

---

२९. कौसिकदे–विश्वामित्र । जिग–यज्ञ । परबरसी (परवरिश)–रक्षा, पालन-पोषण । चाप–धनुष । अभित्ता–निर्भय, निशंक । दुजरांम–परशुराम । पितदे–पिताका । वाटीपंच–पंचवटी । भीली–भिल्लनी । भखांनूंदा–खाये, भक्षण किये । सुकंठी–सुग्रीव । म्यंता–मित्र । चौपट–खुला मैदान । बाळ–बालि वानर । पाज–पुल । जळवांनूंदा–समुद्रकी । बंबी–नगाड़ा । जद–जब । जंगदा–युद्धका । बग्गा–बजा । भिड़–योद्धा । सेस–लक्ष्मण । मघवांनूंदा–इन्द्रका । जुट्टे–भिड़े । बिहूं–दोनों । कट्टे–काट डाले । अहुट्टे–नाश हुए । जंपै–वर्णन करता है । जिहांनूंदा–संसारके ।

३०. तेर–तेरह । दुती–दूसरी । बे–दो । गुणति–उनतीस । मत–मात्रा । निमंध–रच, बना । गुणतीस–उनतीस ।

पै'लौ विसरांम तौ मात्रा तेरै ऊपर होय। दूजौ विसरांम मात्रा सोळै ऊपर होय, सौ निसांणी मछटथळ नांमा कहीजै। इणरौ दूजौ नांम सोहणी पिण छै।

अथ मछटथळ तथा सोहणी निसांणी उदाहरण

निसांणी

तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुध करखे रात अपंदे।
वस करदे इंद्री अवस, तन मझी तप सील तप्पंदे॥
आप रहंदे अघ अळग, पर छिद्रूं निसदीह ढपंदे।
सेव सझंदे सांइयां, पै करमूं कबहू न लपंदे॥
आदम लखूं दरमियांन, छित विरले नर नांहि छिपंदे।
सत ग्रह रदे तजदे असत, धर कदमूं सुभ पंथ धपंदे॥
नांम जिन्हूदा अमर नित, खित जाये जे जीव खपंदे।
जिन्हां जीतब जीतिया, जे रघुबर नित जीह जपंदे॥ ३१

अथ मात्रा असम चरण कड़खा छंद लछण

दूहौ

धुर तुक मत चाळीस धर, तुक अन मत सैंतीस।
अंत गुरु तुक प्रत अखिर, कड़खौ छंद कहीस॥ ३२

अरथ

पै'ली तुकरी मात्रा चाळीस होय। पछली तीन ही तुकां तथा सवाय करै तौ पिण तुक प्रत मात्रा सैंतीस होय। तुकंत गुरु अखिर तथा करणगण होय। जीं

---

३१. मक्कर–गर्व, अभिमान। फक्कर (फक्र)–दीनता, गरीबी, आवश्यकतासे अधिक किसी पदार्थकी कामना न करना। मझी–मध्य। तप–तपस्या। तप्पंदे–तपस्या कर। अघ–पाप। अळग–दूर। पर–दूसरोंके। छिद्रूं–छिद्र। निसदीह–रात दिन। ढपंदे–ढकते हैं। सेव–सेवा। सांइयां–ईश्वर। आदम–ईश्वर। लखूं–देख, देखता हूँ। दरमियांन–मध्य। छित–पृथ्वी। विरले–कोई। छिपंदे–छिपते हैं। रदे–हृदय। असत–असत्य। जिन्हूंदा–जिनका। खित–पृथ्वी। जाये–जन्मे। जे–जो, वे। खपंदे–नाश होते हैं। जिन्हां–जिन्होंने। जीतब–जीवन। जीह–जीभ। जपंदे–जपते हैं।

३२. अन–अन्य। मत–मात्रा। कहीस–कहूँगा। पछली–बादकी, पश्चातकी। सवाय–विशेष। करणगण–दो दीर्घ मात्रा का नाम ऽऽ।

छंदरौ नांम कड़खौ छंद कहीजै । निसांणी छंदरै उतरारधमें कड़खौ छंद ढाढ़ी बोहत कहै छै ।

अथ कड़खौ छंद उदाहरण

छंद

रसणा रांम रट रांम रट रांम रट ।
रांम रट रांम रट रांम रट रांम रट ॥
नेह आछेह आरेह सुख गेह निज ।
भूप आनूप पतीसीय भांम ॥
पांण धनु बांण आपांण पंचाण पह ।
ठाह गुण गाह जग ठांम ठांम ॥
सुकवि 'किसनेस' महेस भुजगेस सुज ।
जाप जस जेस प्रति जांम जांम ॥ ३३

अथ कळसरौ छप्पै कवित्त

छप्पै

थाघै कुण दध अथघ कमण प्रभणै गिण रज कण ।
बूंदां जळ वरसात गिणै केहौ तारक गण ॥
पुणै कमण तर पत्र भ्रहम माया कुण भक्खै ।
मह उत्तर पथ माप आप लहरां कुण अक्खै ॥
कुण सकै जोग निरणौ करै रे गोरख सिव राजरौ ।
कवि 'किसन' समथ कुण जस कहण रांमचंद्र महराजरौ ॥ ३४

---

३३. रसणा–जीभ । सीय–सीता । भांम–स्त्री । पांण–हाथ । आपांण–शक्ति । पंचांण–सिंह । ठाह–स्थान, ज्ञान । ठांम–स्थान । माहेस–शिव । भुजगेस–शेषनाग । जेस–जिसका । जांम जांम–याम याम ।

३४. थाघै–सीमा या हदकी जांच करे । कुण–कौन । दध–समुद्र । अथघ–अथाह, असीम । कमण–कौन । प्रभणै–कहे । रज–धूलि । केहौ–कौन । पुणै–कहै । तर–वृक्ष । पत्र–पान । ब्रह्म–ब्रह्मा । भक्खै–कहे । मह–भूमि, पृथ्वी । आप–पानी । अक्खे–कहे । समथ–समर्थ ।

अथ कविवंस वरणण छप्पै कवित्त

छप्पै

'दुरसा' घर 'किसनेस' 'किसन' घर सुकवि 'महेसुर'।
सुत 'महेस' 'खूमांण' 'खांन साहिब' सुत जिण घर॥
'साहिब' घर 'पनसाह' 'पना' सुत 'दुल्लह' सुकव पुण।
'दुल्ह' घरे खट पुत्र 'दांन' 'जस' 'किसन' 'बुधौ' भण॥
'सारूप' 'चमन' मुरधर उतन, प्रगट नगर पांचेटियौ।
चारण जाती आढा विगत 'किसन' सुकव पिंगळ कियौ॥ ३५
उदियापुर आथांण रांण भीमाजळ राजत।
कवरां-मुकट 'जवांन' नीत मग जग नीवाजत॥
अठ्ठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद।
बुद्धवार तिथ चौथ हुवौ प्रारंभ ग्रंथ हद॥
अठारै अनै अकियासिये, सुद आसोज सराहियौ।
सनि बिजैदसमी रघुबर सुज 'किसन' सुकवि सुभक्त कियौ॥ ३६

दूहा

रघुबर सुजस प्रकासरौ, अहनिस करै अभ्यास।
सकौ सुकवि वाजै सही, रांम क्रपा सर रास॥ ३७
प्रगट छंद अनुस्टपां, संख्या गिणियां सार।
सुज रघुबर प्रकास जस, है गुण तीन हजार॥ ३८
जिणरौ गुण भण जेणनूं, न गिणै गुर निरधार।
पड़ रौरव ले प्रगट, अवस स्वांन अवतार॥ ३९

इति स्रीरघुवरजसप्रकास पिंगळ ग्रंथे आढा किसना
विरचिते कड़खौ अेक अेकादस प्रकार निसांणी,
निरूपण वरणण नांम पंचमौ प्रकरण
संपूरण। समाप्त।

---

३५. उतन–वतन, जन्म भूमि।

परिशिष्ट १

पद्यानुक्रमणिका

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
	गाथा				
१	अघ हर सुख कर अमळं	८०	२	१६८	सोभा
२	अजामेळ यक वारं	७८	२	१६०	कांती
३	असनं वसन जळ अहनिस	८१	२	१७३	सिंघी
४	असमझ समझ अखोजै	८०	२	१६६	गाहेणी
५	अहमत तज भज ईसर	८०	२	१७०	चक्वनी
६	आळस न कर अजांण	७९	२	१६१	महामाया
७	कमळनयण कमळाकर	७९	२	१६२	कीरती
८	की कहणौ कौसल्या	७७	२	१५२	लज्जा
९	जगत जनक हरि जय जय	८१	२	१७४	हंसी
१०	जन लज रखण जरूरह	८१	२	१७१	सारसी
११	जिण दिन रघुबर जंपै	७९	२	१६४	मांणणी
१२	जीहा राघौ जंपै	७७	२	१५१	बुद्धी
१३	तौ सारीखौ तूंही	७६	३	१४९	लछी
१४	निज कुळ कमळ दिनेसं	७९	२	१६५	रांमा
१५	नित जप जप जगनायक	८०	२	१६९	हरिणी
१६	पढ़ सीतावर प्रांणी	७८	२	१५७	धात्री
१७	भुजबळ खळ दळ भंजण	८१	२	१७२	कुररी
१८	रघुबर सौ प्रभु तज कर	८०	२	१६७	वसंत
१९	रट रट स्रीरघुरांम	७८	२	१५९	छाया
२०	रिखय मख कर रखवाळं	७९	२	१६३	सिद्धी
२१	रिख सिख गंगा रांमं	७८	२	१५८	चूरणा
२२	रै भौका स्रीरांमं	७६	२	१५०	रिद्धी
२३	वेदां भेदां वेखौ	७७	२	१५३	विद्या
२४	सज्झी न राघव सेवं	७८	२	१५६	गौरी
२५	सुन्दर स्यांम सरीरं	७७	२	१५५	देवी
२६	है कांनै मौताहळ	७७	२	१५४	रम्या
	गीत				
१	अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुति आसती	१७४	४	२४	सुद्ध सांणोर
२	अडग तेज अणथघ सरद, ध्यांन स्रुति आसती	१९४	४	६१	सुद्ध सांणोर

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३	अवधेस लंका ऊपरै धर कुरख धंखा जुधधरै	२४६	४	१५६	त्रकुटबंध
४	आरख अंगराजी दुती भळळाट रवि दरसेण	२४४	४	१४७	अरध भाखड़ी
५	आलम हाथरौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असंक	२०४	४	७६	सोरठियौ
६	ओपत तन तेल सिंदुरां आंगा	३२१	४	२६४	जयवंत सावझड़ौ
७	ओयण जे रांम स्रीया नित अरचं	२००	४	७०	वेलिया सांणौर
८	ओयण जे रांम सीया नित अरचं	१७३	४	२३	वेलियौ सांणौर
९	अंगधार आरख ऊजळा	२७७	४	११६	अठताळौ सावझड़ौ
१०	कमर बांधियां तूण सारंग गहियां करां	२९९	४	२५८	अरध सावझड़ौ
११	कर कर आद में हिक नगण सुभंकर	१८८	४	५०	वसंतरमणी
१२	करां धाड़ लागै रघौराज दत कीजतां	२५८	४	१७४	अहरण (न) खेड़ी
१३	करी चूर कुळ सुभावहंत् साद्रूळ कह	१९२	४	५८	वडौ सांणौर
१४	कवसळ सुता राजकंवार क्रत जन काजरा	२८३	४	२३०	धमाळ
१५	कारकार खार बार धार सुरार संघारकार	३१८	४	२९२	घणकंठ सुपंखरौ
१६	कीजै वारणै छिब कांम कौटिक, दीन दुखदाधौ	२३६	४	१२९	कंवार
१७	कैटभ मधु कुंभ कबंध कचरिया	२०३	४	७४	पूणियौ तथा जांगड़ौ सांणौर
१८	कौसिक रिख जग काजरै	२८८	४	२३९	यकखरौ
१९	गह गंजै रे गह गंजै	२४४	४	१०८	अध चितविलास
२०	खगदत अद खटांजी राखण रजवटां	२४२	४	१४२	भाखड़ी
२१	घणनांमी जो घणनांमी	२२६	४	११०	लघुचितविलास
२२	चितकरणी त्रखा दिसी नह चाहै	३०१	४	२६२	सेलार
२३	जग जनक धनक हर हरण करण जय	२५५	४	१६६	हेकल वयण
२४	जगनाथ अंतरतणौ जांमी	२६६	४	१९०	उवंग सावझड़ौ
२५	जम लग कठै भै सीस जियां	१७८	४	३४	घड़उथल्ल
२६	जम लग कठै भै सीस जियां	२२२	४	१०३	घड़उथल्ल
२७	जांनकी नायक जगत जाहर	२५२	४	१६४	त्रकुटबंध
२८	जांमी अघभांन सुरसरी जेथी	२९३	४	२४८	चौटियौ
२९	जिण मुख जोवतां दुख प्राचत जावै	२२०	४	९९	दुमेळ सावझड़ौ
३०	जै नरेस राघवेस आसुरेस जुधां जेस	२५९	४	१७७	विड़कंठ तथा वीरकंठ
३१	तनै कहूं समझाय मत मंद जग फंद तज	२१६	४	९४	गोख सावझड़ौ
३२	तारै दासां त्रिकमांह, भय वारै जम भूप	३०४	४	२७६	मनमोह
३३	तीकम पाळगर जन देवतरौ सौ	१९१	४	५४	जयवंत सावझड़ौ
३४	थिर बूध थटो क्रत हीण फटौ	२८०	४	२२४	सवैयौ
३५	दखै "किसन्न" दासरे तवूं विरुद्ध तास	२६१	४	१७९	अट्टौ

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
६६	महाराज औधेस आधार संतां	२५६	४	१७१	भुजंगी
६७	मही राखण गाथरा आखियातरा गातरा मेर	३२०	४	२६३	
६८	मात्रा चवदे तुक हेकण मांहै	२८८	४	२३८	सरलोकौ
६९	मुखहूंता भाख 'किसन' मह माहण	२११	४	८८	त्रबंकड़ौ
७०	राघव गह पला कीर कह पै रज	१७७	४	३०	घोड़ादमौ
७१	राघव गह पला कीर कह पै रज	२२७	४	११२	,,
७२	रांम असरण सरण राजै	२०८	४	८४	त्रिवड़ तथा हेलौ
७३	रांम नांम रसा रे जाप संभ जसा रे	२७५	४	२१२	अहिबंध
७४	रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूपरा प्रगट अनूपरा रे	३२३	४	२६६	रूपग गजगत
७५	रे अधम नर समर रघुवर	२६०	४	२४४	भंवरगुंजार
७६	रेणायर मथण मथण रेणा यर, भर धर टाळण समर भर	३००	४	२६०	झड़मुकट
७७	रे राखै ऊजळ भाव रदा	२८२	४	२२८	त्रबंक
७८	लछण कसीसै भुजां धांनंख दध लाजरा	२६८	४	२५७	वडौ सावझड़ौ
७९	वडा भाग ज्यांरी विसू लछबर चरणां लाग	३०७	४	२६६	ललित मुकट
८०	विभाड़ पंचदूणमाथ आथ देण वेसरौ	२६१	४	१८१	दूणौ अट्ठौ सावझड़ौ
८१	वंसी ऐराकरां छ भाख पैरा-करां खड़गवाहां	१७२	४	२२	सुपंखरौ
८२	सझ भुजां निज धांनंख सरा, मझ अड़ै भूहां मोसरा	२८५	४	२:२	रसावळौ
८३	सतरा हरचंद सुमतरा सागर, चितरा विलंद सुदतरा चाव	२३६	४	१३६	हंसावळौ
८४	सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध	१७६	४	२८	थांणबंध वेलियौ
८५	सरण वखांणै जगत चित वखांणै जेम सिध	१९६	४	६३	प्रहास सांणोर
८६	साखी रे भांण नसापत सारै, कीध महाजुध कीत सकांम	३१४	४	२८४	जाळीबंध बेलियो
८७	साझी के बखत सांम, बेलसंत बारियांम	२४५	४	१४९	गोखा
८८	साझी के बखत सांम, बेल संत बारियांम	२४६	४	१५१	गोखा

चौपई

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१५	धुर गुरु सीस प्रथम लघु धारौ	२३	१	७४	
१६	धुर तुक फळ तेवीसह धार	१६२	४	५५ से ५७	
१७	धुर लघु के ऊरध गुरु धरौ	२२	१	७०	
१८	पूरण अंक सूं तीजौ अंक	१३	१	४७	
१९	पूरब मत्त पर मत्त मिळाय	२१	१	६६	
२०	बीयौ रूप लिख कहै बताय	१३	१	५०	
२१	भाग कळप दखिण कर ओर	२६	१	८५	
२२	भेद सीस दखिण व्रत अंक	२१	१	६७	
२३	रूप सीस दखिण व्रत अंक	२६	१	८४	
२४	वरण संख बे दुगणी वेस	१३	१	४८	
२५	विध यण नस्ट संख्य विपरीत	२६	१	८३	
२६	सगण जगण सगणह बे पच्छ	१३९	३	१०४	
२७	सात भगण गुरु लघु जिण अंत	१५७	३	१६५	
२८	सूधा क्रम सूं कळपौ भाग	२५	१	८२	
२९	सोलह दस मत यक पद साज	३३३	५	२०	

छप्पै

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१	अजय विजय वळकरण	८९	२	२०४	
२	आद सुन्य गुरु पंत, अंक अन गुरु लघु आरख	३८	१	१११	
३	उकतसु सनमुख आदि निभै नह जिकौ अंध	१७९	४	३५	
४	उक्ता अत्युक्ताह अखत, मध्या वखांणत	११५	३	४	
५	उदियापुर आथांण रांण भीमाजळ राजत	३४०	५	३६	
६	एक रमा अहनिसा, दोय रविचंद त्रिगुण दख	१०२	२	२३७	नीसरणीबंध
७	अंकरीत उदस्टि देहु, पूरण अंक बांमह	३०	१	९७	
८	कमळ उदध कळवरछ, भांण मघवांण मेर ससि	१०९	२	२६१	
९	कर सम बे बे कोठ अंत यक अंक भरीजै	२८	१	९५	
१०	कह सेवा की कहै ? नांम परजंक कवण भण	९९	२	१२९	छत्रबंध
११	कहियौ मैं के कहूँ किसूं, अंधौ तैं कहियौ	१७९	४	३६	
१२	किव पूछं जौ कोय, ग्यांन खट भांत एक थळ	३८	१	१०९	
१३	कोसळ भा सुख करण, नेत-बंध दसरथ नंदण	९८	२	२२७	
१४	चोप अरच हरिचरण, चोप फिररे परदछण	१०३	२	२४१	चौपाई छप्पै
१५	जपै रसण रघुबर जिकै अघ त्यां कपै अमांण	१०४	२	२४५	कुंडळिया
१६	जस कज करै झळूस बाज गजराज वडाळा	१८४	४	४३	
१७	जिण भजियौ जगदीस, जिकौ जमहूंत न भजियौ	९६	२	२२३	वळता संख

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८	जिण राघव जापियां थरू घर नवनिध थावत	१०१	२	२३५	अखनाळीक
१९	जैं जैं भूपां भूप सदा सतां साधारै	८९	२	२०३	अजय
२०	ट ठ ड ढ़ ण गण अरेह, मात्रा गण पंच प्रमांणै	७	१	२५	
२१	तरण सरस छब तरण, सरण असरण हरखण सक	१०७	२	२५३	हेकल्लवयण
२२	तिण मारी ताड़का, जिकण रिख मख रखवाळे	१००	२	२३३	लघुनाळीक
२३	थाघं कुण दध अथघ कमण प्रभणे गिण रज कण	३३९	५	३४	
२४	'दुरसा' घर किसनेस' किसन घर सुकवि महेसुर	३४०	५	३५	
२५	नयण कंज सम निपट सुभग आंणण हिम कर सम	९५	२	२१९	समबळ विधान
२६	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,	१७४	४	२५	,, ,, ,,
२७	नारायण नरकार, नाथ नरहर जग नायक	१०९	२	२५९	अहर अळग
२८	नारंगी संसार नीम अंबर कर अंबह	१०५	२	२४९	हीराबेधी
२९	पूर अपूरिय आस, तौ पिण उमरथी पूरिय	९७	२	२२५	सांकळ
३०	पंकत खट करि प्रथम, संख्य मत्ता कोठा सम	३८	१	११०	
३१	पंखी मुनि मन पंख, तीर भव सिंधु तरायक	८८	२	२०१	
३२	प्रथम परठ खट पंत कोठ वरणां समांन कर	३९	१	११२	
३३	प्रथम अहंम मझ बैद, छंड मारग दरसायौ	१	१	२	
३४	भव व्रहमा जिण भजैं, भजैं तिण नाम पापभर	१०३	२	२४३	मुकताग्रह
३५	भ्रमर भ्रामरौ सरभ सैन	६३	२	८३	
३६	मात्रा नष्ट विधांन, कहत कविराज प्रमांणहु	१५	१	५५	
३७	भिन्न भिन्न रिध सिध, मित्र दासह जय पावत	४	१	११	
३८	मेर मकर मद सिद्ध	९०	२	२५०	
३९	यूं जे तैं न कियौ करसु यूं जण जण आगळ	१०६	२	२५१	करपल्लव
४०	रट रट रे नर ईस, नांम औरणै जिण सीसं	१०८	२	२५७	ताळूरव्यंब
४१	लच्छी रिद्धी बुद्धी, लज्जा विद्या खंम्या	७६	२	१४७	
४२	लाभ नहीं अहलोक नहीं परलोक निरभय	१०२	२	२३९	नाट
४३	वळता जाता संख कमळबंधह समवळ कहै	९३	२	२१०	
४४	विस्णु नांम कुळ विस्ण विस्णु सुत मित्र अपस वद	१८०	४	३७	
४५	सगर सुतण जिग करत अगत हकनाहक दीनो	९६	२	२२१	जातासंख
४६	सनमुख पहली सुद्ध हुई गरभित सनमुख दख	१६८	४	६	
४७	सुध बडौ सांणोर, समझ दूसरौ प्रहासह	१८५	४	४५	
४८	सूरजपणौ सतेज, स्रवण अम्रत हिमकर सम	१०५	२	२४७	चौटीबंध

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
४९	सूर प्रभवतौ तेज, तेज नहं इम्रत स्रायक	१११	२	२६४	नाटसळा
५०	सेस इंदु स्रग दीप जांण कोकिल स्रग पति गज	११०	२	२६२	विधांनीक
५१	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	१७४	४	२६	,,
५२	स्रीलंबोदर परम संत बुद्धवंत परम सिद्धिवर	१	१	१	
५३	स्वाद मीठा कह किसौ ? किसूं मूरख नूं कहजै	१००	२	३११	मझ अखिरा
५४	हल हल्लिय गिर आठ, सपत हल्लिय जळ सायर	१०८	२	५५	हल्लव

छंद

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१	अक्रत करन कौन लावत है बार झूठी	१६२	३	१८०	मनहर
२	अख मत्त सोळ यक जगण अंत	४७	२	२५	पाउरी
३	अरेस जेतार जुधां अथाहं	१३५	३	८८	उपेंद्र वज्रा
४	अवधपति अनम सुज, तेज रवि कोट सम	६०	२	७०	माळा
५	अहनर सुर कह कवण ओड़ जै दतखग जोड़	३२७	५	७	निसांणी
६	आ ई उ ए य व यता मित वरण मुणीजै	१८३	४	४०	,,
७	आच आव जेम आय	१२६	३	५०	मल्लिका
८	आद अखिर सौ अंत में खुल अधिक सखीजै	१८३	४	४१	निसांणी
९	आद अंत लघु संनिध तळ गुरु आंणजै	१७	१	५९	चंद्रायणौ
१०	आद मत्त अगीयार, दुतीय पद तेर मात दख	५०	२	३५	काव्य
११	आपे लंकासी मौजां यूं ही	१३०	३	६८	रूपमाळी
१२	आसन स्यंघ घटा तन स्यांम, पटंबर पीतसु	१५७	३	१६३	सुंदरी
१३	आस्चर्यं रघुनाथ भूप-महदं त्वनांमंमुच्चारणम्	१५२	३	१४६	सारदूळ विक्रीडत
१४	इंद चंद्रमा अहेस	११९	३	२६	धांनी
१५	एक रमा अहनिसा	१७७	४	३२	नीसरणी बंध
१६	औयणमत चौवीस होय जिण रोळा आखत	५०	२	३३	रोळा
१७	अंत भगण ईकत्तीस मत्तपद छंद स सवैयौ छाजत	५२	२	४०	सवैइयौ
१८	अंत रेख तिण आद हेठ गुरु अख्यजै	१७	१	६०	चंद्रायणौ
१९	कटि तूंण चाप कराग, खळ भंज रांवण खाग	१३०	३	६७	तोमर
२०	कपटी कलंकी कूर कातर कुचाळ कोर	१६१	३	१७७	मनहर
२१	करतार भू अधार केसव धार पांण सुधांनक	१५४	३	१५३	गीतिका
२२	कर साझत रांम सुचाप सरं कळहं	१४४	३	१२१	भ्रमरावळी
२३	कळदह पंचजांण जैकरी	४५	२	१९	जैकरी
२४	कळधुर सोळ बार सौ ककुभा	७१	२	१२०	ककुभा
२५	कळ भांण पाय कहंत	४४	२	१५	उध्दोर
२६	कळ सत कंत, जिण जगणंत	४२	२	६	कंता
२७	कळह मझ गहत जळ रांम धनु निज सुकर	१५२	३	४८	धवळ
२८	कायब दूहासूं मिळै कुंडळियौ सुध कत्थ	१११	२	२६५	कुंडळियौ

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२९	केकंधा लंका कहै, जस रघुनाथ सुजांण	११२	२	२६९	कुंडळियौ दोहाळ
३०	केसव कमळ नैन संत सुख देन संभू	१६४	३	१८५	घणाखरी
३१	कौड़क तीरथ राज चिहूं दिस धाय करै	१४६	३	१२८	पदनील
३२	कौड़ दैत भंज संज, पांण चाप सायकं	१४३	३	११८	चांमर
३३	कोटिक तीरथ धाय करौ	१५८	३	१६८	किरीट
३४	खर खळ खंडण, महपत मंडण	१२५	३	४४	सवासन
३५	खळ दळ समर खपावत किव जण गावत कीरत्ती	५९	२	६४	गगनाग
३६	गढ़ कनक जिसा अंगज गाहै	१४२	३	११३	अजास
३७	गंगा के सुथांन नख करत प्रकास भांन	१६४	३	१८३	मनहर
३८	गावै राघौ सोभणी पात गाढ़ौ	१३३	३	८०	सालिनी
३९	गाहा मात्र सतावन गावै	८२	२	१७६से१८९	बेअख्यरी
४०	गिरिस गिरा गौ गौरी	७३	२	१३०	महा
४१	गुरु अंत मत चवदह गिणै	४५	२	१८	झंपताळ
४२	गुरु लघु अनियंम सोळ मता गण	४७	२	२६	बैअख्यरी
४३	गुरु लघु विण नियम तीस बिमत्ता	५५	२	५२	लीलावती
४४	गोपाल गोव्यंद खगेस गांमी	१३४	३	८६	इंद्रव्रजा
४५	गै । गै । स्त्री । थी ।	११६	३	७	स्त्री छंद
४६	गोह सरीखा पांमर गाऊं, व्याध कबंधा ग्रीध बताऊं	१३१	३	७१	चंपकमाळा
४७	गौतम नार सुपाहन तैं रज पाय लगे रघु-नायक तारी	१५७	३	१६४	मत्तगयंद
४८	गौ दौ । कांमौ	११६	३	८	कांम
४९	गौर स्मांम सियरांम गाव रै	१३६	३	९१	रथोद्धिता
५०	घणस्यांम सरूप अनूप घणौ रै	१४०	३	१०८	तारक
५१	चव आद खटकळ दुकळ गुरु यक पाय सत अठ नीसयं	५१	२	३८	हरिगीत
५२	चव कळ उरोज थळ च्यार बोज	५५	२	५४	वरवीर
५३	चव कळ जगांण, मधु भार जांण	४२	२	१०	मधुभार
५४	चव लघु सिव मत चरण	४३	२	१३	रसिक
५५	चाप करां नृप रांम चढ़ै मांझ रजी तद भांण मढ़ै	१३१	३	७२	सरवती
५६	छ मत बांमसमरि स्यांम	४१	२	५	बांम
५७	जग माथै राजत ओठ जेतै हरि एहो आनूंपां जायं	१५३	३	१५१	संभू
५८	जनक सुता मन रंजण गंजण...	५९	२	६६	द्रुपदी

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
५९	जय जय राघव दैत जई	१३२	३	७८	समुखी
६०	जय रांम संत सिहायकं, घण दैत आहव घायकं	१३०	३	७०	संजुतका
६१	जर नैन दियौ जननी जठरा हरि धायके आय सिहाय कियौ	१५८	३	१६९	दुमिळा
६२	जांणै सो राघौ जांणै	१२५	३	४७	सिखा
६३	जांनुकी पुकारै जातुधांनकी बिनास काजै	१६१	३	१७७	मनहर
६४	जिण पय सुरसरि अघहर सरित जनम है	१५३	३	१५९	धवळ
६५	जै जै औध नरेश संत सुखदं स्रीरांम नारायणं	१५१	३	१४५	सारदूळविक्रीड़त
६६	जै पय सिव मत जांण	४४	२	१४	आभीर
६७	जै रघो राजं राज अमर नर अहं क्रीत जे जीह जापै	१५५	३	१५६	स्रगधारा
६८	जौ बंदै, गोबंदै. तौ देही नां रेही	११७	३	१४	ताळी
६९	तवौ राघौ राघौ करम अघ दाघौ तन तणा	१४८	३	१३४	सिखरणी
७०	तेरै मत्त गुरु लघु अंत	४४	२	१६	अनांम
७१	तौ पै धूली सिल तरगी, वारी सारैहि	१२९	३	६३	पायत
७२	त्रय खटकळ अंत रगण नांम छंद हीर है	४९	२	३२	हीर
७३	त्रेदुज गुर कळ चवद तठै	४५	२	१७	हाकळ
७४	दळ सभ्रत खळ दाह य भ बांज अण थाह	५९	२	६८	उध्दत
७५	दस अठ अठ छामं चव विस्रांम छंद सुनांम तिरभंगी	५३	२	४७	त्रिभंगी
६६	दस अठ चवदेस दंड कळेसं मत्त बत्तेसं जेण पयं	५४	२	५०	दंडकळ
७७	दसमाथ भंज समाथ भुज रघुनाथ दीनदयाळ	५१	२	३९	रांमगीत
७८	दस माथ विहंडण आसुर खंडण, राघव भूप अरोड़ा	५२	२	४५	चतुरपदी
७९	दसरथ राज कंवर है सुभ कर धांनख सर है	१३२	२	७५	अभूत गति
८०	दसवसु खट आठं इक पद पाठं सो पदमावती छंद सही	५४	२	४९	पदमावती
८१	दस वसु खट ठांणो फिर वसु आंणो दुमिळा ठांणो करणंता	५४	२	५१	दूमिळा
८२	दस सिर खळ दाहं सुचित सुजन चाहं	१२७	३	५३	त्वंग तथा तुंग
८३	दसाननं विनासनं असेख पाप नासनं	११९	३	२५	निगल्लिका
८४	दिपै रघुनायक दीनदयाळ	१३८	३	९९	मोतीदांम
८५	दहा अध पर पंच मत	७०	२	११७	चूळियाळा

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
११८	भुज दंड लीजै भांमण अध्रियांवण अभीत	११२	२	२६७	कुंडळिया झड़उलट
११९	भूप रघुवर सझत धनुसर	४२	२	८	सुगति
१२०	महण मथण राघौ वाग लंसास माळी	१४४	३	११९	सालिनी
१२१	महदीप छंद तेरहै दस मत पय जांणौ	४९	२	३१	महादीप
१२२	माथ पंच दूण जुद्ध मारणं	१३४	३	८३	सैनिका
१२३	माया परि हरि रे पकरि चरन गुरु	१६२	३	१७९	मनहर
१२४	माहाराजा दसरथके घर रांमचंद्र जनम लिया	८५	२	१९३	दवावैत
१२५	मुख मंगळ नांम उचार सदा तनके अघ अोघन दाधव रे।	१५९	३	१७०	दुमिळा
१२६	मुण पाय दह मात, दीपक्क सुख दात	४३	२	१२	दीपक
१२७	मुण महण तार माथै, सुज गिरवरां समाथै	१२९	३	६६	बिंब
१२८	मूत याको मूळ च्यार भूतते सथूळ किंतू	१६३	३	१८१	मनहर
१२९	महा सुगण रूप है सुचित सार आचारमें	१४७	३	१३१	प्रथ्वी
१३०	यिक रघुनाथ उजाळौ सारौ रघुवंस जेण दुति सरसत	११३	२	२७१	कुंडळणी
१३१	रखण जन सरण रघुराज कौसळ कंवर	५८	२	६२	खंज
१३२	रघुनाथ भंज दुपंच माथ अभंग रे	१४४	२	१२२	कळहंस
१३३	रघुनाथ रटौ क्रत हीण कटौ	१२१	३	३३	तिलका
१३४	रघुराज सिहायक संत रहै	१३८	३	९७	तोटक
१३५	रघुवर भीली कर रै	१२८	३	६१	सारंगिका
१३६	रघुवर महाराज गाव नहचै यक पळ न लाव	६१	२	७२	पंचवदन
१३७	रज पाय परस जिण नार रिखी	५७	२	६०	मदनहरा
१३८	रट दासरथी कथ बेद कथी	११७	३	१७	रमण
१३९	रटौ जांम आठूं सदा हो जनां चूं पसूं रांम रांम	१५१	३	१४३	क्रीड़ा
१४०	रटौ रांमचंद्र, कटौ पाव कंद	११७	३	१५	ससी
१४१	रमा उमा । पियं वियं	११६	३	१०	मही
१४२	रसणा रांम रट रांम रट रांम रट	३३९	५	३३	कड़खौ
१४३	राघव जपतौ प्रांणी मूढ़ आळस मां करै	१२८	३	५८	अनुस्टप
१४४	राघव ठाकुर है सिर ज्यांरै	१३२	३	७७	दोधक
१४५	राघौजी जौ गावौ प्राझी लच्छी पवौ	१२१	३	३२	सेखा
१४६	राघौ राघौ जंपणरी ढील म राखै	१४०	३	१०७	माया
१४७	राघौ राजा सीता रांणी	१२६	३	४९	विद्युन्माळा
१४८	राघौ रूड़ौ स्री सीता स्वांमी राजै	१३४	३	८५	मालतिका
१४९	राजेस स्रीरांम जे नैण राजीव	१३८	२	९८	सारंग

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१५०	रांमचंद्र जिसा सिध रजपूत कोई वेळापुळ होवै छै	८७	२	१६५	वारता गद्य छंद
१५१	रांमचंद भूप बंद...	११७	३	१३	सार
१५२	रांमण भंगम सोभत जंग धनू सर हाथ सुधारण	१५६	३	१६२	मदिरा
१५३	रांम भजीजे, छौड़ तजीजै	१२०	३	२६	हंस
१५४	रांम नांम आठ जांम गाव रे सुपात एह देह सार	१५४	३	१४५	गल्लिका
१५५	रांम नांम गाव रे, पाय कंज धाव रै	१२४	३	४३	समांनिका
१५६	रांम नांम सर पाथर तारे	१३६	३	६२	स्वागता
१५७	रांम भजन विण अहळ जनम रै	१४३	३	११६	चक्र
१५८	रांम महराज, करण जन काज	४२	२	६	पगण
१५९	रांम राजै रसा रूप रै	१२८	३	६०	महालछिमी
१६०	रांम वाळी रजा सीस ज्यांरै रहै	१३७	३	६५	लक्ष्मीधर
१६१	रांम सरखा नरप कोय यळ नो रजै	१४५	३	१२५	निसपाळिका
१६२	रांम सीता पती, और वी अक्रती	११७	३	१६	प्रियाछंद
१६३	रिख मख त्राता, दिन कुळ घाता	१२२	३	३५	चऊरस
१६४	रिखं साथ रांमं गये कांम धांमं	१२२	३	३७	संखनारी
१६५	रिवकुळ मुकट अघट रघुवर है	१४५	३	१२३	रभस
१६६	रिव सुमित्र राज ही, सुकर धनु साज ही	१२७	३	५५	कमळ
१६७	लग मत्ता चौबीस छंद मत्त लेखजं	४१	२	३	चंद्रायणो
१६८	लसत चख लाज सुकर धनु साज	१२५	३	४६	करहची
१६९	लिछमीस रांम अण भंग लखो	१४०	३	१०५	पुमिताखिरा
१७०	वडौ धन वेस, म खोय मृढ़ेस	१२४	३	४१	माळती
१७१	विकट कसट हर रघुवर	१३९	३	१०२	तरळनयण
१७२	विधांनीक पाड़गती त्रेवड़	१८६	३	४८	बेअख्यरी
१७३	बिधांनीक सर सिर फिर वरण वखांणजै	१७१	४	२१	चंद्रायणं
१७४	वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण वळै खट भख जीहा वणांणं	५६	२	५७	झूलणा
१७५	सझ तेरह धुर फेर दस, जांणो निस्रेणी	७१	२	११८	निस्रेणका
१७६	सत दुजबर ठांणो त्रयकळ आंणो कहि धत्तायक तीसकळ	५३	२	४६	घत्ता
१७७	सब लघु पय-पय करि पछ यक गुरु करि	५५	२	५३	जनहरण
१७८	समर में दस कंठ जिण सजे	१३९	३	१०३	सुंदरी
१७९	सर धनुख सझत जन सरण	७२	२	१२२	सिख
१८०	सहदत सत, दसरथ सुत	१२४	३	३९	मदनक

क्र सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८१	सारी वातां नीकौ सोहै, रघुबर जस सहजग यम साखे	१५६	३	१६०	हंसी
१८२	सारंग पांण जयरांम तिलोक स्वांमी	१४२	३	११५	वसंततिलका
१८३	सीतपती ओघ अघं दह	११८	३	२०	मंद
१८४	सीत प्रांणेस, राजा राजेसं	११९	३	२६	समोहा
१८५	सीतारमा सोय, कीजं समं कोय	१२४	३	३८	मंथांणी
१८६	सीता राघौ गावै सोई	११९	३	२३	जोरणा
१८७	सीता सीता रमण हरही नेक संताप संतां	१४९	३	१३६	मंदाक्रांता
१८८	सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंगपांणी सांम	५२	२	४२, ४३	मरहट्टा
१८९	सीस दीधौ जिकौ नांम रघूनाथ सूं	५७	२	५८	उप झूलणा
१९०	सौ पद कूळ पय मत्त सोळै	४६	२	२३	चरनाकुळक
१९१	स्यांम घटा तन रूप विराजत संमळा	४९	२	३०	चंद्रायणौ
१९२	स्यांम भगै तांम सुखी......	१२७	३	५६	मांनक्रीड़ा
१९३	स्री गणराज सारदा सुख कर	१८५	४	४७	बेअख्खरी
१९४	स्री जांनुकीनाथ सदा सराहौ	१३५	३	८९	उपजात
१९५	स्री रघुनाथ अनाथ सिहायक दायक नौ निधि वांछित दांन	१५७	२	१६६	चकोर
१९६	स्री रांम राजेस, सेवो 'किसनेस'	११७	३	१८	पंचाळ
१९७	हम कीन अनेक गुन्हें हरिजू तुम एक न लेख उतारिएजू	१५९	३	१७२	दुमिळा
१९८	हरण कसट जनहर है	१३३	२	८२	मदनक
१९९	हरि हरि हरि	११६	३	९	मधु
२००	हांथी कीड़ी कांटे हेकण सो तोलै जग जांणी सारी	१५०	३	१४०	मंजीर
२०१	हांजी ऐसा महाराज रांमचंद्र असरण सरण	८६	२	१९४	वचनका

दूहा

क्र सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक
१	अखर अठारह चरण चव	१००	२	२३२
२	आखिर गुणीसह अवर लघु	१५२	३	१४७
३	अजामेळ पर आविया	६२	३	७८
४	अठ दुजवर खट कळ सुयक	५७	२	५९
५	अठाईस पूरव अरध	२७४	४	२११
६	अठाईस मत अंत गुरु	३२२	४	२९७
७	अठ्‌ारह मत पहल अख	२२७	४	१११
८	अध पूरव जिम उतर अध	२९४	४	२५०
९	अधिकारी गीतां अवस	१६७	४	६

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
८०	एक गुरु स्त्री छंद कहि	११६	३	६	
८१	एक छकळ फिर च्यार कळ	५९	२	६५	
८२	एकण दु लघु तुकंत अख	३२५	५	३	
८३	एकण हीरौ विहरियां	१०५	२	२४८	
८४	एक दवाळौ आंकणी	२४१	४	१४१	
८५	एक दोय त्रण ऐण क्रम	१०१	२	२३६	
८६	एक दोथ लिख पुब जुगं	११	१	३९	
८७	एक सगण बे जगण गुरु	१३०	३	६९	
८८	एक सबदकी तेवड़ी	९७	२	२२४	
८९	एक सौ अर बावन अखर	१०७	२	२५२	
९०	अै औ अंमळ अग्रका	५	१	१६	
९१	अं मात्रा उप छंद	६१	२	७३	
९२	अंक मत उदिस्ट लिख	३३	१	९८	
९३	अंत गुरु तळ लघु धरौ	१७	१	५७	
९४	अंत रगण अठार धुर	२२३	४	१०४	
९५	कमळ छत्रबंधह कवित	९४	२	२१४	
९६	करण दु गुरु करताळ सौं	८	१	२८	
९७	कर दुजवर नव रगण हिक	५८	२	६१	
९८	कर विचार मन हूं कहूं	९४	२	२१३	
९९	कवित अरथ बाहर लिखै	१००	२	२३०	
१००	कसं पथर कमठांण	१६६	४	५	
१०१	कहजै गुरु मोहरा कठै	१९८	४	६४	
१०२	कह दूहौ पहला सुकव	३०३	४	२६६	
१०३	कह प्रहास सांणोर किव	३०८	४	२७०	
१०४	कहि वसंत तिलका त···	१४२	३	११४	
१०५	कायब उल्लालौ मिळै	८८	२	२००	
१०६	किया निरूपण 'किसन' किव...	३२१	४	२९५	
१०७	किवराजां सूं किसन किव	११४	२	२७३	
१०८	किवं सोरठिया गीत के···	२१७	४	९५	
१०९	कीजै दूहौ प्रथम यक	४८	२	२७	
११०	केसव भजतौ हरख कर	६६	२	९८	
१११	कोड़ां पापां कीजतां	६४	३	८६	
११२	कौपै तूं मौ राज काज	१७१	४	१९	
११३	कंठ सुपंखरा बीच कह	३१७	४	२९०	
११४	क्रम संख्या विपरीत बे	२७	१	९१	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
११५	खट दुजवर कर प्रथम पद	७१	२	१२१	
११६	खुड़दतणैं तुक अग्ग पछ	३००	४	२५६	
११७	गण संजोगी आद गुरु	६	१	१७	
११८	गद्य पद्य बे जगतमें	८५	२	१६१	
११९	ग ल अनियम उगणीस धुर	२१९	४	९७	
१२०	गाथारा लघु अखिर गिणि	८४	२	१६०	
१२१	गाय अरटिया गीतरौ	२२४	४	१०७	
१२२	गाहा लछण ग्रंथ रैं	३१५	४	२८५	
१२३	गिण छप्पय चा बरण लघु	९२	२	२०६	
१२४	गीत ओटपा घाटरा	१६६	४	४	
१२५	गीत बड़ा सांणोर गण	२७०	४	२०१	
१२६	गुणी सुपंखरा गीतमें	२०६	४	८०	
१२७	गुरु लघु क्रम आखिर पनर	१४३	३	११७	
१२८	गुरु लघु सार वखांणजै	११६	३	११	
१२९	गुरु सिर ऊपर अंक जे	१४	१	५२	
१३०	गुरु सिर वाळा अंक गिणि	१८	१	६२	
१३१	चवद चवद मत च्यार तुक	२२५	४	१०९	
१३२	चवद प्रथम दूजी चवद	२९१	४	२४५	
१३३	चवद प्रथम बी ती चवद	२३२	४	१२०	
१३४	चवदह चौथी पांचमी	२६८	४	१९६	
१३५	चित्त जे मत व्है चळ विचळ	६६	२	९९	
१३६	चोप हल्लव कवीत ए	९४	२	२१२	
१३७	च्यार चतुकळ सोळ मत	४६	२	२१	
१३८	च्यार जगणकी एक तुक	२१०	४	८५	
१३९	च्यार तुकां लघु पंचमौ	१२७	३	५७	
१४०	च्यार दूहांके च्यार ही	३२२	४	२९६	
१४१	च्यार नगण पद एकमें	१३९	३	१०१	
१४२	च्यार यगण पद प्रत चवां	१:६	३	९३	
१४३	च्यार स तोटक च्यार तह	१३७	३	९१	
१४४	च्यारूं गाथा गीतरा	३१५	४	२८७	
१४५	छ गुरु भगण भगण ह सगण	१५०	३	१३९	
१४६	छै निसांणी छंद रै	३२५	५	१	
१४७	छोटा वडा सांणोररौ	३१०	४	२७२	
१४८	छंद अरध नाराजरी	२६०	४	१७८	
१४९	छंद भुजंगी पर लघू	१४१	३	१८०	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
१८५	त्रै खट कळ लघु गुरु चरण	४६	२	३६	
१८६	थळ विपरीत उदस्टि सिर	१८	१	६१	
१८७	दख मम मता चव दूहां	२५६	४	१७६	
१८८	धुर अठार बी नव धरौ	२३६	४	१२८	
१८९	धुर अठार बी बार धर	२६६	४	१९९	
१९०	धुर अठार मत्त सुधर	२७१	४	२०३	
१९१	धुर अठार बारह दुती	२८१	४	२२५	
१९२	धुर अठार सोळह दुती	३०२	४	२६३	
१९३	धुर अठार सोळह सरब	३०१	४	२६१	
१९४	धुर उगणीस अठार धर	२७३	४	२०८	
१९५	धुर उगणीसह कळहधर	१९१	४	५३	
१९६	धुर चवदह चवदह दुती	२४८	४	१५४	
१९७	धुर चवदह नव फेर धर	३२७	५	६	
१९८	धुर तीजै मत बार धर	६९	२	११२	नंदा
१९९	धुर तुक अखर अठार धर	२५३	४	१६५	
२००	धुर तुक अखिर अठार धर	२०६	४	७९	
२०१	धुर तुक मत चाळीस धर	३३८	५	३२	
२०२	धुर तुक मत चौबीस धर	२५९	४	१७५	
२०३	धुर तुक मत छाईस धर	२६७	४	१९३	
२०४	धुर तुक मत तेवीस धर	२१६	४	९३	
२०५	धुर तुक मत बेवीस धर	१९६	४	६२	
२०६	धुर तुक मत अठार मत	२०१	४	७१	
२०७	धुर नव मत जीकार फिर	२४३	४	१४४	
२०८	धुर बी चौथी पंचमी	२३४	४	१२६	
२०९	धुर बीजी मत बार धर	२६२	४	१८२	
२१०	धुर बी ती चवदह धरौ	२३७	४	१३०	
२११	धुर बी ती तुक सोळ मत	२४७	४	१५२	
२१२	धुर बी ती पंचम छठी	२४०	४	१३८	
२१३	धुर बी तुक मत सोळ धर	२९६	४	२५४	
२१४	धुर बे गुरु चौबीस लघु	३१०	४	२७४	
२१५	धुर मत्ता अठार धर	२०४	४	७७	
२१६	धुर मता अठार धर	२११	४	८७	
२१७	धुर सोळह दूजी चवद	२३३	४	१२४	
२१८	धुर सोळह बी ती चवद	२४०	४	१३७	
२१९	ध्वज चिन्ह वास चिराळ	९	१	२९	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२२०	नगणक भगण तुकंत खट	२४०	४	१३९	
२२१	नगण सगण मगणह रगण	१४९	३	१३७	
२२२	नर-काधब करवा नियत	५	१	१३	
२२३	नर तन पावै जे नरा	६१	२	७५	
२२४	नव कोठां मझ एक तुक	३१३	४	२८२	
२२५	न स घ बिंब तोमर सगण	१२९	३	६५	
२२६	नस्ट संख्य विपरीत निदांन	२०	१	६५	
२२७	ना कीज्यौ सैणां नरां	६४	२	८५	भ्रमर
२२८	नाट सब्द गिण कवितमें	१०२	२	२३८	
२२९	निज प्रिय कहिये परम प्रिय	१०	१	३३	
२३०	नूपुर रसना भरण फग्गि	१०	१	३२	
२३१	पड़ै यगण खट चरण प्रत	१५०	३	१४२	
२३२	पढ़तां होठ मिळै नहीं	१०९	२	२५८	
२३३	पढ़ बसंत रमणी प्रथम	१८५	४	४४	
२३४	पद प्रत मत गुण तीस पढ़ि	५२	२	४१	
२३५	पनर पनर मत दोय पय	७२	२	१२६	
२३६	परगट कट तट तड़त पट	६८	२	१०५	सुनक
२३७	परठ दच्छ सुधी पंगत	३५	१	१०२	
२३८	पह ज्यांरा चित्त लागा	७०	२	११३	
२३९	पहल अठारह बी चवद	३१७	४	२८९	
२४०	पहल त्रतीय पद सोळ मत	६९	२	१०८	
२४१	पहल दुती तीजी मिळै	२३२	४	१२१	
२४२	पहला गुरु तळ लघु परठ	११	१	४१	
२४३	पहलां दूहौ एक पुण	१०४	२	२४४	
२४४	पहली गाहौ पर वजै	३१५	४	२८६	
२४५	पहली दूजी तुक मिळै	२०८	४	८३	
२४६	पहली दूजी मेळ पढ़	२३४	४	१२५	
२४७	पहली दूजीसूं मिळै	२६३	४	१८३	
२४८	पहली बीजी तीसरी	२३७	४	१३१	
२४९	पहली तीजै बार पढ़	६९	२	११०	
२५०	पांच भगण गुरु अंत पद	१४६	३	१२७	
२५१	पूछै अन कवि छंद पढ़ि	९२	२	२०७	
२५२	पूछै यूं अन कवि प्रसन	२८	१	९४	
२५३	पूरब अंक सिर अंकसूं	३७	१	१०६	
२५४	पूरब अंक सिर पंतसूं	३७	१	१०७	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
२९०	मगण नांम संभू मुणै	७	१	२३	
२९१	मगण भगण फिर नगण मुणि	१४९	३	१३५	
२९२	मगण भगण फिर सगण मुणि	१२९	३	६२	
२९३	मगण रगण भगणह नगण	१५४	३	१५५	
२९४	मगण सगण जगणह सगण	१५१	३	१४४	
२९५	मझ खट तुक बारह मता	२४५	४	१५०	
२९६	मत अठार धुर तुक अवर	२०३	४	७५	
२९७	मत ऊदिस्ट सुरूप लिख	१४	१	५१	
२९८	मत जकड़ी भव माग	६२	२	८०	
२९९	मत सोळह फिर बार मुण	३२८	५	१०	
३००	मत्त छंद 'किसनै' मुणै	५१	२	३६	
३०१	मत्त व्रतमें सुकव मुण	४१	२	१	
३०२	मत्त व्रत हिक अह मुणि	४१	२	२	
३०३	मध्य मेळ मत बार पर	३३३	५	२२	
३०४	मन दुख दाधा डौल मत	६६	२	९५	पयोधर
३०५	मन सुमित्र य भ दास मुण	४	१	१०	
३०६	मरण जनमचौ सळ मिटण	६१	२	७४	
३०७	महाराजो रघुवंस मण	७०	२	११५	
३०८	महालिछमी पद मही	१२८	३	५९	
३०९	मात्रा वंडक वरणिया	११४	२	२७२	
३१०	मानौ वारवार मैं	६४	२	८७	सरभ
३११	मालतिका ग्यारह गुरु	१३४	३	८४	
३१२	मांनवियां छाडौ मती	६५	२	९१	करभ
३१३	मिळै चवथी पंचमी	२४८	४	१५७	
३१४	मिळै तीन तुक आदरी	३०२	४	२६४	
३१५	मिळै न पुळ पुळ तन मनख	६७	२	१००	कछप
३१६	मुड़ियल सावझड़ो हुवै	२७२	४	२०५	
३१७	मुण अमका प्रस्तार मझ	२७	१	९३	
३१८	मुण तुक प्रत जिण तीस मत	३२९	५	१२	
३१९	मुण तुक प्रत बत्तीस मत	३३०	५	१४	
३२०	मुण धुर तुक अठार मत	२००	४	६८	
३२१	मुण धुर तुक तेवीस मत	२९८	४	२५६	
३२२	मुण बी तुक छाबीस मत	२७८	४	२१८	
३२३	मुणिया भेळा मेरमें	३०	१	९६	
३२४	मूरख जाचक जाच मत	६५	२	९३	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३२५	मेवा तजिया मह महण	६३	२	८१	तूंबेरौ
३२६	यक तुक गुणतीस अखिर	३११	४	२७५	
३२७	यक तुक तौ थापै अरथ	११०	२	२६३	
३२८	यक दौ च्यार सु आठ विध	३७	१	१०३	
३२९	यकसूं दुगणा रूप सिर	२५	१	८१	
३३०	यकसूं वरण छवीस लग	११५	३	५	
३३१	यगण संख्य नारी उभय	१२२	३	३६	
३३२	यण विध पूरब अंक जुड़	३८	१	१०८	
३३३	यण हीज विध ऊत्तर अरध	२९०	४	२४३	
३३४	यतरी मत यतरा वरण	११	१	३८	
३३५	रगण जगण गुरु लघु हुवै	२६६	४	१९१	
३३६	रगण जगण पय अंत गुरु	१२४	३	४२	
३३७	रगण नगण रगणह ध्वज	१३६	३	९०	
३३८	रगण मध्य लघु सगण रं	३	१	८	
३३९	रगण सगण अंतह गुरू	२७४	४	२१०	
३४०	रघुवर सुजस प्रकासरौ	३४०	५	३७	
३४१	रट नर अधिका राज	१७७	४	३१	सोरठौ
३४२	रटां गीत रेणखरौ	२७१	४	२०४	
३४३	रस उल्लाल तिथ तेर मत	७२	२	१२४	
३४४	रस स्यंगार य हासरस	९५	२	२२०	
३४५	राघव रट रट हरख कर	६८	२	१०६	
३४६	रांम भजनसूं राता	६९	२	१११	
३४७	रे चित वंत द्रढ़ एम रख	९३	२	२०८	
३४८	रे नाहर रघुनाथरा	६	१	२०	
३४९	रे नीसांणी छंदरा	३२५	५	२	
३५०	रे चित ब्रत द्रढ़ श्रेम रख	६६	२	९७	वांनर
३५१	रोम रोममें रम रि'यौ	६५	२	९२	
३५२	लखियां वीसै नव अखिर	३१३	४	२८३	
३५३	लघु गुरु क्रम वरण आठ	१२६	३	५१	
३५४	लघु दीरघ दीरघ लघु	७	१	२१	
३५५	लघु सांणोर क पूणियौ	२८५	४	२३३	
३५६	लछण संजुत आठ तुक	३३४	५	२४	
३५७	लागै पढ़तां ताळवै	१०८	२	२५६	
३५८	ले खट हूंतां नव लगै	१०९	२	२६०	
३५९	लेखव वरण छवीस लग	११५	३	३	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३९५	साठ सहस सुत सगररा	१६६	४	१२	
३९६	सात चतुकळ चरणमें	५२	२	४४	
३९७	सात चतुर कळ अंत गुरु	७२	२	१२८	
३९८	सात भगण मदिरा वदै	१५६	३	१६१	
३९९	सात मत्त पद प्रत पड़ै	४२	२	७	
४००	सावझड़ौ रमणी वसंत	२९५	४	२५२	
४०१	सांणौरासूं गीतके	१८५	४	४६	
४०२	सिर दस दस सिर सावतै	७	१	२२	
४०३	सीहलोर (पिण) पूणियौ	२७०	४	२००	
४०४	सुज उलटायां सोरठौ	६२	२	७७	
४०५	सुज प्रहास सांणौररं	२१२	४	८९	
४०६	सुणि या न तजता स्रवण	१६६	४	२	
४०७	सुद्ध विहु उदिस्ट नस्ट	२७	१	८९	
४०८	सुद्ध बे सुद्ध थळ उळट बे	२७	१	९२	
४०९	सुध कुंडळिया अंत सुज	११२	२	२६८	
४१०	सुध सुध विपरीत थळ	२६	१	८७,८८	
४११	सुरपति पट्ठह ताळकर	९	१	३०	
४१२	सूधै क्रम दै अंक सिर	२०	१	६४	
४१३	सोरठिया हर प्रोढ़ मझ	२७२	४	२०६	
४१४	सोळ कळा धुर सोळ बी	२८२	४	२२७	
४१५	सोळ प्रथम चवदह दुती	२९०	४	२४२	
४१६	सोळ प्रथम बीजी चवद	२२९	४	११५	
४१७	सोळ मत तुक पंचमी	२८६	४	२३४	
४१८	सोळह पनरह अन दूहां	२००	४	६९	
४१९	सोळह मत तुक प्रत सरब	२८७	४	२३६	
४२०	सोळह मत्ता वरण दस	२२१	४	१००	
४२१	सोळह सोळह अखिर पर	१६४	३	१८४	
४२२	सोळै मत्तां सरब तुक	२२२	४	१०२	
४२३	सौ दूहा तेईस सुज	६३	२	८२	
४२४	सोळह पनरह अखिर पर	१६१	३	१७६	
४२५	संख्या अक्खर कोठ सझ	३५	१	१०१	
४२६	संख्या प्रस्तर सूचिका	१०	१	३६	
४२७	संख्या में कहिया सकौ	११	१	४०	
४२८	संजोगी पहलौ अखिर	६	१	१९	
४२९	संमत अठारौ असीयौ	१६५	३	१८८	

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
४३०	स्री गणनायक सारदा	११५	३	१	
४३१	ह झ ध र घ न ख भ आठ ही	५	१	१४	
४३२	हर जंरै कच कूप मह	१७०	४	१७	
४३३	हर मत छोडै रै हिया	६५	२	६०	मरकट
४३४	हर रिण दस सिर विजय हित	६८	२	१०७	सरप
४३५	हर समरो होसी हरी	१६६	४	१४	
४३६	हर ससि सूरज सुर फणी	८	१	२६	
४३७	हर हर जप अनम कर हर	६७	२	१०२	अहिवर
४३८	हारी तगण सु करण यक	११६	३	२७	
४३९	होमत कर भज भज हरी	१६६	४	१	
४४०	होरा वेधी हिक वयण	९४	२	२१५	
४४१	हूं आखूं नय वयण हिक	१७०	४	८८	
४४२	हेत हांण तन रोग व्है	५	१	१५	

नीसांणी छंद

१	कदम सुभंदा मेर गिर नहचळ मझ कंका	३२८	५	९	नीसांणी
२	कांम क्रोध मद लोभ मोह कर अवस रहै अडगांणे	३२९	५	११	मारू निसांणी
३	गह भर राघव तारिया दरियाव विच गेंवर	३२५	५	४	निसांणी
४	जिण कीड़ी कुंजर जीव दुनिदा, रूप चराचर रच्चा है	३३१	५	१७	झींगर निसांणी
५	तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुव करखे रात अपंदे	३३८	५	३१	मछटथळ तथा सोहणी
६	तन स्यांम अंबुद रूप तड़िता	३३३	५	२१	सीहचली निसांणी
७	तें रघुनाथ विसारिया त्रिहुं ताप तपणां	३२७	५	८	सुद्ध जांगड़ी निसांणी
८	पोह ऊत कविराजं हरख उछाजं सुजस समाजं दध पाजं	३३५	५	२५	घग्घर निसांणी
९	बंधग्राह दरीयाव बीच पड़ संकट फील पुकारियां	३२९	५	१३	वार निसांणी
१०	भारा आक्रांता हुवंदी भूम्मी, वर तंदी सुरवार विक्खमी	३३६	५	२९	पैडी निसांणी
११	यक आद पुरख अनादसूं दख ब्रहम माया दोख	३३२	५	१९	सीहटप निसांणी
१२	राघव सिफत बखांणी, सच्चे सायरां	३३४	५	२३	सिरखुली
१३	विच अनूप सरूप स्यांम, घट वरसण वार	३२६	५	५	दुमला निसांणी

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक
४	अमेळ सांणोर	२८६	४	२४१
५	अरट सांणोर	२७६	४	२१४
६	अरटियौ	२२८	४	११४
७	अरध गोखौ सावझड़ौ	२६७	४	१६२
८	अरध भाख	३१३	४	२८०
९	अरध भाखड़ी	२४४	३	१४७
१०	अरध सावझड़ौ	२९९	४	२५८
११	अहरण(न)खेड़ी	२५८	४	१७४
१२	अहिबंध	२७५	४	२१२
१३	उमंग गीत	२८७	४	२३७
१४	उवंग सावझड़ौ	२६६	४	१९०
१५	काछौ	२७९	४	२२२
१६	कंवार	२३६	४	१२९
१७	खुड़द छोटो सांणोर	२०५	४	७८
१८	गहांणी	३१६	४	२८८
१९	गोख सावझड़ौ	२१६	४	९४
२०	गोखा	२४५, २४६	४	१४९, १५१
२१	घण कंठ सुपंखरौ	३१८	४	२९२
२२	घड़ उथल्ल	१७८	४	३४
२३	घोड़ादमौ	१७७, २२७	४	३०, ११२
२४	चितईलोळ	२१७	४	९६
२५	चौटियाळ	२१३	४	९०
२६	चौटियौ	२९३	४	२४८
२७	जयवंत सावझड़ौ	१९१, ३२१	४	५४, २९४
२८	जाळीबंध	३१४	४	२८४
२९	झड़मुकट	३००	४	२६०
३०	झमाळ	२३०	४	११९
३१	ढोलचलौ तथा ढोलहरौ सावझड़ौ	२४७	४	१५३
३२	त्रकुटबंध	२४९, २५२	४	१५९, १६४
३३	त्रबंक (त्रबंकौ)	२८२	४	२२८
३४	त्रबंकड़ौ	२११	४	८८
३५	त्राटकौ	३०२	४	२६५
३६	त्रिपंखौ	२९७	४	२५५
३७	त्रिमेळ पालवणी तथा झड़लुपत	२९५	४	२५३
३८	त्रिवड तथा हेलौ	२०८	४	८४

क्र.सं.	पंक्ति	पृष्ठ	प्रकरण	पद्यांक	नाम
३९	थांणाबंध वेलियौ	१७६	४	२८	
४०	दीपक	२७३	४	२०९	
४१	दुमेळ	२६५	४	१८८	
४२	दुमेळ सावझड़ौ	२२०	४	९९	
४३	दूणौ अट्ठौ सावझड़ौ	२६१	४	१८१	
४४	दोढ़ा	२३७	४	१३३	
४५	धड़ उथल	२२२	४	१०३	
४६	धमळ	२६८	४	१९८	
४७	धमाळ	२८३	४	२३०	
४८	पाड़गती सुपंखरौ	२०६	४	८१	
४९	पालवणी	२१ .	४	९८	
५०	पूणियौ तथा जांगड़ौ सांणौर	२०३	४	७४	
५१	पंखाळौ	३१०	४	२७३	
५२	प्रहास सांणौर	१९६	४	६३	
५३	बंक	२१०	४	८६	
५४	भाख	३१२	४	२७८	
५५	भाखड़ी	२४४, २४२	४	१४५, १४३	
५६	भांण	२६२, २६३	४	१८६	
५७	भुजंगी	२५६	४	१७१	
५८	भंमरगुंजार	२९२	४	२४६	
५९	भंवरगुंजार	२९०	४	२४४	
६०	मनमोह	३०४	४	२६७	
६१	मिस्र वेलियौ	१९९	४	६७	
६२	मुकताग्रह	३०९	४	२७१	
६३	मुड़ंल अठताळौ	२३२	४	१२३	
६४	मुणाळ	१८९	४	५२	
६५	मंदार	२९४	४	२५१	
६६	यकखरौ	२८८	४	२३९	
६७	रसखरारौ	२४०	४	१४०	
६८	रसावळौ	२८५	४	२३२	
६९	रूपग गजगत	३२३	४	२९९	
७०	लघु चितविलास	२२६	४	११०	
७१	ललित मुकट	३०७	४	२६९	
७२	लैहचाळ	२१५	४	९२	
७३	वडौ सावझड़ौ	२९८	४	२५७	

परिशिष्ट २

छंदानुक्रमणिका

नाम	पृ.	प्र.	छंदांक
१ अजास	१४२	३	११३
२ अनांम	४४	२	१६
३ अनुस्टुप	१२८	३	५८
४ अमित गति	१३२	३	७५
५ अरिल	४६	२	२४
६ आभीर	४४	२	१४
७ इंद्र वज्र	१३४	३	८६
८ उद्धत	५९	२	६८
९ उद्धौर	४४	२	१५
१० उपजात	१३५	३	८९
११ उपभूलणा	५७	२	५८
१२ उपेन्द्रवज्रा	१३५	३	८८
१३ ककुभा	७१	२	१२०
१४ कड़खो	३३९	५	३३
१५ कमळ	११८, १२७	३	२१, ५५
१६ करहची	१२५	३	४६
१७ कळहंस	१४४	३	१२२
१८ काव्य	५०	२	५८
१९ कांम	११६	३	८
२० किरीट	१५८	३	१६८
२१ क्रीड़ा	१५१	३	१४३
२२ कुडळणी	११३	२	२७१
२३ कुंडळिया झड़उलट	११२	२	२६७
२४ कुंडळियो	१११	२	२६५
२५ कुंडळियो दोहाळ	११२	२	२६९
२६ कंता	४२	२	६
२७ कंद	१४१	३	११०
२८ खंज	५८	२	६२
२९ गगनागा	५९	२	६४
३० गद्य	८५	२	
३१ गमक	४१	२	४
३२ गल्लिका	१५४	३	१५४
३३ गीतिका	१५४	३	१५३
३४ घणाखरी	१६४	३	१५८
३५ चऊरस	१२२	३	३५
३६ चकोर	१५७	३	१६६
३७ चक्र	१४३	३	११६
३८ चतुरपदी	५२	२	४५
३९ चरचरी	१५०	३	१४१
४० चरनाकुळक	४६	२	२३
४१ चांमर	१४३	३	११८
४२ चूड़ामण	४८	२	२८
४३ चूळियाळा	७०	२	११७
४४ चौबोला	७१	२	११९
४५ चौपई	४५	२	२०
४६ चंचळा	१४७	३	१२९
४७ चंद्रायणो	१७ (५९, ६०) ४९ (३०) १७१ (२१)		
४८ चंपकमाळा	१३१	३	७१
४९ जनहरण	५५	२	५३
५० जमक	१२०	३	३०
५१ जीरणा	११९	३	२२
५२ जंकरी	४५	२	१९
५३ झंपताळ	४५	२	१८
५४ झूलणा	५६	२	५७
५५ तरळनयण	१३९	३	१०२
५६ तारक	१४०	३	१०८
५७ ताळी	११७	३	१४
५८ तिलका	१२१	३	३३
५९ तोटक	१३८	३	९७
६० तोमर	१३०	३	६७
६१ त्वंग तथा तुंग	१२७	३	५३

दूहा

निसांणी